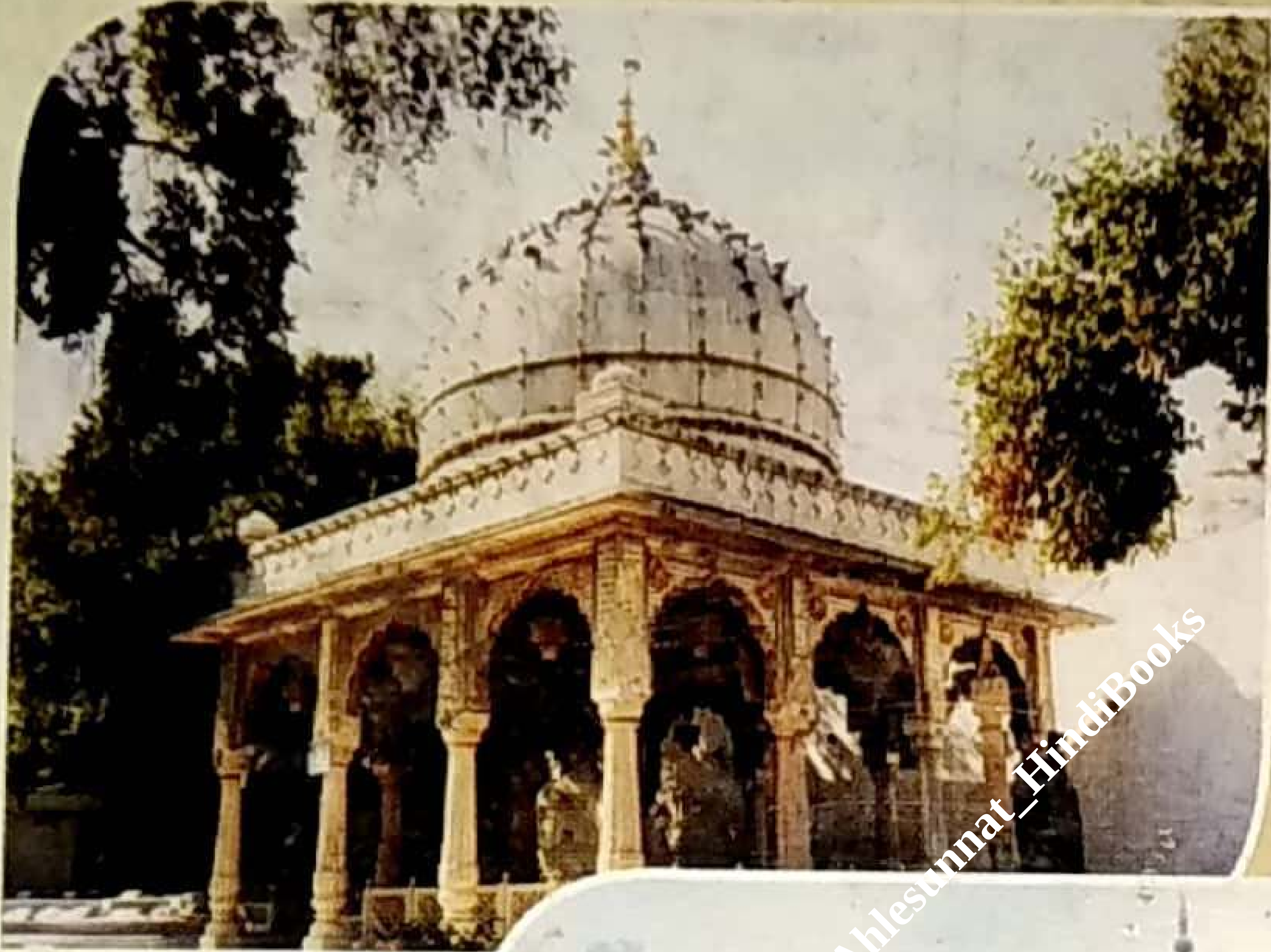
दिल्ली के बाईस ख़्वाजा





डॉ॰ ज़हूरुलहसन शारिब

ख़्वाजये ख़्वाजगान हजरत

ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती रह०

की बारगाह में ये चन्द औराक बसद

अजज़ व नियाज पेश करता हूँ

"गर क़ूबुल उफतद ज़हे है इज्ज़ व शरफ"

शारिब

फहरिस्त मज़ामीन

क्रम	मज़ामीन	सफ़ा न०
	दीबाचा	7
1.	हकाइक़ का आईना	9
2.	हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह]	13
3.	हज़रत काज़ी हमीदुद्दीन नागौरी	72
4.	हजरत शेख़ बदरूद्दीन ग़ज़नवी	81
5.	हज़रत शेख़ नजीबुद्दीन मुतवक्किल	91
6.	हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया	101
7.	हज़रत नसीरूद्दीन महमूद चराग़ देहलवी	133
8.	हज़रत अमीर खुसररू	144
9.	हज़रत मौलाना शमसुद्दीन मुहम्मद याहिया	152
10.	हज़रत मौलाना अलाउद्दीन नीली चिश्ती	160
11.	हज़रत ख़्वाजा मुहयुद्दीन काशानी	165
12.	हज़रत ख़्वाजा कमालुद्दीन	171
13.	हज़रत मख़दूम समाउद्दीन सहरवर्दी देहलवी	176
14.	हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह	185
15.	हज़रत शाह अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी	192
16.	हज़रत शेख़ कलीमुल्लाह शहजहान आबादी	200
17.	मुहिब्बुन्नबी हज़रत मौलाना फख़रूद्दीन जहां	209
18.	हज़रत मिर्ज़ा जाने जानां मज़हर शहीद	219
19.	हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी	227
20.	हज़रत शाह मुहम्मद फ़रहाद देहलवी	235
21.	हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी	239
22.	हज़रत शाह मुहम्मद आफ़ाक़ देहलवी	250
23.	हज़रत शाह अबु सईद देहलवी	255

दीबाचा

देहली को दारुल औलिया बैतुल–फ़ुकरा होने का फ़ख्र हासिल है। हज़ारो मशहूर व मारुफ़, साहबे निस्बत और साहबे इजाज़त अहले अल्लाह इस शहर में वख़्वाब नोशीं आराम फ़रमा रहे हैं।

इस किताब में उन **बाईस हज़रात बा बरकात** के हालात दर्ज किये गये हैं जिन को बजा तौर पर क़ुत्बे ज़माँ व मुर्शिदे दौरां कहा जा सकता है इसी बाइस देहली को "बाईस ख़्वाजा की चौखट" कहा जाता है।

कुतबुल अक्ताब हज़रत कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह.] ने बफरमान अपने पीर व मुर्शिद ख़्वाजए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन हसन चिश्ती[रह.] देहली में सुकूनत अख़तियार फ़रमाई। आप ने जिस रुहानी सल्तनत की बुनियाद दिल्ली में रखी उसके आसार आज तक नुमायां है। ज़मीन, ज़माँ, ज़माना और हालात व वाक़ियात इस सलतनत को मिटा न सके।

इस सल्तनत की बुनियाद जिन उसूलों पर रखी गई थी, वह उसूल इन्सानियत की फ़लाह का ज़ामिन हैं। उन बुजुर्गों को ऐसी मक़बूलियत हासिल हुई कि उन में से कोई "क़ुतबुल अक़ताब" कोई "महबूबे इलाही" कोई "चिरागे दिल्ली" कोई "मुतवक्किल" कोई "बाक़ी बिल्लाह" कोई "फि अल्लाह" कोई "मुहिब्बुन्नबी" कोई "मख़दूम" और कोई "अल्लामा" कहलाया।

उन हज़रत से वह सिलसिले जारी हुए जो आज हिन्दुस्तान पाकिस्तान और दूर दराज़ ममालिक के शहरों, क़सबों और गाँवों में फैले हुए हैं।

इस किताब में मैंने निहायत इख़्तिसार के साथ उन बाईस बुजुर्गों के हालाते तैयबात, ग़राइब वाक़ियात व हिकायात, नादिर असराफ़त व तसर्रुफात, तर्के लज़्ज़ात, मुराक़िबात मुशाहिदात औराद व वज़ाइफ़ व मामूलात,कल्माते तैयबात व तालीमात, कश्फ़ व करामात व मुजाहिदात व इबादात क़लम बन्द किये हैं।

यह किताब अपनी नौईयत की पहली कोशिश हैं।

अगर यह किताब उन **बाईस बुजुर्गान** ने क़ुबूल फ़रमाई तो मेरे लिए बाइसे फ़ख़ होगा।

ज़ुहूरुल हसन शारिब

शारिब इन्सिटीटियूट ऑफ़

इस्लामिक लिटरेचर,शारिब हाऊस

झालरा, अजमेर शरीफ़

बाब न. 1

हक़ाइक़ का आईना

बुजुर्गाने दीन ने अपनी गुफ़्तार और अपने किरदार से एक मेयारी ज़िन्दगी का नमूना पेश किया कम खाना, कम बोलना, कम सोना और लोगों से कम मेल जोल रखना उनका तरीक़े कार था।

इश्क़े इलाही में वह ऐसे सरमस्त व शरसार थे कि उनको अपनी हस्ती का पता न था। तस्लीम व रज़ा तव्वकुल व क़नाअत उम्मीद व बैहम, मुहब्बत व अख़ूवत, ख़ुलूस व ख़िदमत, फाक़ा ईसार व इस्तिक़मात उनका पेशा था।

वह अपने दर्द और अपने दरमान, अपनी दुआ और अपनी दवा, अपने सूज़ और अपने साज़ अपनी जिन्दगी अपनी मौत, अपनी जीत और अपनी हार को ख़ुदा की तरफ मन्सूब करते थे। वह इश्क़े इलाही के आसीर थे, दीन के मददगार थे, वह रौशन ज़मीर थे, बेकसों के दस्तगीर थे, कामिल पीर थे। वह दरे बेश बहा व बेनज़ीर थे।

तालिबों की तलब जब उनको इन हज़रात के मैखाने में लाती वह उनको ताइब करके आलाइशे दुनिया से पाक व साफ कर देते थे।

वह जबर व तशदुद को नारवा समझते थे। मुहब्बत और ख़ुलूस के दिल नशीन हथियारों से गैरों को अपनाया करते थे।

वह अमीरे शरीअत थे, जूयाए हक़ीक़त थे, साहबे निस्बत,साहबे इजाज़त थे, शमा शबिस्ताने हिदायत थे। चिरागे दूदमाने विलायत थे।

इल्म बातिन और इल्मे ज़ाहिर में क़ामिल थे।

मख़्लूक़ से बेनियाज थे, क़ौमी और नसली इम्तियाज़ात से पाक साफ थे। मज़हबी तअस्सुबात से आज़ाद थे।

वह अहले सफा थे, वलीए ख़ुदा थे, आलिमे बा अमल थे साहब जूदो क़रम थे।

वह शमस व क़मर में, जान व जिगर में, लाल व गुहर में, शामो सेहर में, बर्ग व शजर में, आतिशे नमरुद में, गुलज़ारे इब्राहीम में ख़ुदा का जलवा कार फ़रमा देखते थे।

उनकी जिन्दगी नकाते तरीक़त का दफीना थी, हक़ीक़त व मारफ़त का आईना थी,वसूल इलल्लाह का ज़ीना थी, मारिफ़ते इलाहिया का सरे चश्मा थी।

गर्ज़ उन्होंने अपनी रुहानी ताक़त, अपने किरदार और अपनी गुफ़्तार, अपने ईसार और अपने ख़ुलूस और रवादारी से एक नये समाज की तश्कील की।

الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ۝٢٠

पारा–13–राद–3–रुक्कू

तर्जुमाः यह वह लोग हैं कि अल्लाह के साथ जो अहद कर लेते हैं उसको पूरा करते हैं और अपने इक़रार को नहीं तोड़ते।

हिस्सा अव्वल

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

बाब न. 2

कुतबुल अक़ताब

हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार क़ाकी[रह.]

क़ुतबुल अक़ताब हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह.] कुतबे आफाक़ हैं। शेख अलल इतलाक़ हैं। क़ुतबुल मशाइख़ बिल इत्तिफ़ाक़ हैं।

आप क़िब्लए अहले यक़ीन हैं। कुदवए वासिलीन हैं। मतलए अनवार रब्बिलआलमीन हैं। सनदुल वासिलीन हैं। दलीलुस्सालकीन हैं।

आप ख़ान्दाने चिश्त के चश्म व चिराग़ हैं।

ख़्वाजए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन हसन चिश्ती सन्जरीरह. के दिलबर हैं। बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर के रहबर हैं।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया[रह.], हज़रत अलाउद्दीन साबिर[रह.] हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी[रह.] और हज़रत बन्दा नवाज गेसू दराज़[रह.] के रुहानी पेश्वा हैं।

आप अपने वतन को छोड़कर हिन्दुस्तान तशरीफ लाए और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत और सोहबत को अपने लिये बाइसे बरकत समझा। उस सोहबत और ख़िदमत का आपको यह सिला मिला कि आप

को ख़्वाजा गरीब नवाज के जांनशीन, ख़लीफ़ा अकबर और सज्जादा नशीन होने का फ़ख्र हासिल है। ख़्वाजा गरीब नवाज ने देहली की विलायत आप के सुपुर्द फ़रमाई।

ख़्वाजाए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती सन्जरी[रह.] ने नूर व मारफ़त और हक़ व सदाक़त की जो शमा अजमेर में रोशन की उस शमा को हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह.] ने न तो तुन्द व तेज हवाओं से बुझने दिया और न उसकी रोशनी को कम होने दिया। आप के बाद आप के जांनशीन हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर[रह.] और उनके जांनशीनान ने उस शमा की रोशनी को बरक़रार रखा। यह शमा आज भी पूरी ताबानी के साथ रौशन है। इस शमा के परवाने हर शहर और हर गाँव में मिलेंगे।

ख़्वाजगाने चिश्त को हिन्दुस्तान में जो मक़बूलियत हासिल हुई उस पर चिश्तीया ख़ानदान के अफ़राद जितना भी फ़ख्र करें कम है। ख़्वाजगाने चिश्त ने अपनी गुफ़्तार और किरदार से एक ऐसा इन्क़लाब पैदार किया कि जिस का असर हिन्दुस्तानी तहज़ीब व तमद्दुन उफकार व ख़्यालात इल्म व अदब, शेर व शायरी, ग़र्ज़ जिन्दगी के हर शोबा पर ऐसा गहरा पड़ा कि उसके आसार और ख़द्दो ख़ाल आज भी नुमायां हैं।

क़राबत दरियाँ

क़ुतबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह.] सादाते हुसैनी से हैं। आप सैयदना हज़रत इमाम हुसैन[रज़ि.] की औलाद अम्जाद में से हैं।

नसब नामा पिदरी

आप के शजराए नसब में क़ाफी इख़्तिलाफ है।[1] आप के शजराए नसब हसबे ज़ेल है।[2]

ख़्वाजा कुतुबद्दीन बिन सैयद मूसा बिन कमालुद्दीन बिन सैयद अहमद बिन सैयद मुहम्मद बिन सैयद अहमद बिन इसहाक़ हसन बिन

1 इख़्तिलाफ़ की तफसीलात "जवाहर फरीदी", "सियरुल अक़ताब", "ख़ज़ीनतुल असाफिया", "मनाक़िबुल महबूबैन" और "मरातुलअनसाब" में दर्ज हैं। 2 मरातुल अनसाब।

सैयद मारुफ बिन सैयद अहमद बिन रज़ियुद्दीन बिन सैयद हिसामुद्दीन बिन सैयद रशीदुद्दीन बिन सैयद अब्दुल्लाह जाफर मारुफ बिन अली बिन अली अलनकी बिन सैयदना नक़ीयुलजवाद अबु जाफर बिन सैयदना अली रज़ा बिन सैयदना मूसा क़ाज़िम बिन सैयदना जाफर सादिक़ बिन सैयदना अबु जाफर बिन सैयदना मुहम्मद बाक़र बिन सैयदना अली औसत इमाम ज़ैनुलआबदीन बिन सैयदना इमाम हुसैन बिन सैयदना हमामउल औलिया हज़रत अली कुर्रमुल्लाह वजहु।

आप का शजरए बमूजिब "सियरुल अक़ताब" ज़ेल में दिया जाता है[1]।

हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह.] बिन सैयद मूसा बिन सैयद अहमद बिन सैयद कमालुद्दीन बिन सैयद मुहम्मद बिन सैयद अहमद बिन सैयद इसहाक़ हुसैन बिन सैयदुल मारुफ़ बिन सैयद अहमद चिश्ती बिन सैयद रज़ीयुद्दीन बिन सैयद हिसामुद्दीन बिन सैयद रशीदुद्दीन बिन सैयद जाफर बिन अमीरुलमोमिनीन हज़रत इमाम मुहम्मद नक़ीयुलजवाद बिन-अमीरुलमोमिनीन हज़रत इमाम अली मूसा रज़ा बिन हज़रत इमाम मूसा काज़िम-बिन सैयदना जाफर सादिक़ बिन सैयदना अबु जाफ़र बिन सैयदना मुहम्मद बाकर बिन सैयदना अली औसत इमाम ज़ैनुल आबिदीन बिन सैयदना इमाम हुसैन बिन सैयदना इमाम औलिया हज़रत अली कर्रमुल्लाह वजहु।

वलादते शरीफ़

आप की विलादत मुबारक मुज़दए जांफरा है। अमन व अमान का पैग़ाम है। रुहानी इंबिसात का पेश ख़ेमा है। मख़लूक़ के लिए बाइसे बरकत है। जब आप शिकमे मादर ही में थे उसी वक्त से आप की बुज़ुर्गी और अज़मत के आसार नुमायां हो गए थे–आपकी वालिदए मुहतरमा फ़रमाती है कि:

"दौराने हमल जब मैं तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने के लिए उठती तो मेरे शिकम मे से ज़िक्र (अल्लाह अल्लाह) की आवाज़ सुनने में आती। यह आवाज़ एक साअत तक रहती थी।"

1. सियरुल अक़ताब

आधी रात के वक़्त आप इस आलमे फ़ानी में जलवा गर हुये। नूर ने आप के सारे घर को रोशन कर दिया। नूर की रोशनी से आप की वालिदाए मुहतरमा को ख़्याल हुआ कि सूरज निकल आया है। आप की वालिदए मुहतरमा हैरान थीं। आप की वालिदए मुहतरमा ने देखा कि हज़रत क़ुतुब साहब का सरे मुबारक सज्दे में हैं और आप ज़ुबान फ़ैज़ तर्जुमान से अल्लाह अल्लाह फ़रमा रहे हैं। थोड़ी देर बाद हज़रत क़ुतुब साहब ने सर सज्दे से उठाया। वह नूर कम होता गया।

गैब की आवाज़ आई:

ई नूर कि दीदी सिर्रे बूदअरज़ असरारे इलाही कि अकनूं दर दिल फ़र्ज़न्दते नहादीम[1]।

तर्जुमा

यह नूर जो तूने देखा है, असरारे इलाही में से एक सर है। जिसको अब हमने तेरे फ़र्ज़न्द के दिल में मुतमक्किन कर दिया है–

आप की जाए पैदाइश अविश है। उस अविश को बग़दाद के मुज़ाफ़ात में बताया गया है[2] उस अविश को फारस में भी बताया गया है[3] बाज़ ने अविश को क़सयाते मावराउन्नहर में लिखा है[4] और बाज ने विलायते फ़रग़ाना में तवाबे अन्द जान लिखा है[5]। शाहज़ादा दाराशिकोह ने आप की जाए पैदाइश अविश विलायत फ़र्ग़ाना में तवाबे अन्द जान लिखा है।

"............व मौलदु वासिले ईशां अज़ अविश फ़र्ग़ाना अस्त व आं क़सबा ईस्त अज़ तवाबे इन्द जान.."

तर्जुमा-

और जाए पैदाइश और खानदानी तअल्लुक़ फ़र्ग़ाना (विलायत फ़र्ग़ाना में) से है। और वह क़सबा है तवाबे इन्द जान..................''

---

1 सियरुल अक़ताब– 2 सूलते अफ़ग़ानी सफा 693– 3 मरक़ए ख्वाजगान सफ़ा.66– 4 सियरुल आरफ़ीन सालिकीन। 5 मसालि उलसालिकीन

सन: विलादत

आप की तारीख पैदाइश के मुतअल्लिक काफी इख्तिलाफ है[1]। आप का सन: विलादत सन: 596 हिजरी है।

नाम नामी

आप का नाम क़ुतबुद्दीन है। बाज़ का ख़्याल है कि आप का नाम बख़्तियार है और क़ुतबुद्दीन क़ुदरत का अता किया हुआ ख़िताब है[2]।

दरअसल आप के बख़्तियार कहलाने की वजह यह है कि आप के पीर व मुर्शिद ख़्वाजए ख़्वाजगान ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती[रह.] आप को बख़्तियार कह कर पुकारते थे। इसी वजह से आप बख़्तियार कहलाने लगे[3]।

आप हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन हसन चिश्ती[रह.] से बैअत हैं। चूंकि आप खानदाने चिश्त में बैअत हैं, इस लिये आप भी चिश्ती कहलाते हैं।

ख़िताब

आप के पीर मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन हसन चिश्ती[रह.] ने आप को क़ुतबुल अक़ताब के ख़िताब से सरफ़राज़ फ़रमाया।

लक़ब

आप का लक़ब क़ाकी है।

आप के क़ाकी कहलाने के चन्द वजूहात हैं। जब कुतबुलअक़ताब हजरत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन काकी[रह.] ने दिल्ली में रहना शुरु किया तो आप ने ज़ाहरी असबाब से क़ता तअल्लुक कर लिया। आप मा मुतअल्लिक़ीन निहायत उसरत से गुज़ारा करते थे।

हज़रत क़ुतुब साहब आलमे इस्तिग़राक़ में रहते थे। आप की अहलीया मुहतरमा खाने पीने का इन्तिज़ाम फ़रमाती थीं। एक बक़ाल जिसका नाम शर्फुद्दीन था, आप के पड़ोस में रहता था। हज़रत क़ुतुब

---

1 सफ़ीनतुल औलिया अज़ शहज़ादा दारुश्शिकव सफ़ा 94– 2. सूलते अफ़ग़ानी में आप सन: विलादत 585 हिजरी दर्ज है।
3 सियरुल अकताव 4 मरातुल असरार रौज़तुलअक ताव सफ़ा 20

साहब की अहलीया मोहतरमा इस बक़्क़ाल की बीवी से कर्ज़ लेकर गुज़ारा करती थीं और कुछ आने पर उसका कर्ज़ अदा कर देती थीं ये सिलसिला चलता रहा एक दिन उस बक़्क़ाल की बीवी ने आपको ताना दिया और कहा "अगर वो कर्ज़ न दे तो उनका काम कैसे चले। ये बात हज़रत क़ुतुब साहब की अहलीया मोहतरमा को नागवार हुई। आप ने उससे क़र्ज़ लेना बन्द कर दिया, जब यह बात हज़रत क़ुतुब साहब के इल्म में आई तो आप ने हिदायत फ़रमाई कि क़र्ज़ न लिया जाए, बल्कि ज़रुरत के वक़्त बक़दरे ज़रुरत बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कह कर हुजरा की ताक़ से रोटियाँ उठा ली जाया करें। आपकी अहलीया मुहतरमा ऐसा ही करतीं। एक दिन आप ने बक़ाल की बीवी को उस बात से आगाह कर दिया उसदिन से काक निकलना बन्द हो गये'।

दाराशिकोह आप के काकी कहलाने की वजह के मुतअल्लिक लिखते हैं:[2]

> "................................ व काकी अजां जुहत गोयन्द कि चूंदर देहली मुतवत्तिन शुदा अन्द व फुतूह अज़कस क़ुतुब नमी फ़रमोदन्द व ख़ुद हमेशा मुस्तग़रक़ मी बूदन्द व बर फ़र्ज़न्दाने ईशां बूद अज़ फ़ाक़ा जुज़्वी क़र्ज़ नमूदां औक़ात गुज़ारी ख़ुद मी नमूदन्द।
>
> रोज़े जन आं गुफ्त अगर मन दर हमसायगी शुमा नमी बूदम कारे शुमा बहलाकत मी रसीद। ईं सुख़न बतबीयत ईशां गिरा आमद। अहदे कर्दन्द। कि अज़ व कर्ज़ नगीरन्द। ईं कज़िया रा बिगर्ज़ बख़्वाजा रसानीदन्द फ़र्मोदन्द कि हरगिज़ मन अज़ किसे क़र्ज़ नमी गीरम व दर वक़्त हाजत बताक़ी कि दर हुजरए मास्त दस्त अन्दाख़्ता बक़दरे हाजत नाने पुख़्ता बर्दारन्द व सर्फ़ ख़ुद कुनन्द व बहर कि ख़्वाहिन्द ब देहन्द बादे अज़ां हर गाह कि मीं ख़्वासतन्द अज़ां ताक़ मी गिरफ्तन्द व ईं नान रा काक मी गोयन्द"

तर्जुमा– .... और काकी इस वजह से कहते हैं कि जब दिल्ली में

---

1. सियरुल आरफ़ीन। 2. सफ़ीनतुल औलिया सफ़ा 94,95

सुकूनत अख़्तियार की, आप फ़ुतूहात किसी से क़ुबूल न फ़रमाते थे और हमेशा इसतिग़राक में रहते थ, और आप के लड़कों (मुतअल्लिक़ीन) की उसरत से गुज़र औक़ात होती थी। वह एक बक़ाल की बीवी से कि वह उन के पड़ोस में रहती थी, फ़ाक़ा होने पर कुछ क़र्ज़ ले लेते थे, और उस से अपना वक्त गुज़ारते थे। एक रोज़ उस बक़ाल की बीवी ने कहा, अगर मैं तुम्हारे पड़ोस में न होती तो तुम्हारा बहुत बुरा हाल हुआ होता। यह बात उनको नागवार गुज़री उन्होंने अहद किया कि उस से क़र्ज़ न लेंगे। एक दिन यह वाक़िया ख़्वाजा (ख़्वाजा क़ुतुब साहब) के गोशे गुज़ार हुआ। आप ने फ़रमाया कि मैं कभी किसी से क़र्ज़ नहीं लेता हूँ। ज़रुरत के वक्त उस ताक़ में जो हमारे हुजरे में है हाथ डाल कर ज़रुरत के मुताबिक़ पकी हुई रोटियाँ निकाल ली और ख़ुद सर्फ़ कीं, और जिस को चाहीं दीं। उस के बाद चाहते उस ताक़ से रोटी निकालते। उन रोटियों को काक कहते हैं।"

आप को काकी कहने की एक दूसरी वजह भी बताई जाती है। एक दिन हज़रत अमीर ख़ुसरु ने हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया^{रह} से दरियाफ़त क़िया कि क़ुतबुलअक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन^{रह} को काकी क्यों कहते हैं।

सुलतानुलमशाइख़ ने जवाब दिया–

"एक दिन आप मा अहबाब हौज़ शमसी पर तशरीफ़ फ़रमा थे। हवा सर्द चल रही थी। यारों ने अर्ज़ क़िया कि अगर इस वक्त कहाए गरम मिलते तो ख़ूब होता। आप यह सुन कर पानी में तशरीफ़ ले गये, और काकहाए गरम पानी से निकाल कर यारों को अता फ़रमाने लगे। उस रोज़ से आप काकी मशहूर हुये[1]।"

इब्तिदाई ज़िन्दगी

आपे अपने वालिदैन के साए आतिफ़त पा रहे थे कि आप के वालिद और वालिदा आप पर नाज़ां थे। घर की बरकत को वह अपने

1. रोज़ातुउल अक़ताब.18

शीरख़्वार बच्चे से मन्सूब करते थे।

ज़िन्दगी का पहला सदमा

अभी हज़रत क़ुतुब साहब की उम्र मुबारक डेढ साल की थी कि वालिद का साया आपके सर से उठ गया।

आप की परवरिश

अब आप की परवरिश का पूरा बार आपकी वालिदए मुहतरमा पर था। उन्होंने आपकी तालीम व तरबीयत को एक मुक़द्दस फ़रीज़ा समझा। आप की इब्तिदाई तालीम वालिदा की आग़ोश में हुई।

बिस्मिल्लाह ख़्वानी ११७७ ई. ५७३ हि.

जब हज़रत क़ुतुब साहब की उम्र चार साल चार माह और चार दिन की हुई तो आप की वालिदा को आप की बिस्मिल्लाह ख़्वानी की फिक्र दामन गीर हुई। इत्तिफाक़से उन ही अय्याम में हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन हसन चिश्ती[रह.] अविश में मुक़ीम थे। आप सेर व सियाहत करते हुए अविश आये हुए थे। आप की बर्गुज़ीदगी का शुहरा सारे अविश में था। हज़रत क़ुतुब साहब की वालिदए माजिदा ने हज़रत ख़्वाजा गरीब नवाज़ का अविश में क़्याम अपने और अपने लड़के हज़रत क़ुतुब साहब के लिये फाले नेक समझा। आप ने तय किया कि ख़्वाजा गरीब नवाज जैसे जलीलुलक़दर बुजुर्ग से वह अपने लड़के की बिस्मिल्लाह ख़्वानी की गर्ज़ से भेजा।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज ने हज़रत क़ुतुब की तख़्ती लिखना चाही। गैब से आवाज आई कि :

"ऐ ख़्वाजा! अभी लिखने में तवक्कुफ करो। क़ाज़ी हमीमुद्दीन नागौरी आता है। वह हमारे क़ुतुब की तख़्ती लिखेगा और तालीम देगा।"

यह आवाज़ सुन कर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रुक गये।

इतने में क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी आ गये। ख़्वाजा ग़रीब नवाज ने तख़्ती उनको दे दी। क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी ने हज़रत क़ुतुब साहब से दरियाफत किया कि:

"तख़्ती पर क्या लिखें ?"

हज़रत क़ुतुब साहब ने जवाब दिया।

سُبْحَانَ الَّذِیْ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ لَیْلاً مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी यह सुन कर सख़्त मुतहैयर हुए। आप ने दरियाफत किया!

यह तो पन्द्रहवें सीपारह में है तुमने क़ुरआन मजीद किस से पढ़ा।

हज़रत क़ुतूब साहब ने जवाब दिया।

"मेरी वालिदा माजिदा को पन्द्रह सीपारे याद हैं। वह मैंने शिकमे मादर में हक़ ताला की तालीम से याद कर लिये।"

यह सुन कर क़ाज़ी साहब ने तख़्ती पर लिखाः

سُبْحَانَ الَّذِیْ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ لَیْلاً اِلٰی آخِرِ السُّوْرَۃ

आप ने क़ुतुब साहब को चार दिन में क़ुरआन शरीफ याद करा दिया।

मक़तब में दाख़िला

जब हज़रत क़ुतुब साहब की उम्र पाँच साल की हुई तो आप की वालिदा मुहतरमा ने आपको मक़तब में दाख़िल कराना चाहा। यह एक ख़ुशी का मौका था। इस ख़ुशी में आप की वालिदा मुहतरमा ने दावत की, कुछ मिठाई और कुछ रुपया दे कर हज़रत क़ुतुब साहब को एक ख़ादिम के साथ मुहल्ला के मक़तब में भेजा। जब आप खादिम के साथ मकतब जा रहे थे तो रास्ते में एक बुज़ुर्ग मिले। उन बुज़ुर्ग ने ख़ादिम से दरियाफ़्त फ़रमायाः

"इस सईदे अज़ली को कहाँ ले जाते हो?"

ख़ादिम ने जवाब दियाः

"मुहल्ला के मुअल्लिम के पास लिये जा रहा हूँ।"

यह सुनकर उन बुज़ुर्ग ने ज़ोर देते हुए कहाः

"इसको मौलाना अबु हफ़स के पास ले जाना चाहिये कि वह कामिल हैं और इस लड़के की तालीम उनसे इलाक़ा रखती है।"

इन बुज़ुर्ग की राय के मवाफ़िक़ आप बजाए महल्ला के मुअल्लिम के मौलाना अबा हफ़स की ख़िदमत में पहुंचे, जब आप वहाँ पहुँचे तो उन बुज़ुर्ग ने मौलाना अबा हफ़स से कहाः

"इस बच्चे की तालीम अच्छी तरह से करो कि इस से बहुत काम लेने हैं–"

हज़रत क़ुतुब साहब को मौलाना अबा हफ़स के पास सुपुर्द करके वह बुजफ़र्ग चले गये। उन के जाने के बाद मौलाना अबा हफ़स ने ख़ादिम से पूछा!

"क्या तू जानता है यह बुज़ुर्ग कौन थे?"

ख़ादिम ने जवाब दियाः

"मुझे मालूम नहीं।"

मौलाना अबा हफ़स ने बताया!

"यह हज़रत ख़िजर अलैहिस्सलाम थे[1]।"

तलाशे हक़

क़ुतुबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा साहब ने तलाश हक़ के जज़्बे से मुतअस्सिर होकर अपने वतन को छोड़ा। आप एक शहर में पहुँचे, उस शहर में कुछ दिन क़याम किया, आबादी से कुछ फ़ासिला पर एक मस्जिद थी। मस्जिद के सहन में एक ऊँचा मीनार था।

हज़रत क़ुतुब साहब को एक ऐसी दुआ मालूम थी कि अगर उस दुआ को पिछली रात के बाद अदाए दोगाना मीनार पर पढ़ा जाए तो दुआ के पढ़ने वाले को हज़रत ख़िजर अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात नसीब हो, आप ने इस मौक़ा को ग़नीमत समझा, दोगाना अदा किया। फिर वह दुआ पढ़ी। मीनारा से नीचे उतरे और हज़रत ख़िजर अलैहिस्सलाम का इन्तिज़ार करने लगे। मस्जिद में कोई शख़्स नज़र न आया। आप मस्जिद से बाहर आ गये। एक बुज़ुर्ग को देखा। उन बुज़ुर्ग ने हज़रत क़ुतुब साहब से दरियाफ़्त किया।

1. फ़रिश्ता जिल्द दोयम (हालात क़ुतुब साहब) सूलते अफ़गानी सफ़ा 39 सैरूल आरफ़ीन सफ़ा 17

"तु इस सुनसान मैदान में तने तन्हा क्या कर रहा है?"

हज़रत क़ुतुब साहब ने हज़रत ख़िज़र[अ.] से मिलने का शौक़ और आप से मिलने के लिए दुआ पढ़ने का हाल बताया।

यह सुन कर उन बुज़ुर्ग ने पूछा:

"क्या तू दुनिया चाहता है!"

हज़रत क़ुतुब साहब ने जवाब दिया:

"नहीं!"

फिर उन बुज़ुर्ग ने दरियाफ़्त किया:

"क्या तू किसी का कर्ज़दार है?"

हज़रत क़ुतुब साहब ने जवाब दिया:

"नहीं!"

उन बुज़ुर्ग ने ज़ोर देते हुए कहा:

"फिर तू ख़िजर को क्यों तलाश करता है। वह तो खुद मिस्ले तेरे सरगरदां है। चुनांचे इस शहर में एक बुजुर्ग हक़ ताला के साथ मशगूल हैं उसने उन से (हज़रत ख़िजर[अ.]से) मिलने की सात बार ख़्वाहिश की मगर मयस्सर न हुई।"

गुफ़्तगू हो रही थी कि एक और बुजुर्ग मस्जिद से बाहर आये और पहले बुजुर्ग के क़रीब खड़े हो गये। उन बुजुर्ग ने हज़रत क़ुतुब साहब का हाथ पकड़ा और पहले बुजुर्ग से कहने लगे:

"यह न दुनिया चाहता है न किसी का क़र्ज़दार है, यह तो सिर्फ़ आप की मुलाक़ात का मुतमन्नी है।"

क़ुतुब साहब ने जब यह सुना तो आप को खुशी हुई। आप समझ गये कि पहले बुजुर्ग हज़रत ख़िजर अलैहिस्सलाम हैं और दूसरे बुजुर्ग रिजालुलग़ैब में से है। इतने में क्या देखते हैं कि दोनों बुजफ़र्ग ग़ायब हो गये[1]।

---

1 सैरूल आरफीन सियरुल औलिया।

बैअत ११८६ ई./५८२ हि.

हज़रत ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी** मुरीद होना चाहते थे। हज़रत शेख़ महमूद अस्फ़हानी एक दुर्वेश कामिल थे। हज़रत क़ुतुब साहब को आप से गहरा तअल्लुक और अक़ीदत थी, क़ुतुब साहब उन से बैअत करना चाहते थे लेकिन होता तो वह है जो मन्जूरे ख़ुदा होता है—उन्हीं दिनों मे ख़्वाजाए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन चिश्ती सन्जरी बसिलसिले सेर व सियाहत अस्फ़हान पहुँचे हज़रत क़ुतुब साहब को जब यह मालूम हुआ कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अस्फ़हान में तशरीफ फरमा हैं तो आपको उनसे मिलने की ख्वाहिश हुई आप उनकी ख़िदमते बाबरकत में हाज़िर हुए। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ उस वक्त दो ताई[1] ओढ़े हुए थे। वह दोताई आप ने हज़रत क़ुतुब को मर्हमत फरमाई[2] दोताई देने के माना यह हुए कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हज़रत क़ुतुब साहब को शर्फ़े मुरीदी बख़्शा। हज़रत क़ुतुब साहब को ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की जुदाई गवारा न थी। आप उनके हमराह रहने लगे। सफ़र में भी ख़्वाजा ग़रीब नवाज के हमराह रहते[3]

पीर व मुर्शिद के साथ सफ़र

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने रख़्ते सफ़र बांधा। आप अस्फ़हान से खाने काबा की ज़ियारत के लिए रवाना हुए क़ुतुब साहब आप के हमराह थे—उस सफ़र के हालात के मुतअल्लिक हज़रत क़ुतुब साहब फ़रमाते हैं कि:

"जब दुआगो (क़ुतुब साहब) ख़्वाजा मईनुद्दीन** के साथ काबा के सफ़र में था। एक दिन सुबह की नमाज़ के बाद रवाना होकर हम एक शहर में पहुंचे। यहाँ एक बुजुर्ग एक ग़ार में मिसले सूखी लकड़ी के अपनी आँखें हवा में खोले आलमे हैरत में खड़े थे। एक माह तक हम उनके पास रहे। उस अरसे में वह सिर्फ एक मर्तबा आलमे सहू में आये। हम ने उठ कर सलाम किया।"

उन्होंने जवाब दिया और फ़रमाया:

"ऐ अजीज़ तुम्हें मेरे इस हाल से सदमा हुआ, मगर तुम्हारे इस

1. दो तहो, 2. सैरूल आरफ़ीन सफ़ा 7,
3. मुईन उल हिन्द—डाक्टर ज़हूरूलहसन शारिब सफ़ा 66

मलाल से मक़ाफत में बख़्शिश होगी। क्योंकि अहले सफ़ा फ़रमाते हैं कि जो दुर्वेश की ख़िदमत करता है वह मक़बूज होता है।"

अलग़र्ज़ उन्होंने बैठने के लिए फ़रमाया। हम बैठ गए, फिर फरमाने लगे:

"मैं शेख मुहम्मद असलम तर्वी का फर्ज़न्द हूँ। तीस साल से आलमे तहय्यर में मुस्तग़रक़ हूँ न मुझे दिन की ख़बर है, न रात की, ख़ुदाए ताला तुम्हारी वजह से आज मुझे आलमे सहू में लाया है। तुम्हें दोबारा आने से तक़लीफ़ होगी। मगर यह बात इस फ़क़ीर की याद रखना कि जब तुम ने तरीक़त में क़दम रखा है तो हवाये नफ़्स से दुनिया की तरफ़ मुतवज्जेह न होना। ख़िल्क़त से अज़्लत रखना। जो कुछ मिले उसे सर्फ़ कर देना। उसमें से कुछ न बचाना। क्योंकि ज़खीरा जमा करना शोमी है। सिवाये हक़ ताला के मशग़ूल न होना ताकि ख़स्ता न हो।"

वह बुज़ुर्ग यह नसीहत करके फिर आलमे तहय्यर में मशगूल हो गये।

हरमैन शरीफ़ की ज़ियारत ११८७ ई०/५८३ हि०

हज़रत क़ुतुब साहब 583 हि. में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के साथ मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचे। ज़ियारते काबा से मुशर्रफ़ हुये।

बग़दाद में आमद 1189 ई./585 हि.

मदीना मनव्वरह से ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मा हज़रत क़ुतुब साहब बगदाद शरीफ पहुंचे। बग़दाद पहुंचकर आपने वहाँ कुछ दिन आराम किया–

ख़िलाफत

हज़रत क़ुतुब साहब की बैअते ख़िलाफ़त से मुशर्रफ होने की तफ़सील हसबे ज़ेल है:[1]

ख़्वाजए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन हसन चिश्ती ने चालीस रोज़ मुतवातिर सरवरे काइनात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मा अरवाहे मशाइख़ीने किराम ख़्वाब में यह इर्शाद फ़रमाते हुए देखा:

1. सैरूल अक़ताब सफ़ा 145, सबा सनाबल सफ़ा 220,221, सैरूल आरफ़ीन सफ़ा 142

"ऐ मईनुद्दीन! क़ुतबुद्दीन ख़ुदा का दोस्त है। इसको ख़िलाफ़त दे और ख़िर्क़ए गलीम पहना।"

एक दिन ख़्वाजा ग़रीब नवाज ने फ़रमाया:

"आज रात मैंने हज़रत ज़ुलजलाल क़ादिर बा कमाल को ख़्वाब में देखा। वहाँ यह भी हुक्म हुआ कि:

ऐ मईनुद्दीन! क़ुतबुद्दीन काकी को दुर्वेशी का ख़िर्क़ा और ख़िलाफ़त अता कर। क्योंकि कुतबुद्दीम हमारा दोस्त है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भी दोस्त है। हमने उसे बर्गुज़ीदा बन्दा बना दिया है और उसका नाम अपने दोस्तों मे दर्ज किया है।"

पस ख़्वाजा ग़रीब नवाज ने 585 हि॰ हज़रत क़ुतुब साहब को ख़्वाजा अबुल्लैस समरकन्दी की मस्जिद में बैअते ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ फ़रमाया।

उस मौक़े पर हज़रत शेख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी, शेख़ दाऊद किरमानी, शेख़ बुर्हानुद्दीन मुहम्मद चिश्ती और शेख ताजुद्दीन मुहम्मद अस्फ़हानी मौजूद थे।

शजरे तरीक़त

हज़रत क़ुतुब साहब का शजरे तरीक़त हसबे ज़ेल है:[1]

कुतबुद्दीन दहूमन, ख़्वाजा मईनुद्दीन हसन सन्जरी दहूमन ख़्वाजा उस्मान हारुनी चिश्ती दहूमन हज़रत हाजी शरीफ़ जिन्दगी दहूमन हज़रत कुतबुद्दीन मौदूद चिश्ती दहूमन हज़रत ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबु यूसुफ़ चिश्ती दहूमन हज़रत ख़्वाजा शमशाद अलवी देनूरी दहूमन हज़रत शेख़ अमीनुद्दीन हबीरतुल बसरी हसन अबु मुहम्मद चिश्ती दहूमन हज़रत ख़्वाजा अबु अहमद अब्दाल चिश्ती दहूमन हज़रत ख़्वाजा अबु इस्हाक़ चिश्ती दहूमन हज़रत ख़्वाजा सदीदुद्दीन हदिफ़तुलमुराशी दहूमन हज़रत सुलतान इब्राहीम बिन अदहम बल्ख़ी दहूमन हज़रत अबु फुज़ैल बिन अयाज दहूमन ख़्वाजा अब्दुलवाहिद बिन ज़ैद व दहूमन हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी व दहूमन इमामुल औलिया सैयदना हज़रत अली कर्रमुल्लाह वजहहु।

1. सालिक उल सालकीन जिल्द दोम सफ़ा 197 सैर उल अक़ताब.

बग़दाद से रवानगी

अख़िरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने कूच किया—आप 586 हि. मुताबिक 1190 ई. बग़दाद से रवाना हुए। हज़रत क़ुतुब साहब अपने पीर व मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज के हमराह थे। बग़दाद से रवाना होकर ख़्वाजा नवाज़ मा हज़रत क़ुतुब साहब चिश्त में रौनक अफ़रोज़ हुए बाद अज़ान ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मा हज़रत क़ुतुब साहब हरात पहुंचे[1]।

हरात से ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और हज़रत क़ुतुब साहिब सब्ज़ा वार में रौनक अफ़रोज़ हुए[2]

सब्ज़ा वार में कुछ दिन .क्याम करके हज़रत क़ुतुब साहब ब हमराही ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ लाहौर पहुंचे। लाहौर से आप और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सुमाना होते हुए दिल्ली से गुज़रे। दिल्ली से रवाना होकर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और हज़रत क़ुतुब साहब अजमेर पहुंचे। उस सफ़र के मुतअल्लिक हज़रत क़ुतुब साहब फरमाते है कि[3]:

"लाहौर से रवाना होकर 587 हि. में दो माह सफ़र में रहने के बाद वारिद अज़मेर हुए..................."

बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर की बारियाबी

कुछ दिन अज़मेर में .क्याम करने के बाद ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ग़ज़नी तशरीफ ले गए। आप के मुरीदीन व मोतक़िदीन भी आप के हमराह हो लिये। हज़रत क़ुतुब साहब को अपनी वालिदए मुहतरमा से रुख़सत हुए काफ़ी अरसा हो गया था। आप अविश तशरीफ ले गये। जब ख़्वाजा गरीब नवाज़ वापस अजमेर तशरीफ ले आये तो हज़रत क़ुतुब साहब भी हिन्दुस्तान रवाना हुए आप 1194 ई./590 हि. में मुल्तान में रौनक अफ़रोज़ हुए थे।

1. सालिक उल सालकीन जिल्द दाकयम सफ़ा 176
2. तज़किरतुल औलियाए हिन्द।, 3. दलील उल आरफ़ीन

उन दिनों मुल्तान इल्म व फुनून का मरकज़ था। बड़े बड़े आलिम यहाँ रहते थे। लोग दूर दराज से तहसीले इल्म की गरज़ से मुल्तान आते थे। हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर तलाशे इल्म में मुल्तान आये। आप ने मौलाना मिन्हाजुद्दीन तिर्मिज़ी की मस्जिद में क़याम किया।

एक दिन का वाक़िया है कि बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रह० क़िब्ला रु बैठे किताब पढ़ रहे थे। उस किताब का नाम "नाफ़े" था। हज़रत क़ुतुब साहब जब मुल्तान में रौनक अफ़रोज हुए तो आप उसी मस्जिद में गए, जहाँ बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर मुताला में मशगूल थे, जूँ ही हज़रत बाबा साहब ने हज़रत क़ुतुब साहब को देखा। आप बेचैन हो गये। हज़रत क़ुतुब साहब के रुए मुबारक पर जो आप की नज़र पड़ी तो आप एक वालिहाना जज़्बे से मुतअस्सिर होकर बे अख़्तियार खडे हो गये। आदाब बजा लाए। ताज़ीम के इज़हार के बाद बाबा साहब एक तरफ़ मूदिबाना बैठ गये।

हज़रत क़ुतुब साहब ने दोगाना तहीयतुल मस्जिद अदा किया। फिर बाबा साहब की तरफ मुख़ातिब हुए:

आप ने बाबा साहब से दरियाफ़्त फरमाया:

"तुम क्या पढ़ते हो?"

बाबा साहब ने मूदिबाना जवाब दिया:

"किताब "नाफ़े" पढ़ता हूँ"।

यह जवाब सुनकर हज़रत क़ुतुब साहब ने ज़बाने फ़ैज़ तर्जुमान से फ़रमाया:

"जानते हो कि नाफ़े से तुम्हे नफ़ा होगा।"

हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर रह० ने निहायत आजिज़ी से अर्ज किया:

"मुझे तो हज़रत की सआदते क़दम बोसी नाफ़े होगी।"

यह कहकर हज़रत बाबा साहब वालिहाना अन्दाज़ में उठे और हज़रत साहब के क़दमों पर अपना सर रख दिया।

हज़रत क़ुतुब साहब की नज़र कीमिया असर अपना काम कर चुकी थी। हज़रत बाबा साहब को अब हज़रत क़ुतुब साहब की जुदाई गवारा न थी। हर वक्त हज़रत क़ुतुब साहब की सोहब में रहने लगे। आप को हज़रत क़ुतुब साहब से बेपनाह अक़ीदत हो गई।

मुल्तान में कुछ दिन .क़याम फ़रमा कर हज़रत क़ुतुब साहब दिल्ली रवाना हो गये। हज़रत बाबा साहब ने भी आप के हमराह दिल्ली जाना चाहा, लेकिन हज़रत क़ुतुब साहब ने हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर की तकमील तालीम पर ज़ोर दिया। हज़रत बाबा साहब तीन मन्ज़िल तक हज़रत क़ुतुब साहब के हमराह आये। वहाँ से रुख़सत होकर मुल्तान शरीफ़ ले गये। मुल्तान से बलख़ व बुख़ारा तशरीफ ले गये।[1] हज़रत क़ुतुब साहब से मिलने को बेचैन थे। दिल्ली पहुंच कर क़ुतुब साहब के दीदार से मुशर्रफ़ हुए।

हज़रत बाबा साहब का बैअत होना 590 हि.

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रह. पहली ही मजलिस में क़ुतबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन काकी रह. के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत हो गये।[2] हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने बवक्ते बैअत हज़रत बाबा साहब की उम्र पन्द्रह साल बताई है[3]।

हज़रत बाबा साहब का दिल्ली में क़याम

बाबा साहब का दिल्ली में कुछ अरसा .क़याम रहा। अपने पीर व मुर्शिद हज़रत क़ुतुब साहब का हुक्म पाकर आप क़ंधार रवाना हो गये। वहाँ आप ने इल्म ज़ाहिरी हासिल करने में इन्तिहाई मेहनत की। वहां से आप बाद तहसीले इल्म ज़ाहिरी इराक, ख़रासान, मावरा अलनहर, मक्का मुअज़्ज़ाम व मदीना मनव्वरह होते हुए और मशाइख़ीने अज़्ज़ाम से मिलते

1. राहतुल कलूब, 2. इक़तिबासुल अनवार और सीरुल औलिया में आप के बैअत से मुशर्रफ होने का साल 590 हि. दर्ज है। 3. सैर उल औलिया सफा 60,61 सैर अकताब सफा 164

और रुहानी फुयूज़ हासिल करते हुए अपने पीर व मुर्शिद हज़रत क़ुतुब साहब की ख़िदमत व बरकत में हाज़िर हुए।

हज़रत क़ुतुब साहब को बाबा साहब की आमद से बेहद खुशी हुई। बाबा साहब ग़ज़नी के क़रीब एक हुजरा में रहने लगे। आप अपने पीर व मुर्शिद हज़रत क़ुतुब साहब के फ़रमान के मुताबिक़ इबादात, रियाज़ात और मुजाहिदात में लगे रहते। उस ज़माने में आप ने सख़्त से सख़्त रियाज़ते कीं। आप अपने पीर व मुर्शिदकी ख़िदमत में रोज़ाना हाज़िर नहीं होते थे बल्कि दो हफ़्ता के बाद अपने पीर व मुर्शिद के जमाले पुर अनवर से मुशर्रफ होते थे[1]।

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर[रह.] अभी रियाज़ात व मुजाहिदात में मशगूल थे कि अजमेर से हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ देहली तशरीफ लाए और हज़रत क़ुतुब साहब की ख़ानक़ाह में क़याम फ़रमाया। ख़्वाजा ग़रीब नवाज का दिल्ली में क़याम दिल्ली वालों के लिए बाइसे बरकत था। अब रुहानी फ़ैज़ का चश्मा उनसे क़रीब था। इरफ़ान की बारिश हो रही थी। हर क़िस्म की दौलत तक़सीम हो रही थी। हर शख़स चाहता था कि अपना दामने मुराद भर ले। हर एक की क़िस्मत थी और उसका दामन था।

हज़रत क़ुतुब साहब के हिस्से में वह नेमत आई कि जिस पर जितना भी फ़ख़्र किया जाए कम है। हज़रत क़ुतुब साहब ने अपने मुरीदों को ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हुजूर में पेश किया। हर एक अपनी क़ाबिलीयत और इस्तिताअत के मुताबिक ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से फैज़याब हुआ। जब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ जी भर के इरफ़ान की दौलत लुटा चुके तो आप ने ख़ुद ही हज़रत क़ुतुब साहब से दरियाफ़्त फ़रमाया:

"तुम्हारे मुरीदों में से क्या कोई नेमत पाने से रह गया है?"

क़ुतुब साहब ने अर्ज़ किया:

"मसऊद (बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर[रह.]) रह गया है। वह चिल्ला में बैठा है।"

1. सालिक उल साकीन–फरिश्ता

यह सुन कर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ खड़े हो गये और क़ुतुब साहब से मुख़ातिब होकर आप ने फ़रमाया:

"आओ उसे देखें।"

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और हज़रत क़ुतुब साहब उस मक़ाम पर तशरीफ ले गये जहाँ हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर^{रह.} चिल्ला में बैठे हुए थे। वहाँ पहुँचकर चिल्ला का दरवाज़ा खोला वहाँ बाबा साहब बैठे हुए थे। आप इतने कमज़ोर हो गये थे कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और हज़रत क़ुतुब की ताज़ीम के वास्ते खड़े न हो सके। बा चश्म पुर आब सर न्याज़ ज़मीन पर रख दिया।

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर[रह.] का यह हाल देखकर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हज़रत क़ुतुब साहब से फ़रमाया:

"ऐ क़ुतुब! कब तक इस बेचारे को मुजाहिदा में घुलाओगे।

आओ इसे कुछ अता करें।"

यह कहर कर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर[रह.] का दाहिना हाथ पकड़ा। हज़रत क़ुतुब साहब ने बायां बाज़ू पकड़ा इस तरह हर दो बुजफ़र्गो ने बाबा साहब को खड़ा किया। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने आसमान की तरफ़ मुंह करके बारगाहे ईज़दी में बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर[रह.] के वास्ते दुआ फ़रमाई। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अर्ज़ किया:

"ख़ुदाया! हमारे फ़रीद को क़ुबूल फ़रमा और अकमल दुरवेश के मर्तबा पर पहुंचा।"

ग़ैब से निदा आई:

"हमने फ़रीद को क़ुबूल किया। यह वहीदे असर होगा।"

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फिर हज़रत क़ुतुब साहब को इस अमर की ताकीद की और हिदायत फ़रमाई कि:

"इसमे आज़म जो ख़्वाजगा चिश्त में बसीना चला आता है उसे तलकीन करो।" इसमे आज़म की बरकत से, हज़रत बाबा साहब ख़ुदा रसीदा हो गये। आप पर इल्म लदन्नी का इन्कशाफ़ हुआ, और हिजाबात के पर्दे उठ गये।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने बाबा साहब को ख़िलअत से सरफ़राज़ फ़रमाया।

हज़रत बाबा साहब का ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ होना

हज़रत क़ुतुब साहब ने फ़रीदुद्दीन गंज शकर को दस्तार, मिसाल, और ख़िलाफ़त के दीगर लवाज़िमात से नवाज़ा।

बाबा साहब के मुतअल्लिक़ पेशगोई

इस मौक़े पर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हज़रत बाबा साहब के मुतअल्लिक़ पेशगोई फ़रमाई। आप ने हज़रत क़ुतुब साहब को मुख़ातिब करके फ़रमाया:

"क़ुतुब! बड़े शहबाज़ को दाम में लाए—उसका आशियाना सिदरतुल मुन्तहा होगा।"

उस महफिल में सूफ़ियाए किराम, पीराने इज़ाम और मशाइख़ीन वाला एहतराम मौजूद थे। क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी, मौलाना अली किरमानी, सैयद नूरुद्दीन ग़ज़नवी, मौलाना मुबारक, शेख निज़ामुद्दीन अबुलमवाइद, मौलाना शमसुद्दीन तर्क, ख़्वाजा मुहम्मद मूनिया दूज़ और दीगर असहाब मौजूद थे।

एक शायर ने जो इस मुबारक मौक़े पर मौजूद था, फ़िलबदीहा हसबे ज़ेल अशआर पढ़े:

बख़्शिशे कौनैन अज़ शेख़ंन शुद दरयाबे तू
बादशाही यापतन अज़ बादशाहाने जहां
मम्लकत दुनिया व दीं गुश्ता मुस्लिम बरतरा
आलमे कुन गुश्ता अक़ताए तू ऐ शाहे जहां

सफ़रे अविश और वापसी

हज़रत क़ुतुब साहब अपनी वालिदए मुहतरमा की क़दम बोसी की ग़र्ज़ से अविश तशरीफ़ ले गये[1]।

1. सालिक उल सालकीन जिल्द दोयम

अविश से आप बग़दाद तशरीफ़ ले गये। वहाँ आप हज़रत शेख़ शहाबुद्दीन उम्र सहरवरदी और शेख़ अहदुद्दीन किरमानी से मिले। उनके इलावा और भी दीगर मशाइख़ीन किबार से मिले[1]।

बग़दाद में आप को हज़रत जलालुद्दीन तबरेज़ी से मालूम हुआ कि आप के पीर व मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन हसन संजरी^{रह.} ख़रासान से हिन्दुस्तान तशरीफ़ ले गये हैं और दिल्ली में क़याम है।

मुल्तान में आमद १२१४ ई./६११ हि.

जब हज़रत क़ुतुब साहब को यह ख़बर मिली तो आप अपने पीर व मुर्शिद की क़दमबोसी के शौक़ में हिन्दुस्तान रवाना हो गये। शेख़ जलालुद्दीन तबरेजी आप के साथ हो लिये। आप मा शेख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी मुल्तान में रौनक अफ़रोज़ हुए। यह ज़माना सुलतान शमसुद्दीन अल्तमश का था। क़बाचा बेग मुल्तान का हाकिम था। मुल्तान में हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी रुश्द व हिदायत फरमा रहे थे।

क़बाचा बेग की दरख़्वास्त १२१४ ई./६११ हि.

हज़रत क़ुतुब साहब ने दिल्ली का क़सद किया।

क़बाचा बेग आप को मुल्तान में रोकना चाहता था। उसने बसद आजिजी हज़रत क़ुतुब साहब से अर्ज़ किया कि हुज़ूर मुल्तान में सुकूनत अख़्तियार फ़रमायें।

हज़रत क़ुतुब साहब ने उसकी यह दरख़्वास्त मन्जूर न की, आप ने फ़रमाया:

"यह मक़ाम आलमे गैब से शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया के ज़िम्मे लिखा गया है।

अलावा अज़ीं मैं अपने पीर व मुर्शिद ख़्वाजा मईनुद्दीन^{रह.} की इजाज़त के बग़ैर कहीं भी सुकूनत पज़ीर नहीं हो सकता[2]।"

रवानगी १२१४ ई./६११ हि.

हज़रत कुतुब साहब दिल्ली रवाना हो गये। मुल्तान से आप लाहौर पहुंचे, और लाहौर से आप दिल्ली में रौनक अफ़रोज़ हुए। शेख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी यहां से वापस ग़ज़नी तशरीफ़ ले गये।

1. सालिक उल सालकीन जिल्द दोयम फ़रिश्ता जिल्द दोयम।
2. फ़रिश्ता जिल्द दायेम।

मुल्तान में हज़रत क़ुतुब साहब से लोग बैअत करना चाहते थे। लेकिन हज़रत क़ुतुब साहब ने उस वजह से मना फ़रमाया कि मुल्तान को हज़रत शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया की विलायत से इलाक़ा है।

हज़रत क़ुतुब साहब जब मुल्तान से रवाना हुए तो कुछ लोग आपके हमराह हो लिये। आप ने उन लोगों को मुल्तान की हुदूद से बाहर बमुक़ाम हांसी शर्फ़े बैअत से नवाज़ा[1]।

हज़रत काज़ी हमीदुद्दीन नागौरी का ख़्वाब

हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी ने उसी ज़माना में एक ख़्वाब देखा:

आफ़ताब जहां ताब ने दिल्ली में आकर मम्लकत को रोशन कर दिया है और वह उन के घर में आया है और कहता है कि मैं तेरे घर में रहूँगा। जब उस ख़्वाब की ताबीर ली तो मालूम हुआ कि

आफ़ताब से मुराद वली कामिल है जो दिल्ली में रौनक़ अफ़रोज़ होगा और क़ाज़ी साहब के घर में सुकूनत पज़ीर होगा[2]।

दिल्ली में आमद

हज़रत क़ुतुब साहब ने दिल्ली पहुंचकर कीलोकड़ी में क़याम फ़रमाया। आप की जाए क़याम काफ़ी फ़ासिला पर थी लोगों को और ख़ुद बादशाह को वहाँ आने जाने में काफ़ी वक़्त लगता था।

सुलतान की दरख़्वास्त

सुलतान शमसुद्दीन अलतमश ने हज़रत ख़्वाजा क़ुतुब साहब से वह अर्ज़ किया, कि अगर आँ हज़रत कीलोकड़ी के महरौली में रहने लगें तो वह ख़ुद और लोग दूर दराज़ से आने जाने की तकलीफ़ से बच जाएंगे। सल्तनत के काम में भी कोई हरज न होगा। और लोगों को भी सहूलत पहुंचेगी।

हज़रत क़ुतुब साहब ने अज़ राहे इनायत व करम सुलतान शमसुद्दीन अलतमश की दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमाई। आप कीलोकड़ी से महरौली तशरीफ़ ले आये पहले एक नानबाई के यहाँ क़याम फ़रमाया। यह

1. सैरुल अकताब सफ़ा 150 2. सालिकुस्सालिकीन जिल्द दोम।

नानबाई हज़रत क़ुतुब साहब से अक़ीदत रखता था।

हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी फिर आपको घर ले आये। कुछ दिन बाद आप ने वहाँ क़याम फ़रमाया। फिर आपने मस्जिद एजाज़ुद्दीन के क़रीब रहना सहना शुरु कर दिया।

दूसरी दरख़्वास्त

हज़रत जमालुद्दीन मुहम्मद वस्तामीरह. दिल्ली में शैख़ुल इस्लाम के जलील उहदा पर फ़ाइज़ थे। उनके इन्तिकाल के बाद सुलतान शमसुद्दीन अलतमश की ख़्वाहिश थी कि हज़रत क़ुतुब साहब यह उहदा क़ुबूल फ़रमा लें।

जब सुल्तान अलतमश ने हज़रत क़ुतुब साहब से उस अमर की दरख़्वास्त की तो आप ने उहदा क़ुबूल करने से साफ़ इन्कार कर दिया। सुल्तान अलतमश ने आख़िर कार शेख़ नज्मुद्दीन सुग़रा का उस उहदा पर तक़र्रुर किया[1]।

आप का मारुज़ा

हज़रत क़ुतुब साहब को अपने पीर व मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन हसन चिश्तीरह. की क़दम बोसी का बेहद इश्तियाक़ था। आप ने हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज की ख़िदमत मे एक दरख़्वास्त अजमेर भेजी। उस दरख़्वास्त में आप ने शौक क़दम बोसी का इज़हार किया और ख़िदमत में हाज़िर होने की इजाज़त चाही।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने जवाब दिया:

"अगर चे दरे ज़ाहिर बूद अस्त अमा दर बातिन कर्ब अस्त
हुमा नजा बायद बूद........................"

तर्जुमा—अगर चे ज़ाहिर में दूरी है, लेकिन रुहानी तौर पर क़रीब
हो वहीं रहो।"

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की दिल्ली में आमद १२१४ ई./६११ हि.

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हज़रत क़ुतुब साहब को दिल्ली

1 सालिकुस्सालकीन

आने से मना फ़रमा दिया था। आप ब नफ़से नफ़ीस दिल्ली तशरीफ़ ले गये। आप ने हज़रत क़ुतुब साहब की इज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाई। दिल्ली में कुछ दिन क़याम फ़रमाकर और इरफ़ान की दौलत लुटाकर ग़रीब नवाज़ अजमेर वापस तशरीफ ले आये।

दूसरी मर्तबा १२२४ ई० ६२१ हि०

इस मर्तबा हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ बग़ैर इत्तिला दिल्ली में रौनक़ अफ़रोज़ हुए[1]। हज़रत क़ुतुब साहब को सख़्त ताज्जुब हुआ।

इस मर्तबा हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ एक किसान की सिफ़ारिश और अपने फ़र्ज़न्द हज़रत ख़्वाजा फ़ख़रुद्दीन के लिए मौज़ा मान्दन की माफ़ी की ग़र्ज़ से दिल्ली तशरीफ़ ले गये थे।

हज़रत क़ुतुब साहब को जब यह मालूम हुआ तो आप सुलतान शमसुद्दीन अलतमश के पास तशरीफ़ ले गये। आप ने किसान का मामला किसान के हक़ में तय करा दिया। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को नहीं जाने दिया। आप ने मौज़ा मान्दन की माफ़ी का फ़रमान ग़रीब नवाज़ के फ़र्ज़न्द हज़रत ख़्वाजा फ़ख़रुद्दीन के हक़ में हासिल किया।

बेरुख़ी

शेख़ नज्मुद्दीन सुग़रा दिल्ली में शैख़ुल इस्लाम थे। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के उन से देरीना तअल्लुक़ात थे। ख़ुरासान में मुलाक़ात हो चुकी थी। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से दिल्ली में सब मिलने आये लेकिन नज्मुद्दीन सुग़रा न आये। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को ताज्जुब हुआ कि वह क्यों न आये। आप ख़ुद ही उनसे मिलने उनके मकान पर तशरीफ़ ले गये।

उस वक़्त शेख़ नज्मुद्दीन सुग़रा एक सूफ़ा तामीर करा रहे थे। उन्होंने ग़रीब नवाज़ की तरफ से बेरुख़ी बरती। उस बेरुख़ी के बरताव से ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को रंज हुआ।

आप ने शेख़ नज्मुद्दीन सुग़रा से फ़रमाया:

"ऐ नज्मुद्दीन! ऐसी क्या तुझ पर बला आई कि शैख़ुल इस्लामी के नशे में इंसानियत से दरगुज़रा, और राह व रस्म देरीना और वज़ा दारी

1. तफ़सील मुइन उल हिन्द सफ़ा 104,107 में दरज है।

क़दीम को यकबारगी तर्क किया।"

शेख़ नज्मुद्दीन सुग़रा यह सुनकर शर्मिन्दा हुए। आप ने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के क़दमों पर सर रखा। माज़रत के ख़्वाहां हुए और अर्ज़ किया:

आप से रश्क व हसद

"मैं पहले जैसे आप का मुख़लिस था,वैसा ही अब हूँ, मगर क़ुतबुद्दीन काकी ने मेरी मन्ज़िलत बरबाद कर दी है। जब से वह आप का मुरीद यहाँ आया है तमाम मख़लूक़ उस की तरफ़ रुजू है, मैं बराये नाम शैख़ुलइस्लाम हूँ, कोई मेरी पुरसिश नहीं करता।"

दरअसल शेख़ नज्मुद्दीन सुग़रा को ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से शिकायत थी कि[1]।

"तू ख़लीफ़ा ख़ुदा रा दर ईं जागुज़ाशती कि हमा मर्दुम शहर दिल्ली बर्दरश

चन्दां हुजूम दारन्द कि कसे मरा वेक बर्ग सब्जे हम याद नमी कुनद।"

तर्जुमा—आप ने अपने ख़लीफ़ा को उस जगह छोड़ दिया है। दिल्ली की सारी मख़लूक़ उस के दर पर जमा रहती है और मुझको एक सब्ज़ पत्ते से भी कोई याद नहीं करता। कोई मेरी पुरसिश नहीं करता।

अजमेर को रवानगी

यह सुनकर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुस्कुराए—आप ने शेख़ नज्मुद्दीन सुग़रा को मुख़ातिब करते हुए फ़रमाया:

"तू ख़ातिर जमा रख। मैं इस बारे गिरां को जो तेरे दिल पर है, अपने हमराह अजमेर ले जाऊँगा।"

दिल्ली से रवानगी के वक्त हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हज़रत

1. तफ़सील "मईनुलहिन्द" सफ़ा 104,107 में दर्ज है।

कुतुब साहब से फरमाया[1]

"ख़्वाजा कुतुबुद्दीन तू हमराह हम बयाकि बाज़े मर्द मां ईंजा अज तू नाराज़ अन्द।"

तर्जुमा– बाबा कुतुबुद्दीन तुम भी मेरे हमराह आओ (चलो) क्योंकि कुछ लोग तुमसे यहाँ खफा हैं।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने दिल्ली से अजमेर को रवाना होते वक्त हज़रत कुतुब साहब को अपने हमराह लिया पस हजरत कुतुब साहब बमूजिबे इरशाद अपने पीर व मुर्शिद रवाना हुए। यह खबर सारे शहर में फैल गई। लोग आप के पीछे हो लिए– हज़रत कुतुब साहब देहली के इस कदर हर दिल अज़ीज़ थे के आप की जुदाई किसी को गवारा न थी। सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश को जब यह खबर मिली तो वह खुवाजा गरिब नवाज़ की खिदमत में हाजिर हुआ, और आप से अर्ज किया।

"हुजूर! कुतुब साहब को अजमैर न ले जाएं यहीं रहने दिजऐ"

खुवाजा गरिब नवाज़ को लोगो कि दिल शकनी पसन्द न थी। जब आप ने देखा के देहली के लोग हज़रत कुतुब साहब के जाने से रन्जीदा है तो आप ने हज़रत कुतुब साहब से फरमाया।

"बाबा कुतुब तुम यहीं रहो तुम्हारे जाने से अहल शहर परेशान व बे करार है, मैं नहीं चाहता के इतने लोगो के दिलों को तुम्हारी आतिश जुदाई से कबाब करूं, मैं ने इस शहर को तुम्हारी हिमायत में छोड़ा"

हसबे फरमान पीर व मुर्शिद हजरत कुतुब साहब वापस आ गए, और देहली में रहने लगे।

शोक कदम बोसी

कुछ मुद्दत देहली में क़याम फरमाने के बाद हज़रत कुतुब साहब अपने पीर व मुर्शिद की कदम बोसी के लिए बेचेन हुए आप ने एक अरीज़ा अपने पीर व मुर्शिद हजरत खुवाजा मईनुद्दीन हसन चिशती" की खिदमत अकदस में भेजा।

1 सैर उल अक़ताब सफा 157

आप के पीर मुर्शिद का जवाब आया के:[1]

"मानेज़मी खुवारत्तीन ताओं फरज़न्द अरजम्बन्द राबित लहम दराएँ असना मरासला रसीद, मी बायद के ज़ोद यिया यन्द के ऐ मुलाकात आखिर्लियत दर्दना"

तर्जुमा: में भी चाहता था के फरज़न्द अरजम्बन्द को बुलाऊँ के इसी असना में मुरासला मिला। तुम को चाहिये के जल्दी आयें के यह मुलाकात इस दुन्यि में आखरी है।

पीर व मुर्शिद की खिदमत

हजरत कुतुब साहब यह जवाब मिलते ही अजमेर शरीफ रवाना हो गए। अजमेर पहुँच कर आप अपने पीर व मुर्शिद हजरत खुवाजा मईनुद्दीन हसन चिशती के दिदार से मुशर्फ हुए। खिदमत बाबरकत में रहने लगे। आखरी मजलिस के हालात हजरत कुतुब साहब ने इस तरह तेहरीर फरमाए है:

तर्जुमा: हजरत खुवाजा यह फरमा कर रोने लगे-- फरमाया ऐ दुर्वेश इस सरज़मीन में जो मुझे पहुँचाया गया है तू इस का सबब यही है के यही मेरी [illegible] चन्द दिनों में हम सफर करेंगे।

तबरुकात की सुपरुदगी

उसी मजलीस में हजरत खुवाजा गरीब नवाज ने अहकाम नाफिज फरमाए। हजरत कुतुब साहब तेहरीर फरमाते है:

"शेख अली सनजरी हाजीर बोदनद और फरमान शुद के मिसाल नियुवेस बरदस्त शेख कुतबुद्दीन बख्तियार की मावदा और देहली रोद के खिलाफत और दादीम के देहली मकान आँसत।

बाद अजा मिसाल तमाम शुद बरदस्त दुआ गुदात रूए बरज़मीन औरदम फरमान शुद के नज़दीक बिया। नजदीक

1. दलीलु आरिफ़ीन

तर शुदम दसतार बाकला बरसरमिन बदस्त खुद नेहाद, असाए शेख उसमान हारूनीरह विदाअ दर बर दुआगु कर दु मसलिहत व मसला नैज़ दाद।

फरमुद ऐ अमानतें अस्त अज़ रसुल्लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अज़ खुवा जगान चशत बेमा रसीदा अस्त मन तरादादम, बायद के चुनानचे अज़ायशाँ माँबजा आरयद, ता फरदाए कियामत मियान खुवा जगान माराशर मन्दा नगर दानी।

तर्जुमा– शेख अली संजरी हाज़िर थे. इन को हुक्म दिया के फ़रमान लिखा जाए और हमारे शेख कुत्बुद्दीन बख़्तियार को दिया जाए ताके वह दिल्ली जाऐं। हम उन को ख़िलाफ़त देते हैं, और दिल्ली इन के क़ियाम के लिए तजवीज़ करते है।

फिर जब फरमान मुकम्मल हो गया– दुआगौ (कुतुब साहब) को अता फरमाया में आदाब बजा लाया हुक्म हवा के नज़दिक आं। में और नज़दिक होगया। दसतार और कला अपने दसते मुबारक से मेरे सर पर रखा। हज़रत खुवाजा उसमान हारूनी का असा और खरका इनायत फरमा। कुरआन मजीद और मुसल्ला भी इनायत फरमाया– के रसुल्लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मकदस अमानत है जो खुवा जगान चिश्त के ज़र्ये हम तक पहुँची है, में तुम को यह सौनप रहा हुँ। तुम को लाज़ीम है के जिस तरह हम ने इन चिज़ो को अपने पास रखा है, तुम भी इसी तरह रखोगे, ताके कल कियामत के दिन खुवा जगान के सामने मुझे शरमिन्दगी न उठानी पड़े।

हज़रत कुतुब साहब फरमाते है के बाद

"दुआ गौ सरज़मीन औरद दोगाना नमाज़ गुज़ारद।

फरमुद, बर्द, बखदा सुपर्दम विबमंज़िल गाहे इज़्ज़त रसा निदम।"

तर्जुमा– दुआगौ (कुतुब साहब) फिर आदाब बजा लाया। दो रकाअत नमाज़ शुकराना अदा कि।

इरशाद हुआ, जाओ मैनें तुम को खुदा के सुपुर्द किया, और मुकामे इज़्ज़त और बुज़ुर्गी पर फाइज़ किया।

पीर व मुर्शिद की नसीहत

हज़रत क़ुतुब साहब के पीर व मुर्शिद ख़्वाजा गरीब नवाज़ ने, आपको नसीहत फ़रमाई कि चार बातें बड़ी ख़ूबी की हैं। उन पर अमल करना बाइसे ख़ैर व बरकत है। उन चारों बातों में से:

पहली बात तो ऐसी दुर्वेशी है कि जिस से तवंगरी ज़ाहिर हो।

दूसरी बात भूखों का पेट भरना है।

तीसरी बात यह है कि ग़म की हालत में ख़ुशी का इज़हार करे।

चौथी बात यह है कि अगर कोई दुश्मनी से पेश आये तो जवाब में दोस्ती का मुज़ाहरा करे।

पीर व मुर्शिद की दुआ

उस आख़िरी मजलिस का वाक़िया है। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हज़रत क़ुतुब साहब से फ़रमाया।

"आओ।"

हज़रत क़ुतुब साहब आगे बढ़े क़दम बोस हुए। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़ातिहा पढ़कर फ़रमाया[1]:

"रुए न ख़राशी–मर्द शुदह बिवाश।"

तर्जुमा– रंजीदा ख़ातिर न हो। मर्द बन कर रहो।

अजमेर से वापसी

हज़रत क़ुतुब साहब अपने पीर व मुर्शिद से रुख़सत होकर दिल्ली वापस तशरीफ़ लाए और दिल्ली में सुकूनत अख़्तियार करके बक़िया उम्र वहीं गुज़ारी

1. दलीलुल आरिफ़ीन

अज़ीम सदमा

आपकी रवानगी के बीस दिन बाद आप के पीर व मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन चिश्ती वासिले बहक़ हुए।

आपका ख़्वाब

जिस दिन आपको अपने पीर व मुर्शिद की वफ़ात शरीफ़ की ख़बर मौसूल हुई आप हालते ग़म व रंज में मुसल्ले पर नमाज़ पढ़कर लेट रहे। आपने अपने पीर व मुर्शिद को ख़्वाब में देखा, आप क़दम बोस हुए। कैफ़ियत हाल दरियाफ़्त की। इरशाद हुआ कि[1]।

"ख़ुदा वन्द ताला ने रहमते ख़ास से नवाज़ा और फ़रिश्तों और साकिनाने अर्श के नज़दीक़ जगह दी। मैं यहीं रहता हूँ।"

अज़वाज व औलाद

आपकी पहली शादी आपके वतन अविश में हुई थी। आप की वालिदए माजिदा ने आप का अक़द एक ख़ातून के साथ कर दिया। तीन रोज़ बाद हज़रत क़ुतुब साहब ने बीवी को तलाक़ दे दी। इस शादी से आपके अवराद में फ़र्क़ आया और यह बात आपको गवारा न हुई।

हज़रत क़ुतुब साहब का विर्द था कि रात को सोते वक्त तीन हज़ार मर्तबा दरुद शरीफ़ पढ़ा करते थे जो दरुद शरीफ़ आप पढ़ते थे वह यह है:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَنَبِيِّکَ وَحَبِيْبِکَ وَرَسُوْلِکَ

النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ وَسَلِّم

शादी के बाद आप तीन शब दरुद शरीफ़ न पढ़ सके।

तीसरे दिन आपके एक मुरीदने जिनका नाम रईस अहमद था, ख़्वाब में देखा कि एक आलीशान महल है, ख़िलक़त का हुजूम है, और एक

1. दलीलुल आरिफ़ीन

शख़्स जिनकी सूरत नूरानी है, महल में बिला तकल्लुफ़ आ जा रहे हैं। लोगों का पैग़ाम लेकर महल में जाते है, और पैग़ाम का जवाब लेकर बाहर आते है–उन्हों (रईस अहमद) ने महल और उन बुजर्ग के मुतअल्लिक एक शख्स से मालूम किया। उस शख़्स ने बताया कि सरवरे आलम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस महल में तशरीफ़ रखते हैं और वह बुजर्ग जो आते जाते हैं, उनका नाम हज़रत अब्बदुल्लाह बिन मसऊद है।

रईस अहमद यह सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन नसऊद के पास गए और उनसे अर्ज़ किया, कि उनका पैग़ाम भी सरवरे आलम को पहुंचा दें कि दीदार फ़ाइज़ुल अनवार का मुश्ताक़ है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद यह पैग़ाम लेकर महल में गये और वहां से जवाब लाए कि सरवरे आलम का इशारा है कि

"अभी उस शख़्स में मेरे दीदार की अहलीयत और लियाक़त नहीं है, मेरा सलाम क़ुतबुद्दीन औशी का पहुंचा और मेरी तरफ़ से कहना कि क्या बात है कि जो तोहफ़ा वह हर रात हमारे पास भेजते थे अब तीन रात से नहीं भेजा।"

रईस अहमद की आँख खुली तो आप सरवरे आलम का पैग़ाम पहुंचाने के लिए बेचैन थे। आप ने हज़रत क़ुतुब साहब की ख़िदमत में हाज़िर होकर ख़्वाब सुनाया–क़ुतुब साहब ने जो सरवरे आलम का पैग़ाम सुना तो खड़े हो गये, और रईस अहमद से पूछने लगे: "हाँ क्या फ़रमाया है।"

रईस अहमदने अर्ज़ किया कि सरवरे आलम ने फ़रमाया है कि "जो तोहफ़ा तुम मुझे हर रात भेजा करते थे वह तीन शब से क्यों नहीं भेजा।

हज़रत क़ुतुब साहब फ़ौरन समझ गये कि तोहफ़ा से क्या मुराद

है। शादी की वजह से तीन रात से दरुद शरीफ़ नाग़ा हो गया था। पसः

"ख़्वाजा हुमां ज़ने कि ख़्वास्ता बूद बितल्बीदा व मुहर ऊबदु व रसानीद व तलाक़ दाद बाज़ बा औराद व वज़ाइफ़ ख़ुद मशग़ूल गश्त[1]।"

तर्जुमा– ख़्वाजा ने (क़ुतुब साहब) उस औरत को जिस से आप की शादी हुई थी बुलाया और उसका महर उस के हवाले किया, और उसको तलाक़ दे दी, और फिर अपने औराद व वज़ाइफ़ में मशग़ूल हो गए।"

उसके बाद आपने एक मुद्दत तक शादी नहीं की।

दूसरा निकाह

आप ने दूसरी शादी दिल्ली में सुकुनत अख़्तियार करने के बाद की। यह शादी आपने आख़िरी उम्र में की[2]। आपके दो लड़के हुए, एक लड़के का नाम अहमद था और दूसरे का नाम शेख़ मुहम्मद था। शेख़ मुहम्मद का सात साल की उम्र में इन्तिकाल हो गया। जब उनके इन्तिक़ाल पर उनकी वालिदा के रोने की आवाज़ हज़रत क़ुतुब साहब के कानों तक पहुंची तो आप ने शेख़ बदरुद्दीन से पूछा कि "यह रोने की आवाज़ हमारे घर से किस वजह से आ रही है।"

उन्होंने अर्ज़ किया: "हुज़ूर के साहबज़ादे शेख़ मुहम्मद का इन्तिक़ाल हो गया है। उनकी वालिदा रो रही हैं।"

यह सुनकर हज़रत क़ुतुब साहब ने फ़रमाया कि अफ़सोस उनको ख़बर न हुई। अगर उनको ख़बर होती तो वह ख़ुदा वन्द ताला से उसकी जिन्दगी माँगते और अगरः

"मी ख़्वास्तम मी याफ़्तम"– अगर माँगता तो ज़रुर पाता।

आप अपनी अहलिया को सब्र की तल्क़ीन फ़रमा कर मुराक़बा में

1. इक़तिबास उल उनवार इक्तिबासुल अनवार
2. फ़ारशता जील्द दोयम सफ़ा 380,381

फिर मशगूल हो गय।

आपकी नस्ल आपके बड़े साहबज़ादे ख़्वाजा अहमद से चली। आप ख़्वाजा अहमद तमाची के नाम से मशहूर हुए। आप बुलंद पाया बुज़ुर्ग थे।

मदफ़न

वफ़ात से क़बल एक ईद के मौक़ा पर हज़रत क़ुतुब साहब ईदगाह से वापसी पर एक उफ़्तादा और गैर आबाद ज़मीन पर तशरीफ़ लाए। यही वह मक़ाम है जहां कुछ देर तक आप सोच विचार में रहे। जो लोग हमराह थे उन्होंने अर्ज़ किया कि "हुज़ूर किस फ़िक्र में हैं।" आपने जवाब दिया कि[1]:

"मुरा अज़ीने ज़मीं बूए वुल्हा भी आयद। मालिक ई अर्ज़ी
रा हाज़िर कुनीद।"

तर्जुमा–मुझको इस ज़मीन से दिलों की बू आती है। उस ज़मीन के मालिक को हाज़िर करो।

मालिके ज़मीन हाज़िर हुआ। हज़रत क़ुतुब साहब ने उस ज़मीन को अपने ज़रे ख़ास से ख़रीद लिया और उस ज़मीन को अपने मदफ़न व मर्क़द मुतह्हिर के लिए मुक़रर कर लिया[2]।

जाए मदफ़न की फ़ज़ीलत

उस जगह को जहाँ हज़रत क़ुतुब साहब का मज़ार मुबारक है ख़ास फ़ज़ीलत हासिल है। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का तख़्त उड़ते उड़ते एक बार इस जगह पहुँचा जहाँ हजरत कुतुब साहब का मदफ़न है। आपको यह देखकर सख़्त ताज्जुब हुआ कि अर्श से फर्श तक नूर ही नूर है, और नूर के तबक़ फ़रिश्ते आसमान से ला रहे हैं और उस ज़मीन पर ड़ाल रहे हैं। हज़रत सुलेमान[अ.] ने दरियाफ़्त फ़रमाया कि यह ख़ूबसूरत जगह और यह पुर फ़ज़ा मकान किस मर्द बा सफ़ा का मस्कन या मदफ़न है। फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया कि[3]।

---

1. सैर उल अक़ताब (फ़ारसी) सफ़ा 159
2. सीरुल अक़ताब (फ़ारसी) सफ़ा 159 सीरुल औलिया सालिकुस्सालिकीन।
3. रोजतुल अक़ताब सफ़ा 28

"ई सर ज़मीन मस्कन व मदफ़न ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन महबूबुल्लाह अस्त कि दर उम्मते रसूलुल्लाह आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा ख़्वाहद बूद व बम दरीं बक़ा ख़्वाहद आसूद।"

यह सर ज़मीन मस्कन व मदफ़न अल्लाह के महबूब ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन का है कि पैगम्बर आख़िरुज़्ज़मां हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में पैदा होंगे और उस जगह आसूदह होंगे।

आख़िरी अय्याम

एक रोज़ शेख़ अली संजरी की ख़ानक़ाह में महफ़िल समा हो रही थी। साहब हाल और अहले कमाल दुर्वेश महफ़िल में शरीक थे। हज़रत क़ुतुब साहब भी बनफ़से नफ़ीस तशरीफ रखते थे। क़व्वाल यह शेर पढ़ रहे थे।

आशिक रुयत कुजा बीनद मकीं
बस्ता रुयत कुजा या बद ख़लास

हज़रत क़ुतुब साहब पर वजद तारी हुआ। क़व्वाल उस शेर को कुछ देर तक गाते रहे। उसके बाद क़व्वालों ने हज़रत अहमद जाम की ग़ज़ल गाना शुरु की–जब सलाहुद्दीन और उसके लड़कों, करीमुद्दीन और नसीरुद्दीन ने यह शेर पढ़ा।

कुश्तगाने ख़न्जर तस्लीम रा
हर ज़मा अज़ ग़ैब जाने दीगर अस्त

तो हज़रत क़ुतुब साहब पर ऐसा वजद तारी हुआ कि आप उस कैफ़ियत में बेहोश हो गए।

काज़ी हमीदुद्दीन नागौरी और शेख़ बदरुद्दीन ग़ज़नवी आपको उसी हालत में मकान पर लाए,कव्वाल भी साथ आये। कव्वाली होती रही। जब आप को किसी क़दर होश आता तो आप उस शेर की तकरार का हुक्म फ़रमाते और फिर आप पर वजद तारी हो जाता। चार रोज़ तक आप पर यह कैफ़ियत रही। आप बेहोश होते थे। नमाज़ के वक्त आपको होश

आ जाता। आप नमाज़ अदा करते, और फिर वही हालत हो जाती।

तीसरे रोज़ आप के हरबुन मुंह से तस्बीह इस्मे ज़ात की आवाज़ आती थी और हरबुन मुंह से ख़ून के क़तरे टपकने लगते, जो क़तरा ज़मीन पर गिरता उस से नकशे अल्लाह पैदा होता और उस दिल कश नक्श से अल्लाह की आवाज आती थी। दूसरे रोज़ हरबुनू मुंह से सुब्हानल्लाह की आवाज़ आई थी और खून का कतरा जो गिरता उस के नक्शे सुब्हानल्लाह ज़ाहिर होता[1]।

क़व्वाली जारी रही। जब कव्वाल पहला मिसरा पढ़ते तो हज़रत क़ुतुब साहब के क़ालिब से रुहे मुबारक ग़ायब हो जाती और जब क़व्वाल दूसरा मिसरा पढ़ते तो रुहे मुबारक वापस आ जाती। जब आप आह करना या नारा लगाना चाहते तो क़ाजी हमीदुद्दीन नागौरी आप का दहने मुबारक बन्द कर देते और [illegible] ताकि आप चाहते हैं कि सारी दुनिया को जला दें। आपका दहने मुबारक तो बन्द रहा, लेकिन आपका जिस्मे मुबारक सोख्ता व गदाख़्ता हो गई।

आपकी नब्ज़ देखकर हकीम शमसुद्दीन ने कहा:

"यह मर्ज़ इश्क़ है। आतिशे इश्क ने दिल व जिगर को बिल्कुल जला दिया है।

अब इलाज की कोई गुन्जाइश नहीं।"

आप पर 10 रबीउल अव्वल 633 हि॰ को कैफ़ियत तारी हुई थी। चार शबाना रोज़ यही हालत रही। पांचवीं शब में जब कि मिसरे ऊला की तकरार हो रही थी क़ुतबुल अक़ताब हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह॰] ने 14 रबीउल अव्वल 633 हि॰ मुताबिक 27 नवम्बर 1235 ई॰ को रेहलत फ़रमाई।

आपकी वफ़ात की ख़बर दहशते असर से दिल्ली में कोहराम मच गया। सुलतान शमसुद्दीन अलतमश, दिल्ली के फ़ुकरा मुशाइख़, सूफ़ी,

---

1. सैरूल अक़ताब (फ़ारसी) सफ़ा 160 सलिक उल सालकीन जिल्द दोयम
2. रौज़तुल अक़ताब सफ़ा 69 सालिकुससालिकीन जिल्द दोम 3 सैर उल अक़ताब सफ़ा 160

अवाम और ख़्वास गर्ज़ सब ही ने नमाज़ जनाज़ा में शिरकत की।

आप की वसीयत

जनाज़ा जब तैयार हो गया तो मौलाना अबु सईद ने हज़रत क़ुतुब साहब की वसीयत बयान की। आप ने कहा।

> "हज़रत ख़्वाजए मा वसीयत फ़रमूदा कि इमामत जनाज़ा मन किसे कुन्द कि अज़ा व बन्दिश बुहराम न कुशादह बाशद व सुन्नत नमाज़े असर व तकबीरे ऊला गाहे अज़ वफ़ूत न शुदह बाशद।"

तर्जुमा—हमारे ख़्वाजा ने वसीयत फ़रमाई है कि मेरे जनाज़ा की नमाज़ वह शख़्स पढ़ाये कि जिसने कभी हराम न किया हो और जिस से सुन्नत असर और तक्बीरे ऊला कभी फ़ौत न हुई हो।

नमाज़े जनाज़ा

जब हज़रत क़ुतुब साहब की यह वसीयत लोगों को मालूम हुई तो लोग हैरान थे कि आख़िर वह कौन ख़ुश क़िस्मत शख़्स है कि जो आपके जनाज़ा की नमाज़ पढ़ायेगा। कुछ देर सुकूत तारी रहा। आख़िर सुलतान शमसुद्दीन अलतमश आगे बढ़े। आपने कहा कि:

> "मुझे हरगिज़ मन्जूर न था कि किसी को मेरे हाल से आगाही हो। मगर हज़रत क़ुतबुल अक़ताब की मर्ज़ी से चारा नहीं।"

सुलतान शमसुद्दीन अलतमश ने इमामत के फ़राइज़ अंजाम दिए।

जुलूसे जनाज़ा

आपके जनाज़ा के साथ लोगों की कसीर तादाद थी। सुलतान अलतमश ने नमाज़ पढ़ाने के बाद एक तरफ़ जनाज़ा को कांधा दिया और दूसरे अहले दिल्ली ने बाक़ी तीन तरफ से जनाज़ा को कांधा दिया। आपको उसी जगह पर दफ़न किया गया कि जिस जगह को आप ने

अपनी हयात ज़ाहिरी में अपनी आख़िरी आराम गाह के लिए मुन्तख़ब फ़रमाया।

आप का मजार पुर अनवार महरौली (क़रीब नई दिल्ली) में वाक़े है और मुरज्जा ख़ास व आम है। हर साल आपका उर्स मुबारक 13 और 14 रबीउल अव्वल को महरौली में बड़े तज़्क व एहतिशाम से होता है। अजमेर भी में आपके चिल्ला पर उन्हीं तारीख़ों में आपका सालाना उर्स होता है।

आप के बाज खुलफ़ा

हजरत फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर" को हजरत क़ुतुब साहब का खलीफ़ाए अकबर और जानशीन होने का फ़ख़्र हासिल है। आपके बाज खुलफा हसबे जेल हैं।

शेख बदरुद्दीन गजनवी" शेख़ बुरहानुद्दीन बलख़ी" शेख़ जिया रूमी" मौलाना फ़ख़रुद्दीन हलवाई" मौलाना बुरहानुद्दीन हलवाई" शेख़ मुहम्मद समाजी" शेख़ अहमद शामी" शेख़ हुसैन"–शेख़ फिरोज" शेख बदरुद्दीन मूए ताब" –शाह खिजर क़लन्दर"–शेख़ नज्मुद्दीन क़लन्दर"–शेख सादुद्दीन"–शेख महमूद बिहारी"–मौलाना मुहम्मद जाजरी–सुलतान नसीरुद्दीन गाजी"–बाबा बहरी बहर दरिया"।

हज़रत बाबा साहब का तबर्रुकात पाना

हजरत बाबा साहब अपने पीर व मुर्शिद हजरत क़ुतुब साहब की खिदमत में रह कर रुहानी फ़ुयूज व बरकात से मुस्तफ़ीज होते रहे।

एक दिन का वाक़िया है कि हजरत बाबा साहब अपने पीर व मुर्शिद क़ुतुब साहब की खिदमत बा बरकत में हाज़िर थे। आप एकदम उठे और हांसी जाने की इजाज़त तलब की। हजरत क़ुतुब साहब को हज़रत बाबा फ़रीद साहब से इन्तिहाई मुहब्बत थी। आप आंखों में आंसू भर लाए और फ़रमाया।

"ऐ फ़रीद! अलबत्ता तुम जाओगे।"

हजरत बाबा साहब ने अर्ज़ किया।

"जैसा हुक्म हो बजा लाऊँ।"

हज़रत क़ुतुब साहब ने फ़रमाया।

"जाओ। मैं क्या करूँ। मन्शाए क़ुदरत इसी तरह है कि मेरी वफ़ात के वक़्त तुम मौजूद न हो, और मैं भी हज़रत ख़्वाजा (हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन चिश्ती[रह]) की वफ़ात के वक़्त मौजूद न था।"

हज़रत क़ुतुब साहब ने इस क़दर फ़रमाया और फिर अजीब ग़ौर व ख़ूज़ में सरे मुबारक झुका लिया–फिर आप ने सर उठाया, और हाज़िरीने मजलिस की तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़रमाया।

"आओ हम सब मिलकर इस दुर्वेश की दीन व दुनिया की नेमत की तरक्क़ी और इस्तिक़ामत के लिए सूरह फ़ातिहा व इख़लास पढ़ें।"

सब ने सूरः फ़ातिहा व इख़लास पढ़ी।

हज़रत क़ुतुब साहब ने भी फ़ातिहा पढ़ी और बाबा फ़रीद साहब के वास्ते दुआए ख़ैर की कि:

"ख़ुदा वन्द ताला तुझको मशाइख़े किबार में से बनाये और इस्तिक़ामत के दर्जा तक पहुंचाये।"

फिर हज़रत क़ुतुब साहब ने ख़ास मुसल्ले और असा बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर[रह] को इनायत किया और फ़रमाया[1]:

"मैं तुम्हारी इमानत यानी सज्जादह वा ख़िर्क़ा दस्तार और नालैन, कि जो दस्त बदस्त पीराने चिश्त से मुझको पहुंची हैं क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी के सुपुर्द कर दूँगा और जब तुम पांचवी रोज़ वफ़ात के हांसी से मेरी क़ब्र पर आओगे, वह इमानते पीरान तुमको पहुंचा देंगे और ख़िरक़ा पहना देंगे। मेरे मक़ाम को ख़ुद अपना मक़ाम समझो और तुम उस जगह ज़ौक़ व राहत के साथ बैठोगे और रुश्द व हिदायत करोगे और अपने फ़ैज़ से ख़ास व आम को फ़ायदा पहुंचाओगे।"

क़ुतबुल अक़ताब हज़रत क़ुतुब साहब ने जब यह बात चीत ख़त्म की मजलिस में एक शोर बरपा हुआ। हाज़िरीन मजलिस रोने लगे। सब

1. रौज़तुल अक़ताब सफ़ा 68

ने हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर[रह.] के वास्ते दुआए खैर की[1]।

वसीयत

हज़रत क़ुतुब साहब ने जिस महफिले समा में विसाल फ़रमाया। उसी महफ़िल में हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी और हज़रत बदरुद्दीन ग़ज़नवी को वसीयत फ़रमाई कि तबर्रुकाते पीराने इज़ाम जो उनके पास है वह हजरत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर[रह.] को जब वह उनके विसाल के बाद यहाँ आए दे देना। हज़रत बाबा फ़रीद की अमानत उन तक पहुंचा देना, और निहायत इज़्ज़त के साथ हज़रत बाबा फ़रीद साहब को ख़िरक़ा पहनाना।

हज़रत क़ुतुब साहब ने इस महफ़िले समा में तबर्रुकात, ख़िरक़ए ख़ास, असा नालैन चौबीं, और दोताई सूज़नी हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी और हज़रत बदरुद्दीन ग़ज़नवी को दिखाये।

ख़्वाब

जिस रात हज़रत क़ुतुब साहब वासिले बहक़ हुए, इसी रात बाबा फ़रीद साहब ने ख़्वाब देखा कि हज़रत क़ुतुब साहब उनको बुलाते हैं।

यह ख़्वाब बाबा साहब के लिए काफ़ी इशारा था। आप समझ गये कि हज़रत क़ुतुब साहब को विसाल हो गया। उफ़्तां व ख़ेज़ां, परेशान व हैरान आप हांसी से रवाना हुए। आपकी आंखो से अश्कों का दरिया बह रहा था। इधर हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी ने हज़रत बाबा साहब की ख़िदमत में एक आदमी भेजा। माहम पर हज़रत बाबा साहब की हज़रत क़ाज़ी साहब के फ़रस्तादा आदमी से मुलाक़ात हुई। वह ख़त जिस में हज़रत क़ुतुब साहब की वफ़ात की इत्तिला थी, हज़रत बाबा साहब को मिला।

हज़रत बाबा फ़रीद साहब चौथे रोज़ दिल्ली पहुंचे। पांचवी रोज़ हज़रत क़ुतुब साहब के मज़ार पुर अनवार की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए।

हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी और शेख़ बदरुद्दीन ग़ज़नवी ने हसबे फ़रमान क़ुतबुल अक़ताब हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकीरह•

1. फ़रिश्ता जिल्द दोम सफ़ा 382–सीरुल औलिया सफ़ा 73 रौज़तुल अक़ताब सफ़ा 69

तमाम तबर्रुकात हज़रत बाबा साहब के सुपुर्द किए।

हज़रत बाबा फ़रीद साहब ने अपने पीर व मुर्शिद का ख़िरक़ा पहना। उस मुसल्ला परदोगाना अदा किया। आपने अपने पीर व मुर्शिद के मकान में .क़याम फ़रमाया[1]।

कुछ दिन दिल्ली में.क़याम करके बाबा फ़रीद साहब हांसी तशरीफ़ ले गये। आप ने फरमाया[2]:

> नेमते कि हक़ दर हक़ मन अता क़र्दह हमराह मन अस्त। चे दर शहर व चे दर बयाबान।"

तर्जुमा–खुदा ताला ने जो नेमत मुझे अता की है वह मेरे साथ है ख्वाह शहर हो या जंगल।

सीरते पाक

क़ुतबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख्तियार काकी" नायब रसूल फ़िलहिन्द के नायब हैं। आप ख़्वाजा मईनुद्दीन हसन चिश्ती के नायब खलीफ़ए अकबर और जानशीन हैं। आप क़ुतुब मशाइख़ हैं। हज़रत शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने आप के मुतअल्लिक़ तहरीर फ़रमाया है कि[3]:

> "अजा अकाबिर औलिया व अजल्लह् असफ़िया अस्त।"

तर्जुमा–(आप) अकाबिर औलिया और जलीलुलक़दर सूफ़ियाए किराम में से हैं।

आपकी बुजुर्गी और बरगुज़ीदगी में किसी शक व शुबह की गुंजाइश नहीं कि:

> "जमीए मशाइखुल अस्र मोतक़िद व हल्क़ा बगोश अं हजरत बूदन्द व शाने अजीम व रुतबए रफ़ी दाश्त व मुस्तजाबुद्दावात बूद ता हर चे अज ज़बान मुबारकश बर आमदे हुमां शदे व हर कि सोहबते पाक अं हजरत अख्तियार करदे साहबे विलायत शुदे बहर कि नज़र

1. रोजा तुल अक़ताब सफ़ा 69 2. अख़बार उल अख़यार
3. सैर उल अक़ताब सफ़ा 142

लुत्फ़ नुमूदे अज़ अर्श ता सुरा हुमां साअत और अकशफ़ शुदे।"

तर्जुमा—उस ज़माने के तमाम मशाइख़ आंहज़रत के मोतक़िद और हल्क़ा बगोश थे। बड़ी शान वाले और बुलंद मर्तबा वाले थे। आपकी दुआ क़ुबूल होती थी। जो कुछ ज़ुबाने मुबारक से फ़रमा देते वैसा ही हो जाता। जो शख़्स आंहज़रत की सोहबते पाक में रहता वह साहबे विलायत हो जाता और जिस पर आप नज़र ड़ालते उसी वक़्त उसको अर्श से तहतुस्सरा तक मुन्कशिफ़ हो जाता।

इबादात

आपको इबादत में बहुत लुत्फ़ आता था। आप हाफ़िज़े क़ुरआन थे। रोज़ाना एक क़ुरआन ख़त्म करते थे। लोगों से छुप कर आप इबादत करते थे। आप फ़राइज़ पंजगाना की अदायगी में हमेशा मुस्तइद रहते थे। इसके अलावा आप तीन सौ रकात नफ़ील रोज़ाना पढ़ते थे[1]। रात को सोते वक़्त तीन हज़ार मर्तबा दरुद शरीफ़ पढ़ते थे।

गोशा नशीनी

आप उज़लत और गोशा नशीनी पसंद फ़रमाते थे, कम खाना, कमसोना और कम बोलना आप का शियार था। ख़ालिक़ से मशगूल थे और मख़लूक़ से बेनियाज़।

हज़रत मुहम्मद गेसू दराज़ ने आपके मुतअल्लिक़ लिखा है कि आप हमेशा ख़ामोश और रंजीदा रहते थे। आप गिरया वज़ारी में ज़्यादा वक़्त गुज़ारते थे। दरवाज़ा बन्द किये तन्हा बैठे रहते। लोगों से अलग रहते[2]।

आपके मुताल्लिक़ शेख़ नूर बख़्श लिखते हैं कि[3]।

"ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार औशी काना मिनल औलियाइस्सालिकीन वलमुरताज़ीन वल मुजाहिदीन बिलख़लवता वल अज़मते व क़िल्लतित्तआम व क़िल्लतिम मनाम व क़िल्लतिल कलाम व ज़िकरे बिद्दवाम फ़िल अरबईनाते व फ़िल अहवालिल शान कीसा मईनुल मकाशिफ़ीन।"

---

1. मुरातुल सरार 2. जुवामे अलकलम 3. सिलसिलाह अलज़हब

तर्जुमा—ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार औशी औलियाए सालिकीन और बरगुज़ीदा मुरताज़िईन व मुजाहिदीन में से थे। ख़िलवत और गोशा नशीनी में बसर करते, कम सोते, कम बोलते, और पोशीदा तौर पर ज़िक्र में मशगूल रहते। अपने हालात को छुपाने में कोशां रहते।

शब बेदारी

अव्वल अव्वल तो आप कुछ देर रात को सोते और थोड़ा आराम फ़रमाते। लेकिन आख़िर उम्र में रात में आराम और सोना आप ने तर्क कर दिया था। रातों को जागते थे। क़ुरआन मजीद की तिलावत और ज़िक्र जली व ख़फ़ी में मशगूल रहते[1]।

फ़क़्र व फ़ाक़ा

हज़रत क़ुतुब साहब को अपने फ़क़्र व फ़ाक़ा पर फ़ख़्र था। आपकी जिन्दगी निहायत उसरत सख़्ती और तंगी से गुज़रती थी। आपको आपके अहल व अयाल को और आप के वाबिस्तगान को अक़्सर फ़ाक़ा रहता था। लेकिन किसी पर यह ज़ाहिर न करते थे कि घर में फ़ाक़ा है[2]। फ़ाक़ा की हालत में भी सब्र व शुकर का दामन थामे रहते। इब्तिदाए हाल में आपके घर में दस्तरख़्वान, रकाबी और प्याला तक नहीं था।

नज़राना से इन्कार

आप नज़राना क़ुबूल नहीं फ़रमाते थे। एक मर्तबा का वाक़िया है कि सुलतान शमसुद्दीन अलतमश ने कुछरुपये और अशरफ़ियां आपकी ख़िदमत में भेजीं, और आप से इस्तद्आ की कि यह नज़राना आप क़ुबूल फ़रमायें। आप ने क़ुबूल नहीं किया[3]।

पीराने इज़ाम की पैरवी

आप अपने पीराने इज़ाम की पैरवी अपने लिए बाइसे सआदत और नजात समझते थे और इस में सख़्त कोशां रहते थे। एक मर्तबा का ज़िक्र है कि सुलतान अलतमश का वज़ीर हाज़िरे ख़िदमत हुआ और छः गाँव का फ़रमान और एक किश्ती तलाई अशरफ़ियों से भरी हुई पेश की। वज़ीर ने

1. सैर उल ओलीया 2. राहत उल क़ुलुब
3. तज़किरतुल असफ़िया

अर्ज़ किया कि सुलतान अलतमश की आरज़ू है कि आप उसको क़ुबूल फ़रमायें। यह आपके ख़ादिमान और मुख़लिसान के वास्ते है। इस वक्त बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर^{रह.} भी हाज़िर थे[1]।

हज़रत क़ुतुब साहब मुस्कुराए और फ़रमाया:

"मेरे पीरों ने ऐसी चीज़ें कभी क़ुबूल नहीं की हैं। मैं भी क़ुबूल नहीं कर सकता............अगर आज मैं उनकी पैरवी न करुँगा और गाँव और अशरफ़ियों को क़ुबूल करुँगा तो कल (क़यामत के दिन) उनको क्या मुंह दिखाऊँगा। और उनके ज़ुमरा में क्यों कर शामिल हूँगा................"

इस्तिग़राक़

आप दिन रात मुराक़िबा में रहते थे[2]। नमाज के वक्त आंखें खोलते थे। गुसुल फरमाते थे और ताज़ा वज़ू करके नमाज़ पढ़ते। आपके इस्तिग़राक़ का यह आलम था कि जब कोई आपकी ज़ियारत के लिए आता तो उसको इन्तिज़ार करना पड़ता था। इत्तिला होने पर आप होशियार होते थे। आपके कैफ़ व वजद का यह हाल था कि एक मर्तबा सात शबाना रोज़ आप आलमे तहय्युरमें रहे। नमाज़ के बाद होश में आते।

तवक्कुल

आप मख़्लूक़ से किनारा कश रहते थे। बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर^{रह.} फ़रमाते हैं कि हजरत क़ुतुब साहबका तवक्कुल वाक़ई तवक्कुल था। आप बीस साल तक आलमे तवक्कुल में रहे। किसी से कोई सरोकार न रखते थे। बावर्ची खाने का ख़र्चा इस तरह चलता था कि जब ज़रुरत होती ख़ादिम हाज़िरे ख़िदमत होता। आप किसी तरफ़ इशारा कर देते। जिस क़दर ज़रुरत हो ले लो। जब सूफ़ियों के लिए ज़रुरत होती तो आप मुसल्ले के नीचे से अशरफ़ियां निकाल कर ख़ादिम को दे देते थे। दिन भर के ख़र्चे में यह सब रक़म ख़र्च हो जाती थी। कोई मुसाफिर या ज़रुरत मन्द आप के दर से ख़ाली हाथ वापस नहीं आया।

---

1. असरारूल आरिफ़ीन 2. फ़वाइदुलफ़वाद

इख़काए हाल

हज़रत क़ुतुब साहब अपने हाल को लोगों पर ज़ाहिर करना पसंद नहीं फरमाते थे। जहद व रियाज़त, इबादात व मुजाहिदात को छुपाते थे। अपने मुरीदो को भी इस बात की तल्क़ीन फ़रमाते थे। एक मर्तबा हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर" ने आप से चिल्ला कशी की इजाज़त चाही। आपने इजाज़त नहीं दी, और फ़रमाया:

"उसकी ज़रुरत नहीं क्योंकि इन बातों से भी शोहरत होती हैं,और फ़क़ीरों के लिए शोहरत होना आफत हैं। हमारे पीरों में किसी ने ऐसा नहीं किया।"

ज़ौक़े समा

आप को समा का बेहद शौक था। समा से आप की तबीयत, कभी सेर नहीं होती थी, समा में आप पर कैफियत तारी होती तो आप कई कई रोज़ बेखुद और बेहोश रहते थे। बाज़ औक़ात जब आप पर वजद तारी होता तो आप खड़े हो जाते और सेहन में रक़्स करने लगते। अलबत्ता नमाज़ के वक्त आपको होश आ जाता। आप नमाज़ अदा करते और फिर पहली सी हालत हो जाती।

एक दिन का वाक़िया है कि महफ़िले समा हो रही थी। हज़रत क़ुतुब साहब रौनक अफ़रोज़ थे। क़व्वालों ने यह शेर पढ़ा:

सुरुद चीस्त कि चन्दीं फ़सूने इश्क़ दरे दस्त
सुरुद मुहरिमे इश्क़ अस्त व इश्के मुहरिम ऊस्त

यह शेर सुनकर आप पर वजदानी कैफ़ियत तारी हुई। सात रोज़ तक बेहोश रहे, नमाज के वक्त जब होश आता तो आप नमाज़ अदा कर लेते थे।

आप का इल्मी ज़ौक़

क़ुतबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी एक बुलन्द पाया मुसन्निफ भी हैं। एक अच्छे शायर भी हैं। आपकी तसानीफ हसबे ज़ेल हैं:

दलीलुल आरफ़ीनः

इस किताब में आपने अपने पीर व मुर्शिद हजरत ख़्वाजा मईनुद्दीन हसन चिश्ती के मल्फ़ूज़ात तहरीर किये हैं।

ज़ब्दतुल हकाइः यह किताब शाए नहीं हुई है।

रिसालाः आपने एक रिसाला भी मुरत्तब किया।

मसनवीः एक मसनवी भी आपसे मन्सूब की जाती है।

आपका दीवानः यह दीवान फारसी में है और शाए हो चुका है। इस में कुतुब साहब का तख़्लुस कहीं "कुतबदीन" है और कहीं "क़ुतबुद्दीन" है। आप ने अपनी शायरी को तौहीद व इरफान और हकीकत व मारफित के इज़हार का ज़रिया बनाया।

नमूनए कलाम हसबे ज़ेल हैः

ऐ लाल दर सनाए सिफ़ातत ज़ुबान मा
दे दर सिफ़ाते वहदते तू अक़्ले नारसा

बे चून व बे जगूना व बे मिसल आमदे
दर कुनह ज़ाते तो नरसदे अक़्ले अंबिया

मौजूद अज़ वजूद तू बाशद हर आंचे हस्त
फ़ानी शवन्द जुमला दा बाशद दरा बक़ा

सर गुश्तगाने बादियए इश्क़े ख़्वेश रा
हम ख़ुद दलील बाश कि हस्ती तू रहनुमा

अज़ बहर ख़्वेश क़तरए बर क़ुतुब दी फ़शां
तू बादशाह हसमी दा व बन्दए गदा

जा वसले यार ख़ुद शादा नम अमरोज़
कि कर्दा जाए अन्दर जानम अमरोज़

बकाम दिल चशीदा शबरते वसल
खुलासे अज़ आतिशे हिजरे अनम अमरोज़

नबाशद इहतियाजम बा तबीबे
कि कर्दा यार खुद दर मातम अमरोज़

ज़मन दूरी मजों कज़ दस्त रफ़्तम
अनीसे ख़िलवते जानां नम अमरोज़

बगीर ऐ ग़म जा क़ुतबुद्दीन कनारह
कि शादी ख़ेमा ज़द दर जानम अमरोज़

आनी कि नीस्त मक़ाम व मन्ज़िल
चीज़े गैर तू नीस्त मारा हासिल

दर हर दो जहां ज़ात तोक मी गुन्जद
यारब तू चगूना जाए कर्दी दर दिल

आशिक बायद कि ज़र्द बाशद रंगिश
दुज़ जुमला कायनात आयद तंगिश

रोज़े सद बारा गर कुन्द तोबा ज़इश्क़
चूँ शीशा दिगर बार ज़न्द बर संगश

आप की तालीमात

हज़रत क़ुतुब साहब की तालीमात में मुश्किलात का हल मिलता है। आप के मल्फ़ूज़ात बा बरकात को आपके ख़लीफ़ए अकबर व सज्जादा नशीं हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर[रह.] ने बतरीक़ मजालिस जमा फ़रमाया है। आपने अपनी उस किताब का नाम "फ़वाइदुस्सालिकीन" रखा। ज़ेल में चन्द मजालिस के हाल से हज़रत क़ुतुब साहब की

तालीमात की अहमीयत व इफ़ादियत का अन्दाज़ा होगा।

मुर्शिद का फ़र्ज़

हज़रत क़ुतुब साहब ने मजलिस को मुख़ातिब करते हुए फ़रमाया[1]:

"मुर्शिद को इस क़दर क़ूव्वत और तफ़तीह ख़ातिर चाहिए कि जब तालिब इस की ख़िदमत में वास्ते हुसूले बैअत के हाज़िर होवे उसे वाजिब है कि एक ही निगाह में तमाम आलाइशे दुनिया जो उसके सीने में हो मिन क़ुल्लिल वुजूह निकाल डाले और ऐसा साफ़ करे कि कोई कुदूरत, रंग, और लगाव दुनियावी बाक़ी न रहे। बादहू उसे अपनी बैअत से मुम्ताज़ फ़रमा कर वासिल इलल्लाह करे। अगर इस क़दर क़ूव्वत पीर में न हो तो जानना चाहिए कि पीर और मुरीद दोनों बादियए ज़लालत में हैं।"

साहबे सज्जादा

हज़रत क़ुतुब साहब ने हज़रत ख़्वाजा अबु बकर शिब्ली[रह.] की एक दुर्वेश से मुलाक़ात का हाल फ़रमाया। उन दुर्वेश ने हज़रत अबु बकर शिब्ली[रह.] से साहबे सज्जादा की ख़ुसूसियत इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाई:

ए शिब्ली[रह.]! सज्जादा पर्दा मुतमक्किन होवे और दूसरे का हाथ वह शख़्स पकड़े जिसे साहबे सज्जादा होने की ताक़त हो। और ताक़त उसकी यह है कि जिसका हाथ पकड़े उसे साहबे सज्जादा बनादे।"

मर्द की कमालियत

हज़रत क़ुतुब साहब ने फ़रमाया:

"अहले सुलूक लिखते हैं कि कमालियत मर्द की चार चीज़ से पैदा होती है,अव्वल कम सोना, दोम कम बोलना, सोम कम खाना, चहारुम ख़ल्क़ से कम सोहबत रखनी।"

आपने फिर बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर से मुख़ातिब हो

1. फ़वाइदुससलिकीन

कर फ़रमायाः

"ऐ दुर्वेश! जब तक थोड़ा न खावे और कम न सोवे और कम न बोले और ख़लक से सोहबत कम न रखे। हरगिज़ जोहरे दुर्वेशी हासिल न होगा। दुर्वेश का गिरोह वेह गिरोह है जिन्होंने सोना अपनी ज़ात पर हराम कर लिया है और सोहबते ख़ल्क़ मारो अफ़ा से बदतर जानते हैं।"

आलाइशे दुनिया

आपने हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर को मुख़ातिब करके फ़रमायाः

"ऐ दुर्वेश! हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तजरीद और तफ़रीद में बदरजए कामिल अकमल थे। जब उन्हें आसमान पर ले गये आवाज़ आई कि उन्हें अलग ही रखो कि अलाइशे दुनिया उनके साथ है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम निहायत हैरत ज़दा हुए–असबाबे दीनवी अपने कपड़ों में देखने लगे। ख़िरक़ा शरीफ़ में एक सूई और एक कांसए चोबीं पाया। अर्ज़ की, बारे ख़ुदाया! उसका क्या करूँ–वही रब्बानी हुई, फेंक दो। आपने उसे फेंक दिया। तब आसमान पर गुज़र हुआ।"

यह वाकिया बयान करने के बाद आप ने फ़रमाया[2]:

"ऐ दुर्वेश! जब क़लील व कम माया चीज़ होने से ऐसे ऊलुल अज़्म पैगम्बर पर ऐतराज़ हुआ तो अफ़सोस उस बुजर्ग के हाल पर जो दुनिया में बिल्कुल आलूदा हो रहा है।"

तस्लीम व रज़ा

हज़रत क़ुतुब साहब ने फ़रमाया[3]:

"हज़रत यहया अलैहिस्सलाम के हलक़ पर मआज़ीन ने छुरी रखी और गला काटने लगे। आपने शिद्दते दर्द से चाहा कि फ़रियाद करें, उसी वक्त हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आपके पास तशरीफ़ लाए और कहा,

1. फ़वाइदुस्सालिकीन 2. फ़वाइदुस्सालिकीन 3. फ़वाइदुस्सालिकीन

अल्लाह ताला फ़रमाता है। अगर आपने उफ़ की तो नाम आप का जरीदए पैग़ाम्बरी से महरुम कर दिया जाएगा। हज़रत यहया अलैहिस्सलाम ने उस हुक्म के सुनने पर उफ़ तक न की और निहायत सब्र के साथ जान जाने आफ़रीं को सौंपी।"

हज़रत ज़करिया का वाक़िया

हज़रत क़ुतुब साहब ने फिर हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम का वाक़िया बयान फ़रमाया[1]।

"उसी तरह जब आरा हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम के सरे मुबारक पर रखा गया और चीरने लगे आपने भी शिद्दते तकलीफ़ से आह करनी चाही। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और वही हुक्म ख़ुदावन्दी सुनाया। आप भी ख़ामोश रहे। यहां तक की जिस्मे मुबारक के आरे से दो टुकड़े हो गये।

हज़रत राबिया बसरी का तरीक़ा

हज़रत क़ुतुब साहब ने फ़रमाया[2]:

"राबिया बसरी रज़ियल्लाहु ताला अन्हा की रस्म थी कि जिस रोज़ उन पर बला नाज़िल होती आप निहायत ख़ुश होतीं और फ़रमाती कि दोस्त ने मेरी याद की और जिस रोज़ बला नाज़िल न होती फ़रमातीं और बदरजए अतिम रंज करतीं कि क्या सबब हुआ जो मेरी याद न हुई।"

हुस्ने ऐतिक़ाद

मुरीदों के हुस्ने ऐतिक़ाद के बारे में गुफ़्तगू शुरु हुई। हज़रत क़ुतुब साहब ने फ़रमाया[3]:

"बग़दाद शरीफ़ में एक दुर्वेश को किसी इत्तिहाम में पकड़ कर क़ाज़ी के रुबरु लाए। क़ाज़ी ने बाद तहक़ीक़ात के

1. फ़वाइदुस्सालिकीन 2. फ़वाइदुस्सालिकीन 3. फ़वाइदुस्सालिकीन

हुक्म क़त्ल का सुनाया जल्लाद यह हुक्म सुनकर दुर्वेश को सियासत गाहँ में ले गया और मवाफ़िक़ क़ाइदा के क़िब्ला रुख़ किया और चाहा कि कत्ल करे इस दुर्वेश ने मुंह किब्ला से फेर कर बजानिब मज़ार अपने पीर के कर लिया। जल्लाद ने कहा, वक्ते मौत मुंह बजानिब क़िब्ला करना चाहिये। दुर्वेश ने कहा कि तू अपने काम में मशगूल हो। मैंने मुंह अपने क़िब्ला की जानिब कर लिया है। वह दोनों इसी हेस व बेस में थे कि क़ासिद ख़लीफ़ा का हुक्म लेकर आया कि हमने कसूर उस दुर्वेश का माफ़ किया, लाज़िम है कि छोड़ दिया जाए।"

हज़रत क़ुतुब साहब ने उस वाक़िया पर तबसरा करते हुए फ़रमाया:

"देखो, उसकी खुश अक़ीदगी ने साफ़ क़त्ल से बचा लिया।"

तकबीर

एक रोज़ तकबीर कहने के मुतअल्लिक़ गुफ़्तगू हो रही थी कि दुर्वेश गली कूचे में तकबीर क्यों कहते हैं, हज़रत क़ुतुब साहब ने फ़रमाया कि[1]:

"यह तो कहीं नहीं लिखा है कि हर गली कूचे में तकबीर कही जाए और न यह तरीक़ा नेक है। अलबत्ता वास्ते शुकराना नेमत के तकबीर कहना हदीस शरीफ़ में आया है कि तकबीर नेमत मज़ीद होती है।" बाद अज़ां इरशाद हुआ[2]:

"तकबीर के माना हमद हैं और शुक्रे नेमत में हमद करनी चाहिये।"

ख़ुदा के ख़ास बन्दे

ख़ुदाएताला के ऐसे भी बन्दे हैं कि जब अपनी जगह होते हैं काबा को हुक्म होता है उसी जगह जावे कि वह बुजर्ग उसका तवाफ़ करें।"

1. जहाँ सजा दी जाती है। 1,2 फवाइदुस्सलिकीन

खाने का अदब

एक रोज़ का वाक़िया है कि मजलिस ख़त्म न हुई थी कि हज़रत क़ुतुब साहब के सामने खाना लाया गया। आपने खाना शुरु कर दिया। इतने में शेख़ निज़ामुद्दीन अबुल मुईद आये और आदाब बजा लाए। हज़रत क़ुतुब साहबने इल्तिफ़ात न बरता। सलाम का जवाब भी न दिया। जब आप खाने से फ़ारिग हुए तो शेख़ निज़ामुद्दीन अबुल मुईद ने उस अमर की शिकायत की। हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी ने जवाब दिया[1]:

"मैं ताअत में मशगूल था। तुझे क्यों कर जवाब देता,क्योंकि दुर्वेश खाना वास्ते कुव्वत इबादत के खाते हैं। जब यह नीयत है कि ऐन इबादत में है और वक्ते ताअत जवाब नहीं दिया जाता। पस लाज़िम है कि जब कोई खाना खाये तो सलाम न करे। खाना खा लेने के बाद सलाम करे।"

इरशादातए आलिया

हज़रत क़ुतुब साहब के चन्द अक़वाल पेश किये जाते हैं कि जो हसबे ज़ेल है:

आरिफ़: आरिफ़ वह है कि हर लेहज़ा व हर लम्हा उस पर अजीब हालात ज़ाहिर हों और वह आलमे सुकर में ग़र्क़ हों अगर उस वक्त उसके सीने में ज़मां व माफ़ीहा दाख़िल हो जाएं उसे उनके उतरने से मुतलक़ ख़बर न हो।

आरिफ़ वह है कि जिस पर एक एक लम्हा में हज़ारों आलमें असरार खुलें और वह आलमे सुकर में ऐसा महव हो कि अगर अट्ठारह हज़ार 18000 आलिम उसके सीने में दाख़िल हों और बाहर आयें लेकिन उसे मुतलक़ ख़बर न हो।

राहे सुलूक: राहे सुलूक में दुर्वेशी दूसरी चीज़ है। अंबारदारी दूसरी चीज़ है।

---

1. फ़वाइदुससलिकीन

- राहे सुलूक में हौसला वसी चाहिए ताकि असरार जगह पकड़ें और फ़ाश न होने पायें। क्योंकि राज़ सिर्रे दोस्त है।
- सुलतान राहे सुलूक वह शख़्स है जो सर से पाँव तक दरियाए मुहब्बत में ग़र्क़ है और कोई ऐसी साअत नहीं कि उसके सर पर आलमे मुहब्बत से बारिश न होती हो।

सालिकः सालिक के लिए दुनिया से बढ़कर कोई हिजाब नहीं।

मुहब्बतः जो शख़्स मुहब्बत का दावा करे और तकलीफ़ के वक़्त फ़रियाद करे वह मुहब्बत के सादिक़ नहीं बल्कि काज़िब और दरोग़ गो है।

कामिलः जो शख़्स कामिल होता है वह कभी दोस्त का राज़ फ़ाश नहीं करता।

- कामिल अकमल ऐसे भी हुए हैं कि उनसे किसी हालत में भी सिर्रे दोस्त फ़ाश नहीं हुआ, और वह दूसरे राज़ों से वाक़िफ़ होते चले गये।

दुर्वेशः दुर्वेश वह है जो बर वक़्ते रहरवी हज़ारों मुल्क पांव के नीचे से निकाले और क़दम आगे बढ़ाये।

- दुर्वेश के एक कल्मा में आग और दूसरे में पानी होता है।
- दुर्वेश जब कामिल हो जाता है तो जो कुछ हुक्म देता है वही होता है।
- दुर्वेश को मक़ामे कर्ब उस वक़्त तक हासिल न होगा जब तक वह सब यगानों से बेगाना न हो जाए और तजरीद अख़्तियार न करे और आलाइशे दुनिया से पाक व साफ़ न हो।
- जो दुर्वेश दुनिया को दिखाने की ग़र्ज़ से अच्छा लिबास पहने वह दुर्वेश नहीं बल्कि राहे सुलूक का रहज़न है।
- जो दुर्वेश ख़्वाहिशे नफ़्सानी से पेट भरकर खाना खाये वह नफ़्स परस्त है दुर्वेश नहीं।
- दुर्वेश को मुजर्रद रहना चाहिये कि उस से उसके मदारिज की तरक्क़ी होती है।
- दुर्वेश का फ़ाक़ा बा अख़्तियार ख़ुद है।

हक़ ताला ने तमाम ममलिकत दुर्वेश के अख़्तियार में की है।

दुर्वेश के लिए ज़रुरी है कि हमेशा आलमे तजर्रुद में रहे। हर रोज़ एक मुल्क से गुज़रे और तरक्क़ी करता रहे।

दुर्वेशीः दुर्वेशी राहत नहीं बल्कि दुनिया की मुसीबतों में मुब्तिला रहना है।

दुर्वेशी में सब से मुश्किल काम यह है कि रात को फ़ाक़ा से रहे ताकि मेराज को पहुंचे।

दुर्वेशी की नेमत से कोई नेमत बाला तर नहीं है

मुर्शिदः पीर में इतनी क़ुव्वत होना ज़रुरी है कि मुरीद के क़ल्ब की सियाही को अपनी बातिनी क़ुव्वत से साफ़ कर दे और उसको हक़ ताला तक पहुंचा दे।

मुरीदः मुरीद को पीर के हुजूर व ग़ीबत में यक्सां रहना चाहिए और जब उनका विसाल हो जाए उस वक्त ज़्यादा अदब करना लाज़िम है।

अगर हुजूरिए मुर्शिद हासिल न हो तौबा में लग़ज़िश वाक़े हो तो अपने पीर के कपड़े आगे रखे और उनसे बेअत करे।

समाः जो लज़्ज़त समा मे है वह किसी दूसरी चीज़ में नहीं है,और वह कैफियत ऐसी है कि बग़ैर समा के हासिल नहीं हो सकती।

अंबिया और औलियाः अंबिया अलैहिस्सलाम मासूम हैं और औलियाए किराम महफ़ूज़ हैं।

आलमे सुकर में भी कोई फ़ेल उनसे ख़िलाफ़ शरीअत सरज़द नहीं होता।

हुसने अमलः जो शख़्स मक़ामे हक़ीक़त में पहुंचा, हुसने अमल से पहुंचा।

ख़ौफे इलाहीः ख़ुदा वन्द ताला के ख़ौफ का ताज़ियाना बन्दा की तादीब के लिए है। जब दिल में जगह पाता है तो दिल को पारह पारह कर देता है।

आदाबे मजलिसः मजलिस में जब आए जहाँ ख़ाली जगह हो बैठ जाए।

कश्फ़ व करामातः दर हक़ीक़त मर्द वही है कि कश्फ़ व करामात के मर्तबे में अपनी ज़ात को ज़ाहिर न करे ताकि सुलूक के कुल दरजात हासिल हो जाएं।

- कश्फ़ व करामात के इज़हार से बक़िया दरजात से महरुम रहना पड़ेगा।
- जो बात अक्ल में न आये और अक्ल की उसमें रसाई न हो वह करामत है।

अक्सीरः नेक बुज़ुर्गों के कल्मात अक्सीर की ख़ासियत रखते हैं।

अवराद व वज़ाइफ़

हज़रत क़ुतुब साहब के बताये हुए चन्द अवराद व वज़ाइफ़ हसबे ज़ेल हैः

हाजत पूरी होने के लिए

हाजत पूरी होने के वास्ते सूरह बक़रा पढ़ना चाहिए।

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हज़रत क़ुतुब साहब को ख़ुदा वन्द ताला से कुछ हाजत थी। आपने सूरह बक़रा पढ़नी शुरु की। अभी एक ही रोज़ हुआ था, आप नमाज़ पूरे तौर पर पढ़ने न पाये थे कि आप का मक़सद पूरा हो गया[1]।

क़ुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ करने के वास्ते

सूरह यूसुफ़ का विर्द मुफ़ीद है[2]।

हज का सवाब

हज की नीयत से जो शख़्स अव्वल माह ज़िलहिज्जा में दो रकात नमाज़ इस तरह पढ़े कि अव्वल रकात में सूरह फ़ातिहा की पहली आयत सूरह इनआम

1. असरारुल औलिया सफ़ा 38 2. फ़वाइदुस्सालिकीन सफ़ा 26

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ से لِیَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ तक पढ़े और दूसरी रकात में سورہ فاتحہ के बाद قُلْ یٰاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ एक मर्तबा पढ़े। अल्लाह ताला हज का सवाब उस शख़्स के नामए आमाल मे लिखेगा[1]।

आफ़त से महफ़ूज़ रहने के वास्ते

हज़रत क़ुतुब ने फ़रमाया कि जो शख़्स आयतुल कुर्सी पढ़ करघरसे बाहर निकले, उसके मुताल्लिक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि ख़ुदा वन्द ताला उसके घर को आफ़त से महफ़ूज़ रखता है[2]।

मआश में फ़राख़ी के वास्ते

आप ने फ़रमाया कि जिस शख़्स की मआश में तंगी हो उसे चाहिये कि अकसर औक़ात यह दुआ पढ़ता रहे[3]:

یَادَآئِم العز والملک وَالبَقاء یَاذوالجَلال و الجود والفَضل

والعطاء یاودود ذو العرش المَجید یا فعالٌ لِّما یُرید

कश्फ़ व करामात

क़ुतबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह.] से बहुत सी करामाते ज़ाहिर हुईं। ब नज़र इख़्तिसार चन्द करामतें पेश की जाती हैं जो हसबे ज़ेल है[4]:

आप को समा का बहुत शौक़ था।जब आप दिल्ली तशरीफ़ लाते तो आप और क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी समा सुनते थे। जब उसकी इत्तिला सुलतान शहाबुद्दीन को हुई तो वह बहुत बर अंगेख़्ता हुआ। उसने कहा: "अगर फिर मुझे मालूम हुआ कि उन्होंने समा सुना है तो

1. राहतुल क़ुलूब सफ़ा 96 बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर फ़रमाते हैं कि हज़रत क़ुतुब साहब के अवरात में बरिवायत हज़रत अबु हुरैरा रज़ि मन्क़ूल है।
2. बरिवायत हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंजशकर राहतुल क़ुलूब सफ़ा 83
3. राहतुल क़ुलूब 83,84 बरिवायत हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंजशकर
4. सलिकुस्सालिकीन जिल्द दोम सैरूल अक़ताब सफ़ा 152,153

उसी वक़्त दार पर खिचवा दूंगा या मिसले ऐनुलक़ुज़ात जला कर ख़ाक सियाह कर दूंगा।"

हज़रत क़ुतुब साहब ने यह सुनकर फ़रमायाः

"अच्छा अगर वह सलामत रहेगा तो हमें दार पर खिंचवा देगा, या जलाकर ख़ाक कर देगा।"

उस महीने में सुलतान शहाबुद्दीन ख़रासान की तरफ़ चला गया[1]। चन्द रोज़ के अन्दर ही अन्दर उसका इन्तिक़ाल हो गया[2]।

हज़रत क़ुतुब साहब मुल्तान में मुक़ीम थे। क़बाचा बेग (नसीरुद्दीन क़बाचा) मुल्तान का हाकिम था। एक दिन वह हज़रत क़ुतुब साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया किः

"मुग़लों का लश्कर मुलतान फ़तह करने आया है। मुझे मुक़ाबला व मुजादिला की क़ुव्वत नहीं। ख़ुदा के लिए मेरी इमदाद कीजिए।"

हज़रत क़ुतुब साहब ने उसको एक तीर दिया और हिदायत की किः

"मग़रिब की नमाज़ के बाद बुर्ज हिसार पर बरआमद होकर यह तीर बज़रिया कमान दुश्मन की तरफ़ फेंक देना ख़ुदा की कदरत का तमाशा देखना।"

क़बाचा बेग ने ऐसा ही किया। तीर का गिरना था कि मुग़लों के लश्कर ने राहे फ़रार अख़्तियार की और वापस चला गया[3]।

एक रोज़ क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी के यहाँ मजलिसे समा थी—हज़रत क़ुतुब साहब भी रौनक अफरोज़ थे। समा ख़त्म होने पर क़ाज़ी साहब ने हज़रत क़ुतुब साहब ने अर्ज़ किया कि हाजरीने मजलिस को खाना मिलना चाहिए। हज़रत क़ुतुब साहब ने अपनी अस्तिन झरी पस हाजरीने मजलिस के सामने दो काक मा गर्म हलवे के मौजूद थे[4]।

एक रोज़ क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी के यहां मजलिसे समा हो रही

1. सीरुल आरफ़ीन सफ़ा 147
2. सीरुल आरफ़ीन सफ़ा 147 फ़रिश्ता जिल्द दोम सलिकुस्सालिकीन जिल्द दाम
3. सदए सनाबिल
4. जौहर फ़रीदी 181. 2. सौरुल औलिया सफ़ा 50,51

थी। क़ाज़ी साहब वजद में थे। क़ाज़ी सादिक और क़ाज़ी उमाद का देहली के बड़े उलमा में शुमार था। यह दोनों हज़रात मजलिस में पहुंचे। उस वक़्त हज़रत क़ुतुब साहब की उम्र अट्ठारह साल की थी। रीश मुबारक बरआमद नहीं हुई थी। उन दोनों हज़रात ने हज़रत क़ुतुब साहब से मुख़ातिब होकर कहा कि:

"अहले तसव्वुफ़ के मज़हब में अमर्द का महफ़िले समा में होना ख़िलाफ़े क़ायदा है।"

यह सुनकर हज़रत क़ुतुब साहब ने बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम पढ़कर दोनों हाथ मुंह पर फेरे। हाथों का फेरना था कि उसी वक़्त दाढ़ी बरआमद हुई।

आपने उन दोनों हज़रात से मुख़ातिब होकर फ़रमाया:

"मैं अमर्द नहीं हूँ बल्कि मर्द हूँ।"

वह दोनों आलिम यह करामत देखकर सख़्त हैरान और शर्मिन्दा हुए[1]। एक दिन सुलतान शमसुद्दीन अलतमश हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से ख़्वाब में मुशरफ़ हुआ। उसने ख़्वाब में देखा कि सरवरे दीन व दुनिया घोड़े पर सवार हैं और एक मक़ाम पर जलवा अफ़रोज़ हैं। इरशाद फ़रमाते हैं:

"ऐ शमसुद्दीन उस मक़ाम पर हौज़ तैयार कराना कि मख़लूक़ ख़ुदा को फ़ायदा पहुंचे।"

सुलतान अलतमश ने ख़्वाब से बेदार होकर हज़रत क़ुतुब साहब को इत्तिला कराई कि उसने ख़्वाब देखा है और ख़िदमत में हाज़िर होने की इजाज़त चाही। हज़रत क़ुतुब साहब ने जवाब में सुलतान अलतमश से कहला भेजा कि:

"माजराए ख़्वाब मुझे मालूम है। मैं उस मक़ाम पर जाता हूँ, जहां रसूले ख़ुदा सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हौज़ तैयार कराने का हुक्म फ़रमाया है। तुम जल्द मेरे पते पर चले आओ।"

1: ख़ज़ीनतुल असुफ़िया जिल्द दोम। सैरूल अक़ताब सफ़ा 153

सुलतान अलतमश एक जगह पहुंचा। देखा कि हज़रत क़ुतुब साहब नमाज़ अदा कर रहे हैं। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो सुलतान शमसुद्दीन अलतमश आदाब बजा लाया। उसने जिस जगह सरवर[1] आलम को ख़्वाब में देखा था उसी जगह घोड़े के सुम के निशान पाये। पानी जारी था। उसी जगह हौज़े शमसी की तामीर कराई।

सुलतान शमसुद्दीन अलतमश की दाद व दहिश का बड़ा शोहरा था। मशहूर शायर नासिरी शाही दरबार में बारियाबी की ग़र्ज़ से दिल्ली, हज़रत क़ुतुब साहब की ख़िदमते बाबर्कत में हाज़िर होकर दुआ का तालिब हुआ। आप ने ज़ुबान फैज़ तर्जुमान से फ़रमाया:

"जाओ बहुत इनाम पाओगे।"

नासिरी ने छप्पन अशआर का एक क़सीदा सुलतान की तारीफ़ में लिखा और दरबार में पेश किया। सुलतान ने कुछ इल्तिफ़ात न बरता। नासिरी सख़्त परेशान हुआ। उसने अपने दिल में हज़रत क़ुतुब साहब की मदद चाही। मदद का चाहना था कि सुलतान नासिरी की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा:

"हाँ क़सीदा पढ़ो।"

उसने क़सीदा पढ़ा। क़सीदा का मतलब यह है:

एक फ़ित्ना अज़ नहीब तू ज़न्हार ख़्वास्ता
तेग़ तू माल व फील ज़कुफ्फ़ार ख़्वास्ता

सुलतान शमसुद्दीन अलतमश क़सीदा सुनकर बहुत ख़ुश हुआ।

1. जौहर फ़रीदी 181.

नासिरी को छप्पन हज़ार रुपये बतौरे इनाम दिये। रुपया लेकर नासिरी खुश खुश हज़रत क़ुतुब साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। सब रुपये आपके सामने रख दिये। आपने उस में से कुछ कफ़्बूल नहीं फ़रमाया। वह वापस वतन चला गया[1]।

आपकी वफ़ात के बाद भी आप के फ़ैज़ का चश्मा जारी है। सुलतानुल मशाइख़ अकसर आपके मज़ार पुर अनवार पर हाज़िर हुआ करते थे। एक दिन मज़ार शरीफ़ को जाते हुए यह ख़्याल आया कि आने जाने वालों की आप को ख़बर भी होती है या नहीं। जब आप मज़ारे अक़दस के करीब पहुंचे तो मज़ारे शरीफ़ से आवाज़ आई[1]:

मरा ज़िन्दा पन्दा चूं ख़्वेशतन
मन आयम बजां गर तू आई ब तन

एक फ़ासिक़ व फ़ाजिर आदमी हज़रत क़ुतुब साहब के पायें दफ़न किया गया। लोगों ने उसे ख़्वाब में देखा कि जन्नत की सेर कर रहा है। उस से दरियाफ़्त किया कि किस अमल के बदले उसे जन्नत मिली। उस शख़्स ने जवाब दिया:

"जब अज़ाब के फ़रिश्ते मेरी कब्र में आये तो आपकी (हज़रत क़ुतुब साहब की) रुहे मुबारक को तकलीफ़ हुई पस खुदा वन्द ताला ने मुझसे अज़ाब को दूर कर दिया और मुझको बख़्श दिया[2]।"

आपका फ़ैज़ बातिनी जारी है। आप के तसर्रुफ़ाते बातिनी से लोग अब भी मुस्तफ़ीज़ हो रहे हैं।

1. अफ़ज़लुल फ़वाइद 2. सौरुल औलिया सफ़ा 50,51

बाब न. 3

हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी

हज़रत काज़ी हमीदुद्दीन नागौरी जामे कमालाते मानवी व सौरी हैं, आप क़ुतबुल अक ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी के उस्ताद हैं। आप एक बहुत बड़े आलिम थे और साथ ही साथ एक ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग थे।

ख़ानदानी हालातः आप बुख़ारा के शाही ख़ानदान से ताल्लुक रखते थे।

वालिद माजिद

आपके वालिद माजिद का नाम अताउल्लाह महमूद है। आप बुख़ारा के बादशाह थे। इसी लिए आप सुलतान अताउल्लाह महमूद कहलाते थे।

नसब नामए पिदरी

आपका नसब नामा पिदरी हसब ज़ेल है[1]:

शेख़ मुहम्मद बिन सुलतान अताउल्लाह महमूद बिन सुलतान अहमद बिन सुलतान अहमद बिन सुलतान बिन शेख़ युसुफ़ बिन शेख़ तैयब बिन शेख़ इस्माईल बिन ताहिर बिन याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इस्माईल बिन क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अमीरुल मोमीनीन हज़रत अबु

1. बुरहान उल जाहलीन

बक्र सिद्दीक़रज़ि॰ बिन क़हाफ़ा बिन आमीर उम्र बिन काब बिन साद बिन तीमम बिन मुर्रह (कि जद हफ़्तुम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं)

विलादत शरीफ़: आप 463 हिजरी में पैदा हुए।

नाम: आपका नाम मुहम्मदरह॰ है।

ख़िताब: आप मदीना मनव्वरह में हाज़िर थे। आप को "क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी" का ख़िताब बारगाहे रिसालत से अता हुआ। आप उसी ख़िताब से मशहूर हुए।

इब्तिदाई ज़िन्दगी

आपने अपने वालिद माजिद के सायए आतिफ़त में परवरिश पाई आपके वालिद माजिद ने आपकी तालीम व तरबीयत पर ख़ास तवज्जोह दी।

तख़्त नशीनी

आप के वालिद माजिद ने कुछ तो ज़ईफी की वजह से और कुछ मोहब्बत की वजह से आपको तख़्त पर बिठाकर खुद हुकूमत से किनारह कश हो गये। उस वक्त हज़रत क़ाज़ी साहब की उम्र बावन साल की थी। आपने अपनी ज़िम्मेदारियों को बहुसन व ख़ूबी अंजाम दिया।

पहला सदमा

आपकी शरीके हयात बीबी माहरु ने दाई अजल को लब्बैक कहा। हज़रत क़ाज़ी साहब के लिये यह सदमा ऐसा था कि जिस से उनकी ज़िन्दगी और उनके ख़्यालात में काफ़ी तब्दीली वाक़े हुई।

ज़िन्दगी में काया पलट

बीवी के इन्तिक़ाल के बाद हज़रत क़ाज़ी साहब अकसर तन्हाई में बैठकर मौत और ज़िन्दगी के फ़ल्सफ़ा के मुतअल्लिक़ सोचा करते थे। अब आपको महसूस हुआ कि दुनिया नापायदार है। यहां की हर चीज फ़ानी है, फिर ख़ालिक़ से क्यों न दिल लगाया जाए जिसको फ़ना नहीं। आप उन्हीं ख़्यालात में रहते थे। एक दिन शिकार के लिए निकले। आपने एक हिरन का पीछा किया आपने उसके एक तीर मारा। वह ज़ख़्मी हुआ। जब आप

उस हिरन के क़रीब पहुंचे तो उस हिरन ने आपको मुख़ातिब होकर कहा:

"ऐ अज़ीज़! तू बन्दए परवरदिगार है। मुझ बेगुनाह को क्यों मारा?

अपने परवरदिगार को क्या जवाब देगा।"

आप महल वापस आये। तख़्त व ताज को ठुकरा कर तलाशे हक़ में निकले।

करमान में क़्याम

बुख़ारा से रवानगी के वक़्त आप के वालिद माजिद भी आपके साथ हो लिए। आप करमान पहुंचे करमान में आपने ख़्वाजा अबू बकर किरमानी के यहां क़्याम फ़रमाया। करमान में आपकी दूसरी शादी ख़्वाजा अबु बकर किरमानी की लड़की बीबी हुमैरा से हुई।

तलाशे हक़

आपने अपने अहल व अयाल को करमान में छोड़ा और ख़ुद मा वालिद बुजफ़र्गवार के तलाश हक़ में निकले। हज़रत ख़्वाजा ख़िज़र अलैहिस्सलाम को हुक्म हुआ कि मुहम्मद बिन अता यानी हज़रत क़ाज़ी साहब को इल्में लदुन्ना तालिम करो। हज़रत ख़्वाजा ख़िजर[अ.] ने बारह बरस तक आपको अपनी ख़िदमत में रखा और तालीम दी। जब तालीम पूरी हो गई, ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने आपको बग़दाद जाने का हुक्म दिया।

बैअत व ख़िलाफ़त

जिस वक्त आप बग़दाद पहुंचे। आपके पास अपनी चार तसानीफ़ थीं। बगदाद में आप हज़रत शेख़ शहाबुद्दीन सहरवुर्दी की बैअत से मुशर्रफ़ हुए। आपके पीर व मुर्शिद ने सरवरे[स.] आलम का जुब्बा मुबारक आपको अता फ़रमाया। आपको ख़िलाफत के सरफ़राज़ फ़रमाया।

ज़ियारते हरमैन शरीफफ़ैन

बग़दाद से आप मक्का मुअज़्ज़मा गये। हज का फ़रीज़ा बजा

लाए। वहां से मदीना मनव्वरह गये। मदीना मनव्वरह में आपने एक साल दो महीने और सात दिन क़्याम किया। एक रोज़ आपको बारगाहे रिसालत से क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी का ख़िताब अता हुआ। आप नागौर से वाक़िफ़ न थे। जब आपको मालूम हुआ कि नागौर हिन्दुस्तान में है तो आपने हिन्दुस्तान का इरादा किया।

हिन्दुस्तान में आमद

मदीना मनव्वरह से आप मक्का मुअज़्ज़मा आये। हज किया और तीन साल तक वहां क़्याम किया। वहां से रवाना होकर बग़दाद आये और अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में हाज़िर हुए। बग़दाद से मा जुब्बए मुबारक हिन्दुस्तान के लिए रवाना हुए। रास्ते में करमान पड़ता था। वहां चन्द रोज़ क़्याम फ़रमाया। करमान से अपने अहल व अयाल और वालिद बुजुर्गवार को साथ लेकर पेशावर पहुंचे। पेशावर में कुछ अरसा क़्याम किया। अपने अहल व अयाल और वालिद माजिद को वहीं छोड़ा और खुद हज़रत मईनुद्दीन हसन चिश्ती और दीगर बुजुर्गान के साथ हिन्दुस्तान में दाख़िल हुए।

नागौर में तशरीफ़ आवरी

आख़िर कार 561 हि॰ में नागौर में जलवा अफ़रोज़ हुए और एक बूढ़ी औरत के यहां जो क़ौम की तेलन थी क़्याम फ़रमाया। नागौर को आप ने अपनी रुहानी क़ुव्वत से फ़तह किया। लोगों ने आपका पैग़ामे हक़ क़ुबूल किया।

अविश व बग़दाद को रवानगी

नागौर में आपने कुछ दिनों क़्याम फ़रमाया। एक दिन हज़रत क़ाज़ी साहब को हातिफ़ ग़ैब से आवाजत्र आई कि

"अविश पहुंचकर हमारे क़ुतुब को तालीम करो।"

आप फौरन अविश को रवाना हो गये और वहां पहुंचकर क़ुतबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह॰] को बिस्मिल्लाह पढ़ाई। हज़रत क़ुतुब साहब को पन्द्रह पारे याद थे। आपने बाक़ी पारे

हज़रत क़ुतुब साहब को पढ़ाये। हज़रत क़ुतुब साहब की तालीम के बाद आप बग़दाद रवाना हो गये।

दिल्ली में आमद

बग़दाद से आप दिल्ली रवाना हुए। रास्ते में पेशावर में क़याम फ़रमाया। पेशावर से अपने अहल व अयाल और वालिद माजिद को हमराह लेकर दिल्ली तशरीफ़ लाए। दिल्ली में आप ने एक धोबी का मकान ख़रीदा और उसमें रहने लगे।

वालिद माजिद का इन्तिक़ाल

आपके वालिद माजिद का इन्तिक़ाल दिल्ली में हुआ।

दिल्ली में समा की महफ़िलें

हज़रत क़ुतुब बख़्तियार काकी[रह.] और हज़रत क़ाज़ी साहब ने दिल्ली में समा की महफ़िले मुनाक़िद कीं। क़ाज़ी साद और क़ाज़ी उमाद ने एतराज़ किया। बहस व मुबाहसा के बाद यह तय पाया कि पहले हज़रत क़ाज़ी साहब बग़दाद जाकर समा जारी कराएं, फिर दिल्ली में भी एतराज़ की गुंजाइश नहीं रहेगी।

बग़दाद को रवानगी

हज़रत क़ाज़ी साहब बग़दाद को रवाना हुए। बग़दाद पहुंचकर आपने अपने एक मुरीद के यहां क़याम फ़रमाया। बग़दाद में समा की सख़्त मुमानिअत थी। आपने मुरीद के यहां शहनाई सुनी। आपको तवाजुद हुआ। जब उसकी ख़बर शहर में फैली, वहां एक शोर बरपा हुआ, हज़रत क़ाज़ी साहब ने अपने मुरीद के यहां एक मजलिस समा कराई, और उसमें मुफ़्ती, क़ाज़ी और शहर के दीगर लोगों को बुलाया। बहस व मुबाहसा के बाद हज़रत क़ाज़ी साहब की राय से सब ने इत्तिफ़ाक़ किया कि अहले हक़ को समा हलाल है और ना अहल को समा हराम है। उस दावत में हज़रत क़ाज़ी साहब ने बहत्तर (72) मज़ामीर जमा किये थे, और मकान के सहन में उन पर सरपोश रखकर रख दिये थे। जब क़ाज़ी साहब ने उन मज़ामीर की तरफ़ तवज्जोह की वह आवाज़ देने लगे। हाज़िरीन पर वजद तारी हुआ। सब ने इक़रार किया कि समा अहल के वास्ते मुबाह है। और अहलीयत एक ऐसी चीज़ है जिसको सिवाये ख़ुदा के और कोई नहीं

हज़रत क़ुतुब साहब को पढ़ाये। हज़रत क़ुतुब साहब की तालीम के बाद आप बग़दाद रवाना हो गये।

दिल्ली में आमद

बग़दाद से आप दिल्ली रवाना हुए। रास्ते में पेशावर में क़याम फ़रमाया। पेशावर से अपने अहल व अयाल और वालिद माजिद को हमराह लेकर दिल्ली तशरीफ़ लाए। दिल्ली में आप ने एक धोबी का मकान ख़रीदा और उसमें रहने लगे।

वालिद माजिद का इन्तिक़ाल

आपके वालिद माजिद का इन्तिक़ाल दिल्ली में हुआ।

दिल्ली में समा की महफ़िलें

हज़रत क़ुतुब बख़्तियार काकी[रह] और हज़रत क़ाज़ी साहब ने दिल्ली में समा की महफ़िले मुनाक़िद कीं। क़ाज़ी साद और क़ाज़ी उमाद ने एतराज़ किया। बहस व मुबाहसा के बाद यह तय पाया कि पहले हज़रत क़ाज़ी साहब बग़दाद जाकर समा जारी कराएं, फिर दिल्ली में भी एतराज़ की गुंजाइश नहीं रहेगी।

बग़दाद को रवानगी

हज़रत क़ाज़ी साहब बग़दाद को रवाना हुए। बग़दाद पहुंचकर आपने अपने एक मुरीद के यहां क़याम फ़रमाया। बग़दाद में समा की सख़्त मुमानिअत थी। आपने मुरीद के यहां शहनाई सुनी। आपको तवाजुद हुआ। जब उसकी ख़बर शहर में फैली, वहां एक शोर बरपा हुआ, हज़रत क़ाज़ी साहब ने अपने मुरीद के यहां एक मजलिस समा कराई, और उसमें मुफ़्ती, क़ाज़ी और शहर के दीगर लोगों को बुलाया। बहस व मुबाहसा के बाद हज़रत क़ाज़ी साहब की राय से सब ने इत्तिफ़ाक़ किया कि अहले हक़ को समा हलाल है और ना अहल को समा हराम है। उस दावत में हज़रत क़ाज़ी साहब ने बहत्तर (72) मज़ामीर जमा किये थे, और मकान के सहन में उन पर सरपोश रखकर रख दिये थे। जब क़ाज़ी साहब ने उन मज़ामीर की तरफ़ तवज्जोह की वह आवाज़ देने लगे। हाज़िरीन पर वजद तारी हुआ। सब ने इक़रार किया कि समा अहल के वास्ते मुबाह है। और अहलीयत एक ऐसी चीज़ है जिसको सिवाये ख़ुदा के और कोई नहीं

जानता। जो समा का अहल होता है वह उसके अहल को पहचान लेता है। आम लोग उस बात को नहीं जानते।

वापसी दिल्ली

बग़दाद से हज़रत क़ाज़ी साहब दिल्ली वापस आए—हज़रत क़ुतुब साहब और आप समा सुनते थे। हज़रत क़ाज़ी साहब का इक्तिदार बाज़ लोगों को नागवार था। उन्होंने समा की आड़ में आपकी मुख़ालिफ़त शुरु की। क़ाज़ी साद और क़ाज़ी उमाद को हज़रत क़ुतुब साहब की ऐसी बददुआ लगी कि उन दोनों को अपनी जान से हाथ धोने पड़े।

आपका नागौर का क़ाज़ी होना

सुलतान शमसुद्दीन अलतमश ने आपको नागौर का क़ाज़ी मुक़र्रर किया। आपने इस उहदा को क़ुबूल किया। तीस साल तक आपने क़ज़ा के उहदे को ज़ीनत बख़्शी। आपने क़स्बा रेहल आबाद किया। बा फ़रमान सरवरे" आलम आप हरमैन शरीफ़ चले गये और क़ुज़ा का उहदा अपने दूसरे लड़के मौलाना ज़हीरुद्दीन साहब को सुपुर्द फ़रमाया

मक्का मुअज्ज़मा और मदीना मनव्वरह से दिल्ली वापस तशरीफ़ लाए।

अज़वाज व औलाद

आपने दो शादियाँ कीं। आपकी पहली शादी बीबी माहरु से हुई थी। आपकी दूसरी शादी बीबी हुमैरा से हुई उनसे सात लड़के और दो लड़कियाँ हुई लड़कों के नाम हस्बे ज़ेल हैं

मौलाना नासिहुद्दीन, मौलाना अहमद जहीरुद्दीन, शेख़ अलीमुद्दीन, शेख़ हिसामुद्दीन, शेख़ वजीहुद्दीन, शेख़ अब्दुल्लाह।

लड़कियाँ: बीबी अलहदिया, बीबी साहबे दौलत।

वफ़ात शरीफ़

नमाज़े तरावीह में आपने क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म किया। नमाज़ के बाद सज्दा किया, और सज्दा में इन्तिक़ाल फ़रमाया। लोग यह समझते

1. फ़वायदुल फ़वाइद सफ़ा 195 2. रिसाला हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी

रहे कि आप सज्दा में हैं। आपकी वफ़ात का हाल बहुत देर में मालूम हुआ। आपने 9 रमज़ान 643 हि. में विसाल फ़रमाया[1]। बवक्ते वफ़ात आपकी उम्र एक सौ अस्सी (180) साल की थी। आपका मज़ार मुबारक महरौली में वाक़े है।

आप के खुल्फ़ा

आप के ख़ुलफ़ा हसबे ज़ेल हैं।

शेख़ अहमद नहरवानी। शेख़ ऐन उदीन क़साब शेख़ शाही मोईताब। शेख़ महमुद मोईना दूज़।

सीरते पाक

हज़रत क़ाज़ी साहब, साहबे दिल होने के अलावा साहबे इल्म भी थे। आप इल्मे ज़ाहिर व बातिन में कमाल रखते थे। आपको समा का बहुत शौक था। दिल्ली में समा का सिक्का आप ही ने जमाया था[2]।

आपका इल्मी ज़ौक

समा के बारे में आपने बहत्तर (72) रिसाले लिख़े हैं। आपकी मशहूर तसानीफ़ हसबे ज़ेल हैं:

तवालिउश्शुमूस शरह असमाए हुस्ना। लवामे लवाइह।
माताले शरह चेहल हदीस। किताब हफ़्त अहबाब। रिसाला
(क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी)

आपकी तालीमात

आपकी तालीमात, असरार हक़ीक़त व मआनी तरीक़त का बेश बहा ख़ज़ाना हैं।

ख़ुदा के साथ मामला

आप ने फ़रमाया कि:

"जिस शख़्स का ख़ुदा के साथ मामला नहीं हैं, उसकी बात

1. सफ़ीनतुल औलिया, गुलज़ारे अबरार

किसी के दिल में असर नहीं करती। तो मालूम कर कि नमाज में तकबीर मक़ाम हैबत है। क़याम मक़ाम क़ुर्बत है। क़रात मक़ाम मकालमात है। रुकू मक़ाम ख़ौफ़ है। सुजूद मक़ाम मुशाहिदा है। क़ुऊद मक़ामे उल्फ़त है।"

चार क़िब्ले

आपने फ़रमाया[1]:

"क़िब्ले चार हैं:

1 क़िब्ला हवारिज है जो तमाम मोमिन मुसलमानों पर फ़र्ज़ हुआ। जिसकी तरफ़ नमाज पढ़ते हैं।

2 क़िब्ला दिल है कि असहाब तरीक़त को उस से तवज्जोह है और उसमें उनकी मशग़ूली है।

3 क़िब्ला पीर है कि मुरीदों की तवज्जोह शेख़ की जानिब हो।

4 क़िब्ला वजहुल्लाह है कि और तमाम क़िब्लों को महव करने वाला है और रसूल व अंबिया व जुमला अख़्स औलिया की तवज्जोह उस जानिब है।"

बाज़ अक़वाल

आप के बाज अक़वाल हसबे जेल हैं:

- फ़रामोशी नफ़्स यादे हक़ है। पस वह दिल नहीं मरता जो इस सिफ़त से मुत्तसिफ़ हो। जिसको याद हक़ नहीं है, वह फ़ानी होगा[2]।
- हर चीज़ की गायत है, और गायत इबादत की अक्ल है। इस वास्ते कि इबादत बे इल्मे रंज बेहूदा है और इल्म बे अक्ल दर्दे सिर है, और हुज्जत रोज़े क़यामत यही अक्ल हैं।
- अहवाले दुर्वेश बसरिए मुहब्बत व शुयूख़ है। जब दुर्वेशों को मोहब्बत ग़ालिब होती है। दोस्त की तजल्ली में इस तरह महव हो जाते हैं कि उस वक्त दूसरे किसी का ख़्याल नहीं रहता[3]।

---

1. रिसाला हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी 2. अनवारूल औलिया
3. अनवारूल औलिया

- रोज़ा, मजाज़ी खाने पीने से बाज़ रहना है। रोज़ा हक़ीक़ी ख़्वाब व बेदारी में और उठते बैठते इबादत में रहना है।

करामात

बग़दाद से दिल्ली आते हुएं आपको एक जोगी जिसका नाम ज्ञान नाथ था मिला। उसने आपको किसी घास की जड़ पेश, जिस से अक्सीर बनती थी। हज़रत क़ाज़ी साहब ने वह जड़ी दरिया में फेंक दी। जोगी ने अफसोस किया। आपने ने दरिया में हाथ डालकर उस जड़ी को निकाल दिया। फिर आपने उस से आंखें बन्द करने को फ़रमाया। जब उसने आंखें बन्द् करके खोली, वह अर्श से तहतुस्सरा तक देख सकता था। हर चहार तरफ़ सोना नज़र आता था, वह जोगी बहुत मुतास्सिर हुआ और आप से बैअत हुआ।

एक मर्तबा दिल्ली में बारिश नहीं हुई। बादशाह ने मशाइख़ से दुआ की दरख़्वास्त की। हज़रत क़ाज़ी साहब ने समा की फ़रमाइश की। बादशाह ने खाने और समा का इन्तिज़ाम किया। खाने के बाद समा शुरु हुआ। ऐसी बारिश हुई कि लोग कहने लगे, कि अब रुक जाए तो बेहतर है[1]।

1 सैरुल मजलिस (उर्दु तर्जमा) सफ़ा 30

बाब न. 4

हज़रत शेख़ बदरुद्दीन ग़ज़नवी

हज़रत शेख़ बदरुद्दीन ग़ज़नवी मक़बूल बारगाहे ईज़दी हैं। क़ुतबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह.] के मुरीद और ख़लीफ़ा हैं–आप ग़ज़नी के रहने वाले हैं।

आपका ख़्वाब

आपने एक रात हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा कि आं हज़रत[स.] मा सहाबा[रज़ि.] किराम और मशाइख़े इज़ाम तशरीफ़ फ़रमा हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपका हाथ पकड़ कर एक दुर्वेश के सुपुर्द किया और फ़रमाया:

> "ऐ बदरुद्दीन! तू इस दुर्वेश का मुरीद हो। वह दुर्वेश जवान थे, और अभी दाढ़ी निकल रही थी। उन दुर्वेश का नाम ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन है।"

पीर की तलाश

ख़्वाब से बेदार होकर आपने यह इरादा किया कि जो दुर्वेश ख़्वाब में दिखाए गए हैं। उन्हें तलाश करेंगे। पीर की तलाश आपको शहर बा शहर लिए फिरी। उस तलाश में आप हैरान व सरगरदां फिरते रहे। अपना घर छोड़ा, अपना वतन छोड़ा, अपने माँ बाप, अज़ीज़ व अक़रबा को छोड़ा। आप ग़ज़नी से रवाना हुए। उस सफ़र का हाल

आपने खुद एक मर्तबा हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया से बयान किया। आपने उनको बताया कि—

"मैं गज़नी से लाहौर आया तो उन दिनों लाहौर बिल्कुल आबाद था। कुछ मुद्दत मैं वहाँ रहा, फिर वहाँ से मेरा इरादा सफर का हुआ, एक दिन दिल ये चाहता था कि दिल्ली जाऊँ और कभी चाहता था कि गजनी जाऊँ मैं शक शुबहा में था लेकिन दिल की कशश गज़नी की तरफ़ ज़्यादा थी क्योंकि वहाँ माँ—बाप,भाई और ख़्वेश व अक़रबा रहते थे, और दिल्ली में एक दामाद के सिवा और कोई न था"।

फाल

आप कुछ तय न कर सके कि किधर जाएं। आखिर कार आप ने ये तय किया कि क़ुरआन शरीफ़ की फाल देखना चाहिए और जैसा कुछ फाल में निकालेगा उस के मुताबिक क़दम उठाना चाहिए, आप फ़रमाते हैं[1]।

"मुख्तसर ये कि मैंने क़ुरआन शरीफ़ से फाल देखने का इरादा किया। एक बुज़ुर्ग की खिदमत में हाजिर हुआ। पहले गजनी की नीयत से देखा तो अजाब की आयत निकली। फिर दिल्ली की नीयत से देखा तो बहिश्ती नदियों और बेहिशत के औसाफ की आयत निकली, अगरचे दिल तो गज़नी की तरफ़ जाने को चाहता था, लेकिन फाल के मुताबिक दिल्ली आया"

दिल्ली में आमद

आखिर कार दिल्ली पहुंचे। आप फ़रमाते हैं[2]।

"जब शहर में पहुचा तो सुना कि मेरा दामाद क़ैद में हैं। मैं बादशाह के दरवाज़े पर आया ताकि उस के हाल की इत्तिला दूँ। मैंने देखा। तो घर से निकला ही था। हाथ में

1 फ़वाइदुल फ़वाइद (उर्दू तर्जूमा) सफ़ा 60
2. फ़वाइदुल फ़वाइद (उर्दू तर्जूमा) सफ़ा 60

कुछ रुपये लिए हुए था। मुझ से बग़ल गीर हुआ और निहायत ख़ुश हुआ। मुझे अपने घर ले गया और रुपये सामने ला कर रखे मेरी दिल जमयी हुई।

आपने ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन के मुताल्लिक़ दरियाफ़्त किया। आपकी मुसर्रत की कोई इन्तहा न थी। जब आपको मालूम हुआ कि वह दुर्वेश जिनका नाम ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन है और जिनको आपने ख़्वाब में देखा था, दिल्ली में तशरीफ़ रखते हैं। एक मशहूर दुर्वेश हैं और हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन और हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी एक ही जगह साथ रहते हैं। फिर आपने उम्र के मुताल्लिक दरियाफ़्त किया। आपको बताया गया कि हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी ज़ईफ़ हैं। उनकी उम्र क़रीब एक सौ तीस साल की है–लेकिन ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन साहब की जवानी का आग़ाज़ है। क़रीब सतरह साल के होंगे, दाढ़ी निकल रही है।

यह सुनकर आपको पूरा यक़ीन हो गया कि वह दुर्वेश जिनको उन्होंने ख़्वाब में देखा था यही बुजुर्ग हैं। आप हज़रत क़ुतुब साहब की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिए बैचैन थे। कुछ लोगों से आपको हज़रत क़ुतुब साहब की ख़ानक़ाह का पता मालूम हुआ। आख़िरकार आप ख़ानक़ाह पहुंचे। ख़ानक़ाह में उस वक्त समा हो रहा था। हज़रत क़ुतुब साहब तशरीफ़ रखते थे[1]।

बैअत व ख़िलाफ़त

आप भी जाकर बा अदब बैठ गये। जब समा ख़त्म हुआ तो आपने सरे नियाज़ ज़मीन पर रखा। शौके क़दम बोसी का इज़हार किया, और फिर निहायत आजिज़ी के साथ अर्ज़ किया कि:

"बंदा बदरुद्दीन हज़रत का मुरीद होना चाहता है।"

हज़रत क़ुतुब साहब ने इरशाद फरमाया कि[2]:।"

"ऐ बदरुद्दीन! तू मेरा मुरीद,उसी रात से हो गया था, जिस रात तूने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा था। और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि

1 सीरुल आरफ़ीन सफ़ा 157 2 सीरुल आरफ़ीन सफ़ा 157

वसल्लम ने तुझे मेरे सुपुर्द कर दिया था और फ़रमाया था कि उसे मुरीद बना लें, मैंने उसी रात अल्लाह के रुबरु तुझे मुरीद कर लिया था और बारगाहे इलाही में मैंने अर्ज़ की थी कि बदरुद्दीन ग़ज़नवी को क़ुबूल कर। बारगाहे इलाही से हुक्म हुआ था कि,ऐ क़ुतबुद्दीन! हमने तेरी दुआ कबूल कर ली है, हमने बदरुद्दीन ग़ज़नवी को क़ुबूल कर लिया है और अपना दोस्त बना लिया है........................"

आप हज़रत क़ुतुब साहब की फैज़ तर्जुमान से यह सुनकर बहुत ख़ुश हुए आप यह चाहते थे कि ख़्वाजगाने चिश्त की रस्म अदा की जाए। आलमे रुया के अलावा इस आलम में भी बैअत का शर्फ़ बख़्शा जाए और कुलाहे चहार तुर्की अता की जाए। आपने हज़रत क़ुतुब साहब से उसके मुताल्लिक़ अर्ज़ किया। हज़रत क़ुतुब साहब ने आप की दरख़्वास्त मन्जूर फ़रमाई। आपको शर्फे बैअत से नवाज़ा, और कुलाहे चहार तुर्की आपको मर्हमत फ़रमाई। फिर आपसे मुख़ातिब होकर फ़रमाया[1]:

"ऐ बदरुद्दीन! आप ने आसमान की तरफ़ देख।"

हज़रत क़ुतुब साहब ने दरियाफ़्त फ़रमाया कि:

"ऐ बदरुद्दीन तूने कुछ देखा?"

आपने जवाब दिया कि:

"मैं ने अर्श व कुर्सी को देखा है।"

फिर हज़रत साहब ने फ़रमाया कि

"तू किसका मुरीद है? आसमान की तरफ़ देख कि लौहे महफ़ूज़ में क्या लिखा हुआ है?"

आपने आसमान की तरफ़ देखा और अर्ज किया कि:

"वहाँ मैंने लिखा देखा कि मैं आपका मुरीद हूँ।"

फिर इरशाद हुआ कि:

"ज़मीन की तरफ़ देख

---

1. सीरूल आरफ़ीन सफ़ा 158

आपने ज़मीन की तरफ़ देखा। अब आप तहतुस्सरा तक देख सकते थे। बैअत के वक्त उम्र सत्तर (70) साल की थी।

आप पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में रहकर दर्जे कमाल को पहुंचे।

हज़रत क़ुतुब साहब ने आपको ख़िलाफ़त अता फरमाई। अपने पीर व मुर्शिद से आपने ख़िरका भी पाया। विसाल के क़बल हज़रत क़ुतुब साहब ने आपसे फ़रमाया कि[1]:

"ऐ बदरुद्दीन! जो नेमत हमने अपने पीर से हासिल की थी वह तुझे इनायत की, और अल्लाह से इल्तिमास की है कि तू मेरा महबूब बने।"

पीर व मुर्शिद की नसीहतें

क़ुतबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह.] ने आपको चन्द नसीहतें फ़रमाई जिस परआप सारी उम्र कारबन्द रहे। वह नसीहतें हसबे ज़ेल हैं:

"हमारे पीरों की पैरवी करो। फ़क़्र व फ़ाक़ा को अख़्तियार करो। फ़क़ीरो और ग़रीबों को अज़ीज़ जानो। दुनिया वालों से मेल जोल न रखो, दुनिया से बाज़ रहो गुदडी पहनो। हर वक्त खुदा की याद में मशगूल रहो—अल्लाह ताला के दोस्तों से मुहब्बत करो। दोलत मंदों से ज्यादा दुर्वेशों की इज़्ज़त करो। फ़क़ीरों के हाथ ख़ुद अपने हाथ से धोओ।"

आपके सुपुर्द ख़िदमत

हज़रत क़ुतुब साहब ने ख़ानक़ाह की इमामत आपके सुपुर्द फ़रमाई। आपने इस ख़िदमत को बहुसन व ख़ूबी अंजाम दिया।

सदमा

दिल्ली आने के कुछ दिनों बाद आपको यह मालूम होकर सख़्त सदमा हुआ कि मुग़लों ने ग़ज़नी को बरबाद कर दिया और आपके वालिदेन,बहन, भाई और ख़्वेश व अक़रबा को शहीद कर किया[2]।

1. सैरूल आरफ़ीन सफ़ा 160 2. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 60.

पीर व मुर्शिद की ख़िदमत

आप अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में हर वक्त हाज़िर रहते थे[1] अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत को अपने लिये बाइसे सआदत समझते थे।

पीर व मुर्शिद का अदब

जब आप अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में हाज़िर होते तो बा अदब बैठते, और सर झुका लेते। आपके पीर व मुर्शिद आपका यह अदब देखकर फ़रमाते[2]।

बहक़ीक़त चराग़ किश्ता शवद
चूं बरूँ रफ़्त अज़ सरिश रोग़न

एक वाक़िया

एक मर्तबा क़ाज़ी मिन्हाजुद्दीन को हज़रत शेख़ बदरुद्दीन ग़ज़नवी के घर बुलाया गया। क़ाज़ी साहब ने आने का वादा किया। वाज़ से फ़ारिग़ होकर हसब वादा आप आए। हज़रत शेख़ बदरुद्दीन के घर पर महफ़िल समा मुनक़िद हुई। यह महफ़िल बहुत पुर कैफ़ थी। क़ाज़ी साहब पर वजद तारी हुआ, और अपने दस्तार और जामा वग़ैरा सब फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर दिए[3]।

क़ाज़ी साहब की छेड़छाड़

क़ाजी मिन्हाजुद्दीन आपको "शेरे सुर्ख़" कहा करते थे[4]।

दुआ के लिये इल्तिमास

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने एक रात हज़रत शेख़ बदरुद्दीन ग़ज़नवी से ख़्वाब में दुआ करने की दरख़्वास्त की। इल्तिमास अमर के वास्ते दुआ करने दरख़्वास्त की कि आपको क़ुरआन शरीफ़ याद हो जाए[5]।

1. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 153 2. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 12
3. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 155 4. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 156
5. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 76

आरज़ू

आपको अपने पीर व मुर्शिद क़ुतबुल अक़ताब हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[rh] का ख़लीफ़े अकबर, जानशीन और क़ायम मुकाम बनने की आरज़ू थी[1]। आपकी यह आरज़ू पूरी न हुई।

मजलिसे वाज़

आपकी मजलिस वाज़ में हर तब्के के लोग होते थे। आपकी मजलिस में हजरत फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर[rh] हज़रत सैयद मुबारक ग़जनवी हजरत शेख़ जियाउद्दीन मुरीद गरीब, मौलाना जाजरमी और क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी ने शिरकत फरमाई है[2]।

आख़िरी अय्याम

वफ़ात से क़ब्ल आप शेख़ इमामुद्दीन अबदाल[rh] जो हजरत शेख़ जियाउद्दीन मुरीद गरीब के भतीजे है अपना जानशीन मुकरर किया उन को गुदरी अता की औ उन के लिए दुआए खैर की[3] आप हर साल नमाज़ दराजिए उम्र पढा करते जो रजब के आखिर में पढी जाती है। जिस साल आपका विसाल हुआ आपने ये नमाज नहीं पढी जब नमाज अदा न करने की वजह पूछी गई तो आपने फ़रमाया कि उम्र बाकी नहीं हं[4]।

वफ़ात शरीफ़

आपकी उम्र सौ साल से ज़्यादा हुई। आपका मज़ार मुबारक हज़रत ख्वाजा क़ुतुब साहब के क़रीब है। आपका सालाना उर्स होता है।

सीरते मुक़दस

आप हाफ़िज़ क़ुरआन थे और एक कफ़रआन दिन को और एक क़ुरआन रात को ख़त्म करते थे[5] आप एक बुलंद पाया दुर्वेश थे। एक अच्छे आलिम थे। रात को जागते थे। दुर्वेशों की खिदमत को आप अज़मत समझते थे। आप दो सौ मशायख़ीन से मिले और उनसे रुहानी फ़ैज़

---

1. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 152 2. सैरूल आरफ़ीन 159
3. सैरूल आरफ़ीन सफ़ा 162 4. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 155
5. सैरूल आरफ़ीन सफ़ा 159

पाया'। उनकी निगाहे लुत्फ़ व करम से आप माला माल हुए। आपकी बुज़ुर्गी और बरगुज़ीदगी के सब मोतरिफ़ और मोतक़िद थे आप वाज़ बहुत कहते थे।

आपको समा का बहुत शौक था। बावजूद ज़ोफ़ और कमज़ोरी के आप समा में ख़ूब रक्स करते। आपसे दरियाफ़्त किया गया कि बावजूद उम्र और कमज़ोरी के इतना रक्स क्यों करते हैं?

आपने जवाब दिया कि[2]:

"ऊ अज़ खुद नमी रक़सद इश्के मी रक़सान्द"

तर्जुमा: वह ख़ुद नहीं नाचता है (बल्कि) इश्क़ नचाता है:

आपको शायरी का भी शौक था। आपकी ग़ज़ल का एक शेर हसबे ज़ेल है[3]:

नौहा मी कर्द मन नोह गर दर मुजमे

आव ज़ीं सूज़म बर आमद नौहा गर आतिश गिरफ़्त

क़ौले ज़र्री

आपने फ़रमाया कि[4]:

"बेचारा आशिक जो जमाले ज़ुलज़लाल का मुश्ताक़ है हूरों को क्या करे।"

करामात

आपकी हज़रत ख़िजर अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात थी। एक मर्तबा आपके वालिद माजिद ने आपसे कहा कि:

"अगर मुझे हज़रत ख़्वाजा ख़िज़र[अ॰] को दिखाओ तो बहुत अच्छा हो।"

एक दिन वाज़ हो रहा था और आपके वालिद बुज़ुर्गवार भी वहाँ तशरीफ़ रखते थे। एक ऊँची जगह पर जहां कोई नहीं बैठ सकता था, एक

---

1. सैरुल आरफीन सफ़ा 156 2. रोज़ातुल अक़ताब सफ़ा 72
3. फ़वाइदुल फ़दाइद सफ़ा 155 4. सैरुल आरफीन सफ़ा 163

शख़्स बैठा हुआ था। हजरत बदरुद्दीन गजनवी ने अपने वालिद माजिद से कहा कि देखिए वह हजरत ख़्वाजा खिजर* हैं। आपके वालिद ने वाज के बाद मिलना मुनासिब समझा। जब वाज ख़त्म हुआ तो उस जगह कोई भी न था[1]।

एक मर्तबा दिल्ली में बारिश बहुत कम हुई। सुलतान शमसुद्दीन अलतमश आप से दुआ का तालिब हुआ।

आपने फ़रमाया कि

"जब तक बदरुद्दीन ज़िन्दा है, कभी दिल्ली में कहत नहीं पड़ेगा। और न ही बारिश की कमी होगी।"

आपके यह फ़रमाते ही बारिश होने लगी।

आप हर जुमेरात को मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरह जाते थे और काबा शरीफ़ और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा* के रौज़ा मुबारक की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होते थे।

1 सैरुल औलिया (फ़ारसी), सफ़ा 165-166
2 सैरुल आरिफ़ीन सफ़ा 160।
3 सैरुल आरिफ़ीन सफ़ा 162

هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۝

पा 18 – मोमिनून रुकू 4

तर्जुमा: वह अपने परवरदिगार के ख़ौफ़ से डरते रहते हैं।

हिस्सा दोम

बाब न. 5

हज़रत शेख़ नजीबुद्दीन मुतवक्किल

हज़रत शेख़ नजीबुद्दीन मुतवक्किल साहबे दिल थे। आप साहबे कश्फ़ व करामात थे। सनदे औलिया और हुज्जत मशाइख़ वक्त थे। आप मुशहदात व मकालात आली में यकता थे। तमाम मुशाइख वक्त आपके कमालात सौरी व मानवी के मुक़र्रिर थे।

आप हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकररह. के हक़ीक़ी भाई मुरीद और ख़लीफ़ा थे।

ख़ानदानी हालात

आप फ़र्ख़ शाह के ख़ानदान से थे। फ़र्ख़ शाह काबुल के बादशाह थे। जब ग़ज़नी ख़ानदान का क़ब्ज़ा हुआ। इस इंकलाब के बाद भी फ़र्ख़ शाह ने काबुल नहीं छोड़ा। उनकी औलाद भी काबुल में रही। चंगेज़ ख़ान ने ग़ज़नी को तबाह व बरबाद किया। हज़रत नजीबुद्दीन मुतवक्किल के जद्दे बुज़ुर्गवार काबुल की लड़ाई में शहीद हुए[1]।

आपके दादा हज़रत क़ाज़ी शोएब फ़ारुक़ी मा तीस लड़कों के लाहौर तशरीफ़ लाए। लाहौर से आप क़ुसूर तशरीफ़ ले गये। क़ुसूर का

1 सीरुल औलिया। सफ़ा 59

क़ाज़ी आप के खानदान की बुज़ुरुगी, अजमत से वाक़िफ था, उसने आप के आने की ख़बर बादशाह को दी। बादशाह ने आप को टेसवाल में क़ाज़ी मुक़र्रर किया। आप वहाँ रह कर अपने फराईज़ अंजाम देने लगे[1]।

यह भी कहा जाता है कि आपके वालिद माजिद सुलतान शहाबुद्दीन ग़ौरी के अहद में मुलतान तशरीफ़ लाए। आप मुलतान के क़स्बा कोनाथवाल में रौनक़ अफ़रोज़ हुए और वहां क़ाज़ी के उहदे के फ़राइज़ अंजाम देने लगे। वहाँ आपने शादी की[2]।

वालिद माजिद

आपके वालिद का नाम शेख़ जमालुद्दीन सुलेमान है–आप अमीरुल मोमीनीन हज़रत उम्र फ़ारुक[रजि.] की औलाद में से हैं। इल्म व फ़ज़ल में आप को दस्तगाह हासिल थी।

वालिदा माजिदा

आपकी वालिदा–ए–माजिदा का नाम बीबी कुर्सुम ख़ातून है। आप मौलाना वजीहुद्दीन ख़जनदी की लड़की थीं[3]। आप एक पाक निहाद, पाक सीरत और पाक बातिन ख़ातून थीं, आपसे करामतें सरज़द हुई हैं। एक रात का वाकिया है कि आपकी वालिदा इबादत में मशगूल थीं। एक चोर घर में दाखिल हुआ। उस पर आपकी वालिदा माजिदा की ऐसी देहशत बैठी कि वह अंधा हो गया। चोर बहुत घबराया। उसने आवाज़ दी किः

> "मैं चोर हूँ चोरी के लिए आया हूँ। अलबत्ता यहाँ कोई है जिसकी देहशत ने मुझे अंधा किया। अहद करता हूँ कि अगर बीनाई आ जाए तो फिर चोरी न करूँगा।"

आपकी वालिदा साहबा ने यह सुनकर उस चोर के लिए दुआ फ़रमाई। आपकी दुआ से उसकी आंखों की रोशनी आ गई। सुबह वह चोर फिर आया और मां अहल व अयाल के मुसलमान हो गया[4]।

---

1. सीरूल औलिया 2. सैरूल आरफ़ीन
3. जवाहर फ़रोदी सफ़ा 191 4. जवाहर फ़रोदी सफ़ा 191

भाई

आपके दो हक़ीक़ी भाई और हैं। आपके बड़े भाई का नाम एजाजुद्दीन महमूद है, उनसे छोटे हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद हैं। सब से छोटे आप खुद हैं।

नसब नामा पिदरी

आपका नसब नाम पिदरी हसबे ज़ेल हैः

शेख़ नजीबुद्दीन बिन शेख़ जमालुद्दीन सुलेमान फ़ारुक़ी बिन शोएब फ़ारुक़ी। बिन शेख़ अहमद बिन शेख़ युसुफ़ फ़ारुक़ी बिन शेख़ मुहम्मद फ़ारुक़ी बिन शेख़ शहाबुद्दीन बिन शेख़ अहमद अल मारुफ़ बा फ़र्ख़ शाह काबुली फ़ारुक़ी बिन शेख़ नसीरुद्दीन फ़ारुक़ी बिन सुलतान मसऊद शाह फ़ारुक़ी निब शेख़ अब्दुल्लाह फ़ारुक़ी बिन शेख़ वाइज़ असग़र फ़ारुक़ी बिन शेख़ अबुल फ़तह कामिख़ फ़ारुक़ी बिन शेख़ इस्हाक़ फ़ारुक़ी बिन हज़रत इब्राहिम फ़ारुक़ी बिन नसीरुद्दीन फ़ारुक़ी बिन शेख़ अब्दुल्लाह बिन अमीरुल मोमिनीन हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब

विलादत शरीफ़

आप क़स्बा कोनथवाल में पैदा हुए।

नाम नामी

आप का नाम नजीबुद्दीन है।

लक़ब

आपका लक़ब मुतवक्किल है। आपके मुतवक्किल कहलाने की वजह यह है कि आप बावजूद अहल व अयाल के तवक्कुल में यगानए रोज़गार थे। तंग दस्ती और उसरत में गुज़र होती थी। ज़ाहिर असबाब पर निगाह न रखते थे। आपका तवक्कुल मिसाली था।

दिल्ली में आमद

आप हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर[रह.] के हमराह

दिल्ली आए हज़रत बाबा साहब दिल्ली से अजोधन तशरीफ़ ले गये, लेकिन आप हज़रत बाबा साहब के हुक्म के मुताबिक दिल्ली में रहने लगे।

बैअत व ख़िलाफ़त

आप अपने बड़े भाई हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर से बैअत हैं और हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर से आप ने ख़िरक़े ख़िलाफ़त पहना।

मस्जिद में इमामत

दिल्ली में ईतम नामी एक शख़्स रहता था। उसने एक मस्जिद तामीर की और उस मस्जिद की इमामत हज़रत शेख़ नजीबुद्दीन मुतवक्किल के सुपुर्द की और उस शख़्स ने अपनी लड़की की शादी बड़े तज़्क व एहतिशाम से की और काफ़ी रुपया ख़र्च किया। आपने उस शख़्स से कहा कि जितना कि उस शख़्स ने शादी में ख़र्च किया है अगर उसका निस्फ़ ख़ुदा की राह में ख़र्च करता तो न मालूम क्या से क्या हो जाता–यह बात उस शख़्स को नागवार गुज़री। उसने आपको इमामत से बर तरफ़ कर दिया[1]।

हज़रत बाबा साहब को इत्तिला

आप ने अजोधन जाकर अपने बड़े भाई हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर को उस वाक़िया की इत्तिला की। हज़रत बाबा फ़रीदने यह सुनकर फ़रमाया:

مَا نَنْسَخْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا

उसके बाद आपने फ़रमाया[2]: "अगर तैमरी गया ईतकरी पैदा होगा।"

उसी ज़माने में ईतकरी नाम का एक शख़्स वहाँ आया। उसने उस ख़ानदान की बहुत ख़िदमत की।

1 सीरुल औलिया सफ़ा 78 2. सैरूल औलिया सफ़ा 78

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की आपसे अक़ीदत

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया जब दिल्ली तशरीफ़ लाए, आप के पड़ोस में सुकूनत अख़्तियार की। उनको आप से काफ़ी अक़ीदत थी। अपनी वालिदा माजिदा के विसाल के बाद हज़रत महबूब इलाही ज़्यादा वक़्त आपकी सोहबत में गुज़ारते थे। एक मर्तबा उन्होंने आपसे क़ाज़ी बनने की दुआ करानी चाही लेकिन आप ने दुआ न की और फ़रमाया कि:

"तुम क़ाज़ी न बनोगे, बल्कि और ही कुछ बनोगे।"

एक मर्तबा हज़रत महबूब इलाही ने आपसे मुरीद होना चाह। आपने मुरीद करने से इन्कार किया और फ़रमाया कि अगर मुरीद होना है तो हज़रत शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी या हज रत फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर में से किसी के मुरीद हो जाएं।

बीबी फ़ातिमा साम की ख़िदमत

आप एक नेक और बुजुर्ग ख़ातून थीं। उनको आप से इन्तिहाई मुहब्बत और अक़ीदत थी और आप भी उनको बहन समझते थे और उनके हाल पर निहायत शफ़क़त फ़रमाते थे। जब आप के यहाँ फ़ाक़ा होता, दूसरी सुबह सेर भर की या आध सेर की रोटियाँपका कर किसी के हाथ वह भेज देती थीं। एक मर्तबा उसने सिर्फ़ एक रोटी भेजी। आपने ख़ुश तबई के तौर पर फ़रमाया कि:

"परवरदिगार! जिस तरह तूने इस औरत को हमारे हाल से वाक़िफ़ किया है, शहर के बादशाह को भी वाक़िफ़ करता कि कोई बा बरकत चीज़ भेजे।"

फिर आप मुस्कुराए और फ़रमाया कि:

"बादशाहों को वह सफ़ाई कहाँ नसीब है कि वाक़िफ़ हों[1]।"

एक सफ़र का वाक़िया

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर ने अजोधन में सुकूनत अख़्तियार करने के बाद आपको वालिदा माजिदा के लाने के लिए भेजा।

---

1 फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 199

आप गये। रास्ते में आपने दरख़्तों के साए में बैठकर आराम किया। पानी की जरुरत हुई। जब आप पानी लेकर वापिस आए। वालिदा साहबा को उस जगह न पाया। आप सख़्त हैरान और परेशान हुए। वालिदा साहबा को हर जगह तलाश किया लेकिन कोई पता न चला। आख़िर कार नाउम्मीद होकर वहाँ से चले और हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गजं शकर की ख़िदमत में पहुंच कर सारा क़िस्सा अर्ज़ किया। हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गजं शकर ने ये सुनकर फ़रमाया कि खाना पकाएं और सदक़ा दें।

एक मुद्दत के बाद आप का इसी जंगल से गुज़र हुआ जब आप उसी पेड़ के नीचे आए आप को ख़्याल हुआ कि इस गाँव के चारों तरफ़ जाकर देखें, शायद वालिदा साहबा का पता लग जाए, आप ने ऐसा ही किया, आप को आदमी की चंद हड्डियाँ मिलीं। आप ने यह ख़्याल करके कि शायद यही हड्डियाँ वालिदा साहबा की हों और मुमकिन है उनको किसी शेर या दरिन्दे ने हलाक कर दिया हो।

उन हड्डियों को जमा किया और एक थैले में रखा। वह थैला लेकर आप हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सारा क़िस्सा बयान किया। हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर ने यह सुनकर फ़रमाया कि वह थैली दिखाओ और उसको झाड़ा। एक हड्डी भी बरामद न हुई[1]।

हज़रत ख़्वाजा ख़िजर से मुलाक़ात

एक दिन ईद के मौक़ा परआप ईदगाह से घर वापस तशरीफ़ ला रहे थे। लोग आपको घेरे हुए थे, और आप के हाथ पाँव चूम रहे थे।कुछ दुर्वेशों ने जिन्होंने आपको पहले न देखा था, दरियाफ़्त किया कि यह कौन बुजुर्ग हैं, जब इनको आप का नाम मालूम हुआ, उन दुर्वेशों ने तय किया कि इनके यहां चलकर खाना खाना चाहिए। वह दुर्वेश आपके पास आए, और कहा कि इन सब के लिए खाने का इन्तिज़ाम कीजिए। आपने उनको मईबा कहा और बिठा दिया, उस रोज़ आपके घर में फ़ाक़ा था। आपने अपनी बीवी से कहा कि अगर कुछ हो तो पका लो। जब आपको यह

[1] फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 100 सीरुल औलिया सफ़ा 88,89

मालूम हुआ कि घर में कुछ भी नहीं हैं, आप ने अपनी बीवी से कहा कि चादर सर से उतार कर दे दो ताकि रोटी और शोरबा बाज़ार से ख़रीद लाएं, चादर देखी उसमें चन्द पेवन्द लगे हुए थे। उसे कौन ख़रीदता। फिर आपने सोचा कि अपना मुसल्ला फ़रोख़्त कर दें। मुसल्ला देखा उसमें कई पेवन्द लगे हुए थे। मजबूर होकर आपने वही किया,जैसा कि आदते फ़ुक़रा है कि अगर दुर्वेश साहबे ख़ाना के पास कुछ न हो तो वह पानी का कूज़ा हाथ में लेकर पायाने मजलिस खड़ा हो जाए। आपने उन सब दुर्वेशों को पानी पिलाया। उन दुर्वेशों ने पानी का कूज़ा हाथ में लेकर थोड़ा थोड़ा पानी पिया और आपसे रुख़्सत हुए।

उन दुर्वेशों के जाने के बाद आप अपने हुजरा में तशरीफ़ ले गये। आपने अपने दिल में कहा:

"ऐसा ईद का दिन जावे और मेरे अतफ़ाल के मुंह पर कुछ तआम न जावे और मुसाफ़िर आयें और नामुराद जावें।"

आप इन्हीं ख़्यालात में खोये हुए थे कि एक शख़्स यह शेर पढ़ता हुआ ज़ाहिर हुआ।

बादिले गुफ़्तम वला ख़िजर रा बीनी
दिले गुफ़्त मरा अगर नुमाई बीनम

आप समझ गये कि यह हज़रत ख़्वाजा ख़िजर हैं। ताज़ीम के लिए खड़े हुए। हज़रत ख़िजर ने फ़रमाया कि क्या शिकायत करते थे। आपने कहा कि दिल से लड़ाई इस बाबत थी कि घर में कुछ नहीं। हज़रत ख़िजर ने फिर आपसे कुछ खाना लाने को कहा। आपने उज्र पेश किया। हज़रत ख़िजर ने फ़रमाया किजो कुछ घर में हो ले आओ। आप घर में गये। आपने देखा कि एक ख़्वान ख़ाने से भरा हुआ रखा है। बीवी से दरियाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि एक शख़्स यह ख़्वान रखकर चला गया। आप उसमें से कुछ खाना लेकर ऊपर आए तो वहाँ कोई न था[1]।

आपने अपने दिल में कहा:" यह सआदत जो मुझको मिली है बे नवाई और बे सरो सामानी की बरकत से है।"

1. ख़ैरुल मजालिस सफ़ा 52,53 सीरुल औलिया सफ़ा 167 रौज़तुल अक़ताब सफ्ह्न 80

आपकी औलाद

आपके तीन लड़के थे। एक लड़के का नाम शेख़ इस्माईल है दूसरे का शेख़ अहमद,तीसरे का नाम शेख़ मुहम्मद है।

वफ़ात शरीफ़

आप हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर की ख़िदमत में उन्नीस मर्तबा हाज़िर हुए। आप हर मर्तबा रुख़्सत होते वक्त हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर से अपने लिए दुआ कराया करते थे कि आइन्दा फिर ख़िदमत में हाज़िर हूँ। आख़िरी बार जब आप दुआ के ख़्वास्तगार हुए, हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर ख़ामोश हो गये।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया फ़रमाते हैं कि जब हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर ने ख़िलाफ़त नामा अता फ़रमाया, आपको ताकीद की कि हांसी मं हज़रत मौलाना जमालुद्दीन को और दिल्ली में क़ाज़ी मुन्तख़ब को ख़िलाफ़त नामा दिखाएं। आपको उस बात का सख़्त ताज्जुब हुआ कि आप का यानी हज़रत शेख़ नजीबुद्दीन मुतवक्किल का नाम हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर ने नहीं लिया। आप समझे इसमें कोई मसलिहत होगी। जब आप दिल्ली आए, आपको मालूम हुआ कि सात रमज़ान को आपको विसाल हो गया।

आपका मज़ार दिल्ली में "शेख़ नजीबुद्दीन शेर सवार" के नाम से मशहूर है[1]। आपका मज़ार बीबी ज़लेख़ा के मज़ार के क़रीब दिल्ली में है।

सीरत पाक

आप एक बुलंद पाया दुर्वेश थे। आपने तवक्कुल का एक आला नमूना पेश किया। आपके अस्तिग़राक़ का यह आलम था कि हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया फ़रमाते हैं[2]:

> "मैंने इस जैसा कोई आदमी उस शहर में नहीं देखा। उसे यह मालूम न था कि आज दिन कौन सा है, या महीना कौन सा, या गल्ला किस भाव बिकता है या गोश्त किस नरख़ बेचते हैं। गर्ज़ कि किसी चीज़ से उसे

1 जवाहर फ़रीद सफ़ा 349 2. फवाइदुल फ़वाइद सफ़ा 103

वाक़िफ़ीयत न थी। सिर्फ़ यादे इलाही में मशग़ूल रहता।"

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर ने एक मर्तबा आप से फ़रमाया किः "तू भी इबदाल में से है'।"

इल्मी ज़ौक़

आपने बारहा चाहा कि "जामिउल हिकायात" लिखें। आख़िरकार हमीद नामी एक शख़्स ने किताबत शुरु की, वह किताब जल्द ही ख़त्म हुई[2]।

अक़वाल

पक्का मोमिन वह शख़्स है कि जो दोस्ती हक़ को औलाद की दोस्ती पर तरजीह दे[3]। जब दुनिया हाथ से जाए फ़िक्र न कर कि रहने वाली नहीं है।

विरद व वज़ाइफ़

आप हसबे ज़ेल दुआ पढ़ा करते थे[4]:

ایمنوا فی عباد اللہ رحمکم اللہ

आपके बदायूँ में एक भाई थे। आप हरसाल उनसे मिलने बदायूँ जाया करते थे। एक मर्तबा दोनों भाई शेख़ अली से जो वहाँ एक अमीर ख़ानदान के फ़र्द थे, मिलने गए। आपने अदब की वजह से फ़र्श तक पहुंचने से दो चार क़दम पहले ही अपने जूते उतार लिए। पस पहले आपने ज़मीन पर पैर रखे और फिर फ़र्श पर जो मुसल्ला था। शेख़ अली इस बात से रंजीदा हुआ और कहा कि यह बोरिया मुसल्ला है जिस पर दोनों भाई बैठ गये। शेख़ अली के सामने एक किताब रखी थी। आप ने दरियाफ़्त फ़रमाया कि यह कौन सी किताब है। शेख़ अली ने बर बिनायें रंजिश कोई जवाब न दिया।

आपने फिर कहाः

1. फवाइदुल फ़वाइद सफ़ा 99 2. फवाइदुल फ़वाइद सफ़ा 21,22
3. सैरूल औलिया 78 4. फ़वाइद उल फवाइद 103

"अगर इजाज़त हो तो किताब को देखूँ।"

इजाज़त लेकर आपने यह किताब खोली। जब किताब खोली, उसमें यह लिखा हुआ देखा कि:

"आख़िर ज़माने में ऐसे मशाइख़ होंगे कि ख़िलवत में गुनाह करते होंगे और मजलिस में अगर उनके फ़र्श पर किसी का पैर पड़ जाए तो क़यामत कर देंगे।"

आपने यह किताब शेख़ अली को दी। शेख़ अली वह इबादत देखकर पशीमान हुआ, और उसने आपसे माज़रत चाही।

बाब न. 6

हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया[रह.] महबूबे इलाही

हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया महबूब रब्बलआलमीन हैं। हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर के जांनशीन हैं। ख़्वाजए रास्तीन हैं। निज़ामुल हक़ व शरउल हुदा वद्दीन हैं।

ख़ानदानी हालात

हज़रत महबूब इलाही के ख़ानदान के अफ़राद बुख़ारा के रहने वाले थे[1]। आपके दादा हज़रत सैयद अली और आपके नाना हज़रत सैयद अरब बुख़ारा से हिजरत करके मा अहल व अयाल लाहौर तशरीफ़ लाए। लाहौर में चंद रोज़ क़्याम करके बदायूँ तशरीफ़ ले गये, और वहीं सुकूनत अख़्तियार की– बदायूँ उस ज़माने में सूफ़ियों और आलिमों का मरकज़ था। हज़रत सैयद अली और हज़रत सैयद अरब निहायत मुत्तक़ी और परहेज़गार थे। दीनी इज़्ज़त और दौलत के अलावा यह हज़रात दुनियावी सरवत व हशमत से भी माला माल थे।

वालिद माजिद

आपके वालिद माजिद का नाम ख़्वाजा सैयद अहमद है। आप मादर ज़ाद वली थे। आपको इरादत व ख़िलाफ़त अपने वालिद हज़रत

1 सीरुल औलिया सफ़ा 94

ख़्वाजा सैयद अली से मिली थी। आपने चंद रोज़ क़ज़ा के उहदे को जीनत बख़्श कर तर्क व तजर्रुद अख़्तियार की। आप बिल्कुल गोशा नशीन हो गये।

वालिदा माजिदा

आपकी वालिदा माजिदा हज़रत ख़्वाजा सैयद अरब की साहब जादी हैं। आप सब्र व शुकर और तस्लीम व रिज़ा में यक्ता थीं। आप जोहद व वरा, और इल्म व हल्म के वास्ते मशहूर थीं।

नसब नामा पिदरी

आपका नसब नामा पिदरी हसब जेल हैं:

हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया बिन सैयद अहमद बिन सैयद अली बुखारी बिन सैयद अब्दुल्लाह बिन सैयद हसन बिन सैयद अली बिन सैयद अहमद बिन सैयद अब्दुल्लाह बिन सैयद अली असगर बिन सैयद जाफ़र बिन इमाम अली हादी नक़ी बिन इमाम, मुहम्मद तक़ी अल मूसा काजिम बिन हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ बिन हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र बिन हज़रत इमाम अली अल मुक़ल्लिब वा ज़ैनुल आबदीन बिन हज़रत सैयदना इमाम हुसैन बिन हजरत इमामुल औलिया सैयदना हज़रत अली कर्रमुल्लाह वजहु।

नसब नामा मादरी

आपका नसब नामा मादरी हसबे जेल हैं:

हज़रत बीबी जफ़लेखा बिन्ते ख़्वाजा सैयद अरब बुख़ारी बिन सैयद अबुल मुफ़ाख़िर बिन सैयद मुहम्मद अज़हर बिन सैयद हुसैन बिन सैयद अली बिन सैयद अहमद बिन सैयद अब्दुल्लाह बिन सैयद अली असगर बिन सैयद जाफ़र बिन इमाम अली हादी नक़ी बिन इमाम मुहम्मद तक़ीयुल मुक़ल्लिब बा ज़वाद बिन हजरत इमाम अली रजा बिन हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र बिन हज़रत इमाम

अली अल मुकल्लिब बा ज़ैनुल आबिदीन बिन हज़रत सैयदना इमाम हुसैन बिन हज़रत इमाम औलिया हज़रत अली कर्रमुल्लाह वजहु।

नसब

पस आप सादात से हैं। वालिद माजिद और वालिए मुहतरमा के तरफ़ आप सैयदुन्नसब हुसैनी हैं।

विलादत बा सआदत

आप 27 सफ़र 636हि. में आख़िरी चहार शंबा के दिन सूरज निकलने के बाद इस दुनिया में आए।

नाम नामी

आपका नाम नामी मुहम्मद निज़ामुद्दीन है।

ख़िताब

आपके ख़िताबात हसबे ज़ेल हैं:

सुलतान अल मशाइख़-महबूबे इलाही

बचपन का सद्मा

हज़रत महबूबे इलाही की अभी बहुत ही कम उम्र थी कि आपके वालिद माजिद हज़रत ख़्वाजा सैयद अहमद का विसाल हो गया[1]। यह भी कहा जाता है कि जिस वक्त आपके वालिद माजिद ने रिहलत फ़रमाई, उस वक्त हज़रत महबूब इलाही की उम्र पाँच वर्ष की थी[2]।

आप की तालीम

आप की वालिदा मुहतरमा ने आपको मकतब में भेजा। वहां आपने हज़रत मौलाना शादी मक़रती से एक ही पारा पढ़ा और उस ही पारा की बरकत से आप ने तमाम क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म किया[3]। इसके बाद आपने किताबें पढ़ना शुरु कीं। आपने मशहूर किताब "क़ुदूरी" हज़रत मौलाना

1. सीरुल औलिया 2. सीरुल आरफ़ीन 3. फ़वाइदुल फ़वाइद

अलाउद्दीन उसूली से पढ़ी। जब किताब ख़त्म हुई तो मौलाना अलाउद्दीन उसली ने तमाम उलमा व औलिया की मौजूगदी में दस्तार अपने हाथ में ली और खोल कर हज़रत महबूब इलाही से फ़रमाया।

"क़रीब आओ और इस दस्तार को अपने सर पर बांधो।"

उस्ताद के हुक्म के मवाफ़िक़ आपने दस्तार अपने सर पर बांधी। आपने मौलाना शमसुद्दीन से जो शमसुल मुल्क के ख़िताब से मशहूर हैं, "मक़ामाते हरीरी" हिफ़्ज़ की। मौलाना शमसुल मुल्क अदब व लुग़त में दूसरा सानी नहीं रखते थे। शहर के बहुत से उलमा व फ़ुज़ला उनके शागिर्द थे[1]।

आपने तमाम उलूमे ज़ाहिरी यानी फ़िक़ा, हदीस, तफ़सीर, कलाम, मआनी, हिकमत, फ़लसफ़ा, हैयत, हिन्दसा, लुग़त, अदब और क़रात वग़ैरा में कामल हासिल किया। सातों क़रातों के साथ आपने क़ुरआन शरीफ़ याद किया। दिल्ली पहुंचकर आपने मौलाना कमालुद्दीन मुहद्दिस से "मशारिक़ुल अनवार" की सनद हासिल की।

आपने अपने पीर व मुर्शिद हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर की ख़िदमत बा बरकत में अजोधन रह कर क़ुरआन शरीफ़ के छः पारे पढ़े। तीन किताबें और भी पढ़ी जिनमें से एक में से क़ारी और दो मे सामे थे। इन किताबों के अलावा आपने "अवारिफ़" के छः बाब भी पढ़े और तमाम तमहीद अबू शकूर सालमी भी अजोधन रहकर पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में पढ़ी।

इल्मी फ़ज़ीलत

आपने उलूमे ज़ाहिरी में कमाल हासिल किया। इसी कमाल के बाइस आप उल्मा व फ़ुज़ला के तबक़े में "निज़ामुद्दीन बहास महफिल शिकन" के ख़िताब से मशहूर हुए।

दिल्ली में क़्याम

हज़रत महबूब इलाही बाद तहसील उलूम ज़ाहिरी बदायूँ से हिजरत करके दिल्ली में रौनक़ अफ़रोज़ हुए। आपकी वालिदा मुहतरमा

1. अखबार अल अखयार

और हमशीरा भी आपके साथ थीं। दिल्ली में आपने मुस्ताक़िल सुकूनत अख़्तियार फ़रमाई। दिल्ली में हज़रत महबूब इलाही^{रह.} कई साल तक तहसील इल्म में मशगूल रहे। आपने मौलाना अमीनुद्दीन अहमद साहब मुहद्दिस की सोहबत से कफ़ी फ़ैज़ उठाया।

आप जब दिल्ली तशरीफ़ लाए तो आपने हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर के भाई और ख़लीफा हज़रत शेख़ नजीबुद्दीन मुतवक्किल के पड़ोस में मकान किराये पर लेकर रहना शुरु किया।

दूसरा सदमा

दिल्ली में आपकी वालिदा मुहतरमा का इन्तिक़ाल हो गया। आपके लिए यह सदमा जानिकाह था। अब शेख़ नजीबुद्दीन गुतवक्किल[रह.] की सोहबत आपकी मूनिस और हमदम थी।

काज़ी बन्ने कि खुवाहिश

एक दिन आप ने हज़रत शेख नजीबुद्दीन मुत्वक्ल से भी अरज किया कि वह इन के काज़ी बन्ने के वास्ते दुआ फरमाए। हज़रत नजीबुद्दीन ने हज़रत महबूब इलाही को मुखात्ब कर के फरमायाः "तुम इनशा अल्लाह तआला काज़ी न होंगे बलके एक ऐसी चीज़ बनोगे कि जिस को में जानता हुँ"

बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर से गाएबाना इरादत

हजरत महबुब इलाही कि उर्म बारह साल थी। आप बदाइयों में मुकिम थे और इल्म लुगत के हासील करने में मशगुल थे। एक दिन का वाकिआ है कि आप के उसताद हजरत मोलाना अलाउद्दीन असुली के पास एक शख्स मुलतान से आया, इस शख्स का नाम अब्बु बकर खर्रात था। इस को अब्बु बकर कव्वाल भी कहते थे।

आप के उसताद ने इस शख्स से इस तरफ के मुशएखीन और औलिया का हाल दरयाफत फरमाया। इस शख्स ने हज़रत शेख बहाद्दीन ज़िकरया मुलतानी की बहुत तारीफ कि। इस ने कहा कि उस ने उन को कव्वाली भी सुनाई है। उन की इबादत और रियाजत बयान से बाहर है। इन की कनीजों तक का यह हाल है के काम की हालत में भी जिक्र करती रहती

हैं। इस खत्ते को उनहो ने अपने फेज़ व कर्म से मुनवर कर दिया है।

हज़रत महबुब इलाही यह सुन्ते रहे। फिर अब्बु बर्क कव्वाल ने अजोधन का हाल बयान किया के वहाँ हज़रत शेख फरीदुद्दीन मसऊद गंज शकर रहते हैं। वह उनकी खि दमत में हाज़िर हुआ। उनको एक माह तमाम पाया। उनहों ने अपने नुर मआरफत से तारीक दिलों को रोशन कर दिया है। लौगो के दिलो को उनहों ने मस्खर कर लिया है। बहुत लौग उन के हलका बगोश है।

मजज़ूब से मुलाक़ात

एक रोज़ आप क़ुतबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी के मज़ार पुर अनवार पर हाज़िर हुए। वहाँ एक मजज़ूब से मुलाक़ात हुई[1]। आपने उन मजज़ूब से दरख़्वास्त की कि वह उनके लिए दुआ करें कि वह क़ाज़ी हो जाएं।

इन मजज़ूब ने जवाब दिया:

"निज़ामुद्दीन! क़ाज़ी होना चाहते हो, और मैं तुमको दीन का बादशाह देखता हूँ। तुम ऐसे मर्तबे पर पहुंचोगे कि तमाम आलम तुमसे फ़ैज़ लेगा।"

बाब बन्ने की खुवाहीश बाबा फरीदुद्दीन गंज शकर से नुमा बनाना इरादात हज़रत महबूबे इलाही ने जब हजरत बाबा फ़रीदुद्दीन गजं शकर की ये तारीफ़ सुनी तो अप के दिल में मुहब्बत का एक जज्बा मोजूज़िन हुआ। गायबाना तौर परआप को हज़रत फ़रीदुद्दीन गजं शकर से इरादत पैदा हुई। क़दम बोसी का शौक़ हुआ,इस मुहब्बत इरादात और अक़ीदत में रोज़ बरोज़ तरक्क़ी होती रही। हज़रत महबूबे इलाही का ये वरिद हो गया कि आप हर नमाज़ के बाद दस बार शैख़ फ़रीद और दस बार मौलाना फ़रीद कहते थे। यह उल्फ़त बातनी छुपने वाली नहीं थी। आप के दोस्तों को भी इस का इल्म हो गया। अब जब वह आपको क़सम देते तो शेख की मुहब्बत यानी बाबा फ़रीदुद्दीन गजं शकर रह॰ की मोहब्बत की क़सम देते।

आप जब बदायूँ से दिल्ली में सुकूनत अख़्तियार करने की गर्ज़ से रवाना हुए तो एक शख़्स जिसका नाम उयूज़ था आपके साथ हो लिया।

1 जवाहर फ़रीदी

जब रास्ते में कोई ख़ौफ़ या कोई ख़तरा पेश आता तो वह बेसाख़्ता कहता:

"या पीर हाज़िर बाश कि मादर पनाह तू मी रदेम।"

तजुमा: ऐ पीर मौजूद रहिये कि हम आपकी पनाह में जा रहे हैं।

हज़रत महबूब इलाही ने जब यह कलमात सुने तो आपने उस शख़्स से दरियाफ़्त फ़रमाया कि:

"यह तुम्हारे पीर कौन है और कहाँ रहते हैं, जिनकी पनाह और मदद चाहते हो।"

उस शख़्स ने जवाब दिया:

"मेरे पीर वही हैं, जिन्हों ने तुम्हारे दिल को अपनी तरफ़ खींच लिया है और तुमको अपनी मुहब्बत का फ़रीज़ा बनाया है यानी हज़रत शेख़ फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर।"

यह सुनकर हज़रत महबूब इलाही का इख़्लास और ऐतिक़ाद और बढ़ गया।

दिल्ली में आप हजरत शेख़ नजीबुद्दीन मुतवक्किल की सोहबत में ज़्यादा वक्त गुजारते थे। वहाँ हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर के औसाफ़ व महासिन व मुहामिद सुनकर हज़रत महबूब इलाही के ज़ौक़ व शौक़ और इश्तियाक़ क़दम बोसी में और इज़ाफ़ा हो गया। वक्त गुज़रता रह, इसी हालत में तीन साल गुज़र गये।

ज़िन्दगी में काया पलट

आप रात जामा मस्जिद में बसर करते थे। एक रोज़ जब सुबह हुई तो मुवज़्ज़िन ने मीनार पर चढ़कर यह आयत पढ़ी:

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰه

तर्जुमा: क्या मोमिनों के वास्ते वह वक्त नहीं आया है कि उन के दिल ज़िक्रे इलाही के वास्ते झुक जाएं।

हज़रत महबूबे इलाही ने जब यह आयत सुनी तो आपके ऊपरएक अजीब कैफ़ियत तारी हुई। आपके हाल में एक नुमायां तब्दीली वाक़े हुई।

आपका सीना अनवारे इलाही तजल्लियों से मामूर हो गया। दुनिया की मोहब्बत जाती रही। अब आपकी दुनियावी मुराद, तमन्ना या आरजू न थी। तर्क व तजरीद आपका शिआर हो गया।

अजोधन को रवानगी

आप पर शौक़े इरादत ग़ालिब था। आप बग़ैर किसी ज़ादे राह अजोधन रवाना हो गए। हांसी पहुंचकर आपको क़ाफ़िला का इन्तिज़ार करना पड़ा। जब काफ़िला जमा हुआ आप भी उनके साथ हो लिए। क़ाफ़िला का सरदार जब कोई ख़तरा महसूस करता, खड़ा हो जाता और बुलन्द आवाज़ से कहता कि

"हज़रत पीर दस्तगीर शफ़ी वक्त रहिये।

तर्जुमा : ए हज़रत पीर दस्तगीर हमारे शफ़ी वक्त रहिए।

हज़रत महबूब इलाही ने मीर कारवां से दरियाफ़्त फ़रमाया कि:

"तुम्हारे पीर कौन है जिनको तुम पुकारते हो और मदद तलब करते हो।"

उस शख़्स ने जवाब दिया कि:

"मेरे पीर हज़रत क़ुतबुल आलम शेख़ फ़रीदुद्दीन गंज शकर है।

मैं उन्हे याद करता हूँ।"

यह सुनकर हज़रत महबूब इलाही की हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर से अक़ीदत में, और इज़ाफा हो गया।

अजोधन के रास्ते में सिरसा पड़ता था। सिरसा से दो रास्ते जाते थे। एक रास्ता मुलतान को जाता था और दूसरा रास्ता अजोधन को। सिरसा पहुंचकर हज़रत महबूब इलाही तीन रोज़ रुके। कभी मुलतान का ख़्याल होता कभी अजोधन का। तीसरे दिन रात को आप हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए। आंहज़रत ﷺ ने फरमाया:

"ऐ निज़ामुद्दीन अजोधन का रास्ता पकड़ो।"

अब आप बग़ैर किसी पस व पेश के "फ़रीद फ़रीद" कहते हुए

अजोधन की तरफ़ रवाना हुए।

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर की ख़िदमत में

आप रास्ता तय करते हुए आख़िरकार मन्ज़िले मक़सूद पर पहुंचे। बुध के दिन 11–रजबुल मुरजिब 665 हि॰ में आप अजोधन में दाख़िल हुए[1]। बाद नमाज़ जोहर बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर की ख़िदमत बा बरकत में हाज़िर हुए। क़दम बोसी से मुशर्रफ़ हुए।

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन शकर ने आपको देखकर यह शेर पढ़ा

ए आतिश फ़राक़त दिल्हा कबाब कर्दा
सैलाब इश्तियाक़त जांहा ख़राब कर्दा

तर्जुमा: ऐ कि तेरे फ़िराक़ की आग ने दिलों को कबाब कर दिया। (और) तेरे इश्तियाक़ की सैलाब ने जानों को ख़राब कर दिया।

हज़रत महबूब इलाही पर देहशत का इस क़दर ग़लबा था कि आप पूरा हाल अर्ज़ न कर सके, आप इस क़दर ही कहने पाए थे कि "इश्तियाक़ पाए बोसी अज़ीम ग़ालिब था" हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर ने यह हाल देखकर ज़ुबान फ़ैज़ तर्जुमान से फ़रमाया:

لِكُلِّ دَاخِلٍ دَهْشَةٌ

हज़रत महबूब इलाही इस वाक़िया ख़ुद ज़िक्र फ़रमाते हैं[2]:

"जब मैं जनाब शेख़ शुयूख़ुल आलम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आंजनाब ने आसारे देहशत मेरे अन्दर मुलाहिज़ा किए।" फ़रमाया:

मरहबा ख़ुश आमदी व सफ़ा आउर्दी व अज नेमत दीनी व दुनियवी इन्शाअल्लाह बरख़ूरी।

तर्जुमा: शाबाश। ख़ूब आए। इन्शाअल्लाह दीन और दुनिया की

---

1. फ़रिश्ता ने जुमेरात का दिन लिखा है।
2. फ़वाइदुल फ़वाइद – फ़ारिशता सफ़ा 392

नेमतों से बहरा मन्द होगे।

बैअत व ख़िलाफ़त

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर ने उसी रोज़ हज़रत महबूबे इलाही को वह टोपी दी, जो आप ओढ़े हुए थे। टोपी के अलावा आपको और तबर्रुकात भी अता किए, ख़िरका, नालैने चोंबी, मुसल्ला और असा आप के सुपुर्द फ़रमाया। फिर हज़रत महबूब इलाही से मुख़ातिब होकर हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर ने फ़रमाया किः

"ऐ निज़ामुद्दीन! मैं चाहता था कि विलायत हिन्दुस्तान किसी और को दूँ मगर तुम रास्ते में थे कि मुझको ग़ैब से निदा पहुंची कि अभी ठहरे रहो। निज़ाम बदायूनी आते हैं और वह इस विलायत के लायक़ हैं। उन्हीं को देना चाहिए।"

उस वक्त हज़रत महबूब इलाही की उम्र शरीफ़ बीस साल की थी।

अपने पीर व मुर्शिद के फ़रमान के मुताबिक आप अजोधन में रहने लगे। एक दिन हज़रत महबूब इलाही ने अपने पीर व मुर्शिद से अर्ज़ किया:

"मेरे वास्ते क्या हुक्म है, अगर इरशाद हो,पढ़ने पढ़ाने को मौक़ूफ़ करके औराद व नवाफ़िल में मशगूल हूँ।"

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर ने जवाब दिया:

"मैं किसी को पढ़ने पढ़ाने से मना नहीं करता। यह भी करो, वह भी करो .... दुर्वेश को क़दरे इल्मे ज़रुरी है।"

शजराए बैअत

आपका शजरए बैअत हसबे ज़ेल है:

निज़ामुद्दीन वहूमन हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद वहूमन हज़रत क़ुतबुद्दीन काकी वहूमन हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन संजरी[रह.] वहूमन हज़रत क़ुतुब साहब उस्मान हारुनी चिश्ती हज़रत हाजी शरीफ़ ज़िन्दानी चिश्ती[रह.] वहूमन

हज़रत क़ुतबुद्दीन मौदूद चिश्ती^{रह} वहूमन हज़रत ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबु यूसुफ़ चिश्ती[रह] वहूमन ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबु यूसुफ़ चिश्ती[रह] वहूमन ख़्वाजा अबु मुहम्मद चिश्ती[रह] वहूमन ख़्वाजा अहमद अब्दाल चिश्ती[रह] वहूमन हज़रत ख़्वाजा अबु इस्हाक़ चिश्ती[रह] वहूमन हज़रत ख़्वाजा मम्साद अलादीनोरी वहूमन शेख़ अमीरुद्दीन वहमीरतुल वसरा[रह] वहूमन हज़रत शेख़ सदीदुद्दीन हुज़ैफ़तुल मुराशा व दहूमन हज़रत सुलतान इब्राहीम अदहम बल्ख़ी वहूमन हज़रत ख़्वाजा अबुल फ़ज़ल बिन अयाज़[रह] वहूमन हज़रत ख़्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद वहूमन हज़रत हसन वसरा वहूमन इमामुल औलिया सैयदना हज़रत अली कर्रमुल्लाह वजहु।

पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में

अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में सात माह और कुछ दिन रह कर आप उनके फ़ुयूज़ वातिनी और रुहानी तसर्रुफ़ात से माला माल हुए। दिल्ली को रवानगी से क़ब्ल हज़रत वावा साहब ने ख़िरक़े ख़ास जो आपको ख़्वाजगाने चिश्त से पहुंचा था आप को पहनाया था और उसी रोज़ 2/रबीउल अव्वल 656 हि. को आपको ख़िलाफ़त नामा अता फ़रमाया। ख़िलाफ़त अता करने के वाद हज़रत वावा फ़रीद गंज शकर ने आपको यह दुआ दी।

اَسْعَدَكَ اللّٰه فِى الدَّارَيْنِ وَرَزَقَكَ عِلْمًا نَافِعًا وَّعَمَلاً مَّقْبُوْلاً

तर्जुमा: दोनों जहान में ख़ुदा ताला तुझको नेक वख़्त करे, और इल्म नाफ़े व अमल मक़बूल रोज़ी फ़रमाए।

यह दुआ देकर आपको ताकीद की कि मुजाहिदा में वहुत कोशिश करना। आपको दिल्ली रुख़्सत करते वक्त हज़रत वावा फ़रीद गंज शकर ने इरशाद फ़रमाया कि:

"मौलाना निज़ामुद्दीन को बहुक्मे इलाही में हिन्दुस्तान की

विलायत बख़्शी। और उस मुल्क को उनकी पनाह में छोड़ा और अपना साहबे सज्जादा किया।"

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर ने ख़िलाफ़त नामा अता फ़रमाते वक्त हज़रत महबूब इलाही को ताकीद फ़रमाई थी कि वह ख़िलाफ़त नामा हांसी में मौलाना जमालुद्दीन को और दिल्ली में क़ाज़ी को मुंतख़ब को दिखा लें। हज़रत महबूबे इलाही अपने पीर व मुर्शिद से रुख़्सत होकर मौलाना जमालुद्दीन के पास हांसी पहुंचे और उनको हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर का अता कर्दा ख़िलाफ़त नामा दिखाया। मौलाना जमालुद्दीन बहुत ख़ुश हुए और ख़िलाफत नामा पर यह शेर लिख दिया:

हज़ारां दरुद व हज़ारां सपास

कि गौहर सुपुर्दन्द बगो हर शनास

तर्जुमा : हज़ारों दरुद और हज़ारों शुक्र कि गोहर सूपुरद किया गोहर शनास को।

वापसी दिल्ली

अजोधन से दिल्ली वापस आकर आप बा सद रानाई व ज़ैबाई पीराने चिश्त की मसनद पर मुतमक्किन हुए और ख़लक अल्लाह को रुश्द व हिदायत करने में मशगूल हुए। आप तीस बरस अपने पीर व मुर्शिद हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर की हयात में अजोधन हाज़िर हुए और उनकी वफ़ात के बाद सात मर्तबा रोज़े मुबारक की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए।

रियाज़ात व मुजाहिदात

दिल्ली वापस आकर आपने अपने पीर व मुर्शिद के फ़रमान के मुताबिक रियाज़त व मुजाहिदा में वक्त गुज़ारा। आप दुनिया की तमाम मुरादों, आरजूओं और तमन्नाओं से अलग हो गए और यादे इलाही में मशगूल रहने लगे। आप हमेशा रोज़ा रखते थे।

सुकूनत में तब्दीली

आबादी में रहने से आपको इबादात में मख़लूक के अज़दहाम से ख़लल का अन्देशा था। आप ऐसी जगह रहना चाहते थे कि जहां सुकून इत्मीनान के साथ इबादत में मशगूल रहें। आप इस फिक्र में थे कि कहां

जाएं और कहां रहें कि एक रोज़ आप हौज़ रानी के पास एक बाग में फ़रोकश हुए। बाद अदायगी नमाज आपने दुआ मांगी:

"खुदा वन्द! मैं अपने अखत्यार से कहीं रहना नहीं चाहता जिस जगह मैरी बेहतरी हो वहीं मुझ को रख।

अभी आप दुआ में ही मशगूल थे कि एक तरफ़ से आवाज़ आई:

"तेरी जगह ग़यास पुर है।"

आप बफ़रमाने इलाही ग़यास पुर में रहने लगे।

ग़यास पुर एक छोटा सा गाँव था लेकिन कुछ अरसा में ही उम्रा व रुऊसा और उमाएदीने शहर की आमद व रफ़्त इस तरफ़ बढ़ गई थी। आपने ग़यास पुर से सुकूनत तर्क करके शहर में रहने का ख़्याल किया। क्योंकि वहाँ लोगों की आमद व रफ्त कम थी। इत्तिफ़ाक़न आप की एक खूबसूरत नौजवान से मुलाक़ात हुई। वह आपके पास बैठ गया और यह शेर पढ़ने लगा:

आं रोज़ कि मह शुदी नमी दानिस्ती
कि अंगुश्त नुमाई आलमी ख़्वाही शुद

अमरोज कि जुल्फ़त दिले ख़ल्के बर बूद
दर गोशा नशिस्तन्त नमी दारद सवद

उस नौजवान ने महबूबे इलाही की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि

"..............यह क्या क़ूव्वत और क्या हौसला है कि ख़ल्क़ से जुदा होकर गोशा ख़िलवत ढूंढते फिरें........................"

हज़रत महबूब इलाही ने अपना इरादा बदल दिया, और मुसम्मम इरादा किया कि अब कहीं और नहीं जाएंगे। ग़यास पुर ही में रहेंगे। आपने बाक़ी उम्र गयास पुर में ही गुज़ारी। ज़ियाउद्दीन वक़ील इमादुल मुल्क ने वहां एक शान दार इमारत तामीर कराई[1]।

आख़िरी अय्याम

1. सीरूल ओलिया

हज़रत महबूबे इलाही ने हयाते जाहिरी के आख़िरी दिनों मे खाना पीना बहुत की कम कर दिया था। वफ़ात शरीफ़ से चालीस रोज़ पहले आपने ख़ाना बिल्कुल छोड़ दिया था। एक रोज़ शोरबा आपको पेश किया गया। आपने पीने से इन्कार किया और फ़रमाया:

"जिसके सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुश्ताक़ हों, उसको तआमे दुनिया से क्या काम।"

आप नमाज़ कई कई मर्तबा अदा फ़रमाते और दरियाफ़्त फ़रमाते कि नमाज़ अदा की है या नहीं। ख़ुदा वन्द ताला के सामने बार बार सज्दा करते थे और बहुत रोते थे[1]। यह मिसरा आपके विर्दे ज़ुबान था:

मीरोयम व मीरोयम व मीरोयम

तर्जुमा : हम जाते हैं। और हम जाते हैं और हम जाते हैं।

घर में किसी क़िस्म की कोई चीज नहीं रखी। इक़बाल को हुक्म दिया कि सब ग़ल्ला फ़ुकरा को तक़सीम कर दे[2]।

तबर्रुकात की तक़सीम

वक़्त रुख़्सत जब करीब पहुंचा तो आपने एक मुसल्ला ख़ास, दस्तार और पीरहन मौलाना बुरहानुद्दीन ग़रीब को दे कर दक्किन की तरफ़ जाने की इजाजत दे दी। एक दस्तार, पैरहन और मुसल्ला शेख़ याक़ूब को अता फ़रमाकर गुजरात की तरफ़ जाने की इजाज़त दी। मौलाना शमसुद्दीन यहिया को भी आपने एक दस्तार मुसल्ला और पैरहन अता फ़रमाया[3]।

हजरत नसीरुद्दीन चराग़रह. भी उस रोज़ ख़िदमत में हाज़िर थे लेकिन उस रोज़ आपको कुछ अता न किया। सब को ताज्जुब था। हज़रत महबूब इलाही ने बुध के रोज़ बाद नमाज़ जुहर हजरत नासीरुद्दीन चराग़[रह.] को तलब फ़रमाया और असा, मुसल्ला, तस्बीह नालैन चोंबी और ख़िरक़ा और हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर के दीगर तबर्रुकात आपके सुपुर्द फ़रमाए फिर हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ से मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि:

---

1. फरिशता 2. फरिशता 3. सीरूल आरफीन

"तुमको दिल्ली में रहकर लोगों की जफ़ा व क़ज़ा उठानी चाहिए।"

वफ़ात शरीफ़

आप चार महीने और कुछ दिन बीमार रहे और अट्ठारह रबीउस्सानी 725 हि. बरोज बुध बाद तुलूए आफ़ताब जवारे रहमत में दाखिल हुए।

आपके जनाजा की नमाज़ शेखुल इस्लाम हज़रत रुकनुद्दीन मुल्तानी ने पढाई।

जनाजा–ए–मुबारक को जब दफ़न के वास्ते ले जा रहे थे, क़व्वाल शेख़ सादी की मशहूर ग़जल गा रहे थे, जिसका पहला शेर यह है।

सरो सीमा रा बसहरा मी रवी
लेक बद अहदी कि बे मामी रवी

क़व्वाल जब इस शेर पर पहुंचे

ऐ तमाशा गाहे आलम रूए तू
तू कुजा बहरे तमाशा मी रवी

जिस्मे अक़दस में जुंबिश पैदा हुई। हाल और वजद जनाजे मुबारक पर तारी हुआ। यह हालत देखकर मौलाना हज़रत रुकनुद्दीन ने समा बन्द करा दिया[1]।

यह भी कहा जाता है कि आपने जनाजा से हाथ निकाला और फ़रमाया:

"मन नमी दानम"

तर्जुमा : मैं नहीं जानता हूँ।

आपके खलीफे अकबर और जांनशीन हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ ने अर्ज किया: शेखा शेखा बाश, दस्त दर कश क़दम सैयद दरमियान अस्त।

हज़रत महबूब इलाही ने उसी वक्त हाथ खींच लिया।

आपका मजारे पूर अनवार गयासपुर (दिल्ली के क़रीब जिसको

1 सबए सनाबिल

अब निज़ामुद्दीन कहते हैं) में वाक़ा है आपका सालाना उर्स बड़े तज़्क व एहतिशाम से होता है।

आपके खुल्फ़ा

हज़रत शेख़ नसीरुद्दीन चराग़ आपके ख़लीफ़े अकबर और जांनशीन हैं। आपके ख़ास ख़ास ख़ुल्फ़ा हसबे ज़ेल हैं:

हज़रत अमीर ख़ुसरु। मौलाना शमसुद्दीन मुहम्मद बिन यहिया। शेख़ क़ुतबुद्दीन मनव्वर। मौलाना फ़ख़रुद्दीन नदावी। मौलाना हिसामुद्दीन मुल्तानी। ख़्वाजा अबु बकर मन्दा। मौलाना शहाबुद्दीन इमाम। अमीर हसन बिन अलीउस्सन्जरी। मौलाना बुरहानुद्दीन ग़रीब। मौलाना वजीहुद्दीन यूसुफ़ कलाखड़ी उर्फ़ चन्देरी। मौलाना अलाउद्दीन नैली। मौलाना फ़ख़रुद्दीन मरुज़ी। मौलाना फ़सीहुद्दीन। मौलाना करीमुद्दीन समरक़न्दी। ख़्वाजा मौइदुद्दीन। मौलाना ज़ियाउद्दीन बरनी। क़ाज़ी मुहियुद्दीन काशानी।

सीरत पाक

आपने जिन्दगी भर शादी नहीं की। तमाम उम्र तजर्रुद में गुज़ार दी।

पीर व मुर्शिद से मुहब्बत

आपाको अपने पीर दस्तगीर हज़रत बाबा फरीदुद्दीन गंज शकर से इन्तिहाई मुहब्बत थी। आपका इख़्लास खुलूस, फरमांबरदारी और हुसने ऐतिकाद आपकी सआदत की दलील है और उसकी बदौलत हज़रत बाबा फरीदुद्दीन गंज शकर ने आपको बेशुमार नेमतों से नवाज़ा। आपके दिल में अपने पीर व मुर्शिद की तरफ से इख़्लास व एतिकाद रोज़ बढ़ता रहा। आपके पीर व मुर्शिद हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर अकसर फरमाया करते थे[1]।

"...लेकिन यह ग़रीब मौलाना निज़ाम जिस रोज़ से मेरे पास आया है और मुरीद हुआ है उसके इख़्लास व एतिक़ाद में ख़लल वाक़े नहीं हुआ।"

1 फ़वाइदुल फ़वाइद

एक मर्तबा आपके पीर व मुर्शिद ने लोगों से मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि[2]।

"मुरीद व फ़र्ज़न्द को रासिख़ ऐसा होना चाहिए जैसे कि निज़ाम हैं।"

आपने अपने पीर व मुर्शिद को एक ख़त में एक रुबाई लिखी थी। उस रुबाई से आपके ख़ुलूस मुहब्बत व ऐतिक़ाद का बख़ूबी अन्दाज़ा होता है। कुछ दिन बाद आप अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में हाज़िर हुए आपके पीर व मुर्शिद ने वह रुबाई पढ़ने को कहा। जब आपने वह रुबाई पढ़ी तो हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर पर ऐसी कैफ़ियत तारी हुई कि आप ज़ौक़ व शौक़ की हालत में रक्स करने लगे। वह रुबाई यह है:

जां रुए कि बन्दा तू दानन्द मुरा
बर मर्द मके दीदा निशानन्द मुरा

लुत्फ़ व करमत ज़गायते फ़र्मूदा अस्त
वरना मन केम व ख़लक़ चे दानन्द मुरा[1]।

शाने महबूबी

वली कामिल जब क़ुतबीयत और फ़र्दानियत के दरजों से गुज़र जाता है और मर्तबे महबूबियत तक पहुंच जाता है उस वक्त वह मज़हरे असरार इलाही हो जाता है और उसका इरादा ख़ुद बन्द ताला का इरादा हो जाता है[2]।

हज़रत महबूब इलाही गौसियत और फ़र्दानियत के मरातिब से गुज़र कर मर्तबे महबूबी पर पहुंचे थे[3]। मर्तबा महबूबी की शान आज भी आपके मजार पुर अनवार से ज़ाहिर है, आपके पास से ऐसी ख़ुशबू आती थी कि औद का गुमान होता था[4]।

फ़क्र व फ़ाक़ा

आपका इब्तिदाई ज़माना बहुत ही उसरत और तंगी में गुज़रा।

---

1. राहतुल कुलूब 2 फ़वाइदुल फ़वाइद 3. सीरूल औलिया
4. बहरूल मआनो

उस ज़माने में आपके पास एक चतेल (एक सिक्का) भी न था कि जिस से दो तीन रोटियाँ ख़रीद लेते[1]।

फ़ुतूहात

एक दिन का वाकिया है कि आपके यहां आशे जौ पक रहा था। नागाह एक फ़क़ीर जो गुदड़ी पहने हुए था आपके पास आया, और आपसे कहा कि जो कुछ पका हो लाओ। आपने आशे जौ की पकती और जोश खाती हुई हांडी इस गुदडी पोश फ़क़ीर के सामने लाकर रख दी। उस फ़क़ीर ने बग़ैर इन्तिज़ाम किए हुए वैसे ही खाना शुरु किया। खाने के बाद उसने हांडी को ज़मीन पर दे मारा और हज़रत महबूबे इलाही से मुख़ातिब होकर कहा:

"मौलाना निज़ामुद्दीन! नेमत बातिनी से तुमको बाबा फ़रीदुद्दीन ने सरफ़राज़ किया है और तुम्हारे फ़क़र ज़ाहिर की हांडी मैंने तोड़ दी।"

उस रोज़ से फ़ुतूहात इस क़दर शुरु हुई कि शुमार और हिसाब से बाहर हैं[2]। आप पर चारों तरफ़ से फ़ुतूहात के दरवाज़े कुशादा हुए।

लंगर

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर ने आपको दुआ दी थी:

"ख़ुदा करे सत्तर (70) मन नमक रोज़ाना तुम्हारे बावर्ची ख़ाने में ख़र्च हो।[3]"

आपके पीर व मुर्शिद की यह दुआ क़ुबूल हुई। आपके बावर्ची ख़ाने में रोज़ाना सत्तर मन नमक ख़र्च होता था। सत्तर ऊँट प्याज़ व लहसन के छिल्के रोज़ आपके बावर्ची ख़ाने से निकलते थे।

दुनिया से नफ़रत

आप दुनिया और अहले दुनिया से बे ताल्लुक़ थे। शाहाने वक्त को आपकी ज़ियारत की तमन्ना रहती ।

सख़ावत

---

1. रोज़तुल अक़ताब 2. ख़ैरूल मजालिस 3. तज़्करतुल अतक़िया

आपकी सख़ावत का यह हाल था कि जो कुछ आता,शाम तक सब ख़र्च हो जाता[1]। एक मर्तबा ग़यास पुर में आग लगी। बहुत से मकानात जल गए। हज़रत महबूब इलाही को लोगों की इस तकलीफ़ और बरबादी से सदमा हुआ। आपने ख़्वाजा इक़बाल को हुक्म दिया कि जिन लोगों के मकानात जल गए है उनको दो ख़्वान खाना। दो पानी के मटके और दो अशरफियां पहुंचा दी जाएं। ख़्वाजा इकबाल ने ऐसा ही किया। आपके यहां से बहुत से लोगों की परवरिश होती थी और बहुत से तलबा और बहुत से हाफ़िज़ों को इमदाद दी जाती थी। आपकी सख़ावत और दरिया दिली पर शाहाने वक़्त को ताज्जुब होता था।

ज़ौक़े समा

आपको समा का बहुत शौक़ था। एक मर्तबा का वाक़िया है कि आप एक जगह से गुज़र रहे थे वहां एक शख़्स को देखा कि कुंवें पर चर्स से पानी खींच रहा है और अपने साथी से चिल्ला कर कहता है:

"बाहर रे भैया बाहर"

हज़रत महबूब इलाही ने जब यह अल्फ़ाज़ सुने, आप पर वज्द तारी हो गया, जो लोग आपके हमराह थे वह रास्ते में यही पढ़ते रहे[1]।

अज़मत व बुजुर्गी

हज़रत मुहबूब इलाही से एक दफ़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब में फ़रमायाः

"तुम फ़लकुल फुक़राइल मसाकीन हो।"

एक मर्तबा मौलाना वजीहुद्दीन पायली की कोई मुश्किल हज़रत ख़्वाजा ख़िजर ने हल कर दी। मौलाना ने हज़रत ख़्वाजा ख़िजर से दरियाफ्त किया कि[2]:

"अगर अइन्दा मुझ को मुशकिल दर पेश हो तो आप से कहाँ मुलाकात होगी"

इन्होंने जवाब दियाः—

1. सैरुल मजालिस 2. सबए सनाबिल

"हज़रत मेहबूब इलाही खुवाजा निज़ामुद्दीन ओलीया के मतबख में"

एक रोज़ खुवाजा खुवाजगान हज़रत खुवाजा मुइनुद्दीन सन्जरी कि मरदान गेब से मुलाकात हुई– इन में से एक ने हज़रत खुवाजा साहब से अरज़ किया कि:

ऐ ख्वाजाः– आपने दुनिया के शहरों में एक शोर बरपा कर दिया है। ख्वाजा ग़रीब नवाज ने यह सुनकर ताज्जुब से फ़रमाया।

"मैंने"

उस अब्दाल ने अर्ज किया

"नहीं।"

फिर आपने दरियाफ्त किया:

"क़ुतबुद्दीन ने।"

उस अब्दाल ने जवाब दिया

"नहीं।"

फिर आपने दरियाफ्त फ़रमाया तो

"फ़रीदुद्दीन ने।"

उस अब्दाल ने जवाब दिया:

"नहीं।"

फिर आपने दरियाफ्त फ़रमाया:"

"निज़ामुद्दीन ने"

उस अब्दाल ने कहा:

"जी हाँ। उन्होंने।

हजरत ख्वाजा गरीब नवाज ने फ़रमाया कि:

"वह तो मुझसे चौथे दर्जे में हैं।"

उस अब्दाल ने अर्ज़ किया:

"आपके फ़र्ज़न्दों से जो बात होगी वह भी आप ही की तरफ़ मन्सूब की जाएगी।"[1]

इबादात

आप रात को हुजरे में तन्हा रहते थे। किसी की मजाल नहीं थी कि हुजरे में दाख़िल हो, हुजरे का दरवाज़ा रात को बन्द रहता था। सुबह के वक़्त आपकी आंखे मस्त व मख़मूर नज़र आतीं। रात को जागने की वजह से आपकी आंखे सुर्ख़ रहतीं[2]। हज़रत अमीर ख़ुसरु का यह शेर उसी तरफ़ इशारा करता है।

तू शबाना मी नुमाई बैरे कि बूदी इमशब
कि हुनूज़ चश्म मुस्तत असर ख़ुमार दारद

इल्मी ज़ौक़

आपने अपने पीर व मुर्शिद की मजालिस के हालात क़लम बन्द फ़रमाए हैं। इस किताब का नाम आपने "राहतुल क़ुलूब" रखा। उस मे बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर के मल्फ़ूज़ात बा बरकात आपने तहरीर फ़रमाए हैं। यह किताब शाये हो चुकी है।

आपका मज़ाक सुख़न आपकी हसबे ज़ेल नात से ज़ाहिर है।

सबा बसूए मदीना रोकन अर्ज़ी दुआगो सलाम बरख़्वां
व बाबे रहमत गहे गुज़र कुन ब बाबे जिब्रील गहे जबीं सा
सलाम रब्बी अली नबीये गहे ब बाबे सलाम बर ख़्वां
वशेज़े मन सूरते मिसाली नमाज़ ब गुज़ार अन्दर आंजा
व लहने ख़ुश सूरते मुहम्मद तमाम अन्दर क़याम वर ख़्वां
बन्द वचुन्दीं अदव तराज़ी सर इरादत बख़ाके आंको
सलाते वा फ़र्वा रुहे पाक जनाब ख़ैरुल अनाम बर ख़्वां
व लहन दाऊद हम नवा शोबा नालए दर्द आशना शो
व वज़्मे पैगम्बर ई ग़ज़ल राज़ अब्दे आजिज़ निज़ाम बर ख़्वां

आपकी तालीमात

आपकी तालीमात असरार इलाही के इशारात हैं। यह ऐसे ग़ैबी

1. सिराजुल हिदायत 2. अख़बारूल आख़ियार

जवाहरात हैं जो अनमोल हैं। ज़ेल में आपकी चन्द मजालिस का हाल पेश किया जता है।

तर्के दुनिया

हज़रत महबूबे इलाही ने फ़रमाया[1]:

"हिम्मत बुलन्द रखनी चाहिए और दुनिया की आलाइशों मे नहीं फंसना चाहिए हिर्स व शहवत छोड़ देनी चाहिऐ।

एक दूसरी मजलिस में आपने फ़रमाया[2]:

"अगर कोई शख़्स दिन को रोज़ा रखे और रात को जागता रहे और हाजी हो तो भी असल उसूल यह है कि दुनिया की रास्ती उसके दिल में न हो।"

तिलावते क़ुरआन

आपने फ़रमाया कि[3]।

"जब पढ़ने वाले को किसी आयत के पढ़ने से ज़ौक और राहत हासिल हो तो उसे बार बार पढ़ना चाहिए। तिलावत और समा की हालत में जो सआदत हासिल होती है, उसकी तीन किस्में है: अनवार अहवाल और आसार। वह तीन आलम यानी मलक, मलकूत और जबरुत से नाज़िल होती है। अनावरुल मलकूत से अरवाह पर। अहवाले जबरुत से क़ुलूब पर और आसारे मलक से जवारह पर।"

सदक़ा

सदक़े के बारे में आपने फ़रमाया कि[4]:

"जब सदक़े मे पांच शर्ते हो तो बेशक सदक़ा क़ुबूल होता है। उनमें से दो अता से पहले,दो अता के वक्त और बाद में होती है। अता से पहले की दो शर्ते यह हैं, कि जो

1. फ़वाइदुल फ़वाइद (उर्दु तर्जुमा) सफ़ा 8 2. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 69
3. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 28,29 4. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा।

कुछ दे वह हलाल की कमाई हो, दूसरे किसी नेक मर्द को दे जा इसे बुरे काम में ख़र्च न करे।

अता के वक्त की दो शर्तें यह हैं कि अव्वल तवाज़ो और हंसी ख़ुशी से दे। दूसरे पोशीदा दे। बाद की शर्त यह है कि जो दे उसका नाम तक न ले बल्कि भूल जाए।"

सब्र व रज़ा

सब्र व रिज़ा के मुतल्लिक़ आपने इरशाद फ़रमाया कि[1]:

"सब्र उस बात का नाम है कि जब कोई ख़िलाफे तबा बात बन्दे को पहुंचे तो उसकी शिकायत न करे। लेकिन रज़ा उस बात का नाम है कि मुसीबत से किसी तरह की उसे कराहत न हो। ऐसा मालूम हो कि गोया उस पर मुसीबत नाज़िल नहीं हुई।"

तवक्कुल

तवक्कुल के वारे में आपने फ़रमाया[2]:

"तवक्कुल के तीन मर्तबे हैः पहला मर्तबा यह है कि कोई शख़्स किसी आदमी को अपने दावे के लिए वकील करे और वह वकील उस शख़्स का दोस्त भी हो और आलिम भी तो मुवक्किल बिल्कुल बे खटके कहेगा कि मैं ऐसा वकील रखता हूँ जो दावे के कामों में भी दाना है और मेरा दोस्त भी है। उस सूरत में तवक्कुल भी होगा और सवाल भी। यह तवक्कुल का पहला दर्जा है कि तवक्कुल भी और सवाल भी। दूसरा मर्तबा तवक्कुल का यह है कि एक शीर ख़्वार बच्चा हो जिसकी मां उसे दूध पिलाती हो, उसे तवक्कुल भी होगा। सवाल न होगा। बच्चा यह नहीं कहता कि मुझे फ़लां वक्त दूध देनां सिर्फ़ रोता है, लेकिन तक़ाज़ा नहीं करता, और न ही कहता है कि मुझे दूध दे। उसके दिल में शफ़क़ते मादरी का पूरा भरोसा होता है।

तवक्कुल का तीसरा दर्जा यह है कि जैसे मुर्दा नहलाने वाले के हाथ कि वह मुर्दा न हरकत करता है न सवाल

---

1 फ़वाइदुल फ़वाइद (उर्दू तर्जुमा) सफ़ा 43 2. फ़वाइदुल फ़वाइद 44

जिस तरह नहलाने वाला चाहे उसे हरकत दे और धोये, यह दर्जा बहुत बुलन्द और आला है।

ताअत की क़िस्में

आपने फ़रमाया किः

"ताअत लाज़मी और मुतअद्दी है। लाज़मी वह है जिसका नफ़ा सिर्फ़ करने वाले की ज़ात को पहुंचे और यह नमाज़, रोज़ा, हज, दरुद और तस्बीह है।

मुतअद्दी वह है जिस से औरों को फ़ायदा पहुंचे। इत्तिफ़ाक़, मशक्क़त, ग़ैर के हक़ में मेहरबानी करना वग़ैरह। उस मुतअद्दी कहते हैं, उसका सवाब बेशुमार है। लाज़मी ताअत में इख़्लास का होना ज़रुरी है ताकि क़ुबूल हो। लेकिन मुतअद्दी ताअत ख़्वाह किसी तरह की जाए सवाब मिल जाता है।"

दुआ करने का तरीक़ा

आपने फ़रमाया कि[1]:

"दुआ के वक्त किये हुए गुनाहों का ख़्याल दिल में नहीं लाना चाहिए और न ही की हुई इबादत और ताअत का। अगर ऐसा करे और दुआ क़ुबूल न हो तो बड़े ताज्जुब की बात है। अगर गुनाह का ख़्याल दिल में लाए तो दुआ के ईक़ान में सुस्ती पैदा होती है। पस दुआ के वक्त अल्लाह ताला की रहमत पर नज़र रखनी चाहिए, और यक़ीन रखना चाहिए कि यह दुआ ज़रुर क़ुबूल हो जाएगी।"

आपने यह भी फ़रमाया किः

"दोनों हाथ दुआ के वक्त खुले रखने चाहिए और सीने के बराबर। और यह भी आया है कि दोनों हाथ मिलाकर

1. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 50

रखने चाहिए। और बहुत ऊपर। ऐसी शक्ल अख़्तियार करनी चाहिए कि अभी कोई चीज़ मिलेगी।"

ईमाने कामिल

आपने फ़रमाया कि[1]:

"हक़ ताला पर भरोसा रखना चाहिए और उसके सिवा किसी से उम्मीद नहीं रखना चाहिए।"

फिर आपने फ़रमाया कि:

"आदमी का ईमान उस वक्त तक कामिल नहीं होता जब तक उसकी निगाह में तमाम ख़िल्क़त मच्छर से भी कम हक़ीक़त न मालूम हो।"

मशग़ूली हक़

मशग़ूली हक़ के बारे में आप ने फ़रमाया कि[2]:

असल काम यादे हक़ है और उसके सिवा जो है सब याद हक़ का माने है।"

अक़सामे रिज़्क़

आप ने फ़रमाया कि[3]:

"मशाइख़ का क़ौल है कि रिज़्क चार किस्म का होता है:

(1) रिज़्क मज़मून (2) रिज़्क मक्सूम (3) रिज़्क मम्लूक (4) और रिज़्के मौऊद। रिज़्कं मज़मून वह है जो खाने पीने वग़ैरा की चीज़े और आमदनी से हो। इस रिज़्क का अल्लाह ताला ज़ामिन होता है।" रिज़्क मक्सूम वह है जो अज़ल में इसके हिस्सा में आ चुका है, और लौहे महफ़ूज़ में लिखा जा चुका है।

रिज़्क मम्लूक वह है जो ज़ख़ीरा किया जाए। मसलन

---

1. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 82 2. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 74
3. फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 82

रुपया, पैसा, कपड़ा, और असबाब

रिज़्क मौऊद वह है जिसका वादा अल्लाह ताला ने नेक बन्दों से किया है:

तहम्मुल

तहम्मुल के बारे में आपने फ़रमाया कि:

"लोग आपस मे तीन तरह का सुलूक करते है:

अव्वल वह लोग जिनसे किसी को न फ़ायदा पहुंचता हो और न नुक़सान, ऐसे लोग बमन्ज़िला जमादात हैं।

दूसरे वह जिनसे फ़ायदा पहुंचता है, लेकिन नुक़सान नहीं पहुंचता– तीसरे उन दानों से अच्छे हैं। यानी वह लोग जिनसे लोगों को फ़ायदा पहुंचता है। अगर उन्हें दूसरों की तरफ़ से नुकसान पहुंचे तो वह उसका बदला नहीं लेते बल्कि बर्दाशत करते हैं, जो सिद्दीक़ों का काम है।"

समा

आपने फ़रमाया[1]:

जब चंद चीज़ें मौजूद हो तो समा सुनना चाहिए। वह चीज़ें यह हैं। मसमा, मसमू मुस्तमा और आलाते समा... मुस्मा कहने वाले को कहते हैं जो बालिग और मर्द हो। न कि लड़का या औरत।

मसमू जो कुछ वह गाए वह फ़हश और फुजूल नहीं होना चाहिए। मुस्तमा वह जो सुने। सुनने वाला भी याद हक़ से पुर हो और उस वक्त बातिल ख़्याल न हो। समा के आलात चंग और रुबाब वग़ैरह हैं। यह मजलिस में नहीं होने चाहिए। ऐसा समा हालाल है।"

फिर आपने फ़रमाया:

"समा एक मौज़ूं आवाज़ है। यह हराम क्यों कर हो

1 फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 200

सकती है। नीज़ उसमें क़लब को हरकत होती है। अगर वह हरकत याद हक़ की वजह से हो तो मुस्तहब है और अगर बुरे ख़्याल से हो, तो हराम है।"

अक़वाल

आपके चंद अक़वाल हसबे ज़ेल हैं:

- असल दानाई यह है कि दुनिया को तर्क किया जाए।
- दुर्वेश को चाहिए कि न ख़ुशी से ख़ुश हो न ग़मी से ग़मनाक।
- जब एक मर्तबा पेट भर जाए तो फिर और नहीं खाना चाहिये। अलबत्ता दो शख़्सों को खाना जायज़ है। एक वह जिस के यहां मेहमान आए हों और वह उनकी खातिर उनके साथ मिलकर और कुछ खाले और दूसरे वह जो रोज़ा रखता है और समझता हो कि सहरी के वक़्त शायद कुछ न मिल सके।
- मर्द जब इल्म सीखता है तो उसे शर्फ हासिल होता है और जबताअत करता है तो उसके काम की बेहतरी होती है। उस मौक़ा पर पीर को चाहिए जो दोनों तो तोड़ दे यानी इल्म और अमल दोनों को उसकी नज़र से गिरा देगा कि ख़ुद पसन्दी में मुब्तिला न हो जाए।
- तीन वक़्तों में नज़ूले रहमत होता है। एक समा की हालत में दूसरे वह खाना खाते वक़्त जो ताअत की कुव्वत की नीयत से खाया जाए और तीसरा दुर्वेशों के हालात बयान करते वक़्त
- सालिक जब पीर की बैअत में मुस्तक़ीम हो तो जो कुछ उस से पहले कर गुज़रा हो उसके लिए उससे मुवाख़िज़ा नहीं किया जाता।
- मुआमले के वक़्त उस क़िस्म की गुफ़्तगू करनी चाहिये, जिससे गर्दन की रगे नुमूदार न हों, यानी तअस्सुब और ग़ज़ब की अलामत न पाई जाए।
- हर एक का ज़ुल्म सहना चाहिए और उसका बदला लेने की नीयत भी नहीं करनी चाहिए।

- जिसमें इल्म व अक्ल व इश्क़ हो वह ख़िलाफ़त मशाइख़ के शायान होता है।
- औलिया का इश्क़ उनकी अक्ल पर ग़ालिब होता है।
- जिसकी तबा लतीफ़ हो वह जल्द ही बरहम हो जाता है।

औराद व वज़ाइफ़

आपने फ़रमाया कि दुआ नज़ूले बला से पहले करनी चाहिए। सहर के वक्त दुआ अकसर क़ुबूल होती है। दुआ के वास्ते यह वक्त बहुत अच्छा है। हज़रत बाबा फ़रीद गंज शंकर ने आपको बताया कि रिक्त व गिराया के वक्त दुआ को ग़नीमत समझना चाहिए। क्योंकि उस वक्त क़ी दुआ ज़रुर क़ुबूल होती है। हज़रत महबूबे इलाही ने फ़रमाया कि तावीज़ को बाज़ू पर बांधना बेहतर है। गले में लटकाना नहीं चाहिए। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लटकाने से मना फ़रमाया है। आप के बाज़ औराद व वज़ाइफ़ हसबे ज़ेल हैं:

मुश्किलात हल होने के लिए

हज़रत महबूब इलाही फ़रमाते हैं कि जब कोई मुश्किल दर पेश हो तो महीने की पन्द्रहवी शबबा वज़ू क़िब्ला रु होकर बैठे। उन्नीस हज़ार मर्तबा وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ पढ़े और हर हज़ार पर सर सज्दा में रखना चाहिए और तीस बार आमीन कहना चाहिए!

इस्मे आज़म

हज़रत महबूबे इलाही फ़रमाते हैं कि अरबी ज़ुबान में يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ इस्मे आज़म है और फ़ारसी ज़ुबाने में उम्मीद उम्मीदवारान हैं।

बग़ैर असबाब के ख़ुश ज़िन्दगी गुज़ारने के वास्ते

हर रोज़ सौ मर्तबा यह दुआ पढ़ना चाहिए

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر

गुम हुई चीज़ के वास्ते

आप फ़रमाते हैं कि गुम हुई चीज़ के मिल जाने के वास्ते हसबे ज़ेल दुआ पढ़ना चाहिए।

يَا جَامِعَ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ اِجْمَعْ عَلَيَّ ضَالَّتِيْ

दीनी और दुनियावी मुराद के वास्ते

आपने फ़रमाया कि हर नमाज़ के बाद सज्दा में सर रख कर हसबे ज़ेल दुआ कई मर्तबा पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَفْتِحُكَ بِاَمِ يَحْيٰ ابْنِ ذَكَرِيَا يَا مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ
بِحَقِّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْن

दुश्मन पर ग़ालिब होने के वास्ते

आपने फ़रमाया कि दुश्मन के मुक़ाबिल होकर हसबे ज़ेल असमा पढ़ना चाहिए:

يَا سُبُّوْحُ يَا قُدُّوْسُ يَا غَفُوْرُ يَا وَدُوْدُ

बीमारी से अच्छा होने के वास्ते

आपने फ़रमाया कि हर एक बीमारी से अच्छा होने के वास्ते हसबे ज़ेल दुआ लिखकर बांधना मुफ़ीद है:

اللّٰهُ شَافِي اللّٰهُ الْكَافِيْ اللّٰهُ النَّافِي

हाजत पूरी होने के वास्ते

हज़रत महबूब इलाही फ़रमाते हैं कि हसबे ज़ेल दुआ हाजत पूरी

होने के वास्ते निहायत ज़ूद असर है। يَا حَيُّ يَا حَلِيْمُ يَا عَزِيْزُ يَا كَرِيْمُ

बकुन कार साब रा सलीम بِحَقِّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنَ

रोज़ी फ़राख़ होने के वास्ते

आपने फ़रमाया कि रोज़ी फ़राख़ होने के वास्ते हर रात को सूरह जुमा पढ़ना चाहिए और وَاللّٰهُ خَيْرُ الرَّازِقِيْنَ की तीन मर्तबा या सात मर्तबा या इक्कीस मर्तबा तकरार करनी चाहिए। अगर सूरह जुमा रोज़ न पढ़ सकें तो जुमा की हर रात को ज़रुर पढ़नी चाहिए। आपने फ़रमाया कि उस्अते रिज़्क के वास्ते हर रोज सुबह के वक़्त कल्मए لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِىِّ الْعَظِيْم सौ बार पढ़ना चाहिए।

दुआए मासूरा

आपने फ़रमाया कि जब रंज व बला को किसी तरह ख़ुलासी न हो तो जुमा के रोज़ असर की नमाज़ से लेकर शाम तक हसबे ज़ेल तीन असमा को पढ़ता रहे और कोई काम न करे रंज व बला से नजात मिलेगी।

يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَارَحِيْمُ

कश्फ़ व करामात

हज़रत महबूब इलाही साहबे कश्फ़ व करामात थे लेकिन इन चीज़ों की आप की निगाह में कोई अहमीयत न थी। आप फ़रमाया करते थे कि कश्फ़ व करामात रास्ता में हिजाब हैं। मोहब्बत में काम इस्तिक़ामत से निकलता है। आजिज़ बन कर रहना चाहिए ताकि असली मक़सद हासिल हो–करामतें ज़ाहिर करना बुज़ुर्गी और बरगुज़ीदगी की दलील नहीं असरार को पोशीदा रखना चाहिए लेकिन इस के वास्ते बड़े हौसले की ज़रुरत है।

हज़रत महबूब इलाही फ़रमाते हैं कि सुलूक के (सौ 100) दर्जे हैं, सत्तरवां दर्जा कश्फ़ व करामत का है, जो सालिक इस दर्जे में रह गया वह नहीं बढ़ सकता।

आप फ़रमाते हैं कि ख़ारिक़े आदत की चार क़िस्में हैं:

1 मोजज़ा– मोजज़ा पैग़म्बरों से ज़ाहिर होता है।

2 करामत– करामत औलिया से ज़ाहिर होती है।

3 मऊनत– जब कोई बात ख़िलाफ़े आदत बाज़ बे इल्म, और बे अमल मजज़ूबों और दीवानों से ज़ाहिर हो, उसे मऊनत कहते हैं।

4 इस्तिदराज– जब कोई ख़िलाफ़े आदत बात ऐसे लोगों से ज़ाहिर हो जो ईमान नहीं रखते, उसको इस्तिदराज कहते हैं।

आपने फ़रमाया कि करामत से तीन चीज़े हासिल होती हैं।

पहली चीज़ इल्म बे तालीम–बग़ैर पढ़े लिखे आलिम होना।

दूसरी चीज़ यह है कि औलिया बेदारी में वह चीज़ें देखते हैं जो आम लोग ख़्वाब में देखते हैं।

तीसरे यह कि जैसे आम लोगों का ख़्याल खुद उनके अन्दर असर करता है औलिया का ख़्याल ग़ैरों में वही असर करता है।

आपकी बाज़ करामात का हाल ज़ेल में बयान किया जाता है:

एक मर्तबा क़ाज़ी मुहयुद्दीन काशानी सख़्त बीमार हुए। बज़ाहिर आप के बचने की उम्मीद न थी। हज़रत महबूब इलाही आपको देखने तशरीफ ले गए। क़ाज़ी साहब जांकुनी के आलम में थे। हज़रत महबूब इलाही के क़दमों की बरकत से क़ाज़ी साहब की सब बीमारी दूर हो गई। आपने खड़े होकर हज़रत महबूब इलाही को ताज़ीम दी।

आपकी ख़ानक़ाह में बावली खोदी जा रही थी। पानी खारी निकला। एक रोज़ आप समा में तशरीफ़ रखते थे, आपने ख़्वाजा इक़बाल से दवात, रोशनाई, कागज़ और क़लम मंगवाया। आपने कागज़ पर कुछ लिखकर ख़्वाजा इक़बाल को वह कागज़ बावली में डालने को दिया। परचे के डालने से पानी मीठा हो गया[1]।

आप के एक मुरीद बदरुद्दीन ने एक मर्तबा रात के वक्त आपकी दहलीज़ पर एक ऊँट देखा। आप उस ऊँट पर सवार हुए। ऊँट हवा में उड़ता चला गया। आख़िर रात में देखा दह ऊँट फिर वापस आया और हज़रत महबूब इलाही ऊँट परसे उतरे और ख़ानक़ाह में तशरीफ़ ले गए।

1 जवामिउल कलम

आपके एक मुरीद के दिल में यह ख़्याल आया कि अगर आप उसको अपना झूटा पानी देंगे तो यह आपकी करामत होगी। हज़रत महबूब इलाही उसके ख़तरे से आगाह हुए और आपने अपना झूटा पानी उसको इनायत फ़रमाया।

दिल्ली के एक बादशाह का अजीब वाक़िया है। सुलतान ग़यासुद्दीन तुग़लक़ अगरचे बज़ाहिर महबूब इलाही से कुछ न कहता था, लेकिन दिल में आपकी तरफ़ से कुदूरत रखता था। एक मर्तबा वह बंगाल से दिल्ली रवाना हो रहा था। उसने हज़रत महबूब इलाही को पैग़ाम भेजा कि उसके आने तक वह दिल्ली न हों और उसके बाद ग़यास पुर से भी चले जाएं। आप उस वक़्त कुछ रंजीदा हुए। और आपने जवाब दिया[1]:

"हुनूज़ देहली दूर अस्त"

यानी अभी दिल्ली दूर है।

आख़िरकार ऐसा हुआ कि अभी दिल्ली न पहुंचा था कि तुग़लक़ आबाद का महल ग़यासुद्दीन तुग़लक़ पर गिरा, और वह मर गया। उसको दिल्ली पहुंचना नसीब न हुआ। अब भी बतौर ज़र्बुल मिस्ल के लोग कहते हैं: "हुनूज़ देहली दूर अस्त।"

1. तारीख़ फ़रिश्ता सफ़ा 298

बाब न. 7

हज़रत नसीरुद्दीन महमूद चराग़ देहलवी

हज़रत नसीरुद्दीन महमूद चराग़ देहलवी ख़ानदाने चिश्त के रोशन चराग़ हैं। आप हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के जांनशीन हैं। आप मर्दे मैदाने दीन हैं, और फर्दे मैदाने यक़ीन हैं।

ख़ानदानी हालात

आपके जद्दे अमजद हज़रत शेख़ अब्दुल लतीफ़ नीरवी ख़रासान के रहने वाले थे, वहां से हिजरत करके लाहौर तशरीफ़ लाए। उनके लड़के हज़रत शेख़ यहया लाहौर से सुकूनत तर्क करके अवध में रौनक़ अफ़रोज़ हुए।

वालिदैन

आपके वालिद हज़रत शेख़ यहया और आपकी वालिदा अवध में सुकूनत पज़ीर थे। आपके वालिद सुफ़ी मुनिश थे। आपकी वालिदा माजिदा निहायत नेक थीं। ज़्यादा वक्त इबादत में गुज़ारती थीं। वह अपने ज़माने की राबिया थीं। आपके वालिद ख़ुशहाल थे। पशमीना फ़रोख़्त करते थे। आपके यहां गुलाम भी थे[1]।

1. सीरूल औलिया (फ़ारसी) सफ़ा 238

नसब नामा पिदरी

आपका नसब नामा पिदरी हसबे ज़ेल है:

हज़रत शेख़ नसीरुद्दीन महमूद बिन शेख़ यहया बिन अब्दुल लतीफ बिन शेख़ यूसुफ़ बिन अब्दुर्रशीद बिन सुलेमान बिन शेख़ अहमद बिन शेख़ यूसुफ़ बिन शेख़ मुहम्मद बिन शेख़ शहाबुद्दीन बिन शेख़ सुलतान बिन शेख़ इसहाक़ बिन शेख़ मसऊद बिन शेख़ अब्दुल्लाह बिन हज़रत वाइज़ असग़र बिन वाइज़ अकबर बिन इसहाक़ बिन सुल्तान इब्राहीम बिन अदहम बल्ख़ी बिन शेख़ सुलेमान बिन शेख़ नासिर बिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर[रज़ि.] बिन ख़त्ताब।

विलादत बा सआदत

आप अवध में पैदा हुए।

नाम नामी

आपका नाम नसीरुद्दीन है।

ख़िताब

आपका ख़िताब महमूद है।

लक़ब

आपका लक़ब "चराग़े दिल्ली" है। आपके चराग़ देहलवी कहलाने की चन्द वुजूहात हैं। हज़रत मख़दूम जहांनियां गश्त जब मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचे और हज़रत इमाम याफ़ई[रह.] से मिले तो बातों बातों में दिल्ली के बुज़ुर्गान का ज़िक्र आ गया। हज़रत इमाम याफ़ई ने फ़रमाया:

"पहले तो दिल्ली में बहुत बुज़ुर्गान थे। वह सब वासिल बहक़ हो गए।" फिर हज़रत इमाम याफ़ई[रह.] ने फ़रमाया कि:

"अब तो शेख़ नसीरुद्दीन अवधी कि दिल्ली के चराग़ हैं। बाक़ी हैं।"[1]

---

1. तारीख़ फ़रिश्ता (फ़ारसी) सफ़ा 399 सैरूल आरफीन

हज़रत मख़दूम जहानियां जहां गश्त सैयद जलाल कुछ अरसे के बाद मक्का मुअज़्ज़मा से दिल्ली आए और हज़रत नसीरुद्दीन महमूद चराग़ से बैअत हुए और बाद अज़ां ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ हुए। आप के "चराग़ दिल्ली" कहलाने की दूसरी वजह यह है कि:

"एक मर्तबा चन्द दुर्वेश बसिलसिले सयाही आए और हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया से मिले–वह दुर्वेश हज़रत महबूब इलाही की ख़िदमत में बैठे हुए थे कि इत्तिफ़ाक़ से हज़रत नसीरुद्दीन महमूद चराग़ देहलवी भी हज़रत महबूब इलाही की ख़िदमत बा बरकत मे हाज़िर हुए। हज़रत महबूब इलाही ने आपको बैठने का हुक्म दिया, आपने अर्ज़ किया:

"दुर्वेशों की तरफ़ मेरी पीठ हो जाएगी।"

हज़रत महबूब इलाही ने फ़रमाया कि:

"चराग़ की रु पुश्त नहीं होती ।"

अपने पीर व मुर्शिद के हुक्म मुवाफ़िक़ आप बैठ गये, आपकी रु पुश्त यक्सां हुई। जैसे की आप आगे से दिखते थे। अब पुश्त की तरफ़ से भी दिखते लगे, उसी रोज़ से आप "चराग़ दिल्ली" के लक़ब से मशहूर हुए।

तीसरी वजह है के एक दफा बादशाह ने जो हज़रत महबुब इलाही से हसद रखता था और जिस को उन का इकतेदार न पसंद था, ऐन उर्स के मोके पर हज़रत महबूब इलाही की खानकाह के वास्ते तेल बन्द कर दिया। हज़रज नसीरूद्दीन चिराग देहली ने यह वाकिआ हज़रत मेहबुब इलाही के गोश गुज़ार किया। आप ने दरयाफत फरमाया: "बावली जो खुद रही है, उस में कुछ पानी निकला है: नसीरूद्दीन चिराग देहली ने अर्ज़ किया "हुजुर! हाँ निकला है"। हज़रत महबुब इलाही ने हुक्म दिया: "इसी को चिरागो में पुर कर के रोशन करो"। आप ने ऐसा ही किया। चिराग तेल से नही पानी से रोशन हो गए। हज़रत नसीरूद्दीन महमुद सारे जहाँ में चिराग देहली के लक्ब से मशहुर हो गए।

बचपन का सदमा

जब आपकी उम्र नौ साल की हुई वालिद माजिद का साया

आतिफ़त सर से उठ गया।

तालीम व तरबीयत

वालिद के इन्तिक़ाल के बाद आपकी तालीम व तरबीयत का बार आप की वालिदा माजिदा ने बहुस्न व ख़ूबी उठाया। उन्होंने अपनी पूरी ज़िम्मेदारी महसूस की और अपकी तरबीयत में बहुत कोशिश की–आपको मौलाना अब्दुलकरीम शेरवानी के सुपुर्द किया। और उनकी वफ़ात के बाद आपने मौलाना इफ्तेखारुद्दीन गिलानी से तहसीले इल्म की आपने उलूम ज़ाहिरी से जल्द फ़राग़त हासिल की, और बीस साल की उम्र में तमाम उलूम हासिल करके तालीम का सिलसिला ख़त्म किया।

दुर्वेश की सोहबत

आप शुरु ही से मुजाहिदे नफ्स में लगे रहते थे। आपने एक दुर्वेश की सोहबत में रहना शुरु किया। यह दुर्वेश शहर से दूर जंगल में रहते थे। दुनिया से उनको कुछ ग़र्ज़ न थी। घास और पत्ते खाकर गुज़ारा करते थे।

दिल्ली में आमद

आप तैंतालीस साल की उम्र में दिल्ली में रौनक़ अफ़रोज़ हुए[1]। दिल्ली पहुंचकर आप हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की ख़िदमत में हाज़िर हुए आप एक मुद्दत तक हज़रत महबूब इलाही की ख़िदमत में रहे।

बैअ़त व ख़िलाफ़त

हज़रत महबूब इलाही ने आपको बैअ़त से मुशर्रफ़ फ़रमाया बाद अज़ां ख़िरके ख़िलाफ़त अता किया–आप पर हज़रत महबूब इलाही की ख़ास नवाज़िश और मेहरबानी थी। आंहज़रत ने आपको अपना साहब सज्जादा और जांनशीन बनाया। वह तमाम तबर्रुकात जो आपको हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर से मिले थे, हज़रत नसीरुद्दीन महमूद चिराग़ देहलवी के सुपुर्द फ़रमाये और नसीहत फ़रमाई कि वह इन तबर्रुकात को

1. बाज़ का ख़्याल है कि आप की उम्र इस वक्त चालीस साल की थी।

इसी तरह अपने पास रखें, जिस तरह उनहोंने और ख़्वाजगान चिश्त ने बसद एहतिराम व अदब रखा हैं।

आपका शिजरे बैअत अट्ठारह वास्तों से इमामुल औलिया हज़रत अली कर्रमुल्लाह वजहुसे मिलता है।

एक वाक़िया

हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया के मुरीद ख़्वाजा मुहम्मद ग़ाज़रुनी एक मर्तबा महबूब इलाही के पास आए। आप उस रात ख़ानक़ाह में रहे। जब तहज्जुद का वक्त आया तो आपने वज़ू करने की ग़र्ज़ से अपनी रज़ाई उतारी। रज़ाई एक जगह रखकर वज़ू करने चले गए। जब वज़ू करके वापस आये तो उस जगह रज़ाई को न पाया। आप ख़ानक़ाह के ख़ादिम ख़्वाजा मुहम्मद को सख़्त सुस्त कहने लगे।

हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी ख़ानक़ाह में इबादत में मशग़ूल थे। आपने जब यह गुफ़्तगू सुनी, आप उठे और अपनी रज़ाई ख़्वाजा मुहम्मद गाज़रुनी को देकर किस्सा ख़त्म किया। किसी ने यह ख़बर हज़रत महबूब इलाही को पहुंचाई। हजरत महबूब इलही ने आपको ऊपर बुलाया और अपनी रज़ाई आपको अता की, आपके लिए दुआए ख़ैर फ़रमाई और आपको दीनी व दुनियावी नेमत से सरफ़राज़ फ़रमाया।

पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में मारुज़ा

कुछ तो पासे अदब की वजह से और कुछ इस वजह से कि हज़रत अमीर ख़ुसरु को बारगाहे महबूब इलाही में ख़ास कर्ब हासिल था। जब चाहते थे हज़रत महबूब इलाही की ख़िदमत में हाज़िर हो जाते थे, आपने ख़ुद तो अर्ज़ नही किया बल्कि हज़रत अमीर ख़ुसरु से कहलवाया कि श्हार में रहने से मशग़ूली में फ़र्क़ आता है, इबादत में ख़लल वाक़े होता है लोग हर वक्त आते जाते रहते हैं। अगर हुक्म हो तो सेहरा या पहाड़ में सुकूनत अख़्तियार कर लूँ और वहां सुकून और इत्मीनान के साथ इबादत में मशग़ूल हूँ।

हज़रत अमीर ख़ुसरु ने हज़रत महबूब इलाही से अर्ज़ किया। हज़रत महबूब इलाही ने जवाब दिया कि[1]:

---

1. सीरूल औलिया (फ़ारसी) सफ़ा 237

"उनसे कह दो कि शहर में रहना चाहिए और मख़लूक़ की जफ़ा व क़ज़ाको बर्दाशत करना चाहिये, और उसके बदले उनके साथ बज़्ल व ईसार और अ़ता करनी चाहिए।

मुजाहिदात

आपने सख़्त से सख़्त मुजाहिदे किए। एक मर्तबा नफ़स ने आपको परेशान किया तो नफ़्स को मग़लूब करने की ग़र्ज़ से इस क़दर लेमू खाये कि आप सख़्त बीमार हो गए।

एक दफ़ा आपने दस रोज़ तक कुछ नहीं खाया। किसी ने हज़रत महबूब इलाही को इस बात की इत्तिला कर दी। आंहज़रत ने आपको अपने सामने बुलाया। जब आप ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए। हज़रत महबूब इलाही ने ख़्वाजा इक़बाल को हुक्म दिया कि एक रोटी लाएं। ख़्वाजा इक़बाल एक रोटी पर बहुत सा हलवा रख कर लाए—हज़रत महबूब इलाही ने आपको हुक्म दिया कि वह सब खालें। आप हैरान हुए कि यह सब एक मर्तबा में कैसे खायेंगे लेकिन पीर व मुर्शिद का हुक्म कैसे टालते। सब खा लिया।

आपकी वसीयत

आपने शेख़ ज़ैनुद्दीन,और शेख़ कमालुद्दीन को वसीयत फ़रमाई कि उनके विसाल के बाद उनके शेख़ का ख़िरक़ा कब्र में उनके सीने पर और कासए चोंबी उनके सिरहाने और तस्बीह उनकी उंगली में और असा और नालैन उनकी बराबर रख लेना[1]।

वफ़ात शरीफ़

अपने पीर व मुर्शिद के बत्तीस साल बाद आपने 18/रमज़ान 757 हि० को रेहलत फ़रमाई[2]। जिस हुजरे में आप रहते थे उसी में आपका मज़ार है। आपका सालाना उर्स होता है। आपका मज़ार ज़ियारत गाहे ख़ास व आम है।

---

1 मिरातुल असरार। 2. सीरूल औलिया (फ़ारसी) सफ़ा 242

आपके खुल्फ़ा

आपके बहुत से ख़लीफ़ा हैं। बाज़ मशहूर खुल्फ़ा हसबे ज़ेल हैं:

हज़रत ख़्वाजा बन्दा नवाज़ सैयद मुहम्मद गेसू दराज़। हज़रत शेख़ कमालुद्दीन (जो आपकी बहन के लड़के हैं) मख़दूम जहानियान जहां गश्त। हज़रत शेख़ सदरुद्दीन तबीब दूल्हा। हज़रत सैयद मुहम्मद जाफ़र अल मुल्की अल हुसैनी। मौलाना अलाउद्दीन सन्देलवी। मौलाना ख़्वाजगी। मौलाना अहमद थानेसरी। शेख़ मईनुद्दीन खुर्द। क़ाज़ी अब्दुल मुक्तदिर बिन क़ाज़ी रुकनुद्दीन। क़ाज़ी मुहम्मद शादी। मख़दूम शेख़ सुलेमान रदूलवी। शेख़ मुहम्मद मुतवक्किल। शेख़ दानियाल उर्फ़ मौलाना ऊद। मख़दूम शेख़ क़वामुद्दीन दिल्ली में रहे। हज़रत ख़्वाजा बन्दा नवाज सैयद मुहम्मद गेसू दराज़ दिल्ली से दक्किन तशरीफ़ ले गये। हज़रत शेख़ कमालुद्दीन दिल्ली में रहे।

सीरते मुक़द्दस

आपकी ज़ात पसन्दीदा और औसाफ़े बर गुज़ीदा थे। आप इल्म, अक्ल और इश्क़ में अपनी मिसाल नहीं रखते थे। आप तहम्मुल, बुर्दबारी और ईसार में, यगाने रोज़गार थे। आप मख़लूक़ के जो रोस्तिम पर सब्र करते थे। बुराई का बदला अच्छाई से देते थे। आप अहले इरादत के लिए नज़ीर थे। राहे सुलूक में बेनज़ीर थे। आप एक मिसाली पीर थे ऐन जवानी में जोकि कामरानी का ज़माना समझा जाता है आपने दुनिया को तर्क कर दिया था। आप अमीर से बेपरवाह थे। वज़ीर से कुछ ग़र्ज़ न रखते थे। आप अपने पीर व मुर्शिद की पैरवी में हमा तन मशग़ूल थे। आपको समा का बहुत शौक़ था।

अफ़्व व दर गुज़र

एक रोज़ का वाक़िया है कि एक क़लन्दर आपकी ख़ानक़ाह में आया। हज़रत नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी हुजरा में तशरीफ़ रखते थे। वह क़लन्दर हुजरा में दाख़िल हुआ। ख़ानक़ाह में उसके हुजरा में दाख़िल

होने का किसी को पता न चला। उसने आप के चेहरे मुबारक पर अट्ठारह ज़ख़्म लगाए। आप इस दर्जा इस्तिग़राक़ में थे कि आपको कुछपता न चला। हुजरा की नाली से जब ख़ून बाहर निकला तो लोग हुजरा के अन्दर आ गये। क़लन्दर को पकड़ा। आपने क़लन्दर को सज़ा देने से मना फ़रमाया। आपने उस क़लन्दर को एक तेज़ रफ़्तार घोड़ा, और पचास अशरफियां मर्हमत फ़रमाई और उस से फ़रमाया कि "जल्द शहर से बाहर चले जाओ ताकि तुम्हे लोग तकलीफ़ न पहुंचा सकें।" इस कलन्दर ने ऐसा ही किया[1]।

शेर व सुख़न का जौक़

हसबे ज़ेल ग़ज़ल आपके शेर व सुख़न की आईना दार है:

बे कारम व बा कारम चूं मद बहिसाब अन्दर
गोया नम व ख़ामोशम चूं ख़त बकिताब अन्दर
ऐ ज़ाहिदे ज़ाहिर बीं अज़ कर्ब चे मी पुर्सी
ऊ दर मन व मन दरवे चूं बू ब गुलाब अन्दर
दरिया अस्त पुर अज़ चश्म लब तर न शूद हरगिज़
ई तरफ़ा अज़ाइब बीं तिश्ना अस्त बाब अन्दर
गहे शादिम व गहे ग़म ग़ी अज़ हाल ख़ूदम ग़ाफ़िल
मी गिरयम व मी ख़न्दम चूं तिफ़ल बख़्वाब अन्दर
दर सीना नसीरुद्दीन जुज़ इश्क़े नमी गुन्जद
ई तरफ़ा अजाइब बीं दरिया बहिसाब अन्दर

तालीमात

आपकी वाज़ तालीमात हसबे ज़ेल हैं:

पीर की सिफ़ात

"ऐ दुर्वेश! राहे सुलूक में पीर उसे कहते हैं, जिसे मुरीद के बातिन पर तसर्रुफ़ हासिल हो, और हर लेहज़ा और

1. तारीख फ़रिश्ता (फ़ारसी) सफ़ा 399

सभी मुरीद की ज़ाहिरी और बातिनी मुश्किलात को मालूम करके हल कर सके। मसरा उसके आईनए बातिन को साफ़ कर सके।"

मुरीद के फ़राइज़

आपने फ़रमाया कि[1]:

"सादिक़ मुरीद उसे कहते हैं जिसे जो कुछ पीर हुक्म करे, बजा लाए और जो कुछ उसे दिखाये वही देखे और हर वक़्त पीर को हाज़िर नाज़िर समझे। जो कुछ उसके दिल में नेक या बद ख़्यालात गुज़रें उनका इज़हार अपने पीर से करे। अगर मुरीद के ज़र्रा भर ख़्याल भी पीर के बर ख़िलाफ़ हो तो वह सादिक़ मुरीद नहीं कहला सकता।"

फ़क़ीरी का सरमाया

आपने फ़रमाया कि[2]:

"फ़क़ीरी का सरमाया मुजाहिदा है। वह भी सिदक़ दिल से, न उस गर्ज़ से कि मख़लूक़ उसको आबिद, ज़ाहिद, साहबे मुजाहिदा जाने बल्कि यह मुजाहिदा ख़ास अल्लाह ताला के वास्ते हो, और जब मुजाहिदा बा ख़ुलास होगा तो शुमिर फ़वाइद होगा और अल्लाह ताला उसे मक़ामे मक़सूद तक पहुंचा देगा।"

असली काम

आप ने फ़रमाया कि[3]:

"असल कार मुहाफ़िज़ात नफ़स की है। मुराक़बा में सूफ़ी को लाज़िम है कि अपने नफ़स को निगाह रखे यानी सांस रोके ता जमीआते बातिन हासिल हो, जब सांस ले गा तो बातिन परेशान होगा और ख़राबी पायेगा।"

---

1. मिफ़्ताहुल आशिक़ (उर्दू) सफ़ा 2 2. ख़ैरउल मजालिस सफ़ा 99
3. ख़ैरउल मजालिस सफ़ा 41

अक़वाल

आपके चन्द अक़वाल पेश किए जाते हैं जो हसबे ज़ेल हैं :

- तमाम कामों में नीयत ख़ालिस दरकार है।
- लुक़मे तिजारत अच्छा लुक़मा है।
- जिस क़दर सालिक को मारिफ़ते ख़ुदा ताला हासिल होती हैं, उसी क़दर ताल्लुक़ात कम होते जाते हैं।
- दुर्वेश को चाहिये कि अगर उस पर फ़ाक़ा गुज़रे तब भी अपनी हाजत ग़ैर से न कहे।
- तलबे दुनिया में अगर नीयत ख़ैर की हो तो वह फ़िल हक़ीक़त तलबे आख़िरत है।
- समा दरमंदो के लिए बमिन्ज़ला इलाज है जिस तरह ज़ाहेरी दर्द के लिए इलाज होता है, इसी तरह बातनी दर्द के लिए समा के सीवा और कोई इलाज नही।

ओरादु वज़ाइफ

आप के बताए हुऐ चन्द उरादु वज़ाइफ हसब ज़ेल हैं:

हक तआला कि मुहब्बत के वास्ते

आप ने फरमाया के असर की नमाज़ के बाद पाँच मरतबा سُورۃٔ عَمّ पढ़ना मुफिद है।

आँख कि रोश्नी के वास्ते

आप ने फरमाया के इशा की नमाज़ के बाद दो रकाअत पढ़ना चाहिये हर रकात में سُورۃٔ فاتحۃ के बाद اِنَّا اَعْطَيْنَا तीन मरतबा पढ़ना चाहिए। और फिर सजदे में यह पढ़े

"مستغنی بسمعی وَبصری وَاجعلها الوارث"

बाज़ करामात

एक दिन अज़ीज़ुद्दीन आप की खिदमत में हाज़िर थे। हज़रत नसीरूद्दीन चिराग दहलवी ने एक कागज़ पर कुछ लिखा, और वह कागज़ अज़ीज़ुद्दीन को दिया के इस को हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के रोज़े मुबारक में पेश कर देना। अज़ीज़ुद्दीन ने इस को पढ़ना चाहा लेकिन नहीं पढ़ा। उनहों ने सोचा कि पहले हुक्म के मुवाफिक कागज़ रोज़ए मुबारक में पेश कर दें फिर पढ़े। रोज़ए मुबारक में कागज़ पैश करने के बाद जो उनहों ने निगाह ड़ाली तो कागज़ बिलकुल साफ था और इस पर कुछ नही लिखा हुआ था[1]।

सुलतान मुहम्मद विन तगलक ठट्टा रवाना हुआ। दिल्ली के मुशाएखीन व बुज़रूगान को अपने हमराह लिया। हज़रत नसीरूद्दीन चिराग देहलवी को भी साथ लेना चाहता था। आप ने फरमाया के:

"सुलतान को सफर में मेरा साथ लेना मुबारक नही है क्योकि वह सही सलामत वापस न आएगा।

चुनानचे ऐसा ही हुआ। सुलतान मुहम्मद बिन तगलुक का इन्तेकाल हुआ, और आप कि दुआ से फिरोज़ शाह बादशाह हुआ।

आखिर उम्र में हज़रत नसीरूद्दीन चिराग देहलवी के जिसम से ऐसी ही खुशबु आने लगी थी जैसी हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के जिस्म से आती थी।

1. सीरूल औलिया

बाब न. 8

हज़रत अमीर ख़ुसरु

हजरत अमीर ख़ुसरु बादशाहे सलतनत शुमाइल हैं और खुसरु मम्लकते फ़जाइल हैं। आप हजरत निजामुद्दीन औलिया के मुरीद और खलीफ़ा हैं।

ख़ानदानी हालात

आप हजारह बलख के एक मुमताज खानदान से वाबिस्ता थे। इल्म और दौलत उस खानदान की खुसूसियात हैं।

वालिद माजिद

आप के वालिद माजिद का नाम अमीर सैफ़ुद्दीन महमूद है। आप हजारह बलख के अमीरजादों में से थे। चंगेज खां के जमाने में हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए और शाही दरबार में मुमताज उहदे पर फ़ाइज़ हुए।

भाई

आपके दो भाई थे। एक भाई का नाम अगराजुद्दीन अली शाह है और दूसरे भाई का नाम हिसामुद्दीन है।

पैदाइश

आप मोमिनाबाद में जो अब पटियाली के नाम से मशहूर है पैदा हुए आप का नाम अबुल हसन है।

लक़ब

आप का लक़ब यमीनुद्दीन है[1]।

तालीम व तरबीयत

आपने अपने वालिद बुज़ुर्गवार के साये आतिफ़त में तालीम व तरबीयत पाई। जब आपकी उम्र नौ साल की हुई, वालिद का साया आप के सर से उठ गया। वालिद के इन्तिक़ाल के बाद आपकी वालिदा के एक दूर के रिश्ता दार ने आपकी तालीम व तरबीयत पर काफ़ी इल्तिफ़ात और तवज्जोह दी। इमादुल मलिक जो अपने हमअसरों में एक नुमायां हैसियत रखते थे, और जिनकी उम्र एक सौ तीस 130 साल की थी, आपके जद्दे मादरी थे। आपकी तालीम व तरबीयत दिल्ली में हुई।

बैअ़त व ख़िलाफ़त

जब आपकी उम्र आठ साल की हुई, आप के वालिद आपको अपने हमराह लेकर हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप चाहते थे कि अपने पीर का इन्तिख़ाब ख़ुद करें। आपके वालिद यह सुनकर हज़रत महबूब इलाही की ख़िदमत में अन्दर चले गये। लेकिन आप दरवाज़ा पर बाहर बैठकर कुछ अशआर लिखने लगे। आपने वहां बैठे बैठे हसबे ज़ेल क़ता लिखाः

तू आं शाही कि बर ऐवान क़सरत
कबूतर गर नशीनद बाज़ गर दद

ग़रीबे मुस्तमन्दे बर दर आमद
बयायद अन्दरों या बाज़ गर दद

आप सोचने लगे कि हज़रत महबूब इलाही शेख़ कामिल हैं तो आपके अशआर का जवाब देंगे और आपको अपने पास बुलाएंगे।

हज़रत महबूब इलाही ने अपने एक ख़ादिम से फ़रमाया कि बाहर जो लड़का बैठा है उसके पास जाकर यह अशआर पढ़ दो।

---

1 नफ़हातुल उन्स सफ़ी 541

बयायद अन्दरुं मर्दे हक़ीक़त
कि बा मायक नफ़्से हमराज़ गर दद
अगर अबला बूद आं मर्दे नादां
अज़ां राहे कि आमद बाज़ गर दद

आपने जब यह अशआर सुने तो फ़ौरन हज़रत महबूब इलाही की ख़िदमत में हाज़िर हुए। बैअत से मुशर्रफ़ हुए। ख़ुलूस, ऐतिक़ाद और मोहब्बत ने अपना काम किया, और कुछ ही दिनों में आपको अपने पीर व मुर्शिद की इनायत, मोहब्बत और शफ़क़त इस दरजा हासिल हुई कि जिसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। हज़रत महबूब इलाही ने आपको ख़िरक़ ख़िलाफ़त पहनाया।

ख़्वाजा हसन से मोहब्बत

आपकी ख़्वाजा हसन से मोहब्बत इश्क़ के दर्जे तक पहुंच गई थी। इस आशिक़ी, और माशूक़ी का चर्चा होने पर शहज़ादा सुलतान ने ख़्वाजा हसन के चन्द कोड़े मारे। शहज़ादा सुलतान ख़ां ने आपको बुलाया और उस मोहब्बत के बारे में दरियाफ़्त किया। आपने जवाब दिया कि "दोई हमारे दरमियान से उठ चुकी है।" शहज़ादा सुलतान ने कहा "उसका सुबूत?" आपने अपनी आस्तीन उठाकर दिखाई। जिस जगह ख़्वाजा हसन के कोड़े लगे थे उसी जगह आप के हाथों पर कोड़ों के निशान मौजूद थे'।

बादशाहों से तअल्लुक़ात

आप और ख़्वाजा हसन सुलतान ग़यासुद्दीन बलबन के लड़के शहज़ादा सुलतान ख़ाँ के पास मुलाज़िम थे शहज़ादा सुलतान मुलतान में रहते थे। आपने कई बार नौकरी से इस्तीफ़ा देना चाहा लेकिन शहज़ादा सुलतान ने आपको इजाज़त नहीं दी। जब शहज़ादा सुलतान मुल्तान में शहीद हुआ, आपने दिल्ली आकर अमीर अली की मुलाज़िमत अख़्तियार की। सुलतान जलालुद्दीन ख़िल्जी के तख़्त पर बैठने के बाद आप उसके मुकर्रिब हुए। ग़र्ज़ सुलतान कुतबुद्दीन मुबारक शाह तक आप पर हर बादशाह ने मुहर व मोहब्बत और लुत्फ़ व करम की नज़र रखी। शाही

1 तारिखे फ़रिश्ता सफ़ 402

दरबार में आपकी काफ़ी इज़्ज़त थी। सुलतान ग़यासुद्दीन तुग़लक़ जिसके नाम पर आपने तुग़लक़ नामा लिखा है, सब बादशाहों से ज़्यादा आपकी इज़्ज़त व एहतिराम करता था[1]।

हज़रत कलन्दर साहब से मुलाक़ात

एक दफ़ा सुलतान अलाउद्दीन ख़िल्जी ने कुछ तोहफ़े आपके साथ करके आपको हज़रत शेख़ अबु अली क़लन्दर पानी पती की ख़िदमत में भेज। हज़रत क़लन्दर साहब आपका कलाम सुनकर बहुत ख़ुश हुए और फिर अपना कलाम आपको सुनाया। आप क़लन्दर साहब का कलाम सुनकर रोने लगे। हज़रत कलन्दर साहब ने आपसे पूछाः

"ख़ुसरु! सिर्फ रोता है। या कुछ समझा भी।"

आपने जवाब दियाः

"इसी वजह से रोता हूँ कि कुछ समझ में नहीं आता।"

हज़रत कलन्दर साहब यह जवाब सुनकर बहुत ख़ुश हुए और सुलतान अलाउद्दीन ख़िल्जी के भेजे हुए तोहफ़े क़ुबूल फ़रमाए[2]।

आप का आइन्दा ख़िताब

आपके दिल में एक दिन यह ख़्याल गुज़रा कि आपका तख़ल्लुस दुनियादारों का सा है। क्या अच्छा होता कि आप का तख़ल्लुस फ़कीरों से मन्सूब होता। आपने अपने पीर व मुर्शिद से उसका जिक्र किया।

हज़रत महबूब इलाही ने फ़रमायाः महशर में तुझको मुहम्मद "कासा लेस" के ख़िताब से पुकारेंगे।"[3]

आपकी वसीयत

आपके पीर व मुर्शिद की जुबानें फ़ैज़ तर्जुमान से जो मोहब्बत और शफ़क़त के कलमात मुताल्लिक निक़ले थे, उन सब कलमात को आपने एक कागज़ पर लिख़कर बतौर तावीज़ गले में ड़ाल लिया था। आपने वसीयत फ़रमाई कि उस कागज़ को जिस पर वह कलमात लिखे हुए थे, आपके साथ आप की क़ब्र में दफ़न किया जाए ताकि वह कागज़ आपकी बख़शिश का ज़रिया बने।

1. तारीखे फ़रिश्ता सफ़ा 402 2. शर्फुल मनाक़िब 3. नफ़ाहतुल उन्स सफ़ा 548

वफ़ात शरीफ़

हज़रत महबूब इलाही की वफ़ात के वक्त आप दिल्ली में नहीं थे। उस वक्त आप सुलतान ग़यासुद्दीन तुग़लक के साथ लख़नोती में थ[1]। वफ़ात की ख़बर सुनकर दिल्ली आये। अपने पीर व मुर्शिद के मज़ार पुर अनवार पर हाज़िर हुए। नौकरी से इस्तीफ़ा दिया। जो कुछ पास था फ़क़रा और मसाकीन को तक़सीम किया। सियाह मातमी लिबास पहना, और मज़ार पर रहने लगे। छः महीने निहायत रंज व ग़म में गुज़ारे—आख़िरकार 18/शव्वाल सन: 725 हि॰ को रहमत हक़ में पेवस्त हुए— आपका मज़ार हज़रत महबूब इलाही के मज़ार के पास चबूतरा यारान के नाम से मशहूर है और हर साल आपका उर्स बड़े तज़्क व एहतिशाम से होता है।

सीरते पाक

आप न सिर्फ एक ख़ुश गो शायर, एक अच्छे मुसन्निफ़, एक बड़े आलिम, एक बा मज़ाक शख़्स। एक कामियाब मुक़र्रब सलातीन थे बल्कि आप एक साहबे दिल, साहबे निस्बत सूफ़ी साफ़ी। और एक दुर्वेश दिलरेश भी थे। आप आख़िर शब मे बेदार होते थे। तहज्जुद की नमाज़ में क़ुरआन मजीद के सात पारे पढ़ते थे, और ज़ौक व शौक़ में बेहद रोते थे। बावजूद नौकरी के आपने चालीस साल तक बारह महीने रोज़े रखे[2]। आपने हज़रत महबूब इलाही के हमराह तय अर्ज़ के तरीक़े पर हज किए हैं[3]।

पीर व मुर्शिद से मोहब्बत

आपको अपने पीर व मुर्शिद से वालिहाना मोहब्बत और अक़ीदत थी। आप फ़ना फ़िश्शेख़ के दर्जे पर पहुंच गये थे। जब आप दिल्ली में होते, ज़्यादा वक्त अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में गुज़ारते थे। एक दिन एक शख़्स हज़रत महबूब इलाही की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उस के सात बेटियाँ थीं। वह उनकी शादी करना चाहता था, हज़रत महबूब इलाही से कुछ माली मदद चाहता था लेकिन इत्तिफ़ाक़ से उस रोज़ ख़ानक़ाह में सिवाये नालैन के और कुछ न था। आपने वह नालैन ही उस शख़्स को

4. तारीखे फ़रिश्ता सफ़ा 402,403
2. तारीख़े फ़रिश्ता सफ़ा 403 सफ़ीनतुल औलिया सफ़ा 99
3. सफ़ीनतुल औलिया सफ़ा 99

दे दी, बड़ी उम्मीदें लेकर आया था। नालैन लेकर वह कुछ खुश न हुआ। दिल्ली से रवाना होकर एक सराय में ठहरा। आप भी बहुत साज़ों सामान के साथ दिल्ली जाते हुए उसी सराय में ठहरे उस सराय में आपको अपने पीर व मुर्शिद की खुशबू आई। आप सराय में तलाश करते फिरे कि दिल्ली से कौन आया है। जब उस शख़्स से मुलाक़ात हुई, पहले पीर व मुर्शिद की ख़ैरियत मालूम की, उस शख़्स ने बातों बातों में नौलन का भी ज़िक्र किया। आपने वह नालैन ले लीं और सब सामान उसको दे दिया। वह नालैन आपने अपने अमामा में लपेट कर सर से बांध लीं, और इस तरह हज़रत महबूबे इलाही की ख़िदमत में हाज़िर हुए[1]।

पीर व मुर्शिद की आपसे मोहब्बत

हज़रत महबूब इलाही को भी आपसे इन्तिहाई मोहब्बत थी[2]। एक मर्तबा आपने फ़रमाया:

"खुसरु! मैं सब से तंग आता हूँ मगर तुझसे तंग नहीं आता"

एक मर्तब इरशाद हुआ कि:

"मैं सब से तंग होता हूँ। यहाँ तक कि अपने आप से भी तंग होता हूँ मगर तुझ से तंग नहीं होता।"

आपके पीर व मुर्शिद ने आपको "तर्कुल्लाह" का खिताब दिया था। एक मौक़ा पर आपने फ़रमाया कि[3]:

"मैं बग़ैर उसके (अमीर खुसरु के) जन्नत में क़दम नहीं रखूंगा। अगर दो का एक कब्र में दफ़न करना जायज़ होता तो मैं वसीयत करता कि उसको मेरी कब्र में दफ़न किया जाए।"

एक और मौक़ा पर आपने फ़रमाया:

"रोज़े क़यामत हर एक से पूछा जाएगा कि क्या किया लाए? मुझ से पूछेंगे तो कहूंगा कि उस तर्कुल्लाह के सीने का सूज[4]।"

---

1. सफ़ीनतुल औलिया सफ़ा 100
2. लताइफ़ं अशरफ़ी फी बयाने कवाइफ़ सूफ़ी सफ़ा 360
3. तारिख फरिश्ता सफ़ा 403 4. सफ़ीनतुल औलिया सफ़ा 100

आप फ़रमाते थे कि "खुदा वन्द ताला मुझको इस तुर्क के सीने के सोज़ में बख़्शे।"[1]

एक मर्तबा आपने मुतक़द्दिमीन पर कुछ ऐतिराज़ किया और खमसे निज़ामी का जवाब लिखते वक़्त यह शे़र कहा:

दब्दबए ख़सरुयम चूं शुद बुलन्द
ज़ल्ज़ला दर गोरे निज़ामी फगन्द

उसी वक़्त एक बरहना तलवार आपके सर पर आई। आपने हज़रत महबूब इलाही और बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर से इमदाद तलब की। एक हाथ नुमूंदार हुआ, जिसने आस्तीन काटी। फिर तलवार गायब हो गई। आप महफ़ूज रहे। आप हज़रत महबूबे इलाही[रह.] की खिदमत में हाज़िर हुए। चाहते थे कि सब हाल बयान करें। हज़रत महबूबे इलाही[रह.] ने आपको वह आस्ती दिखाई। आपने सरे नियाज़ ज़मीन पर रखा[2]।

हज़रत महबूबे इलाही[रह.] ने हसबे ज़ेल अशआर आपकी तारीफ़ में इरशाद फ़रमाये:

खुसरु कि व नज़म व नसर मसलस कम ख़ारत
मिल्कीयत मुल्क सुख़त अज़ ख़ुसरु मास्त
ई ख़ुसरु मास्त नासिरे ख़ुसरु व नीस्त
ज़ेरा कि ख़ुदा नासिर ई ख़ुसरु मास्त

शेर व शायरी

आप ने पाँच लाख से कम और चार लाख से ज़्यादा अशआर कहे हैं[3]।

नौ साल की उम्र में आपने अपने वालिद माजिद की वफ़ात पर एक मर्सिया कहा जिसका हसबे ज़ेल मतला है:

सैफ़ अज़ सुर्म गुज़श्त व दिल मन दो नीम मांद
दरियाए मारवां शुद व दर्रे यतीम मांद

आपने हज़रते महबूबे इलाही[रह.] की तारीफ़ में बहुत से अशआर लिखे। हसबे ज़ेल अशआर पीर व मुर्शिद की तारीफ़ में हैं:

1. तारिख फरिश्ता सफ़ा 403 2. तजकिरतुल अकतया 3. नफहातउलअनस सफ़ा 584

जुदा अज़ ख़ानक़ाहे ऊ बतक्दीम
हतीम काबा रा मांद ब ताज़ीम
मुल्क कर्दाबसवक्फश आशियाना
चू अन्दर सक़्फ़हा कंजश्क ख़ाना

हज़रत शेख़ सादी शीराज़ी[रह.] आप से मिलने के लिये हिन्दुस्तान आये[3]:

एक मर्तबा आप को हज़रत ख़िजर अलैहिस्सलाम से मिलने का शर्फ़ हासिल हुआ। आपने हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम से दरख़्वास्त की कि वह लुआबे दहन मर्हमत फ़रमायें। हज़रत ख़िजर अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि "वह सआदत शेख़ सादी शीरज़ी[रह.] के हिस्सा में आ चुकी।" आपने हज़रत महबूब इलाही से उसका ज़िक्र किया।

हज़रत महबूब इलाही ने अपना लुआबे दहन आपके मुंह में डाल दिया। उसकी बरकत से आपके कलाम का वहे मक़बूलियत हासिल हुई कि जो किसी को नहीं हासिल हुई।

ख़ास-ख़ास किताबें

आपकी तसनीफ़ कर्दा बानवे (92) किताबें हैं। ख़ास–ख़ास किताबें हसबे ज़ेल हैं:

राहतुल मुहिब्बीन– इस किताब में आपने हज़रत महबूब इलाही के मल्फुज़ात तहरीर किए हैं:

तुहफतुस्सगीर। वस्तुल हयात। गुरतुल कमाल। बक़िया नफ़ीह निहायतुल कमाल क़िरानुस्सादैन। मतलउल अनवार बजवाब मख़जने असरारे निज़ामी। शीरीं ख़ुसरु व लैला मजनूं। आईना सिकन्दरी। हश्त बहिश्त। ताजूल फुतूह। न सिपहरे ऐजाज़े ख़ुसरवी, तुगलक़ नामा। ख़जाइनुल फ़ुतूह। मनाक़िबे हिन्द।

करामत

शैख़ुल नूरुद्दीन अबुल फ़तह मुल्तानी ने जब आपके जनाज़े पर हाथ उठाकर दुआ करनी चाही। आप उठ बैठे[1] और यह शेर पढ़ा।

मा बइश्क़े पीर ख़ुद चंदांकि मुस्तग़राक़ शुदीम
नीस्त मारा हाजते आमुरज़शे आमुरज़गार

3. जवाहरउल अनवार 2. सबा सनाबल

बाब न. 9

हज़रत मौलाना शमसुद्दीन मुहम्मद याहिया

हज़रत मौलाना शमसुद्दीन मुहम्मद बिन याहिया शमसे मिल्लत व दीन हैं। आप ज़ाहिद मुतमक्किन हैं। आबिद मुतदैइन हैं वस्साफ़े हक़ाइक़ हैं। कश्शाफ़े वक़ाइक़ हैं।

वालिद बुज़ुर्गवार

आपके वालिद बुज़ुर्गवार का नामे नामी मुहम्मद याहिया है।

नाम

आपका नाम शमसुद्दीन मुहम्मद है।

तालीम व तरबीयत

आपने मौलाना ज़हीरुद्दीन से "बज़ूदी" पढ़ी। आपने इल्मे उसूल फ़िक़ह, तफ़सीर और हदीस में वह दर्जा हासिल किया था कि आप की शागिर्दी बाइसे फ़ख़्र व मुबाहत थी। बहुत से उल्माए शहर आपके शागिर्द थे और उलूमे ज़ाहिरी की सनद और उलूमे दीनी की तहक़ीक़ आपकी निस्बत से मन्सूब करते थे।

हज़रत महबूबे इलाही की ख़िदमत में बारियाबी

आप और मौलाना सदरुद्दीन नावली साथ साथ रहते थे और दोनों मौलाना ज़हीरुद्दीन के पास पढ़ते थे। जब तातील होती आप और मौलाना सदरुद्दीन नावली दरियाए जमुना पर कपड़े धोने ग़यास पुर आते थे। आप सुना करते थे कि हज़रत महबूबे इलाही बड़ी शान के बुजुर्ग हैं। उनकी अज़मत व करामात के क़िस्से सुनते थे। आप सुना करते थे कि शहर के बड़े बड़े लोग,उल्मा और फुज़लाए रोज़गार हज़रत महबूब इलाही की ख़िदमत में हाज़िर होकर ज़मीन बोस होते हैं और क़दम बोस होते हैं और क़दम चूमते हैं।

एक दिन आप और मौलाना सदरुद्दीन नावली पुर कपड़े धोने आये दोनों में आपस में मशवरा हुआ कि हज़रत महबूब इलाही की ख़िदमत में चलकर देखना चाहिए कि वह इल्म कैसा रखते हैं, लेकिन जब हम उनके पास जाएंगे,ज़मीन बोस न होंगे और न क़दम चूमेंगे, बस इस्लामी शिआर के मवाफ़िक़ सलाम अलैक करके बैठ जाएंगे।

इस सलाह व मशवरा के बाद आप और मौलाना सदरुद्दीन नावली अजीब अजीब ख़्यालात के साथ हज़रत महबूब इलाही की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुए। हज़रत महबूबे इलाही के रुए अनवर पर निगाह पड़ते ही आप पर और मौलाना सदरुद्दीन पर जमाले मुबारक का ऐसा रोब तारी हुआ और ऐसी हैबत बैठी कि आप दोनों ने सरे नियाज़ ज़मीन पर रख दिया[1]।

हज़रत महबूबे इलाही ने आप दोनों से बैठने को फ़रमाया। आप दोनों बा अदब बैठ गए। थोडी देर के बाद हज़रत महबूबे इलाही ने दरियाफ़्त फ़रमाया। "शहर में रहते हो।" आप दोनों ने जवाब दिया। "जी शहर में रहते हैं।"

फिर महबूबे इलाही ने पूछा:

"कुछ पढ़ते हो?"

अर्ज़ किया:

"जी हाँ मौलाना ज़हीरुद्दीन से बज़ूदी की बहस करते है।"

1. सैरउल औलिया सफ़ा 223

हज़रत महबूबे इलाही ने "बजूदी" के उस हिस्सा में जो उन्होंने पढ़ लिया था। एक सवाल किया जो मौलाना ज़हीरुद्दीन से भी हल न हुआ था। दोनों को सख़्त ताज्जुब हुआ, निहायत अदब और आजिज़ी से अर्ज़ किया:

"मख़दूम, यही मुश्किल मसला हल होने से रह गया है, हमारे उस्ताद मौलाना ज़हीरुद्दीन फ़रमाते थे कि इस मसले की तहक़ीक़ात करेंगे।"

यह सुनकर हज़रत महबूबे इलाही मुस्कुराए और उस मसला पर इतनी रोशनी डाली कि उन दोनों की तसल्ली व तशफ़्फ़ी बख़ूबी हो गई। वापसी के वक़्त हज़रत महबूबे इलाही ने मौलाना शमसुद्दीन को पायजामा और मौलाना सदरुद्दीन को दस्तार देकर सरफ़राज़ फ़रमाया[1]।

उसके बाद जो आप मौलाना ज़हीरुद्दीन के पास पढ़ने गये वह पायजामा जो आपको हज़रत महबूबे इलाही ने अता फ़रमाया था, सर से बांध कर गए।

बैअत व ख़िलाफ़त

दूसरी बार जो आप हज़रत महबूबे इलाही की ख़िदमत में हाज़िर हुए, सआदते इरादत से मुशर्रफ़ हुए। बैअत से मुशर्रफ़ होने के बाद आप हज़रत महबूबे इलाही की ख़िदमत में हाज़िर रहने लगे। आप की ख़िदमत, सिदक़, ख़ुलूस और मौहब्बत ने अपना काम किया और आख़िर कार ख़िरक़े ख़िलाफ़त पाकर मुमताज़ व सरफ़राज़ हुए।

पन्द व नसाइह

आपके ख़िलाफ़त नामा में जो पन्द व नसाइह हज़रत महबूबे इलाही के दर्ज हैं, उनका तर्जुमा हसबे ज़ेल है[2]।

1. सीरूल औलिया सफ़ा 223
2. सैरूल औलिया सफ़ा 229 त 236

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

" तमाम तारीफ उस खुदा के वास्ते है जिसके दोस्तों की हिम्मत ने तमाम आलम को छोड़कर खास उसी की तरफ बुलन्द परवाज़ी की और उन के दिली मकसद एक बख़शने वाले के साथ अज़रूए नेक नामी के वाबस्ता हैं। पस उन दोसतो पर उन के मेहबुब के कोसर से सुब्हा व शाम जाम हाए मुहब्बत दोर करते है। ऐसा दोर के जिस को ज़वाल नहीं है और जब रात आती तो उन के दिल आतिश शोक से मुशतईल हो जाते हैं और उन की आँखो से आंसुओ का मिन्ह बरसना शुरू होता है। यह दोस्त पोशीदा तोर पर अपने हबीब की मुनाजात से नफा उठाते है और अपनी फिक्र के साथ सिरा परदा इज़्ज़त का तवाफ करते हैं। उन में से हमेशा एक न एक ऐसा शख्स मोजुद होता है जिस के दिल पर इरफान कि तरोताज़गी और इतराफ आलिम में इस के आसार ज़ाहीर और अनवार रोशन होते हैं। ज़बान उन कि नातक बहक और वह मखलूक खुदा कि तरफ बुलाने वाला होता है ताके मखलूक को ज़ुलमत से रोशनी की तरफ निकाले और प्रवरदिगार बखशने वाले का मुक़र्ब बनाऐ।

फिर रहमत कामला रोशन शरीअत और ताबान तरीकत वाले रसुल रहमत पर नाज़िल हो जो मुकाम बैअत में प्रवरदिगार की खिलाफत के साथ मखसूस हैं और उन के खलफाए राशेदिन पर जो हर एक मुकाम में कामयाब और उन की आल व असहाब पर जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं। अम्मा बाद बैशक खुदाए वाहीद उलाम की तरफ उस के बनदों को बुलाना मकासिद इसलामी का बुलन्द तरीन मकसद और इमान की मोहकम तरीन दसतगी है। जैसा के हदीस शरीफ में वारीद होता है। फरमाया, कस्म है इस ज़ात कि जिस के

हाथ में मुहम्मद की जान है अगर तुम चाहो तो मैं और कस्म खा कर बयान करूँ के खुदा को अपने सब बनदो में ज़ियादा मेहबुब वह बनदें है जो खुदा को इस के बनदो का और खुदा के बनदो को खुदा का महबुब बनाते है, और जमीन में चल फिर कर नसीहत और नेक बातो का हुक्म करते है और खुदा ने अपने इन बनदो कि तारीफ फरमाई है जो यह दुआ करते हैं कि ऐ प्रवरदिगार हमारे, हमारी बिवियों और औलाद में से हमारी आँखो की ठंडक हम को नसीब फरमा और हम को प्रहेज गारो का रहनुमा बना। और नीज खुदा वन्द तआला ने अपने बनदो पर हजरत सयद अलमुरसालिन वकाईद अलगर अलमहजलिन की पैरवी फरज की है। फरमाया है के ऐ मुहम्मद कह दो के ऐ लोगो। यह मेरा रास्ता है। मैं खुदा की तरफ तुम को बुलाता हूँ। बिनाई पर मैं और वह लोग जो मेरे पीरु है और औ हजरत कि पैरुवी बगैर उन के अकवाल की निगहदाशत और उन के अमाल व अफआल की इकतेदा और दिल के [illegible] मा सुवा अल्लाह से पाक करने और महबुब की [illegible], मुमकीन होजाने के हासील नही होता है फिर मालुम हो के फरजनद अजिज [illegible] खुदा की तरफ मुतवजा होने [illegible] अलमिल्लत वालदीन मुहम्मद बिन याहिया [illegible] [illegible] अपने अनवार अहल तकवा व यकिन पर नाजिल फरमाए। जब हमारी तरफ इस का कस्द दुरुस्त हो और हम से उस ने इरादत का खरका पहना और हमारी मुहब्बत से पुरा हिस्सा हासील किया तो मैं ने उन को इजाजत दी के जब वह सयद काएनात के इतबा और ताअत व इबादत में वक्त को मसरुफ करने और नफस को नफसानी खुवाहिशो और खतरात से महफुज़ रखने पर कायम हों और दुनिया और उस के असबाब से ऐराज़ करें। और अहल दुनियाँ की तरफ मिलान न करें। और

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

" तमाम तारीफ उस खुदा के वास्ते है जिसके दोस्तों की हिम्मत ने तमाम आलम को छोड़कर खास उसी की तरफ बुलन्द परवाज़ी की और उम के दिली मकसद एक बखशने वाले के साथ अज़रूए नेक नामी के वाबस्ता हैं। पस उन दोसतो पर उन के मेहबुब के कोसर से सुब्हा व शाम जाम हाए मुहब्बत दोर करते है। ऐसा दोर के जिस को ज़वाल नहीं है और जब रात आती तो उन के दिल आतिश शोक से मुशतईल हो जाते हैं और उन की आँखो से आंसुओ का मिन्ह बरसना शुरू होता है। यह दोस्त पोशीदा तोर पर अपने हबीब की मुनाजात से नफा उठाते है और अपनी फिक्र के साथ सिरा परदा इज़्ज़त का तवाफ करते हैं। उन में से हमेशा एक न एक ऐसा शख्स मोजुद होता है जिस के दिल पर इरफान कि तरोताज़गी और इतराफ आलिम में इस के आसार ज़ाहीर और अनवार रोशन होते हैं। जबान उन कि नातक बहक और वह मखलूक खुदा कि तरफ बुलाने वाला होता है ताके मखलूक को ज़ुलमत से रोशनी की तरफ निकाले और प्रवरदिगार बखशने वाले का मुक़र्ब बनाऐ।

फिर रहमत कामला रोशन शरीअत और ताबान तरीकत वाले रसुल रहमत पर नाज़िल हो जो मुकाम वैअत में प्रवरदिगार की खिलाफत के साथ मखसूस हैं और उन के खलफाए राशेदिन पर जो हर एक मुकाम में कामयाब और उन की आल व असहाब पर जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं। अम्मा बाद बैशक खुदाए वाहीद उलाम की तरफ उस के बनदों को बुलाना मकासिद इसलामी का बुलन्द तरीन मकसद और इमान की मोहकम तरीन दसतगी है। जैसा के हदीस शरीफ में वारीद होता है। फरमाया, कस्म है इस ज़ात कि जिस के

हाथ में मुहम्मद की जान है अगर तुम चाहो तो मैं और कस्म खा कर बयान करूँ के खुदा को अपने सब बनदो में ज़ियादा मेहबुब वह बनदें है जो खुदा को इस के बनदो का और खुदा के बनदो को खुदा का महबुब बनाते है, और ज़मीन में चल फिर कर नसीहत और नैक बातो का हुक्म करते है और खुदा ने अपने इन बनदो कि तारीफ फरमाई है जो यह दुआ करते हैं कि ऐ प्रवरदिगार हमारे, हमारी बिवियों और ओलाद में से हमारी आँखो की ठंढक हम को नसीब फरमा और हम को प्रहेज़ गारो का रहनुमा बना। और नीज़ खुदा वन्द तआला ने अपने बनदो पर हज़रत सयद अलमुरसालिन वकाईद अलगर अलमहजलिन की पैरवी फरज़ की है। फरमाया है के ऐ मुहम्मद कह दो के ऐ लोगो! यह मेरा रास्ता है। मैं खुदा की तरफ तुम को बुलाता हुँ। बिनाई पर मैं और वह लोग जो मेरे पीरू है और आं हजरत कि पेरुवी बगेर उन के अकवाल की निगहदाशत और उन के अमाल व अफआल की इकतेदा और दिल के वुजुद में कुल मा सुवा अल्लाह से पाक करने और मअबुद की तरफ मुन्कता होजाने के हासील नहीं होती है फिर मालुम हो के फरज़नद अज़िज प्रहैजगार आलिम पसन्दीदा खुदा की तरफ मुतव्जा होने वाला शम्स अलमिलता वालदेन मुहम्मद बिन याहिया खुदाए वाहिद अपने अनवार अहल तकवा व यकिन पर नाजिल फरमाए। जब हमारी तरफ इस का कस्द दुरूस्त हो और हम से उस ने इरादत का खरका पहना और हमारी मुहब्त से पुरा हिस्सा हासील किया तो मैं ने उन को इजाजत दी के जब वह सयद काएनात के इतबा और ताअत व इबादत में वक्त को मसरूफ करने और नफस को नफसानी खुवाहिशो और खतरात से महफुज़ रखने पर कायम हों और दुनिया और उस के असबाब से ऐराज़ करें। और अहल दुनियाँ की तरफ मिलान न करें। और

बिलकुल खुदा कि तरफ मुन्कता हो जाएं। और उन के दिल में अनवारे कुदसी और मलकुती रोशन हों और तारीफात अलहियात की समझ का दरवाज़ा खुल जाएं"।

आप के शाग्रिद

आप के बहुत शाग्रिद थे। हजतर नसीरुद्दीन चिराग देहलवी आप के माया नाज़ शाग्रिद हैं। हज़रत मखदुम ने आप से "बजुदी" पड़ी थी। हज़रत मखदुम आप का अदब व एहतराम क़रते थे। आप ने अपने उसताद हज़रत मोलाना की तारीफ में यह शेअर कहा है:

سَألتُ العِلمَ مَن حَيَّاکَ حَقًّا

فَقَالَ العِلمُ شَمسُ الدِّين يَحيٰی

तर्जुमा : मैंने इल्म से दरियाफ़्त किया कि तुझको हक़ीक़ी तौर से किसने ज़िन्दा किया है। इल्म ने जवाब दिया कि शमसुद्दीन यहिया ने।

आख़िरी अय्याम

उम्र के आख़िरी हिस्से में सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक़ ने आपको तलब करके कश्मीर जाने का हुक्म दिया। आप वापस दौलत ख़ाने पर तशरीफ़ लाए और कश्मीर जाने की तैयारी में मसरुफ़ हुए। सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक़ ने आपको कश्मीर ले जाने के वास्ते कुछ लोगों को मुक़र्रर कर दिया था। आपने जो लोग आपके दौलत ख़ाने पर मौजूद थे, उनको मुख़ातिब करके फ़रमाया:

> "यह लोग क्या कहते हैं? मैंने अपने पीर रोशन ज़मीर को ख़्वाब में देखा है कि मुझको तलब फ़रमाते हैं। मैं अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में जाता हूँ, वह लोग मुझे कहां भेजते हैं?"

दूसरे दिन आपके सीने पर एक फोड़ा निकला। नौबत यहाँ तक पहुंची कि शिगाफ़ दिया गया। आपकी बीमारी की खबर सुलतान को

सीरुल औलिया सफ़ा 227,228

पहुंची। उसको यक़ीन न आया। उसने आपको देखकर अपना इत्मीनान करना चाहा। आप पाल्की में बैठ कर सुलतान मुहम्मद बिन तुग़लक़ के पास तशरीफ़ ले गए। वहां से आकर तकलीफ़ बढ़ गई।

वफ़ात शरीफ़

आप 747 हि॰ में जवारे रहमत रब्बुल आलमीन में पेवस्त हुए। आपका मज़ारे मुबारक दिल्ली में हज़रत महबूबे इलाही के आस्ताना के क़रीब वाक़े है।

सीरते पाक

आपने शादी नहीं की। सारी उम्र मुजाहिदा, ज़ियारत और इबादत में मशग़ूल रहे। आपकी ज़िन्दगी का तौर तरीक़ा सालिकाने राहे तरीक़त की तरह था। आपका ज़ाहिर व बातिन पाक साफ़ था। ताल्लुक तज़वीह से मुबर्रा थे। तकल्लुफ़ात से आरी थे। दुनिया दार से मिलना आपको सख़्त नागवार होता था। आप फुतूहात को देखते तक न थे। आपके खादिम मुसम्मा फुतूह सारी फुतूहात को लोगों पर ख़र्च कर देते थे। उल्मा में आपका दर्जा बहुत ऊँचा था। आप मुहक्क़िक़ रोज़गार थे। उलूमे दीनी से मुताल्लिक़ आपकी चन्द तसनीफ़ात भी हैं। आप शरीयत और तरीक़त में एक कामिल फ़र्द थे। उल्माऐ असर और मशाइख़े रोज़गार आपके मुन्क़ाद मोतक़िद थे। जिसको सादिक़ पाते उसको बैअत करते। जहां तक मुमकिन होता गुरेज़ करते।

ज़ौक़े समा

आपको समा का शौक़ था। विसाल से चन्द रोज़ क़ब्ल हज़रत महबूबे इलाही की दरगाह में उर्स के मौक़ा पर महफ़िले समा मे आप, हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी और शेख़ क़ुतबुद्दीन मनव्वर और बहुत से लोग थे। आपको इस ग़ज़ल पर वजद तारी हुआ, आप खड़े हो गए और अपने सीने पर हाथ मलते थे[1]।

---

[1] सीरुल औलिया सफ़ा 227,228

ग़ज़ल

ग़मे कज़ तू दारम ब पेशे कि गोयम
दवाये दिले दर्द मन्द अज़ कि जोयम

अगर कुश्ता गर्दम ब तेग़े जफ़ायत
ब पेशकस ईं माजरा रा नगोयम

तबीबम तू बाशी इलाज अज कि ख्वाहम
असीरं तू बाशम खलास अज कि जोयम

ज सादी चे गोयम चे जोयम चे पोयम
गमे कज तू दारम ब पेशे कि गोयम

कश्फ़ व करामत

हज़रत नसीरुद्दीन महमूद चराग देहलवी के मुरीद मौलाना सुलेमान एक मर्तबा जुमा की नमाज के बाद आपकी खिदमत में हाजिर हुए। आप कपड़े उतारकर किताबत में मशगूल हुए। मौलाना सुलेमान के दिल में यह ख़्याल गुज़रा कि जुमा की नमाज के बाद मशाइख के वास्ते मशगूली का वक्त है और यह कैसे बुजुर्ग हैं कि किताबत में मसरुफ़ हो गए।

मौलाना सुलेमान के दिल में इस ख्याल का आना था कि आपने सर उठाया और फ़रमाया:

"ऐ सुलेमान। मैं इस से भी खाली नहीं हूँ।"[1]

1 सीरुल औलिया सफ़ा 226,227

बाब न. 10

हज़रत मौलाना अलाउद्दीन नीली चिश्ती

हज़रत मौलाना अलाउद्दीन नीली चिश्ती कुतब रब्बानी हैं। गंजे असरारे ज़ुलजलाल हैं। गौहरे दरियाए फ़ज़ल व कमाल हैं।

नाम

आपका नाम अलाउद्दीन है।

तालीम व तरबीयत

आप उलूमे ज़ाहिरी की तहसील व तकमील से जल्द ही फ़ारिग़ हुए, फ़िक़ह, हदीस, मन्तक, तफ़सीर और इल्म सुलूक में दस्तगाह रखते थे। आपने क़ुरआन मजीद भी हिफ़ज़ किया। आप एक अच्छे क़ारी थे।

बैअत व ख़िलाफ़त

आप हज़रत महबूबे इलाही के हल्के इरादत में दाख़िल हुए। बैअत से मुशर्रफ़ होने के कुछ अरसा बाद आप ख़िरके ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए।

हज़रत महबूबे इलाही का अतीया

एक दिन हज़रत महबूबे इलाही हसबे मामूल बालाई मन्ज़िल में तशरीफ़ फ़रमा थे आप ख़ानक़ाह में हाज़िर हुए और जमाअत ख़ाने के

सहन में नमाज़ में मशगूल हुए। जिन लोगों ने नमाज़ नहीं पढ़ी थी। वह आपके पीछे नमाज़ पढ़ने खड़े हो गये[1]। आपकी क़रात और खुश इल्हानी मशहूर थी। आपकी क़रात और खुश इल्हानी सुनकर हज़रत महबूबे इलाही को एक अजीब हाल और ज़ौक व शौक़ पैदा हुआ। हज़रत महबूबे इलाही ने अपने ख़ादिम इक़बाल को हुक्म दिया कि उनका मुसल्ला ख़ास उस शख़्स को जाकर दो जो इमामत कर रहा है[2]। ख़्वाजा इक़बाल नीचे आ गये। जब आपने नमाज़ ख़त्म की। ख़्वाजा इक़बाल ने हज़रत महबूबे इलाही का अतीया आपको दिया। आपने बसद ऐहतिराम व अदब वह मुसल्ला लिया। उसको बोसा दिया। आंखों से लगाया, सर पर रखा और अपने बख़्ते रसा पर फ़ख़्र किया।

पीर व मुर्शिद का अदब

एक मर्तबा का वाक़िया है कि आप मौलाना शमसुद्दीन यहया और चन्द लोग अवध से दिल्ली आये। आप और मौलाना शमसुद्दीन यहया दिल्ली पहुंचकर हज़रत महबूबे इलाही की खिदमते बा बरकत में हाज़िर हुए और आदाब बजा लाए हज़रत महबूबे इलाही ने आपको और शमसुद्दीन यहया को चौथे रोज़ ही अवध जाने का हुक्म दिया। आप दोनों इस क़दर जल्द वापसी के हुक्म पर कबीदा ख़ातिर हो गये। लेकिन पीर और मुर्शिद का फ़रमान था, कैसे टालते और आप दोनों उधर रवाना हो गए। जब तल्पता पहुंचे आपको तेज़ बुख़ार हो गया। आप तल्पता में रुकने पर मजबूर हुए। हज़रत महबूबे इलाही की ख़िदमत में एक अरीज़ा रवाना किया और उसमें अपनी बीमारी की इत्तिला के अलावा यह भी तहरीर किया कि अब फ़रमाने आली क्या है। जैसा हुक्म हो उस पर अमल किया जाए।

हज़रत महबूबे इलाही को जब आपकी बीमारी की इत्तिला हुई, आपने ख़र्च के लिए कुछ रक़म और सवारी के लिये अपनी ख़ास पालकी रवाना की और हुक्म दिया कि वापस दिल्ली आ जाओ। यह हुक्म पाकर आप बहुत ख़ुश हुए। जब आपसे पालकी में बैठने को कहा गया आपने साफ़ इन्कार कर दिया, और कहा कि इतनी ताब, ताक़त और मजाल कहाँ कि ख़ास पालकी में बैठूँ। गर्ज़ आप एक किराये के डोले में रवाना हुए[3]।

1. लताइफ़े अशरफ़ी फ़ो बयान तवाइफे सूफ़ी सफ़ा 357 2. सीरुल औलिया सफ़ा 259
3. सीरुल औलिया सफ़ा 277

रवाना होते वक्त आपने ताकीद की कि पालकी आपसे आगे चले ताकि आपकी नज़र उस पर पड़ती रहे और उसको देखते रहने की बरकत से आपको सेहत नसीब हो'। आप उसी तरह से रवाना होकर दिल्ली पहुंचे। जब हज़रत महबूब इलाही की ख़िदमत में हाज़िर हुए आपने बीमारी का हाल अर्ज़ किया जब हज़रत महबूब इलाही ने अपने ख़ादिम इकबाल को हुक्म दिया कि सुबह के बचे हुए खाने में से कुछ खाना उन को लाकर दो। ख़्वाजा इक़बाल ने कचौरी, रोग़न और आहरी लाकर आपको दी। आपने हसबे फरमान अपने पीर व मुर्शिद के कचौरी, रोग़न और आहरी खाई। खाने के बाद आपका बुखार उतर गया। हज़रत महबूबे इलाही को जब यह मालूम हुआ कि आप पालकी में सवार नहीं हुए। आप से दरयाफत फरमाया कि पालकी में सवार क्यों न हुए। आपने बसद अदब अर्ज़ किया कि अगर हज़रत मख़दूम करम व शफकत बन्दा के हाल पर फरमाये तो यह ऐन बन्दा नवाज़ी है। लेकिन बन्दा को भी अपने महल से वाक़िफ रहना चाहिए और उसको न भूलना चाहिए।

जब कभी भी आपकी नज़र उस पालकी पर पड़ती, आप निहायत ताज़ीम व तकरीम करते और उस पालकी से फ़ुयूज़ व बरकात हासिल करते।

हज़रत मौलाना हिसामुद्दीन मुल्तानी से मुलाकात

हज़रत महबूबे इलाही का यह तरीक़ा था कि जो कोई अवध से आता था, आप उसको क़ुतबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह.] के मज़ार पुर अनवार पर हाज़िर होने का हुक्म देते और बाद अज़ां अपनी क़दम बोसी का शर्फ़ अता फ़रमाते। आप और मौलाना शमसुद्दीन यहया साथ–साथ अवध से दिल्ली आये। फ़रमाने आली के मुताबिक़ आप दोनों क़ुतबुल अक़ताब हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी[रह.] के मज़ार पर हाज़िर हुए। उसके बाद शहर आकर कुछ लोगों से मिले। फिर आप दोनों हज़रत हिसामुद्दीन मुल्तानी के दरे दौलत पर गए। मौलाना हिसामुद्दीन घर पर तशरीफ़ नहीं रखते थे। थोड़ी देर में मौलाना हिसामुद्दीन आते दिखाई दिए। उनके एक हाथ में एक कपड़ा था, जिसमे

1 सीरुल औलिया सफ़ा 277

खिचड़ी बंधी हुई थी और दूसरे हाथ में लकड़ियां थी। आप दोनों ने चाहा कि खिचड़ी की पोटली और लकड़ियां उनके हाथ से ले लें। लेकिन मौलाना हिसामुद्दीन ने इजाज़त नहीं दी। और फ़रमाया "बोझ उठाना मेरा हक़ है।" आप दोनों एक पुराने बोरे पर बैठ गये। मौलाना शमसुद्दीन ने एक पायजामा और आपने एक चांदी का सिक्का पेश किया। सबने खिचड़ी खाई। रुखसत होते वक्त मौलाना हिसामुद्दीन ने चांदी का सिक्का जो आपने पेश किया था, मौलाना हिसामुद्दीन यहिया के सामने रख दिया और मौलाना शमसुद्दीन का लाया हुआ पायजामा आपके सामने रख दिया, और क़ुबूल न करने की माज़रत की।[1]

सीरते मुबारक

अगर चे आप मजाज़े मुतलक़ थे लेकिन आप ने किसी को मुरीद न किया। आप उल्मा का सा लिबात ज़ेब तन फ़रमाते थे, लेकिन बातिनी तौर पर दुर्वेशाना औसाफ़ से मुत्तासिफ़ थे। आप तक़रीर बहुत अच्छी करते थे। बड़े बड़े उल्मा आपकी तकरीर पर आशिक़ थे। आप एक बहुत बड़े आलिम थे और साथ ही साथ एक साहबे दिल और साहबे कमाल बुजुर्ग भी थे। आपकी आवाज़ में एक अजीब दिल कशी थी। क़ुरआन मजीद क़राअत से पढ़ते थे और अपने पीर व मुर्शिद का इन्तिहाई ऐहतिराम व अदब करते थे। तबीयत में सादगी थी। तर्क व तजरीद आला दर्जा का था।

आख़िरी अय्याम

ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में आपने सब किताबें और औराद बालाएताक़ रख दिए थे। आप सिर्फ़ एक किताब पढ़ते थे, और आपका सिर्फ़ एक विर्द था। आप अपने पीर व मुर्शिद हज़रत महबूबे इलाही के मल्फ़ज़ात बा बरक़त "अफ़ज़लुल फ़वाइद" पढ़ते थे। उनसे रुहानी इंबिसात हासिल करते थे और उनको ख़ुद अपने हाथ से लिखते थे। उनको किसी वक्त भी निगाह से औझल न होने देते थे[2]।

1 सीरुल औलिया सफ़ा 259

2 सीरुल औलिया सफ़ा 278

किसी ने आप से दरियाफ़्त किया कि आप के पास हर इल्म की मोतबर किताबे हैं। फिर क्या वजह है कि सिर्फ़ हज़रत महबूबे इलाही के मल्फ़ूज़ात तैयबात पढ़ते हैं। आपने जवाब दिया कि "यह सही है कि दुनिया सुलूक की किताबों से भरी हुई है, लेकिन मेरे लिए मेरे मख़दूम के रुह अफ़ज़ा मल्फ़ूज़ात नजात का ज़रिया हैं।

वफ़ात शरीफ़

आपने 672 हिजरी में वफ़ात पाई। आपका मज़ारे मुकद्दस हज़रत महबूबे इलाही के मज़ारे पुर अनवार के क़रीब चबूतरा-ए-यारां में मशहूर है।

बाब न. 11

हज़रत ख़्वाजा मुहयुद्दीन काशानी

हज़रत ख़्वाजा मुहयुद्दीन काशानी आरिफ़े रब्बानी हैं, निज़ामुल हक़ीक़त हैं नसीरुत्तरीक़त हैं।

ख़ानदानी हालात

आपके बुजुर्गान ने एक अर्से तक ममालिके तबारिस्तान में हुकूमत की। उनका दारुल ख़िलाफ़त काशान था। आप के दादा हज़रत कुतबुद्दीन काशानी को चंगेज़ ख़ां की कत्ल व ग़ारत गरी ने तर्के सुकूनत पर मजबूर किया। आप सुलतान शमसुद्दीन अलतमश के अहद में हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए। आप मुल्तान में रहते थे और मदरसे में पढ़ाया करते थे। आप इल्म दियानत में मशहूर थे। हज़रत शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी रोज़ वहां जाकर नामज़ अदा करते थे। एक रोज़ क़ाज़ी साहिब ने उनसे दरियाफ़्त किया कि वह क्यों अपने यहाँ से इस क़दर दूर आकर और मुक्तदी बनकर नमाज़ अदा करते हैं। हज़रत शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया ने जवाब दिया: "इस हदीस पर अमल करता हूँ"।

"من صلّی خلف عالم تقی کانه صلّی خلف نبی مرسل"

(जिसने परहेज़गार आलिम के पीछे नमाज़ अदा की गोया उसने नबी मुर्सल के पीछे नमाज़ अदा की)[1]।

1. फवाईदुल फवाइद सफ़ा 191

आप मुलतान से दिल्ली तशरीफ़ लाए। एक मर्तबा का वाक़िया है कि बादशाह ने आपको तलब किया। जब आप तशरीफ़ ले गए। बादशाह हरम गाह में था और सैयद नूरुद्दीन मुबारक बादशाह के दायें तरफ़ और क़ाज़ी फ़खरूल अइम्मा बादशाह के दूसरी तरफ़ हरम गाह से बाहर बैठे हुए थे। क़ाज़ी साहब जब बाहर तशरीफ़ लाए, उन्होंने आप से दरियाफ़्त किया कि आप कहाँ बैठियेगा? क़ाज़ी साहब ने जवाब दिया कि:

"उलूम के साये के नीचे।"

जब आप बादशाह के करीब पहुंचे और सलाम किया। बादशाह आपकी ताज़ीम के लिए खड़ा हुआ। आपका दस्ते मुबारक पकड़ा। आपको हरमगाह के अन्दर ले गया और निहायत इज़्ज़त से अपने पास बिठाया[1]।

आपके सुपुर्द बादशाह ने क़ज़ाए अवध का मुमताज़ उहदा किया और आप उस उहदए जलीलया पर फ़ाइज़ रहकर अपने फ़राइज़ बा हुस्न व ख़ूबी अंजाम देते रहे।

वालिद माजिद

आपके वालिद माजिद का नाम हज़रत क़ाज़ी जलालुद्दीन काशानी है। अपने वालिद हज़रत क़ाज़ी कुतबुद्दीन काशानी की वफ़ात के बाद उनकी जगह क़ज़ा अवध के उहदे पर मामूर हुए।

सिलसिए नसब

आप का सिलसिलए नसब इस तरह है:

काज़ी मुहीउद्दीन का शानी बिन काज़ी जलालउद्दीन का शानी बिन काज़ी कुतुबद्दीन का शानी अज़ औलाद हज़रत ज़ेद असवद बिन सयद इबराहिम बिन सयद मुहम्मद असी बिन इमाम कासीम असी बिन हज़रत इबराहिम तबा तबा सुलतान तबरस्तान बिन हज़रत इस्माइल बिन हज़रत इबराहिम बिन हज़रत हसन मसना बिन हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम बिन औलिया हज़रत मोला अली करम अल्लाह वजहा।

1 फ़वाइदुल फ़वाइद सफ़ा 192

नाम

आपका नाम मुहयुद्दीन है, लेकिन आप मशहूर क़ाज़ी मुहयुद्दीन काशानी के नाम से हैं।

तालीम व तरबीयत

आपकी इब्तिदाई तालीम वालिद माजिद की आग़ोशे आतिफ़त में हुई। उलूमे ज़ाहिरी की तहसील व तकमील से आप जल्द ही फ़ारिग़ हो गए।

वालिद का विसाल

अपने वालिद के इन्तिक़ाल के बाद आपने क़ज़ाए अवध के मुमताज़ उहदे को इज़्ज़त व ज़ीनत बख़्शीं

बैअत व ख़िलाफ़त

कुछ अरसे क़ज़ा के उहदे पर मामूर रहने के बाद आपका दिल दुनिया से और दुनियावी मुआमलात से यक सर सर्द हो गया। आपको महबूबे इलाही हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के हल्के इरादत में दाख़िल होने की सआदत हासिल करने की तमन्ना हज़रत महबूबे इलाही की ख़िदमत वा बकरत में ले गई। हज़रत महबूबे इलाही ने बैअत से आप को मुशर्रफ़ फ़रमाया और फ़िर ख़िरक़ए ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया।

हज़रत महबूबे इलाही का अतिया

हज़रत महबूबे इलाही ने आपको अपना एक कम्बल इनायत फ़रमाया। आप उस कम्बल को ताज़ीम व तकरीम करने के साथ अपने घर लाए और बहुत एहतिराम से एक सन्दूक़ में रख दिया। कुछ दिनों के बाद सन्दूक़ खोला और वह कम्बल निकाला। उसको बोसा दिया। आंखों से लगाया। उस कम्बल में निहायत उम्दा ख़ुशबू बसी हुई थी। आप इसी तरह से सन्दूक़ खोलते रहे और कम्बल की ज़ियारत करते रहे। कई साल गुज़र गए, लेकिन कम्बल की ख़ुशबू में कोई कमी न हुई। आपको सख़्त तज्जुब हुआ। आख़िर एक दिन कम्बल को खुब अच्छी तरह धोया। जितना आप कम्बल को धोते जाते थे,ख़ुशबू तेज़ होती जाती थी। यह वाक़िया आप

ने अपने पीर व मुर्शिद हज़रत महबूबे इलाही की ख़िदमत में अर्ज़ किया। हज़रत महबूबे इलाही ने चश्मे पुर आब होकर फ़रमायाः

क़ाज़ी साहब—यह मेरी हिम्मत है जिसको मुहिब्बाने बारी ताला की ज़ात में रखा गया।

पन्द व नसाइह

हज़रत महबूबे इलाही ने जो ख़िलाफ़त नामा आपको अता फ़रमाया था उसमें चन्द पन्द व नसाइह थे, वह ख़िलाफ़त नामा यह है[1]:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मी बायद कि तारिके दुनिया बाशी। वसूए दुनिया व अरबावे दुनिया मायल नशवी।

व दीहा क़ुबूल न कुनी। वसलए बादशाहां न गीरी। व अगर मुसाफ़िरां बर तू आयन्द व बर तू चीज़े नबाशद ईं हाले रा ग़नीमते व नेमते शमरी अज़ नेमत हाय इलाही।

فَاِنْ فَعَلْتَ مَاامَرْتُکَ فَظَنِّیْ بِکَ اَنْ تَفْعَلْ کَذٰلِکَ

فَاَنْتَ خَلْفَتِیْ وان لم تفعل فَاللّٰهُ خَلِیْفَتِیْ عَلَی الْمُسْلِمِیْن

तर्जुमाः तुमको तारिके दुनिया रहना चाहिए। दुनिया व अहले दुनिया की तरफ़ मेल न करना और जागीर क़ुबूल न करना और बादशाहों का सिला क़ुबूल न करना और अगर मुसाफ़िर तुम्हारे पास मेहमान आए और तुम्हारे पास कुछ न हो तो ऐसे मौक़ा को ख़ुदा की नेमत और ग़नीमत समझना।

अगर तुमने ऐसा ही किया और मुझको यक़ीन है कि तुम ऐसा ही करोगे तब तुम मेरे ख़लीफ़ा हो, और अगर तुमने ऐसा न किया तो ख़ुदा मुसलमानों पर ख़लीफ़ा है।

---

1. सीरूल औलिया सफ़ा 295 लताइफ़ अशरीफी फ़ी बयान तवायफ़ सूफ़ी सफ़ा 395

तर्क व तजरीद

सआदते इरादत से मुशर्रफ़ और ख़िरक़ए ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ होने के बाद आप दुनिया और अहले दुनिया और दुनियावी मुआमलात से बिल्कुल अलाहदा हो गए। तर्क व तजरीद आपका शिआर हो गया। क़ुज़ा के उहदे से मुस्ताफ़ी हो गए और सनदे क़ज़ा हज़रत महबूबे इलाही की ख़िदमत में लाकर चाक कर दी।

सुलतान की पेशकश

दुनियावी वसाइल मनक्ता करने के बाद आपको सख़्त दुशवारी पेश आई। फ़क़र व फ़ाक़ा की नौबत पहुंची। तंगी और उसरत से गुज़रने लगी। आपके एक मोतक़िद ने बग़ैर आपके इल्म व इजाज़त के इस हाल की ख़बर सुलतान अलाउद्दीन ख़िल्जी को की। सुलतान अलाउद्दीन ख़िल्जी को जब आपका यह हाल मालूम हुआ उसने हुक्म दिया कि क़ज़ा का उहदा जो क़ाज़ी साहब की मीरास है, उनको बहुत इनाम व क़रियात के साथ नफ़वीज़ किया जाए[1]। चुनांचे क़ज़ा अवध के उहदे के सनद तैयार की गई। सुलतान अलाउद्दीन ख़िल्जी ने बहुत कोशिश की कि वह उहदा आप क़ुबूल फ़रमा लें।

मारुज़ा

आपको जब यह मालूम हुआ, आप अपने पीर रोशन ज़मीर हज़रत महबूबे इलाही की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूरा वाक़िया अर्ज़ किया कि सुलतान अलाउद्दीन ख़िल्जी बग़ैर उनकी दरख़्वास्त और ख़्वाहिश के उनको क़ज़ाए अवध के उहदा की सनद देना चाहता है। जैसा हुक्म आली हो उस पर अमल किया जाए।

जवाब

हज़रत महबूबे इलाही ने इस बात को पसन्द न फ़रमाया—इरशाद हुआ कि:

"तुम्हारे दिल में इसका ख़तरा ज़रूर गुज़रा होगा जो यह बात ज़ुहूर में आई है[2]।"

---

1 सीरुल औलिया सफ़ा 295 2. सीरुल औलिया सफ़ा 295

आपको रंज हुआ कि ऐसी बात हज़रत महबूबे इलाही से क्यों अर्ज़ की, आप ने इसी तरह फ़क़र व फ़ाक़ा में ज़िन्दगी गुज़ारी। तर्क व तजरीद पर क़ायम रहे। फ़क़र को अपने लिए बाइसे फ़ख़्र और सआदत समझा।

पीर व मुर्शिद की शफ़क़त

एक बार आप सख़्त बीमारी हुए। बज़ाहिर बचने की कोई उम्मीद न थी। हज़रत महबूबे इलाही को जब उनकी बीमारी का इल्म हुआ, ब नफ़से नफ़ीस अयादत को तशरीफ़ लाएं आप हज़रत महबूबे इलाही की ताज़ीम के लिए उठे। उसी वक़्त से मर्ज़ में कमी हुई। जब हज़रत महबूबे इलाही वापस तशरीफ़ ले गए आपने कहा कि हज़रत महबूबे इलाही बज़ाहिर अयादत को तशरीफ़ लाए थे, मगर दर पर्दा वह मर्ज़ को सल्ब कर गए[1]।

आपके मशहूर शागिर्द

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर[रह.] की साहबज़ादी हज़रत बीबी मस्तूरा के साहबज़ादे हज़रत शेख़ अज़ीज़ुद्दीन बहुक्म हज़रत महबूबे इलाही आपके शागिर्द हुए और आपसे तालीम हासिल की[2]। हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी ने आपसे "बज़ूदी" पढ़ी।[3]

वफ़ात शरीफ़

आप 15/रबीउल अव्वल 719 हि. को रहमते हक़ में पेवस्त हुए।

सीरते मुबारक

आप साहबे करामत थे। इल्म व हिल्म इबादत रियाज़त, ज़ुहद व तक़वा व वरा में मशहूर थे। आप उस्तादे शहर थे[4]। हज़रत महबूबे इलाही की बहुत इज़्ज़त करते थे। आप तरीक़े अहले सलफ़ पर कारबन्द थे। तबीयत में इन्तिहाई सादगी थी, तकल्लुफ़ से बरी थे, ईसार पसन्द थे। इरादत व ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ होने के बाद आप दुनियावी मुआमलात से किनारा कश हो गए थे। बाक़ी ज़िन्दगी फ़क़र व फ़ाक़ा उसरत व तंगी, क़नाअत व तवक्कुल में गुज़ारी।

---

1 ख़ैरुल मजालिस उर्दू तर्जुमा सफ़ा 109 2 सीरुल औलिया सफ़ा 202
3 ख़ैरुल मजालिस सफ़ा 1094 सीरुल औलिया सफ़ा 294

बाब न. 12

हज़रत ख़्वाजा कमालुद्दीन

हज़रत ख़्वाजा कमालुद्दीन,कमाले तरीक़त हैं और जमाले हक़ीक़त हैं।

ख़ानदानी हालात

आप हज़रत नसीरुद्दीन महमूद चराग़ देहलवी के बहन के लड़के हैं। आपका ख़ानदान अवध में रहता था। आपका नसब हज़रत इमाम हसन तक पहुंचता है[1]।

वालिद बुज़ुर्गवार

आपके वालिद का नाम अब्दुर्रहमान है[2]।

वालिदा

आपकी वालिदा अपने वक़्त की राबिया थीं[3]।

भाई

जैनुद्दीन अली आपके भाई हैं। आप हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी के ख़लीफ़ा हैं[4]।

1. अनवारुल आरफ़ीन सफ़ा 313
2. अनवारुल आरफ़ीन सफ़ा 313
3. सियरुल आरफ़ीन
4. अख़बारूल अख़्यार

विलादत शरीफ़

आप अवध में पैदा हुए

आपका नाम कमालुद्दीन है।

लक़ब

आप एक बहुत बड़े आलिम थे और कसरते इल्म की वजह से अल्लामा मशहूर हुए।

बैअत व ख़िलाफ़त

दिल्ली में आकर आप हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के मुरीद हुए और खिरके ख़िलाफ़त पाया। आपको हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी से भी खिरके ख़िलाफ़त मिला[1]।

अहमदाबाद में .क्याम

खिरके ख़िलाफ़त पहनने के वाद आप अहमदाबाद तशरीफ़ ले गए[2]। वहां आप रुशद व हिदायत फ़रमाते थे। बहुत लोग आप के हल्के इरादत में दाख़िल हुए।

मक़ामाते मुकद्दसा की ज़ियारत

आपने सात हज किए[3]। मदीना मनव्वरह में रोज़े मुतह्हिरा रसूल अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए। बैतुल मुक़द्दस भी हाज़िर हुए। ख़रासान होते हुए वापस दिल्ली आये। इस सफ़र में बहुत उमरा और सलातीन आपसे मिले। उन्होंने आपकी इज़्ज़त की।

फ़ुतूहात

फ़ुतूहात का यह आलम था कि जब दिल्ली वापस आए, आप के साथ तीस[30] ऊँट माल व असबाब से भरे हुए थे। जिस में तीस हज़ार अशरफ़ियाँ और रुपये भी थे[4]। यह देखकर हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी[रह.] ने आपसे फ़रमाया कि:

---

1. मजालिसे हसनिया 2. अनवारुल आरफ़ीन
3. मजालिसे हसनीय 4. तकम्मला सीरुल औलिया सफ़ा 15

"शेख़ कमालुद्दीन! इस क़दर दुनिया अपने साथ क्यों लाए हो?" आपने अर्ज़ किया[1]:

"मुझको रास्ते में मालूम हुआ कि सुलतानुल मशाइख़ हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने रेहलत फ़रमाई और उनकी जगह आप सज्जादगी पर बैठे हैं पस अगर ख़ाली हाथ जाऊँगा। मेरे अपने और ग़ैर कुछ कहेंगे इस वजह से मैं असबाबे ज़ाहिर लाया हूँ। अब मैं उसको उल्मा सुल्हा और मसाकीन मे तकसीम कर दूँगा।"

चुनांचे आप ने ऐसा ही किया।

तातार ख़ान ने आपको अस्सीं रुपये रोज़ाना बतौरे नज़र पेश करना चाहे और इस अमर का परवाना लिखकर पेश किया। आप वह परवाना लेकर हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि इस बाब में क्या हुक्म है। हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी[रह.] ने फ़रमाया:

"चूंकि बग़ैर तलब और क़सद के तुमको वज़ीफ़ा मिला है, इस लिए यह बमन्ज़िला फ़तूह है। तुम उसको क़ुबूल करो।"

अपने पीर व मुर्शिद के फ़रमान के मुताबिक़ आपने वज़ीफ़ा क़ुबूल फ़रमाया।

शादी और औलाद

आपने हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी के हुक्म से शादी की[2]। आपके तीन लड़के हुए और एक लड़की[3]। आपके सब से बड़े लड़के शेख़ निज़ामुद्दीन का जवानी में इन्तिक़ाल हुआ। आपके दूसरे लड़के शेख़ नसीरुद्दीन आपकी हयात में तहसीले इल्म से फ़ारिग़ हो गए थे। आपके तीसरे लड़के शेख़ुल मशाइख़ सिराजुद्दीन हैं। आपकी लड़की की शादी शेख़ बुरहानुद्दीन से हुई।

---

1. तकम्मला सीरूल औलिया सफ़ा 15,16
2. अनवारुल आरफ़ीन। 3. मजालिसे हुसनीया।

वफ़ात शरीफ़

आप ने 27/ज़ीक़ादा 756 हि. में रेहलत फ़रमाई। आपका मज़ार देहली में हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहली के मज़ार के क़रीब मुरज्जा ख़ास व आम है।

सीरते पाक

आप एक बा करामत हस्ती थे। साहबे इजाज़त दुर्वेश थे। आप एक बुलन्द पाया आलिम थे, मुक्तदाये असर थे। हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी आपकी बहुत इज़्ज़त करते थे[1]। रास्ते में जहाँ कहीं भी आप मिल जाते हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी रुक कर खड़े हो जाते। हज़रत बन्दा नवाज सैयद मुहम्मद गेसू दराज़ ने आपके बहुत से मनाक़िब अपनी किताबों में तहरीर फ़रमाये हैं। हज़रत मख़दूम जहानियाँ जहाँ गश्त ने आपसे मशरिकुल अनवार की शरह पढ़ी है। मौलाना अहमद थानेसरी, मौलाना आलम पानीपती, तातार ख़ाँ और मौलाना संगरेज़ा मुल्तानी उनके शागिर्दो में हैं[2]। सुलतान फ़ीरोज़शाह, उम्रा, व वज़रा, ख़्वास व अवाम ग़र्ज़ सब ही आपके मोतक़िद थे। हज़रत मख़दूम जहानियाँ जहाँ गश्त को जो मन्शूरे ख़िलाफ़त हज़रत शेख़ नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी से मिला, वह आपके हाथ का लिखा हुआ था[3]।

---

1. मजालिसे हुसनीया
2. मजालिसे हुसनिया।
3. तकम्मलह सीरुल औलिया सफ़ा 16

لَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَائِمٍ

प. 6–मायदा–8 रुकू

मतलबः वह नेक काम में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह नहीं करते।

हिस्सा सोम

बाब न. 13

हज़रत मख़दूम समाउद्दीन सहरवर्दी देहलवी

हज़रत मख़दूम समाउद्दीन सहरवर्दी शमए अन्जुमन तौफ़ीक़ हैं, रुकने रोज़गार हैं साहबे असरार हैं, ताजुल औलिया हैं, सिराजुल इत्क़िया हैं।

ख़ानदानी हालात

आपका सिलसिलए नसब सोला वास्तों से हज़रत मुसअब बिन हज़रत जुबैर[रज़ि.] तक इस तरह पहुंचता है[1]।

मख़दूम समाउद्दीन बिन मौलाना शेख़ फ़ख़रुद्दीन बिन शेख़ जमालुद्दीन बिन इस्माईल बिन इब्राहिम बिन शेख़ हसन बिन शेख़ कमालुद्दीन बिन शेख़ बिन हसन बिन ईसा बिन नूह बिन मुहम्मद सुलैमान बिन दाऊद बिन याक़ूब बिन अय्यूब बिन हादी बिन ईसा बिन मूसअब बिन जुबेर[रज़ि.]।

वालिद माजिद

आपके वालिद माजिद का नाम शेख़ फ़ख़रुद्दीन है। जो सैयद सदरुद्दीन मुहम्मद उर्फ़ राजू कत्ताल के मुरीद थे[2]।

1 मिस्बाहुल आरफ़ीन। शमसुत्तवारिख़ जिल्द दो सफ़ा 2।
2. अलमुशाहीर सफ़ा 29

भाई

हज़रत मौलाना मख़्दूम शेख़ इसहाक़ देहलवी आपके बड़े भाई हैं[1]।

विलादत शरीफ़

आप 808 हि. में मुल्तान में पैदा हुए[2]।

नामे नामी

आपका नाम समाउद्दीन हैं।

तालीम व तरबीयत

आपने मीर सैयद शरीफ़ जुर्जानी के मशहूर शागिर्द मौलाना सनाउद्दीन से उलूमे ज़ाहिरी की तहसील व तकमील की और फ़िक़्हा, हदीस और तफ़सीर में दस्तगाह हासिल की। आपका शुमार साहबे कमाल और सर आमद फुजलाए रोज़गार में होने लगा। उलूमे बातिनी की तहसील आपने अपने वालिद माजिद से की। बारह बरस की उम्र में आप के वालिद बुजफ़र्गवार आधी रात के वक्त अपनी ख़िल्वते ख़ास में बुलाकर आपको पन्द व नासएह करते थे और असरारे इलाही व रुमूज़ व नकात की तालीम व तल्क़ीन फ़रमाते थे। आप के लिये निहायत खुशू व खुज़ू से दुआ करते थे[3]।

> "या इलाही अपने करम अमीम व लुत्फ अज़ीम से समाउद्दीन को सआदते अब्दी व दौलते सरमदी अता फ़रमा।"

बैअत व ख़िलाफ़त

अगर चे आपके वालिद माजिद आपके मुर्शिद व पीर थे, लेकिन आपने ख़िरक़ए ख़िलाफ़त व इरशाद हज़रत कबीरुद्दीन इस्माईल जो शेख़ कबीर कहलाते थे, हासिल किया। आप हज़रत शेख़ कबीर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और बैअत से मुशर्रफ होने की दरख़्वास्त की और अर्ज़ किया कि उनके कमालात में ऐसी सूरत में कुछ कमी न आयेगी।

---

1. अलमुशाहीर सफ़ा 49
2. अलमुशाहीर सफ़ा 44
3. अल मशाहीर सफ़ा 29।

कम न गर्द व ताबिशे ख़ुर्शीद अगर
दर बदख़शाँ लाल साज़ द संग रा

तर्जुमा : सूरज की रोशनी में कमी न होगी, अगर बद ख़शाँ में पत्थर को लाल करे।

हज़रत शेख़ कबीर ने फ़रमाया कि वह अपने भाई हज़रत शेख़ फ़ज़लुल्लाह से उनको ख़िरक़ा दिलायेंगे। आपने चन्द बार अर्ज़ किया, लेनिक वही जवाब मिला। आख़िर आपने एक दिन अर्ज़ किया कि[1]:

"बिना इरादत व मुआमला पीरी व मुरीदी रब्ते क़ल्ब से मुतअल्लिक़ है। मैं इस राब्ता को हुज़ूर के साथ मुस्तहकम और मुस्तक़ीम पता हूँ।"

गर लुत्फ़ कुनी वरंकुनी दर नगुज़ अरम
मन दर तू गिरीफ़तीम दिगर जाए नदारम

तर्जुमा : अगर आप मेहरबानी करें या न करें दर नहीं छोडूंगा। मैंने तुम्हारा दर पकड़ लिया है। दूसरी जगह नहीं है (नहीं रखता हूँ)

यह सुनकर हज़रत शेख़ कबीर बहुत ख़ुश हुए। आपको बगल में लिया। अपने हुजरए ख़ास में ले जाकर मुरीदी का शर्फ़ बख़्शा और ज़िक्र तल्क़ीन फ़रमाया। बाद अदाये दोगाना ख़िरक़ए ख़ास से सरफ़राज़ फ़रमाया।

ख़िरक़ए ख़ास से सरफ़राज़ होने के बाद आपको ख़्याल आया कि अब बेहतर यह मालूम होता है कि तालीमे ज़ाहिरी को तर्क करके तसफ़ीयए बातिन में मशग़ूल होना चाहिए। आपके पीर व मुर्शिद आपके इस ख़्याल से आगाह हुए। उन्होंने आप से फ़रमाया कि[2]:

"बिना शरा व असासे दीन इल्म से क़ायम है, उसे तर्क न करो। मैंने ख़ुदावन्द तआला से चाहा है कि अहले ज़ाहिर व बातिन दोनों तुमसे फ़ायदा उठायें और जिस तरह हमारे पीराने तरीक़त नेमत सदरी व दौलते मानवी से मामूर हुए हैं मुझको उम्मीद है कि तुम भी मिस्ल उनके आरास्ता व पैरास्ता हो।

1. अल मशाहीर सफ़ा 29
2. सीरुल आरफ़ीन

शिजरए तरीक़त

आपका शिजरए तरीक़त हज़रत शेख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी तक इस तरह पहुंचता है:

"समाउद्दीन मुरीद अपने वालिद हज़रत शेख़ फ़ख़रुद्दीन व हज़रत शेख कबीर व मुरीद हज़रत सैयद सदरुद्दीन मुहम्मद उर्फ़ राजू कत्ताल व मुरीद हज़रत सैयद अहमद कबीर व मुरीद हज़रत शेख़ रुकनुद्दीन अबुल फ़तह व मुरीद हज़रत शेख़ सद्‌रुद्दीन आरिफ़ व मुरीद हज़रत शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया व मुरीद हज़रत शेख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी।

तर्के सुकूनत

मुलतान से सुकूनत तर्क करके आप कुछ अरसा इन्तबूर और बयाना में रहे। फिर सुलतान बहलूल लोदी के ज़माने में रौनक़ अफ़रोज़ हुए और वहीं सुकूनत अख़्तियार की।

बादशाहों की बारियाबी

सुलतान बहलूल लोदी आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने नसीहत फ़रमाई[1]।

"ऐ बादशाह तूने बुढ़ापे में सल्तनत पाई है। ख़ुदा से डर और किज़्ब व मासियत से बचता रह। उसका शुक्र भेज। शुक्र नेमत का बढ़ाता है"

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ (शुक्र करोगे तो और दूंगा) और मासियत से किनारा कश हो। لَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ (अगर नाशुकरी करोगे तो मेरा अज़ाब सख़्त है) मे दाख़िल न हो जाए।"

आपने अपना मुसल्लाए ख़ास बादशाह को इनायत फ़रमाया। बादशाह ने मुसल्ला सर पर रखा और वापस हुआ।

---

1. अल मशाहीर सफ़ा 42

सुलतान बहलूल लोदी के इन्तिक़ाल के बाद उसका लड़का निज़ाम ख़ाँ जो सुलतान सिकन्दर लोदी के लक़ब से मशहूर है, दिल्ली से रवानगी से क़ब्ल आपकी ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुआ और इस्तदा की कि "मैं मीज़ानुस्सरफ़ हज़रत से पढ़ना चाहता हूँ।" उसने सबक़ के बहाने से اسعدك الله في الدارين के माना आपसे पूछे। आपने फ़रमाया कि उसके माना यह कि "नेक बख़्त करे तुझको ख़ुदाए तआला दोनों जहान में।" शहज़ादा निज़ाम ख़ाँ ने अर्ज़ किया फिर फ़रमाइये। इस तरह तीन मर्तबा तकरार कराई फिर उसने आपके हाथ चूमे और बसद आजिज़ी अर्ज़ किया। "मेरी मुराद हासिल हो गई। मैं यही चाहता था कि ज़ुबाने मुबारक से यह कल्मात निकलें।"

आपको उसका हुसने अदब बहुत पसन्द आया। आपने कुछ देर मुराक़बा किया और फिर ज़ुबाने फ़ैज़े तर्जुमान से फ़रमाया[1]।

"निज़ाम! मैंने ख़ुदा से चाहा कि तू सिकनदरे वक्त हो और बहुत बन्दगाने ख़ुदा तुझसे फ़ायदा उठायें।" चुनांचे निज़ाम ख़ाँ सुलतान सिकन्दर लोदी के लक़ब से मशहूर हुआ।

शादी और औलाद

आपके दो लड़के थे। एक हज़रत शेख़ अब्दुल्लाह बयाबानी और दूसरे हज़रत नसीरुद्दीन जो आपके क़ायम मुक़ाम और जांनशीन थे।

आख़िरी अय्याम

आपके ख़ास मुरीद और ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना शेख़ जमाली ने सफ़रे बैतुल्लाह से वापस आकर आपके बड़े साहबज़ादे हज़रत शेख़ अब्दुल्लाह बयाबानी से मिलने का इश्तियाक़ ज़ाहिर किया और उनको आपकी ख़िदमत में लाने की ख़्वाहिश का इज़हार किया। यह सुनकर आप बहुत ख़ुश हुए। हज़रत शेख़ जमाली को सीने से लगाया और उनको मलबूसे ख़ास अता फ़रमाया। एक ख़त लिखकर आपके हवाले किया। सर नामा पर यह शेर तहरीर फ़रमाया[2]:

---

1 अल मशाहीर सफ़ा 41
2. अल मशाहीर सफ़ा 43

ताक़ते सब्र मुरा नीस्त दरीं बहरे तवील
क़दमे जूद बना बर सरे ईं पीर अलील

दूसरे दिन हज़रत शेख़ जमाली को बुला कर फ़रमायाः

वललाह आलम मेरे फ़र्ज़न्द शेख़ अब्दुल्लाह का दीदार तुमको मयस्सर हो कि न हो। मैं नहीं चाहता था कि तुम मेरे पास से जुदा हो जाओ। मेरे जनाज़े की नमाज़ के लिये हाज़िर रहो।"

वफ़ात शरीफ़

उसके एक हफ़्ता बाद 17/जमादिल ऊला 901 हि. को आप रहमते हक़ में पेवस्त हो गए।

मद्फ़न

वफ़ात से चन्द साल क़ब्ल आपने क़ुतबुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी को ख़्वाब में देखा कि आप हौज़े शमसी के किनारे खड़े हैं और फ़रमाते हैं कि यह जगह तुम्हारी है। चुनांचे आपका मज़ार पुर अनवार महरौली में (नई दिल्ली) हौज़े शमसी के क़रीब मुरज्जा ख़लाइक़ है। आपका उर्स हर साल होता है। "क़ज़ा" "महताबे जन्नत" और और "आरिफ़ मुत्तक़ी" आपकी वफ़ात की तारीख़ें हैं[1]।

आपके ख़ुल्फ़ा

आपके मुमताज़ ख़ुल्फ़ा हसबे ज़ेल हैं:

हज़रत नसीरुद्दीन, मौलाना शेख़ जमाली, शेख़ अदहन।

सीरते पाक

आप जामे उलूम शरीयत व तरीक़त थे। आपकी सख़ावत का यह हाल था कि हज़ारों रुपये आते थे, लेकिन आप फ़ुतूह के रुपयों मे से कुछ भी न बचाते थे। सब रक़म फ़ुकरा, गुर्बा, मसाकीन और यतीमों पर ख़र्च कर देते थे। अक़सर क़र्ज़ लेकर आप दूसरों की ज़रुरियात पूरी करते थे। आपकी ज़ात वाला सिफ़ाते सौरी व मानवी ख़ूबियों से मुत्तसिफ़ थी। हज़रत शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं कि[2]:

1. ख़जीनतुल असफ़िया 2. अख़बारूल अख़ियार

शेख़ समाउद्दीन वरा व तक़्वा और उलूम रस्मी व हक़ीक़ी के जामे थे। जज़्ब ख़्वातिर में आपको तसर्रुफ़ कामिल था, जिस बीमार को ब निगाह लुत्फ़ देख लेते, अमराज़े रुहानी से सीना उसका पाक हो जाता और जिस तालिब की तरफ़ मुस्कुरा कर नज़र करते उसका दामने उम्मीद गुल हाय मुराद से भर जाता।"

इल्मी ज़ौक

आपने लम्आत शैखुद्दीन इराकी पर हवाशी तहरीर फ़रमाये हैं। एक रिसाला "मिफ़्ताहुल असरार" आपकी इल्मी यादगार है[1]।

तालीमात

आप फ़रमाते हैं[2]:

"तीन शख़्स खुदा वन्द तआला के इनाम मुस्तदाम से महरुम रहेंगे। अव्वल वह बूढ़े जो मासियत में डूबे हुए हैं दूसरे वह जवान जो बा उम्मीद तौबा गुनाह नहीं छोड़ते। तीसरे बादशाह दरोग़ गो।"

क़ौले सादिक़

सूरत की रेज़ा चीनी से मुराद यह है कि दुर्वेशों के तरीक़ हाली के अख़्तियार और तत्वा की तौफ़ीक़ न हो तो उनके अक़वाल, अफ़आल और आमाल ही की मुताबिअत की जाए ताकि दुर्वेशों की ज़ाहिरी सूरत का असर कुदूरते बातिनी के ज़ंग को दूर करे दे।

विर्द व वज़ाइफ़

आप आधी रात को उठकर वज़ू करके नमाज़ पढ़ते थे। एक पहर नवाफ़िल पढ़ते थे। फिर सुबह तक मुराक़बा में रहते थे। नमाज़े फ़जर नमाज़े चाश्त और नमाज़े इश्राक़ अदा करते थे। ज़ुहर की नमाज़ से फ़ारिग़ होते। अस्र की नमाज़ के बाद से मुराक़बे में रहते । मग़रिब की अज़ान सुनकर आंखे खोलते। मग़रिब की नमाज़ और नवाफ़िल अव्वाबीन अदा करते फिर मुराक़बा करते और इशा की नमाज़ अदा करके दौलत ख़ाना तशरीफ़ ले जाते।

1. अल मशाहीर सफ़ा 46 2. अलमशाहीर सफ़ा 62

कश्फ़ व करामात

हज़रत शेख़ जमाली बैतुल्लाह से वापस होकर गुजरात तक आए होंगे कि आप ने फ़रमाया "अल्हमदुलिल्लाह जमाली ने मुराजिअत की।" चन्द दिन के बाद एक शख़्स उधर से आया और उसने हज़रत जमाली की आमद की ख़बर दी।

हज़रत जमाली बयान करते हैं कि सफ़र में आपको बहु ख़तरात पेश आए। बाज़ औक़ात ऐसा हुआ कि ज़िन्दगी से भी ना उम्मीद हो गए। ऐसे मौक़ों पर उन्होंने आपको अच्छी तरह से देखा कि ख़ुशी ख़ुशी उनको बर्ग पान देते हैं और हिम्मत बांधते हैं और इत्मीनान दिलाते हैं।

हज़रत जमाली फ़रमाते हैं कि आपकी उस दस्तगीरी व इआनत से वह ज़हमत फ़िल फ़ोर राहत व इत्मीनान में तब्दील हो गई।

وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ

(प.13–रअ़द–4 रुकू)

मतलबः उन लोगों के दिलों को ख़ुदा की याद से तसल्ली होती हैं।

हिस्सा चहारुम

बाब न. 14

हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह

हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह शमसे हक़ीक़त हैं, शहबाज़े तरीक़त हैं और जाने शरीयत हैं। आप रफ़ीउल मरतबत हैं और ख़ैरुल मनाक़िब हैं।

ख़ानदानी हालात

नाना की तरफ़ से आप का सिलसिला हज़रत ख़्वाजा अहरार के नाना हज़रत शेख़ उम्र या गुस्तानी तक पहुंचता है। आप की नानी ख़ानदाने सादात से तअल्लुक रखती थीं[1]।

वालिद माजिद

आपके वालिद का नाम क़ाज़ी अब्दुस्सलाम है[2]। हज़रत क़ाज़ी साहब ने काबुल से सुकूनत अख़्तियार कर ली थी। उनका शुमार अहले इल्म और अरबाबे कमाल में होता था। आप तसव्वुफ़ और फ़िक़ा और हदीस में अपनी नज़ीर आप थे। मजहबी तक़द्दुस के साथ साथ हज़रत क़ाज़ी साहब दुनियावी एजाज़ और दौलत के भी मालिक थे।

1 हज़रातुल अक़दस सफ़ा 215
2 अनवारुल आरफ़ीन सफ़ा 367

विलादत शरीफ़

आप काबुल में पैदा हुए। आपकी तारीख़ी विलादत मे इख़्तलाफ है। बाज़ ने आपकी तारीख़ पैदाइश सनः 971 हि. और बाज़ ने सनः 972 हि. लिखी है।

नाम नामी

आपका नाम सैयद रज़ीयुद्दीन है[1]। आप ख़्वाजा मुहम्मद बाक़ी बिल्लाह के नाम से मशहूर हैं।

तालीम व तरबीयत

आपके वालिद आपकी तालीम व तरबीयत से ग़ाफ़िल न थे। जब आप पांच साल के हुए, आपको एक मकतब में दाख़िल कर दिया। मकतब में क़ुरआन मजीद ख़त्म किया। इब्तिदाई उलूम से फ़ारिग़ होकर आप मौलाना सादिक़ हलवाई की ख़िदमत में पहुंचे[2]। आप उनके साथ काबुल से मावराउन्नहर गए। अभी उलूमे रस्मीया पूरे होने में कुछ देर थी कि आपने तसव्वुक के रास्ते में क़दम रखा। मावराउन्नहर की एक इल्मी मजलिस के एक फ़ाज़िल रुकन ने अफ़सोस किया कि आप ने इतनी जल्दी उलूमे रस्मीया की तहसील को क्यों तर्क कर दिया। जब आपने यह सुना तो फ़रमाया कि वह मुश्किल से मुश्किल किताब पेश करें। अगर उनकी तसल्ली और तशफ़्फ़ी न हो तो उनका अफ़सोस हक़ बजानिब होगा।

तलाशे हक़

आपने तहसीले उलूमे ज़ाहिरी के बजाए उलूमे बातिनी के इक्तिसाब में कोशिश करना शुरु की। आप मावराउन्नहर में दुर्वेशों, फ़क़ीरों और अहले दिल की तलाश में घूमा करते थे। इसी तलाश में आप बलख, बद ख़शां और समर क़न्द तशरीफ़ ले गए। लाहौर भी तशरीफ़ लाए। जिन बुज़ुर्गान के रुहानी फ़ुयूज़ व बरकात से आप मुस्तफ़ीद व मुस्तफ़ीज़ हुए, उनमें हज़रत उबैद, हजरत अमीर अब्दुल्लाह बलख़ी हज़रत शेख़ समरकन्दी, हज़रत शेख़ बाबाई वाली क़ाबिले ज़िक्र हैं[3]।

1. हजरातुल अक़दस सफ़ा 213 2. अनवारुल आरफ़ीन सफ़ा 367
3. अनवारुल आरफ़ीन सफ़ा 368

मजजूब से मुलाक़ात

लाहौर मे एक मजज़ूब रहा करता था। आपने उस से मिलने की बहुत कोशिश की, लेकिन नाकाम रहे। आख़िर कार एक दिन उस मजज़ूब ने आपको अपने पास बुलाकर बहुत सी दुआएं और बहुत सी बातिनी नेमतें दीं।

बैअत व ख़िलाफ़त

लाहौर से मावराउन्नहर तशरीफ़ ले गए। आपने हजरत ख़्वाजा अमकंगी को ख़्वाब में देखा कि फ़रमाते हैं:

"ऐ फर्ज़न्द! हम तुम्हारे मुन्तज़िर हैं। जल्द आओ और हमारे इन्तिज़ार की तशवीश को दूर करो।"

आप जल्द ही ख़्वाजा आमकंगी की खिदमते बा बरकत में पहुंचे। आपने उनसे बैअत की। हज़रत ख़्वाजा आमकंगी ने तीन शबाना रोज़ अपने पास रखा'। यह तीन दिन आने ख़िलवत में गुजारे। इन तीन दिन में आप अपने पीर व मुर्शिद हजरत ख़्वाजा अमकंगी के अहवाल और मुक़ामात से बख़ूबी वाक़िफ़ हुए और उनके फ़यूज़े बातिनी और दीगर फ़वाइद से बहरा मन्द हुए। आप के पीर व मुर्शिद ने आपको ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ फ़रमाया।

यह भी कहा जाता है कि आप हज़रत ख़्वाज़ा बहाउद्दीन नक़्शबन्दी की रुह पुर फ़ुतूह से फ़ैज़याब हुए हैं।

हिन्दुस्तान में क़्याम

अपने पीर व मुर्शिद के हुक्म के मुताबिक़ आप हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए और दोबारा लाहौर पहुंचकर एक साल वहां क़्याम फ़रमाया। लाहौर से सुकूनत तर्क करके आप दिल्ली में रौनक़ अफ़रोज़ हुए। दिल्ली में आप ने क़िला फ़िरोज़ी में क़्याम फ़रमाया। आप पांचों वक़्त की नमाज़ मस्जिद फ़िरोज़ी में अदा करते थे।

1. अनवारुल आरफ़ीन सफ़ा 370

अज़वाज व औलाद

आपने दो शादियाँ कीं। आपके दो लड़के हुए। हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद उबैदुल्लाह एक बीवी से हैं और हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद अब्दुल्लाह दूसरी बीवी से। हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद अब्दुल्लाह अपने बड़े भाई ख़्वाजा मुहम्मद उबैदुल्लाह से चार साल छोटे हैं[1]।

यह दोनों भाई दो साल के भी न हुए थे कि वालिद माजिद का साया सर से उठ गया।

वफ़ात शरीफ़

आपने 25/जमादिल सनः 1012 हि. में रेहलत फ़रमाई। वफ़ात के वक्त आपकी उम्र चालीस साल का थी। आप के मज़ारे मुबारक दिल्ली में मुरज्जा ख़ास व आम है।

आप के ख़ुल्फ़ा

आपके ख़ुल्फ़ा में हज़रत शेख़ अहमद सर हिन्दी जो मजद्दिद अलिफ़ सानी के खिताब से मशहूर हैं। सबसे ज़्यादा आलिम कामिल और मुमताज़ थे। आपने हज़रत शेख़ अहमद सर हिन्दी को ताकीद फ़रमाई थी कि उनके दोनों लड़कों को कुछ दिन अपनी सोहबत में रखें। उन दोनों को तालीम व तल्क़ीन से बहरा मन्द करें[2]।

आपके दीगर मुमताज़ ख़ुल्फ़ा हसबे ज़ेल हैं:

शेख़ ताजुद्दीन सम्भाली। ख़्वाजा हिसामुद्दीन। शैख़ुल हद्दाद।

सीरते मुबारक

हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह सिलसिले नक्शबन्दीया में एक नुमायाँ और मुमताज़ दर्जा रखते हैं। सिलसिलए नक्शबन्दीया की हिन्दुस्तान में मक़बूलियत का राज़ हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह की पुर कशिश ज़ाते वाला सिफ़ात में मुज़मर है। आप तवाज़ो, ख़ुशू व ख़ुज़ू, अज्ज़ व इन्किसारी में अपनी नज़ीर आप थे। आप उज़्लत और गोशा नशीनी को पसन्द फ़रमाते थे।

1. हज़रातुल कुदुस सफ़ा 262 2. ज़ुब्दतुल मुक़ामात

आप ज़्यादा तर खामोश रहते थे। बहुत कम बोलते थे। दुर्वेशों,आलिमों, सादात की बेहद इज़्ज़त करते थे। शफ़्क़त, तरह्हुम और अफ़्व व दर गुज़र में आप लासानी थे। रफ़्ते तबा का यह हाल था कि किसी की तकलीफ़ नहीं देख सकते थे। आपने तहम्मुल और बुर्दबारी, ज़ोहद व इस्तिग़ना फ़ैयाज़ी, सादा मिज़ाजी और इहतियात का एक आला नमूना पेश किया। आप इबादात और मुराक़बा में मशग़ूल रहते थे। आप तफ़रीद में आला मर्तबा रखते थे। आपका शौकत वक़ार आप के चेहरे से नुमायां था। आपकी अज़मत और अलवे मर्तबत के सब मोतरिफ़ थे।

इल्मी ज़ौक़

आपने एक रिसाला भी तहरीर फ़रमाया है. यह रिसाला आयते करीमा مَعَكُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ اور اَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ की तफ़सीर है[1]। आपके मक्तूबात भी आप के इल्मी ज़ौक़ का आईना दार हैं। आपको शेर व शायरी का भी ज़ौक़ था। आपने अपने दोनों लड़कों की पैदाइश पर क़सीदे लिखे हैं।

आपकी तालीमात

नक़्शबंदीया सिलसिला की बुनियाद चन्द इस्लाहात पर है[2]। वह हसबे ज़ेल हैं:

(1) होश दर दम (2) नज़र बर क़दम (3) सफ़र दर वतन (4) ख़लवत दर अंजुमन (5) याद करो (6) बाज़ गश्त (7) निगहदाश्त (8) याद दाश्त

उनके अलावा तीन और इस्तिलाहें हैं जो हसबे ज़ेल हैं:

(1) वक़ूफ़े ज़मानी (2) वक़ूफ़े क़ल्बी (3) वक़ूफ़े अददी।

आपकी तालीमात मआरिफ़ व हक़ाइक़ का ख़ज़ाना है।

1. हज़रातुल कुदुस सफ़ा 231
2. क़ौले जमील फ़ी बयान सवाइस्सबील (उर्दू तर्जुमा) सफ़ा 73,

तव्वकुल

आपने फ़रमाया[1]:

तव्वकुल यह नहीं है कि असबाब को छोड़कर बैठ जाए। बल्कि तव्वकुल का मतलब यह है कि असबाबे मशरू को अख़्तियार करें और सबब की तरफ़ नज़र न करें।"

क़तए अलाइक़

आपने फ़रमाया कि[2]:

"क़तए अलाइक़ से मुराद यह है कि दिल दुनिया और आख़िरत की तमाम नेमतों से रिहा हो जाए और तमामा अहवाल और मुशाहिदात से यक सुई और बेनियाज़ी हो जाए और कोशिश व क़लक़ दायमी अहदीयत की तरफ़ हो।"

अक़्वाले ज़र्री

- जोहद यह है कि आदमी रग़बत के कामों से बाज़ आए।
- क़नाअत फुज़ूल चीज़ों से निकल जाने और बक़दरे हाजत पर इक्तिफा करने और खाने पीने और रहने की चीज़ों में इसराफ़ से परहेज़ को कहते हैं।
- सब्र लज़्ज़ाते नफ़्स से निकल जाने और मर्ग़ूब व महबूब अशिया से बाज़ रहने को कहते हैं।
- पीर, तीन तरह के होते हैं: एक पीरे ख़िरका, दूसरे पीर तालीम, तीसरे पीर सुहबत।
- जो लोग ख़ुदा के आगे गर्दने तस्लीम व रज़ा ख़म किए हुए हैं वह मुसीबत व बला को बला की सूरत में नहीं देख सकते।
- दवाम मुराक़बा बहुत बड़ी दौलत है जो दिलों में मक़बूलियत का सबब होती है।

1,2. हज़रातुल क़ुदस सफ़ा 244, 245,246

औराद व वज़ाइफ़

ज़िक्र के इलावा आप इस्बाबे मुजर्रद की तल्क़ीन फ़रमाते थे। यानी फ़क़त अल्लाह का ज़िक्र किया जाए। बदूने नफ़ी और इसबात के कुछ को आप ज़िक्रे क़ल्बी की तालीम फ़रमाते। कुछ को لا اله الا الله और कुछ को इस्मि अल्लाह का ज़िक्र कराते थे।

कश्फ़ व करामात

वफ़ात से कुछ दिन क़ब्ल आप ने फ़रमाया कि बाज़ ख़्वाबों से ऐसा मालूम होता है कि नक्शबन्दी सिलसिले का कोई बड़ा शख़्स अन्क़रीब फ़ौत होने वाला है[1]।

एक रोज़ आपके साईस का लड़का आपकी ख़िदमत में आया और अर्ज़ किया कि उस के बाप के पेट में सख़्त दर्द है। आपने फ़रमाया कि उसने घोड़े का हक़ लिया है। घोड़े का हक़ घोड़े को वापस कर देगा, अच्छा हो जायेगा। उस लड़के ने अपने बाप से जाकर आप का फ़रमान सुनाया। साईस ने कहा कि वाक़ई घोड़े का हक़ ग़ज़्ब किया है। कुछ रोग़न और दाना घोड़े को दिया और वह उसी वक्त अच्छा हो गया[2]।

आप के पड़ोस में एक शख़्स रहता था उस पर एक हाकिम ने जबर व तशद्दुद किया और उसको घर से निकाल देने की कोशिश की। यह ख़बर आपको पहुंची। आपने इस ज़ालिम हाक़िम को फ़रमाया कि मौहल्ले में फ़ुक़रा रहते हैं। ज़ुल्म करना जाइज़ नहीं। वह ज़ालिम हाकिम हुकूमत के नशे में इतना चूर था कि आपके कहने की कुछ परवाह न की। एक बार और आप ने उसको नसीहत फ़रमाई। उस पर कुछ असर न हुआ। दो तीन के बाद वह ज़ालिम हाकिम चोरी के इल्ज़ाम में गिरफ़्तार हुआ और मा अपने रिश्ता दारों ओर घर वालों के के क़त्ल किया गया[3]।

---

1. हयाते बाक़िया सफ़ा 22, हजरतुल कुदूस सफ़ा 258
2. हज़रातुल कफ़दस सफ़ा 254
3. हज़रातुल कफ़दस सफ़ा 255

बाब न. 15

हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी

हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी आलिमे रब्बानी हैं, मुरताज़ हक्क़ानी हैं। आप शेख़ुल असर थे, अल्लामतुद्दहर थे।

ख़ानदानी हालात

आप बुख़ारा के एक मुअज़्ज़ज़ ख़ानदान से हैं। आपके दादा आग़ा मुहम्मद ख़ानदानी दौलत और अज़मत के साथ साथ रुहानी और इल्मी दौलत से भी सरफ़राज़ थे। वस्ते एशिया के लिए तेरहवीं सदी ईसवी एक पुर आशोब दौर था। क़त्ल और ग़ारत गरी आम थी। आप के दादा आग़ा मुहम्मद मुग़लों के जब्र व इस्तिबदाद से परेशान होकर बुख़ारा छोड़ने पर मजबूर हुए। सुलतान अलाउद्दीन ख़िल्जी के ज़माने में हिन्दुस्तान आए। शाही दरबार में रसाई हुई। सुलतान अलाउद्दीन ख़िल्जी ने आपको और दीगर खास लोगों को गुजरात फ़तह करने के लिए भेजा। गुजरात की फ़तह के बाद आपने वहीं बूद व बाश अख़्तियार की।

आपके एक सौ एक बेटे थे। सौ बेटों का इन्तिक़ाल हो गया। उस जानिकाह सदमा ने आपको गुजरात में न रहने दिया। आप अपने एक बेटे को साथ लेकर दिल्ली आए। आपने 17/रबीउस्सानी सनः 739हि. को इन्तिक़ाल फ़रमाया।

वालिद माजिद

आपके वालिद माजिद का नाम मौलाना सैफुद्दीन है। आप एक अच्छे शायर और एक बड़े आलिम होने के अलावा एक साहबे दिल बुज़ुर्ग भी थे।

विलादत

आपकी विलादत बा सआदत मुहर्रम सनः 958हि॰ में हुई। आपका नाम अब्दुल हक़ है।

तालीम व तरबीयत

आपके वालिद बुज़ुर्गवार ने आपकी तालीम व तरबीयत पर क़ाफ़ी तवज्जोह की। आपकी इब्तिदाई तालीम अपने वालिद माजीद की आग़ोश में हुई। आप बहुत ज़हीन थे। चन्द माह में क़ुरआन मजीद ख़त्म कर लिया और बहुत कम मुद्दत में हिफ़्ज़ भी कर लिया। आप ने अट्ठारह साल की उम्र में उलूमे ज़ाहिरी की तहसील से फ़राग़त पाई।

हज बैतुल्लाह

आपको हज का शौक हुआ। हज के इरादे से आप दिल्ली से रवाना हुए। आप रमज़ान सनः 996 हि॰ में शेख़ अब्दुल वहाब मुन्क़ी की ख़िदमत में हाज़िर होकर उनके फ़ुयूज़ व बरकात से बहरा मन्द हुए। इल्मे बातिनी की तालीम आपने शेख़ अब्दुल वहाब मुन्क़ी से हासिल की। तसव्वुफ़ की किताबें उनसे पढ़ीं और उनकी निगरानी में हरम शरीफ़ में इबादत की। आप ख़ास ख़ास मक़ामात पर हाज़िर होकर दुआ भी करते थे। आप फ़रमाते हैं[1]:

> "यह फ़क़ीर जब मक्का मुअज़्ज़मा में था तो आंहज़रत सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौलत कदह पर जिसे बैते ख़दीजा[रज़ि.] कहते हैं और वह मक्का शरीफ़ में बैतुल्लाह के बाद सब मक़ामात से अफ़ज़ल है हाज़िर होता था और वहाँ खड़ा हो जाता था और फ़क़ीरों की

1. लताइफुल हक़ उर्दू तर्जुमा नकातुल हक़ सफ़ा 8

तरह चीख़ता था और यह कहता था, ऐ रसूलुल्लाह! कुछ मर्हमत कीजिये और या रसूलुल्लाह! यहफ़क़ीर आपका साइल और आपके दरवाज़े पर हाज़िर है। जो कुछ उस वक्त सूझती थी और ज़ुबाने हाल गेयाई देती थी तलब करता था और दामने उम्मीद भरकर वापस आता था।

बैअत व ख़िलाफ़त

आपके वालिद बुज़ुर्गवार आपके पहले रुहानी मुर्शिद व पेशवा हैं। अपने वालिद माजिद के हुक्म के मुताबिक़ आप हज़रत सैयद मूसा गिलानी से बैअत हुए और उनकी ख़ुसूसी तवज्जोह से मुस्तफ़ीद हुए[1]। जब मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचे वहाँ हज़रत शेख़ अब्दुल वहाब मुन्क़ी के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत की। कुछ दिनों के बाद हज़रत शेख़ अब्दुल वहाब मुन्कीं ने आपको चिश्तीया क़ादरीया शाज़लीया सिलसिला की ख़िलाफ़त अता फ़रमाई। इस से आप चारों सिलसिलों यानी चिश्तीया, क़ादरिया शाज़लीया और नक्शबन्दीया से वाबस्ता हो गए।

बशारत[2]

आप फ़रमाते है कि:

"मुझे ख़्वाब में हज़रत ग़ौसूल आज़म ने हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मुरीद किया था। बैअत होने के बाद हुज़ूर सरवरे काईनात ने फ़ारसी ज़ुबान में मुझे बशारत दी "बुज़ुर्ग ख़्वाही शुद" यानी तू बुज़ूर्ग होगा।"

वापसी दिल्ली

हज़रत शेख़ अब्दुल वहाब मुन्क़ी का इशारा पाकर आप दिल्ली तशरीफ़ लाए। दिल्ली में आपने एक मदरसा क़ायम किया, जहां मज़हबी तालीम दी जाती थी। आपने दिल्ली में तमाम उम्र दर्स व तदरीस रुश्द व

1. रौज़तुल अक़ताब सफ़ा 95
2. जोहदातु आसार मुन्तख़ब बहजतुल असरार।

हिदायत और तसनीफ़ व तालीफ़ में गुज़ारी।

औलाद

आपके साहबज़ादे शेख़ नूरुल हक़ साहबे दिल बुज़ुर्ग थे।

वफ़ात शरीफ़

आप 21/रबीउल अव्वल सन: 1051 हि.को वासिल बहक़ हुए। आपका मज़ार महरौली में (नज़्द नई दिल्ली) हौज़े शमसी के दाहिने किनारे ज़ियारत गाहे ख़ास व आम है।

सीरते मुबारक

आप एक आलिम बा अमल थे। साहबे हाल और साहबे निस्बत बुज़ुर्ग थे। इबादत और रियाज़त में बहुत मशगूल रहते थे। हिन्दुस्तान में आप मुहद्दिस कहलाए। आपको इल्मे हदीस पर काफ़ी उबूर था और आपने इस इल्म को फैलाने में सई बलीग़ की।

इल्मी ज़ौक़

आपके इल्मी ज़ौक़ का पता आपकी तसानीफ़ से चलता है। आपकी तसानीफ़ बहुत हैं। बाज़ ने आपकी तसानीफ़ की तादाद सौ से ज़्यादा बताई है। आप की तसानीफ़ मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर हैं। आपकी मशहूर हसबे ज़ेल हैं[1]।

उसूले हदीस। मर्जुल बहरिन। रिसाला दर मसलए समा। रिसाला दर मसलए वहदत वजूद। अख़बारुल अख़ियार फ़ी असरारुल अबरार। लताइफ़ुल हक़। असमाउर्रिजाल। मदारिजुन्नबूवत। जामिउल बरकात। तकमीलुल ईमान।

आपकी तालीमात

हदीस

आप फ़रमाते हैं कि[2]:

"जमहूर मुहद्दिसीन की इस्तिलाह में हदीस का इतलाक़

1 फ़ेहरिस्तुत्तसानीफ़

2. उसूले हदीस (तर्जुमा) सफ़ा 3,4

रसूले ख़ुदा सल्लम के क़ौल व फ़ेल व तक़रीर पर होता है। जिस हदीस की सनद रसूले ख़ुदा तक पहुंची उस को मरफ़ू कहते हैं, और जिसकी सनद सहाबी तक पहुंची,उसको मौक़ूफ़ बोलते हैं। जिस हदीस की सनद ताबाई तक पहुंची उसको मक़तू बोलते हैं। जो शख़्स सुन्नत के साथ मशगूल है उस को मुहद्दिस और जो तवारिख़ के साथ मशगूल है उसको अख़बारी कहते हैं।

हदीस के अक़साम

आप फ़रमाते हैं कि[1]:

"हदीस के अक़साम में से शाज़, मुनकर, मुइल्लल्ल है।" और हदीस की असल अक़साम तीन हैं। सही, हसन, ज़ईफ़[2]।"

रावी

आप फ़रमाते हैं कि[3]:

"हदीस सहीह का रावी अगर एक शख़्स है तो वह हदीस ग़रीब है और अगर दो रावी हैं तो अज़ीज़ है और अगर दो रावी से ज़्यादा रावी हैं तो मशहूर है। और अगर हदीस के रावी कसरत में उस हद को पहुंच जावें कि आदतं महाल समझे उनके इत्तिफ़ाक़ करने को झूठ पर तो ऐसी हदीस को मुतवातिर कहते हैं।"

छ: किताबें

आप फ़रमाते हैं[4]:

"वह छः किताबें जो इसलाम में मुक़र्रर व मशहूर हैं,

1. उसूले हदीस (तर्जुमा) सफ़ा 3,4 2. उसूले हदीस सफ़ा 14
3. उसूले हदीस सफ़ा 21 4. उसूले हदीस सफ़ा 28,29

जिनको सहाहे सित्ता कहते हैं, उनके नाम यह हैं: सही बुख़ारी, सही मुस्लिम, जामे तिर्मिज़ी, सुन्न अबू दाऊद, नसाई, सुन्न इब्ने माजा और बाज़ के नज़दीक इब्ने माजा की जगह मवत्ता इमाम मालिक है।"

सीधा रास्ता

आप फ़रमाते हैं कि[1]:

"सालिक को राहे सलामत और तालिब को सबीले इस्तिक़ामत यह है कि कि ख़ौज़े फ़लसफ़ियात को हराम जाने और ज़्यादती दलाइल कलामिया से परहेज़ करे और दरवाज़ा क़ील व क़ाल अहले बहस व जंग व जिदाल का बन्द रखे। अक़ाइद अहले सुन्नत व जमाअत में यही काफ़ी है कि दलाइले इजमालिया पर इक्तिफ़ा करे। और उसी के इत्तिबा में रहे और अक्ल को मुआमलाते शरीअत व एहकामे किताब व सुन्नत में माज़ूल जाने और मन्क़ूब को ताबे माक़ूल न करे और तावील व तशकीक से बाज़ रहे और दायरा ऐतिक़ाद व इन्क़ियाद से बाहर न जावे और अपनी फ़हम क़ासिर व अक़्ले नाक़िस पर ऐतिमाद न करे।"

तताबिक़े शरीयत व तरीक़त

आप यह फ़रमाते हैं कि[2]:

"यह गुमान न करें कि तरीक़ा तसव्वुफ़ का मुख़ालिफ़ मज़हब शरीयत और किताब व सुन्नत के है। हाशा व कल्ला हरगिज़ दोनों फ़िर्क़ों में सर मू मुग़ायरत नहीं और न किसी क़िस्म की बाहम मुबानिबत है। ख़ास व ख़ुलासा इस मिल्लत के सूफ़िया किराम हैं कि वह ज़ाहिरन और बातिनन चुनने वाले नूर सुन्नत और खोलने वाले पर्दो हक़ीक़त के हैं और सुलूक तरीक़त में अमलन, हालन

---

1. मर्जुल बहरोन (तर्जुमा) सफ़ा 11 2. मर्जुल बहरिन साफ़ा 24

और तहक़ीक़ माना में तस्दीक़न और इख़लास में यक़ीनन और जानने मकर नफ्स में सरीहन और वाक़फ़ीयत व आगाही वरा व तहज़ीब अख़लाक़ में यक्ता हैं। सिवाये उसके तज़कीया ज़ाहिर व तस्फ़ीया बातिन व तख़लिया क़ल्ब व तज़कीयए रुह में कोई शख़्स उनसे सब्क़त नहीं ले गया है और जैसा कि उन को आमाल व अहवाल और अख़लाक़ व मुक़ामात और वज्द व ज़ौक व नकात व इशारात बलकि तमाम कमालात ने हाथ दिया है एसा किसी फ़िरक़ा को नहीं दिया।"

अक़वाल

आपके चन्द अक़वाल हसबे जेल हैं:

- खुश नसीबी और कामीयाबी और बुलंद इक़बाली और नेक बख़्ती की निशानी बुजुर्गों की मुलाक़ात है[1]।
- अकसर आदमी गैरत और इज्जत की वजह से परहेज़गारी और नेक बख़्ती के पर्दे में रहते हैं[2]।
- फ़िक्र से ख़ाली बैठना और क़ूव्वते ज़ेहनीया से काम न लेना भी निकम्मी बात है और क़ूव्वते नज़री यानी ज़कावत के जायल होने का सबब है[3]।
- नेमत की बेक़दरी मूजिबे अताये बारी है[4]।
- एक शै से ध्यान लगाना और उसको बख़ूबी हासिल करना उसके मसिवा के ज़ायल करने का सबब है[5]।
- दिलकी यकसूई वहदत में है और परेशानी और फ़फ़तूर कसरत में[6]।
- सब से ज़्यादा बुरी चीज़ नाक़िसों की सुहबत है और उस बारे में नाक़िस मेरे नज़दीक वह शख़्स है जिसको कमाल का ग़म और अपने हाल पर अफ़सोस नहीं[7]।
- मुहब्बते दुनिया व एतिक़ादे अक्ल व इताअते नफ़्स की मूजिब

---

1. लताइफुल हक़ (तर्जुमा उर्दु नकातुल हक़) सफ़ा 11 2. लताइफुल हक़ सफ़ा 12
3. लताइफुल हक़ सफ़ा 15 4. लताइफुल हक़ सफ़ा 16 5. लताइफुल हक़ सफ़ा 17
6. लताइफुल हक़ सफ़ा 27 7. लताइफुल हक़ सफ़ा 46

कुफ़र व ज़लालत का है[4]।

औराद व वज़ाइफ़

आप यह दूरुद शरीफ़ पढ़ा करते थे[1]:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بَعَدَ دِ كُلِّ ذَرَّةٍ اَلْفَ اَلْفَ مَرَّةٍ

तर्जुमा : ऐ अल्लाह पाक जनाब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हर ज़र्रे के शुमार के बराबर हज़ार दफ़ा रहमत नाज़िल कर।

आप फ़रमाते हैं कि इल्म, कुदरत और रहमत, अल्लाह पाक की तीन सिफ़ते हैं। तालिब मक़सूद के लिए ज़रुरी है कि उन तीनों सिफ़तों की तरफ़ तवज्जोह रखे और रहमत हासिल करता रहे, लेनिक इन सिफ़तों की तरफ़ नज़र करने से यह माना नहीं हैं कि अपनी कैफ़ियत में फ़ुतूर डाले[2]।

आप फ़रमाते हैं कि[3]:

"अल्लाह की वहदत और उसके ज़िक्र की तरफ़ रुख करे और कहे لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ और कमाल यक सुई से उस कलमा की तकरार करे और उस ज़िक्र में गर्क़ हो जाए। उसके बाद सिर्फ़ لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ का ज़िक्रकरे और अगर हो सके तो अपने तईं उस पर क़ायम करे और इक़रार दे। मुझसे तो रसूलुल्लाह^स^ का जुमला छोड़ा नहीं जाता और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िक्र को मैं तर्क नहीं कर सकता और لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ के हर्फ़ पर नहीं ठहर सकता, क्योंकि हुज़ूर^स^ का नूर لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ के नूर में और हूज़ूर^स^ की याद उसके जमाल और कमाल को ज़्यादा करती हैं।"

---

1. मर्जुल वहीरन सफ़ा 6 2. लताइफुल हक़ सफ़ा 4 3. नकातुल हक़ सफ़ा 23
4. नकातुल हक़ सफ़ा 39

बाब न. 16

हज़रत शेख़ कलीमुल्लाह शाहजहान आबादी

हजरत शाह कलीमुल्लाह शाहजहान आबादी मक़बूल बारगाहे ईज़दी हैं। आप ज़ब्द–ए– अरबाबे रियाज़ात व मुजाहिदात ला मुतनाही हैं और आरिफ़े असरार मआरिफ़े इलाही हैं।

ख़ानदानी हालात

आपके आबा व अजदाद खजन्द (तर्कीस्तान) के रहने वाले थे[1]

वालिद माजिद

आपके वालिद का नाम शेख़ नूरुल्लाह है। आपको हाजी भी बताया जाता है। बाज़ तज़किरा नवीसों ने अपको शेख़ हाजी नूरुल्लाह लिखा है[2]। आप शाहजहां के जमाने में एक कामियाब और क़ाबिल इन्जीनियर थे।

नसब नामा पिदरी

आपका सिलसिले नसब पहले ख़लीफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबु बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु तक इस तरह पहुंचता है कि शेख़ नूरुल्लाह बिन शेख़ अहमद बिन हामिद सिद्दीक़ी ....[3]।

1, 2, 3, अनवारुल आरफ़ीन सफ़ा 429

विलादत शरीफ़

आप शाहजहांनाबाद (दिल्ली) में 24/जमादिस्सानी 1060 हि. को इस आलम में तशरीफ़ लाए[1]। आपने अपनी तारीख़ पैदाइश रक़अते कलीमी में तहरीर फ़रमाई है। लफ़्ज़ "ग़नी" से आपकी तारीख़ पैदाइश निकलती है।

नामे नामी

आप का नाम शेख़ कलीमुल्लाह है।

ताल़ीम व तरबीयत

हदीस, फ़िक़्ा और दीगर उलूमे ज़ाहिरी आपने शेख़ अबु रिज़ा से पढ़े। उन उलूम की तकमील के बाद शेख़ अबुल फ़तह क़ादरी से उलूमे बातिनी हासिल करने में कोशां हुए और कुछ अरसा बाद उलूमे बातिनी में भी दरजए कमाल को पहुंचे। आपको हज़रत शेख़ बुरहानुद्दीन अल मारुफ़ ब शेख़ बहलूल बिन कबीर मुहम्मद बिन अली सिद्दीक बुरहान पूरी से निस्बते तल्मीज़ और इजाज़त आमाल हासिल है[2]।

तलाशे हक़

आप एक बुजुर्ग से मिले। उस वक्त भी आप मशग़ूली से ख़ाली ने थे। उन बुज़ुर्ग ने आपको सौते सरमदी की तल्क़ीन की। सौते सरमदी को सौते लायज़ाली भी कहते हैं। और जोग में उसको उनहिद कहते हैं। इस शुगल से आपने वह आवाज़ सुनी जिसके मुताल्लिक़ उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया था और आप को वह चीज़ हासिल हुई जो अब तक आपको हासिल नहीं हुई थी। आपने उन बुज़ुर्ग से कहा कि मक़सूद जिसकी वह तलाश में हैं कब हासिल होगा। जब इस शुग़ल से मक़सद बरारी नहीं हुई आपने वह शुग़ल तर्क कर दिया[3]।

---

1. अनवारूल आरफ़ीन सफ़ा 429
2. तकम्मुलह सीरुल औलिया सफ़ा 85–86,
3. तकम्मलह सीरुल औलिया सफ़ा 77–78

मजज़ूब से मुलाक़ात

अय्यामे जवानी में आप एक खतरी लड़के पर शेफ़्ता व फ़रेफ़्ता हुए। उस लड़के ने आपकी तरफ़ कुछ इल्तिफ़ात नहीं बरता[1]। शहर में एक मजज़ूब रहते थे। उन मजज़ूब के मुताल्लिक़ कहा जाता था कि जिस किसी की कोई चीज़ मन्ज़ूर कर लेते हैं, उसका काम हो जाता है और जिसकी चीज़ मन्ज़ूर नहीं करते उसका काम नहीं होता। आप कुछ रेवाड़ियां लेकर उन मजज़ूब के पास गए। उन मजज़ूब ने आपकी रेवाड़ियां कुबूल कीं। दूसरे रोज़ जब आप उस लड़के के पास गए, उस लड़के ने खुद आपको अपने क़रीब बिठाया और बहुत इल्तिफ़ात बरता। उस इल्तिफ़ात का आप पर दूसरा असर हुआ। आप का दिल उस लड़के से बरगश्ता हो गया। आप उन मजज़ूब के पास आने जाने लगे। एक दिन उन मजज़ूब ने आपको अपने क़रीब बुलाया और अपना सर आपकी रानों पर रख कर सो गए। जब वह मजज़ूब सोकर उठे आपके अन्दर जज़्ब की सूरत पैदा हुई। आपने अपने में एक नुमायां तब्दीली महसूस की। जब फिर उन मजज़ूब के पास गए, उन मजज़ूब ने आपका ख़तरा महसूस किया। अपने क़रीब बिठाया और फ़रमाया[2]:

> "अगर तुम इस क़िस्म की आग चाहते हो तो यह मेरे पास बहुत है लेकिन पानी हज़रत शेख़ यह्या मदनी के पास है। उनके पास जाओ।"

ज़ियारत का शौक

आपको मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मनव्वरह हाजिर होने का शौक़ हुआ। चुनांचे आप सन: 1101 हि॰ में मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचे और वहां से मदीना मनव्वरह रवाना हुए।

बैअत व ख़िलाफ़त

आप क़ाफ़िला के हमराह थे। एक नख़लिस्तान में बैठे हुए थे। हज़रत शेख़ यह्या ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि शहर के बाहर

---

1. ख़ुलासतुल फ़वाइद तकम्मलह सीरुल औलिया सफ़ा 79
2. तकम्मलह सीरुल औलिया सफ़ा 79

क़ाफ़िले के साथ एक शख़्स कलीमुल्लाह नाम का है। उसको बुलाओ। यह शख़्स वहां गया और आवाज़ दी, लेकिन कोई नहीं बोला। आपने आवाज़ सुनी, लेकिन ख़्याल किया कि वह किसी और शख़्स को पुकारता है, इसलिये आप ख़ामोश रहे। उस शख़्स ने वापस आकर हज़रत शेख़ यह्या मदनी[रह.] से अर्ज़ किया कि वहां इस नाम का कोई शख़्स नहीं मालूम होता। आवाज़ दी लेकिन कोई नहीं बोला। हज़रत शेख़ यह्या ने उस शख़्स से फ़रमाया कि फिर जाकर कलीमुल्लाह जहान आबादी के नाम से आवाज़ दो। उस शख़्स ने ऐसा ही किया। जब आपने उसकी आवाज़ सुनी। आपको यक़ीन हुआ कि वह आपको ही पुकारता है। आपने उसको जवाब दिया और उसके साथ चल कर हज़रत शेख़ यह्या मदनी[रह.] की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुए[1]।

आपने हसबे ज़ेल रुबाई पढ़ीः

ऐ कि तवाज़ नाम तू मी बारिद इश्क़
वज़नामा व प्याम तू मी बारिद इश्क़
आशिक शूद आंकिस कि बक़ूत गज़रद
गोज़ दरों बाम तू मी बारिद इश्क़

हज़रत शेख़ यह्या मदनी[रह.] यह रुबाई सुनकर बहुत ख़ुश हुए। आपने बैअत होने के लिये अर्ज़ किया। हज़रत शेख़ यह्या मदनी[रह.] ने आपकी दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमाई। आपको बैअत से मुशर्रफ़ फ़रमाया। कुछ अरसे तक आप अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में हाज़िर रहे और रुहानियत के आला मक़ाम तय करते रहे।

वापसी

अपने पीर वमुर्शिद के हुक्म के मुताबिक़ आप हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए आपने दिल्ली आकर जामा मस्जिद और लाल क़िला के दरमियान रहना पसन्द फ़रमाया। दिल्ली में आपने दर्स तदरीस और रुश्द व हिदायत में सारी उम्र सर्फ़ की। हज़ारों लोग आपसे मुस्तफ़ीज़ हुए।

1. तकम्मल सीरुल औलिया सफ़ा 79, 80

ज़रिया-ए-मआश

आपका एक मकान था। ढाई रुपये माहवार किराया आता था। आप खुद एक किराये के मकान में रहते थे। आठ आने यानी पचास पैसे उस मकान का किराया देते थे और दो रुपये में अपना और अपने वाविस्तगान का ख़र्चा चलाते थे[1]।

वफ़ात शरीफ़

आपने व उम्र 81 साल, 9 माह–24/रबीउल अव्वल सनः 1142 हि.को रेहलत फ़रमाई। आप का मज़ार पुर अनवार दिल्ली मे जामा मस्जिद और लाल क़िला के दरमियान वाक़े है। आपका उर्स मुबारक हर साल वड़ी शान व शौकत से मुनाक़िद होता है और तीन दिन तक उर्स की महफ़िले वड़े तज्क व एहतिशाम से जारी रहती हैं।

औलाद

आपके साहबजादे हजरत मुहम्मद गौस साहबे दिल थे।आप हज़रत मौलाना फ़खरुद्दीन फ़ख़रे जहाँ के मुरीद और ख़लीफ़ा थे[2]।

आप के खुल्फ़ा

आपके खास खास खुल्फ़ा हसबे ज़ेल हैं:

हज़रत मौलाना निजामुद्दीन औरंगाबादी, हज़रत मुहम्मद हाशिम, मौलाना शाह जियाउद्दीन साहब, मौलाना शाह जमाल साहब, ख़्वाजा यूसुफ़।

सीरते पाक

आप फ़ानी फ़िअल्लाह हैं। साहबे तजरीद और तौहीद हैं। आपका शुमार अकाबिर औलिया में है। आप बहुत वड़े आलिम थे। आप कुतबे ज़माना थे। आप मुजाहिदात और रियाज़ात में बे मिस्ल थे। आप सुन्न्ते रसूल[स.] के सख्त पाबन्द थे। नफ़िल बहुत पढ़ते थे। रात को जागते थे और इबादत में मशगूल रहते थे। आप जब तकरीर फ़रमाते फ़साहत और

1. तकम्मल रीरुल औलिया सफ़ा 85 2. मनाक़िब फ़ख़रिया सफ़ा 16

बलाग़त के वह जौहर दिखलाते कि सुनने वाले बेहद मुतअस्सिर होते। आपकी तबीयत में सफ़ाई, निफ़ासत और पाकीज़गी बदरजए उत्तिम मौजूद थी। रोज़ाना सुबह को गुसल करते थे। आप का लिबास निहायत साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ होता था। आपको समा का बेहद शौक था। तिलावते कुरआन पाक आप का ख़ास मशग़ला था। आप तवक्कुल और क़नाअत में यगाना रोज़गार थे।

फ़र्रख़ सेर बादशाह को आप से काफ़ी अक़ीदत थी। उसने बारहा कोशिश की कि आप कुछ क़ुबूल फ़रमायें लेकि न आपने जागीर, मकान या नज़राना क़ुबूल नहीं फ़रमाया[1]।

इल्मी ज़ौक़

आपके ख़ुतूत तसव्वुफ़ और मारिफ़त का ख़ज़ाना हैं। यह ख़त "मक्तूबाते कलीमी" के नाम से शाए हो गए हैं।

आपकी मशहूर तसनीफ़ हसबे ज़ेल हैं[2]:

सवाउस्सबील, तसनीम, अशरे कामिला, कुरआनुल कुरआन, मुरक्क़ा शरीफ़, किश्कूल।

तालीमात

आपने अपने ख़ुतबात, मक्तूबात और तसानीफ़ से लोगों तक पैग़ामे हक़ पहुंचाया।

रुजूए हक़

आपने अपने ख़लीफ़ा हज़रत शेख़ निज़ामुद्दीन[रह.] को तहरीर फ़रमाया कि[3]।

> अज़दहाम ख़लक़े मोजिबे शुकरे इलाही हैं जितना अज़दहाम ख़ुल्क़ से ज़्यादा हो उतना ही ख़ुदा वन्द तआला का शुक्र ज़्यादा करना चाहिए। रुजूए ख़लाइक़ महज़ ख़ुदावन्द तआला का फ़ज़ल व करम है। उस से तंग न होना चाहिए। क्योंकि यह दौलत हर एक को हासिल नहीं है।

1. तकम्मलह सीरुल औलिया सफ़ा 85 2. तकम्मलह सीरुल औलिया सफ़ा 80, 81
3. मक्तूबाते कलीमी

फ़ुतूहात

आपने फ़रमाया: "जो कुछ फ़ुतूहात आएं उनको फ़ुकरा में ख़र्च कर देना चाहिए। और जिस दिन न आएं उस दिन को ग़नीमत जानना चाहिए क्योंकि फ़क्र व फ़ाक़ा में अज़ीम तासीर है।"

वसल

आप फ़रमाते हैं कि[1]: "वसल इबारत है जुमला अशिया से तर्क ताल्लुक़ करना और किसी चीज़ की तरफ़ इल्तिफ़ात न करना बे रंगी महज़ में गुम और हलाक हो जाने से मुराद है। मुक़दमा इब्तिदा इस हाल की बेख़ुदी जुमला हवास से है। यह हालत मिस्ले मौत के होती है। फ़र्क़ सिर्फ़ इस क़दर है कि मौत में हुज़ूर नहीं होता और इस में हुज़ूर हैं।"

ज़िक्र व फ़िक्र

आपने फ़रमाया कि[2]:

"ज़िक्र व फ़िक्र को हासिल करने में अपनी सारी हिम्मत और तमाम औक़ात सर्फ़ कर दे और एक साअत और एक लम्हा ऐसी चीज़ की तरफ़ मशग़ूल न हो जो तेरे लिए ज़िक्र व फ़िक्र के हासिल करने में ख़लल अन्दाज़ हो।"

अक़वाले ज़री

आपके बाज़ अक़वाल ज़ेल में दर्ज किये जाते हैं:

- मारिफ़त की दो किस्मे हैं। एक इल्मी और दूसरी हाली।
- तौहीद के चार मर्तबे हैं। एक तौहीद ईमानी। दूसरी तौहीदे इल्मी। तीसरी तौहीदे हाली। चौथी तौहीदे इलाही।

1. कश्कूल सफ़ा 3 2. अशरए कामिला सफ़ा 69

- मुहब्बत ही एक ऐसी चीज़ है जिस पर दुनिया में ईमान व अमल की सेहत व सक़म का दार व मदार और आख़िरत में मजाज़त का हिस्सा है।
- उस चीज़ का गुम करना फ़ुक़्र है जो ख़ुदा तआला की तरफ़ से ढूंढी जाती है।
- अपने तमाम उमूर को निस्यान के हाथ में सौंप देना तवक्कुल है।
- रोज़ा तमाम इबादतों से अफ़ज़ल और अशरफ़ इबादत है बलिहाज़ अख़फ़ा व कितमान।

औराद व वज़ाइफ़

ज़ेल में आपके बताये हुए चन्द औराद व वज़ाइफ़ पेश किये जाते हैं:

हाजत पूरी होने के वास्ते

हज़रत शेख़ कलीमुल्लाह शाहजहान आबादी फ़रमाते हैं कि नफ़िलों के बाद तन्हा गोशे में बैठना चाहिए और आसमान की तरफ़ हाथ उठाकर सौ बार يَارَبِّ يَارَبِّ कहे। जो ख़ुदा से मांगेगा, पायेगा। अगर हज़ार बार कहे तो कामियाबी में कोई शक नहीं[1]।

(2) आप फरमाते हैं कि हाजत रवाई के वास्ते तकबीर यानी اَللّٰهُ اَكْبَرُ। कहना बहुत मुफ़ीद है, लेकिन सौ बार से कम न कहना चाहिएं[2]।

दुश्मन को मग़लूब करने के वास्ते

आप फ़रमाते हैं कि जब दुश्मन के सामने जाए यह दुआ पढ़े يَا سُبُّوحُ يَاقُدُّوسُ يَاغَفُوْرُ

कामियाबी के वास्ते

आप फ़रमाते हैं कि जो कोई यह दुआ पढ़ेगा मक़सद में कामियाब होगा[3]:

1. मुरक्क़ा शरीफ़ सफ़ा 29 2. मुरक्क़ा शरीफ़ सफ़ा 29 3. मुरक्क़ा शरीफ़ सफ़ा 32

يَاحَيُّ يَاعَلِيْمُ يَعَزِيْزُيَا كَرِيْمُ سُبْحَانَكَ يَا كَرِيْمُ

صعب رااسليم بَحَقِّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ

रोज़ी कुशादा होने के वास्ते

आप फ़रमाते हैं कि रोज़ी कुशादा होने की वास्ते हर रोज़ सौ बार यह पढ़े[1]।

لَا حَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

कश्फ़ करामात

आपसे बहुत सी करामतें ज़ाहिर हुई। आपकी चन्द करामतें हसब ज़ेल हैं:

- जब आप मदीना मनव्वरह हाज़िर हुए एक जगह जो शहर से कुछ दूर थी, .क्याम फ़रमाया। यकायक आप रबात आमिर से बाहर तशरीफ़ लाए और लोगों से भी जो वहां मौजूद थे बाहर आने को फ़रमाया। आपके बाहर तशरीफ़ लाते ही रबात की छत गिर गई। सब की जान बच गई।
- आपके एक मुरीद के अमरुद के बाग़ के दो पेड़ ख़ुश्क हो गए। उसने आपसे अर्ज़ किया। आपने अपने वज़ू का पानी उसको दिया और फ़रमाया की यह पानी सूखे हुए दरख़्तों की जड़ों मे डालना। उसने ऐसा ही किया। सूखे हुए पेड़ सर सब्ज़ व शादाब हो गए।
- एक साल दिल्ली में बारिश नहीं हुई। चन्द उल्मा आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर तालिबे दुआ हुए। आपने हाथ उठाये और दुआ की कि "ऐ रब! अपने बन्दों पर रहम फ़रमा।" यह दुआ ख़त्म हाते ही ख़ूब बारिश शूरु हुई।

1. मुरक्क़ा शरीफ़ सफ़ा 65

बाब न. 17

मुहिब्बुन्नबी

हज़रत मौलाना मुहम्मद फ़ख़रुद्दीन फ़ख़रे जहाँ

मुहिब्बुन्नबी हज़रत मौलाना मुहम्मद फ़ख़रुद्दीन फ़ख़रे जहाँ फ़ख़रूल अव्वलीन व आख़िरीन हैं आप क़ुतबे ज़माना हैं, फ़र्द यगाना हैं, शहसवार अर्सए विलायत हैं, सदरे नशीने महफ़िले करामत हैं।

ख़ानदानी हालात

बवास्ता शेख़ शहबुद्दीन सहरवर्दी[रह.] आपकी निस्बत नस्बी अमीरुल मोमिनीन हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु तक पहुंचती है। हज़रत मौलाना फ़ख़रे जहाँ ने सिलसिले हदीस में अपने को सिद्दीक़ी लिखा है[1]।

वालिद बुज़ुर्गवार

आपके वालिद बुज़ुर्गवार का नामे नामी इस्मे ग्रामी हज़रत निज़ामुद्दीन है। आपके ख़ानदान के बुज़ुर्ग बाहर से तशरीफ़ लाकर क़स्बा निगराब

1. तकम्मलह सीरुल औलिया सफ़ा 94

(काकोरी) अवध में सुकूनत पज़ीर हुए थे। आपके वालिद हज़रत निज़ामुद्दीन दिल्ली आकर हज़रत शेख़ कलीमुल्लाह शाहजान आबादी से बैअत हुए और ख़िरक़ा ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ हुए। अपने पीर व मुर्शिद के फ़रमान के मुताबिक आप दक्कन तशरीफ़ ले गए और औरंगाबाद में सुकूनत अख़्तियार करके वहीं रुश्द व हिदायत फ़रमाने लगे।

वालिदा-ए-माजिदा

आपकी वालिदा मुकर्रमा हज़रत सैयद मुहम्मद गेसू दराज़ के ख़ानदान से थीं।[1]

भाई

आपके चार भाई थे[2]। हज़रत मुहम्मद इस्माईल आपके बड़े भाई थे और तीन सौतेले भाई थे (1) गुलाम मुईनुद्दीन (2) गुलाम बहाउद्दीन (3) गुलाम कलीमुल्लाह। यह तीनों भाई आपसे बैअत थे।[3]

बहन

आपकी बहन भी आपसे बैअत थीं।

विलादते बा सआदत

आप सन: 1126 हि. में औरंगाबाद में जलवा गर हुए।[4]

नामे नामी

आपके वालिद माजिद ने आपकी विलादत बा सआदत की ख़बर अपने पीर व मुर्शिद हज़रत शेख़ कलीमुल्लाह शाहजहान आबादी को की। हज़रत शेख़ कलीमुल्लाह शाहजहान आबादी बहुत ख़ुश हुए और आपने अपना मल्बूसे ख़ास आपके वास्ते भेजा। आपने आप का नाम मौलाना मुहम्मद फ़ख़रुद्दीन रखा और फ़रमाया कि "यह मेरा फ़र्ज़न्द है।"[5]

---

1. खलासतुल फ़वाइद 2. मनाक़िब फ़ख़रीया
3. तकम्मलह सीरुल औलिया सफ़ा 106 मनाक़िब फ़ख़रीया सफ़ा 5
4. मनाक़िब फ़ख़रिया सफ़ा 4
5. तकम्मलहु सीरुल औलिया सफ़ा 105

आपके मुताल्लिक़ पेशीन गोई

हज़रत शेख़ क़लीमुल्लाह शाहजहान आबादी ने आपके मुताल्लिक़ फ़रमाया:

"यह फ़र्ज़न्द शाहजहान आबाद को अपने नूरे हिदायत से मनव्वर व रोशन करेगा।"

लक़ब

आपका लक़ब मुहिब्बुन्नबी है।

आपके मुहिब्बुन्नबी के लक़ब से मुमताज़ होने की यह वजह बताई जाती है कि जब आप ख़्वाजा ग़रीब नवाज़^{रह.} के दरबारमें अजमेर शरीफ़ हाज़िर हुए, उस वक्त एक साहबे दिल बुज़ुर्ग अपने किसी काम के वास्ते दरबारे ग़रीब नवाज़^{रह.} में हाजिर थे। उन बुज़ुर्ग को ख़्वाजा ग़रीब नवाज़^{रह.} ने बशारत दी कि उनको पहचान लो। मतलब बर आरी उनसे होगी। उनका नाम " मुहिब्बुन्नबी" है। उन बुज़ुर्ग ने आपको तलाश किया और ख़िदमत में हाज़िर होकर सारा क़िस्सा बयान किया। उस रोज़ से आप मुहिब्बुन्नबी कहलाने लगे।

दूसरी वजह यह बताई जाती है कि एक मर्तबा उर्स के मौक़े पर हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी के मज़ार पुर अनवार पर हाज़िर थे। आपने देखा कि हज़रत नसीरुद्दीन चराग़ देहलवी ने आपको लंगर से कुछ तबर्रुक दिया और इरशाद फ़रमाया कि:

"तुम "मुहिब्बुन्नबी" हो।' उस रोज़ से आप मुहिब्बुन्नबी कहलाने लगे।

तालीम व तरबीयत

आपने चन्द क़िताबें अपने वालिद बुज़ुर्गवार से पढ़ीं। आपने "शरह वक़ाया" मशारिकुल अनवार" "नफ़हातुल अन्स"। एक किताब इल्मे तिब्ब में और एक रिसाला तीर अन्दाज़ी के फ़न में। यह सब किताबे अपने वालिद माजिद से पढ़ीं। आपने मियाँ मुहम्मद जान जियो से और किताबें

1. तकम्मलह सीरुल औलिया सफ़ा 114

पढ़ीं जिन में फ़ुसूसुल हकम वग़ैरा शामिल हैं। आपने मशहूर किताब "हिदाया" मौलवी अब्दुल हकीम से पढ़ी जो बहुत बड़े आलिम थे और फ़िक़ह में माहिर थे[1]।

बचपन का एक वाक़िया

आपकी उम्र सात साल की थीं कि एक रोज़ आप अपने वालिद माजिद के पैर दबा रहे थे। आप पर गुनूदगी तारी हुई। सरवरे दीन व दुनिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको बुन के पाँच दाने मर्हमत फ़रमाए। जब आप होशियार हुए, वह बुन के पाँच दाने आपने अपने हाथ में देखें। आपके वालिद बुज़ुर्गवार भी जाग गए। आपका हाथ पकड़कर उन्होंने फ़रमाया। "इन दोनों में हमारा हिस्सा भी है। आपने और आपके वालिद माजिद ने वह दाने तनाउल फ़रमाये।[2]

बैअत व ख़िलाफ़त

आप सुग़र सिन्नी में अपने वालिद माजिद से बैअत हुए। जब आपकी उम्र पन्द्रह साल को हुई आप के वालिद माजिद ने आपको ख़िरक़े ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया।

वालिद माजिद का विसाल

ख़िरके ख़िलावत अता करने के एक साल बाद आपके वालिद माजिद ने जानें शीरीं जानें आफ़रीं के सुपुर्द फ़रमाई। वालिद बुज़ुर्गवार के विसाल के वक्त आपकी उम्र सोलह साल थीं।

रियाज़त व मुजाहिदा

वालिद बुज़ुर्गवार के विसाल के बाद आप ज़्यादा वक्त इबादात में गुज़ारते थे। आप अपने हाल की किसी को ख़बर न देते थे। जो लोग आपके क़रीब थे उनको भी आपकी रियाज़ात, इबादात और मुजाहिदात का इल्म न था। एक दिन आपके पीर भाई और हम ख़िरक़ा ख़्वाजा कामगार ख़ां ने आपसे अर्ज़ किया कि आप हल्के ज़िक्र मुनाक़िद करें और ज़िक्र

---

1. तकम्मलह सीरुल औलिया सफ़ा 106–107
2. तकम्मलह सीरुल औलिया सफ़ा 105–106

जुहर कराया करें। आप मुस्कुराए और उनसे फ़रमाया कि वह आपके वास्ते दुआ करें कि ख़ुदा वन्दा ताला उनको उन कामों की तौफ़ीक़ दें। उन्होंने दुआ के लिए हाथ उठाये, उनको जो दौलत व नेमत हासिल हुई थी वह फ़ौरन सल्ब हो गई। और वह माफ़ी के ख़्वास्तगार हुए। आपने उनको माफ़ फ़रमाया और वह तमाम दौलत व नेमत जो सल्ब हुई थी, वह और उसके अलावा मज़ीद नेमत मर्हमत फ़रमाई।[1]

मुलाज़िमत

आपकी ख़्वाहिश पर नवाब निज़ामुद्दौला नासिर जंग ने आपको उहदे सिपाह सालारी या नायब बख़्शी तफ़वीज़ किया।[2] आपने तीन साल तक बहुसन व ख़ूबी अपने फ़राइज़ अंजाम दिए फिर मुस्ताफ़ी होकर औरंगाबाद तशरीफ़ ले गए।

दिल्ली में आमद

एक रोज़ का वाक़िया है कि आप इबादत में मशग़ूल थे। आपने यह आवाज़ सुनी।

बंद बगसल बाश आजाद ए पिसर

यह सुनकर आपको दिल्ली जाने का ख़्याल पैदा हुआ।

आप अपने वालिद माजिद के मज़ार पुर अनवार पर हाज़िर हुए जब मराकिब हुए ये आवाज़ सुनी।

शह अक़लीम फ़क़रम बे ख़ुदी तख़्त रवाने मन
न चूं फ़रहाद मज़दूरम न चूं मजनूं ज़मींदारम

यह सुनकर आपने दिल्ली जाने का मुसम्मम इरादा कर लिया।

आप सन: 1160 हि॰ में दिल्ली में रौनक़ अफ़रोज़ हुए।[3]

पाक पटन शरीफ़ में आमद

दिल्ली तशरीफ़ लाने के छ: माह बाद आप हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर के मज़ार अक़दस की ज़ियारत के वास्ते पाक पटन

1. मनाक़िब फ़ख़रिया सफ़ा 7,8 2 मनाक़िब फ़ख़रिया सफ़ा 6
3. मनाकि फ़ख़रीया सफ़ा 11

हाज़िर हुए। पानी पत में चार रातें क़याम फ़रमाया। हज़रत बु अली क़लन्दर के फ़ुयूज़ व बरकात से माला माल हुए।

शादी और औलाद

एक बीमारी के इज़ाला के वास्ते आपने हकीमों का मशवरह क़ुबूल फ़रमाकर औरंगाबाद में शादी की। आपके एक लड़का हुआ। आपने उनका नाम ग़ुलाम क़ुतबुद्दीन रखा।[1]

वफ़ात शरीफ़

आप ने 27/जमादिस्सानी सनः 1199 हि. को रात के आख़िरी हिस्सा में इस जहाने फ़ानी से रहमत यज़्दानी की तरफ़ रेहलत फ़रमाई।[2] बवक़्ते वफ़ात आप की उम्र 73 साल की थी। आप का मज़ार महरौली में फ़ुयूज़ व बरकात का सर चश्मा है।

आपके ख़ुल्फ़ा

आपके मशाहीर ख़ुल्फ़ा हसबे ज़ेल हैं:

"हज़रत ख़्वाजा नूर मुहम्मद महारवी, हज़रत मौलाना मीर ज़ियाउद्दीन, हज़रत मौलवी ख़ुदा बख़्श, नवाब ग़ाज़ियुद्दीन मीर ख़ां अलमुतख़ल्लिस ब निज़ाम, शाह फ़तहुल्लाह, मौलवी मुहम्मद ग़ौस। शाह रुहुल्लाह। शाह क़मरुद्दीन और हज़रत मुहम्मद ग़ौस।

सीरते पाक

आपकी ज़ात बाला सिफ़ात औसाफ़ ज़ाहिरी व बातिनी की जामा थी। आप निहायत ख़लीक़ व मुतवाज़े थे। आप हर आने वाले की ताज़ीम व तकरीम बिला किसी इम्तियाज़ के करते थे।[3] बीमारी में भी ख़ड़े हो जाते थे। आप में ईसार नफ़्स बदर्जए अतिम था। इबादत, रियाज़त मुजाहिदा और मुराक़बा में ज़्यादा वक़्त गुज़ारते थे। सख़ावत का यह हाल था कि जो रुपया और चीज़ें नज़र में आती थीं सब को तक़सीम फ़रमा देते थे। आप अपने वास्ते कुछ न रखते थे। इन्किसारी इस दर्जा थी कि जब

1. तकम्मलह सीरुल औलिया सफ़ा 120 2. मनाक़िब फ़ख़रीया सफ़ा 51–52
3. मनाक़िब फ़ख़रीया सफ़ा 16

आपका ख़ाकरुब पीरा दो रोज़ मुतवातिर ख़ानक़ाह में सफ़ाई के वास्ते नहीं आया, और जब मालूम हुआ कि वह बीमार है, आप ब नफ़्से नफ़ीस उसको देखने इसके घर तशरीफ़ ले गए। उसको कुछ रुपया दिया और उस से माज़रत की कि उसकी ख़बर गीरी में इतनी देर हुई।[1]

इल्मी ज़ौक़

आपके ख़ुतूत गंजीनए मारफ़त हैं। वह "रुक़ाते मुर्शिदी" के नाम से शाए हो गए हैं। आपकी मशहूर तसानीफ़ हसबे ज़ेल हैं:

"फ़ख़रुल हसन। अक़ाइदे निज़ामिया। सीरते मुहम्मदिया"। ऐनुल यक़ीन।"

आपकी तालीमात

आपकी तालीमात आला रुहानी मक़ाम के हासिल करने में इमदाद और रहनुमाई करती हैं।

मक़ामे सीरुन्नफ़सी

आप फ़रमाते हैं कि सीर आफ़ाक़ी में यानी आलमे कबीर में आरिफ़ महबूबे हक़ीक़ी का मुशाहिदा करता है। सीरुन्नफ़सी में भी वह इस दौलत से मुशर्रफ़ होता है। यह कहना चाहिए कि अव्वल तो महज़ आईना है और ज़ाते पाक का ज़ुहूर उसमें भी है। मगर दोम यह है कि इन्सान "आलमे सग़ीर" है। मुसफ़्फ़ा और मुजल्ला आईना है। उसमें जो तजाल्लियात आरिफ़ मुशाहिदा करता है वह पहले मुशाहिदा से ब मदारिज फ़ौक़ है। सालिक का बातिन मासिवल्लाह से पाक हो जाता है और ख़ुदा वन्द ताला की हस्ती का उस पर ग़लबा होता है तो मक़ामे क़ुर्बे नवाफ़िल हासिल होता है।[2]

हुज़ूर मअल्लाह

आप फ़रमाते हैं कि असल तमाम की हुज़ूर मअल्लाह का हासिल होना है। तरीक़े मुख़्तलिफ़ हैं। ख़्वाह यह ज़िक्र जेहर से हो, या ज़िक्र ख़फ़ी से। ख़्वाह फ़िक्र से हो या मुराक़बा या मुराबता से हो।[3]

---

1. मनाक़िब फ़ख़रीया सफ़ 18 2. रुक़आते मुर्शिदी सफ़ा 35
3. रुक़वाते मुर्शिदी सफ़ 50

बेखुदी

आप फ़रमाते हैं कि बेख़ुदी एक बड़ी नेमत है। उसका शुक्र करना ज़रुरी है। लेकिन सालिक को उसपर क़नाअत नहीं करना चाहिए, बल्कि उसको असली मक़सद और मदारिजे आलिया हासिल करने का ज़रिया समझना चाहिए। बेख़ुदी तो भंग और अफ़ीवन से भी पैदा हो जाती हैं। फ़र्क यह है कि इस किस्म की बेख़ुदी महमूदा नहीं है बल्कि मज़मूमा है। जब बेख़ुदी हासिल हो तो रियाज़त व मुजाहिदा में ज़्यादा मसरुफ़ होना चाहिए।[1]

ज़िक्र व मुहासबा

आप फ़रमाते हैं कि जिस क़दर भी हो सके ज़िक्र करना चाहिए, लेकिन इतना नहीं कि जिसका सेहत पर बुरा असर पड़े। महासबा करना भी ज़रुरी है।[2]

अक़वाल

- हुज़ूर व गैब को दिल से दूर करना चाहिए।
- यादे मौला सब से ऊला है।
- दुनिया आख़िरत की खेती है।
- सालिक को चाहिए कि ज़ब्त औक़ात को हाथ से न जाने दे
- सालिक को फ़रेब नफ़सानी न खाना चाहिए।
- इन्सान मज़हरे जमीए मुरातबात इलाहिया व कौनीया है।

औराद व वज़ाइफ़

आप "पास इन्फ़ास" और ज़िक्रे जली व खफी की तल्क़ीन फ़रमाते हैं। आप फ़रमाते हैं कि आमाले सालिहा मिसल नवाफिल, नमाज़ व तहज्जुद व इशराक़ और औराद मिस्ल दरुद शरीफ़ व तिलावत कफ़रआन मजीद को अपने ऊपर लाज़िम करना चाहिए।[3]

---

1. रुक़आते मुर्शिदी सफ़ा 63–64 2. रूक़आते मुर्शिदी सफ़ा 64,65
3. रिसाला अैनुल यक़ीन सफ़ा 9

कश्फ़ व करामात

नवाब मीर ग़ाज़ीयुद्दीन ख़ां को मसलए वहदतुल वजूद के समझने में सख़्त तरद्दुद था। आपने मुकाशिफ़ा से उनका तरद्दुद मालूम फ़रमाया। एक दिन आप नवाब साहब के पास तशरीफ़ ले गए और अपनी उंगलियां उनकी उंगलियों में और दोनों हथेलियों से दोनों हथेलियां मिलाईं। फिर मुस्कुराकर नवाब साहब की तरफ़ देखा। नवाब साहब बेहोश हो गए। नवाब साहब कहते हैं कि कि जब होश आया तो तमाम जमादात, नबातात और हैवानात एक शै नज़र आने लगे– औरंगाबाद से दिल्ली तशरीफ़ लाते हुए रास्तें में एक नाबीना बुढ़िया आपकी ख़िदमत में आई और आपसे अर्ज़ किया कि उसकी आंखें रोशन कर दें। आपने अपना हाथ उस बुढ़िया की आंखो पर फेरा,उसी वक्त उस बुढ़िया की आंखों मे रोशनी आ गई।[1]––आपके मुरीद क़ाज़ी अनवर ज़िया दा में मुब्तिला थे। आपकी ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए। आप उनसे बग़लगीर हुए। बग़लगीर होने के फौरन बाद ही क़ाज़ी साहब बिल्कुल अच्छे हो गए और अपने अन्दर ऐसी कुव्वत महसूस करने लगे कि गोया बीमार ही न थे।

1. फ़खरूत्तालिबीन सफ़ा 33,34 मनाकिब फ़खरिय सफ़ा 9,10

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ
الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ
النَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ط

(पारह 11, तौबा रुकू 14)

मतलब : तौबा करने वाले इबादत गुज़ार खुदा की हमद व सना करने वाले। खुदा की राह में सफ़र करने वाले। रुकू करने वाले। सज्दा करने वाले। लोगों को नेक काम की सलाह देने वाले और बुरे काम से मना करने वाले। अल्लाह ने जो हदें बांधी है उनकी निगाह रखने वाले।

हिस्सा पंजुम

बाब न. 18

हज़रत मिर्ज़ा जाने जानां मज़हर शहीद

हज़रत मिर्ज़ा जाने जानां मज़हरे शहीद ज़ीनते ज़मां हैं। रुकन जिनां हैं। मुक्तदाये अहले तरीक़त हैं। रहनुमाए अरबाबे हक़ीक़त हैं।

ख़ानदानी हालात

आपका सिलसिले नसब बतवस्सुत मुहम्मद बिन हनफ़ीया 28 वास्तों से इमामुल औलिया हज़रत अली कर्रमुल्लाह वजहु तक पहंचता है। आपके आबा व अजदाद आठ सौ (800) हिजरी में ताइफ़ से तुर्किस्तान तशरीफ़ लाए। जब हुमायूं ने ईरान से वापस आकर हिन्दुस्तान के तख़्त को ज़ीनत बख़्शी। उसके हमराह महबूब ख़ां और बाबा ख़ां दो भाई हिन्दुस्तान आए। यह दोनों भाई इस ख़ानदान से ताल्लुक रखते थे और उनका सिलसिले नसब तीन वास्तों से अमीर कमालुद्दीन तक पहुंचता है। आपका नसब 4 वास्तों से बाबा ख़ाँ तक पहुंचता है।[1]

नसब नामा मादरी

आपका नसबे मादरी अमीर साहबक़रां तक पहुंचता है।

1. कल्माते तैयबात (मक्तूबात हज़रत मिर्ज़ा साहिब) सफ़ा 12

वालिद बुज़ुर्गवार

आपके वालिद माजिद यहरम ख़ान ने औरंगज़ेब की ख़िदमत में जिन्दगी गुजारी। आख़िर उम्र में तारिकुद्दुनिया हो गए थे। वह तरीक़े क़ादरीया के एक बुज़ुर्ग मुस्तफ़ीद थे।

विलादते बा सआदत

आपकी पैदाइश और करामत के मुतल्लिक़ मौलाना रुमी ने पांच सौ साल क़ब्ल तहरीर फ़रमाया था।[1]

जान दर अव्वल मज़हर दरगाह शुद
जाने जानां ख़ुद मज़हर अल्लाह शुद

आपने सनः 1113 हि. में इस आलम को ज़ीनत बख़्शी।[2] आप का नाम शमसुद्दीन है।

वालिद माजिद का इन्तिक़ाल

जब आपकी उम्र सोलह साल की हुई, आपके वालिद माजिद ने सनः 1130 हि. में इन्तिक़ाल फ़रमाया।

तालीम व तरबीयत

आपने उलूम मुतआरिफ़ वालिद माजिद की हयात में पढ़ते थे।

हदीस की किताबें आपने शैख़ुल मुहद्दसीन शेख़ अब्दुल्लाह बिन सालिम मक्की के शागिर्द हाजी मुहम्मद अफ़ज़ल सियालकूटी से पढ़ीं। क़ुरआन मजीद आपने शेख़ अब्दुल ख़ालिक़ शौक़ी के शागिर्द व हाफ़िज़ अब्दुर्रसूल देहलवी से पढा।

बीस साल की उम्र में आप का दिल दुनिया से सर्द हो गया था। राहे फ़क़्र में क़दम रखा।

बैअत व ख़िलाफ़त

आप हजरत सैयदुस्सादात सैयद नूर मुहम्मद बदायूनी की ख़िदमत में हाज़िर हुए। बैअत से मुशर्रफ़ हुए। बैअत से मुशर्रफ़ हुए और तरीक़े

1. मिफ़्ताहुत्त्वारीख 2. मक्तूबात मिर्ज़ा साहिब सफ़ा 13

नक्शबंदीया का ख़िरक़े ख़िलाफ़त हासिल करके मुअज़्ज़ज़ व मुमताज़ हुए। अपने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत में रह कर मुजाहिदात व रियाज़ात में मशग़ूल हुए। अपने पीर व मुर्शिद के विसाल के बाद नक्शबंदी सिलसिले के बहुत से बुज़ुर्गों से मुस्तफ़ीद व मुस्तफ़ीज़ हुए।[1]

बाद अज़ां आप एक अर्से तक हज़रत शैख़ुश्शुयूख़ शेख़ मुहम्मद आबिद सनामी की ख़िदमते बा बरकत में रह कर उनके फ़ुयूज़े रुहानी से माला माल हुए। उनसे ख़िरक़े इजाज़त तरीक़े क़ादरीया व सहरवर्दीया व चिश्तीया हासिल करके रुश्द व हिदायत व तरबीयत तालिबान ख़ुदा में मशग़ूल हुए।

आख़िरी अय्याम

आख़िर उम्र में आप वज़ाइफ़ व इबादात में ज़्यादा वक्त गुज़ारते थे। अस्तिग़राक़ ज़्यादा बढ़ गया था। बहुत लोग आप के हल्के इरादत में दाख़िल हुए। मुल्ला नईम को जब आपने रुख़्सत किया, आबदीदा होकर फ़रमाया कि अब हमारी और तुम्हारी मुलाक़ात होती नज़र नहीं आती। एक रोज़ ख़ुदा वन्द ताला की नेमतों का शुक्र फ़रमाया कि कोई आरज़ूए दिल ऐसी नहीं कि जो पूरी न हुई हो। मुनइम हक़ीक़ी ने सलाम हक़ीक़ी से मुशर्रफ किया। इल्मे वाफ़र बख़्शा। नेक अमल की तौफ़िक दी। इस्तिक़ामत की करामत अता की। लवाज़िम तरीक़ा में जो कुछ चाहिए था वह सब कुछ दिया कश्फ़ व तसर्रुफ़ व करामत से नवाज़ा। सुलहा को कसबे फ़ुयूज़ के वास्ते भेजा और उनको मुक़ामाते आलिया तक पहुंचाया। आपने शहादते ज़ाहिरी की कि जो कुर्बे इलाही में ऊँचा दर्जा रखती है, आरज़ू ज़ाहिर की।

वसीयत

आपने वसीयत फ़रमाई कि तजहीज़ व तकफ़ीन में सुन्नते रसूल की पूरी पूरी पाबन्दी की जाए। अपने हल्के इरादात वालों के लिए आपने वसीयत फ़रमाई कि आख़िर दम तक इत्तिबाए सुन्नत के पाबन्द रहें और मक़सूदे हक़ीक़ी को हक़ ताला से ग़ैर और मतबू वाजिबुल इत्तिबा को रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ग़ैर न जानें। रुसूम व आदाते

1. मक्तूबात मिर्ज़ा साहिब सफ़ा 13

दुर्वेशों से वाक़िफ़ रहें और दुनियादारों की सोहबत से इजतिनाब और एहतराज़ करें। उलूमें दीनी से अपने को महरुम न रखें।

वफ़ात शरीफ़

बुध की रात 7/मुहर्रम को नजफ ख़ां के लश्कर के एक आदमी ने आप पर क़ातिलाना हमला किया। तीन दिन तक ख़ून बहता रहा। 10/मुहर्रम सन: 1195 हि. को बाद नमाज़ आपने जामे शहादत नोश फ़रमाया।

आपके ख़लीफ़ा

हज़रत शाह अब्दुल्लाह अल मारुफ़ ब शाहे ग़ुलाम अली अहमदी आपके मुमताज़ ख़लीफ़ा हैं।

सीरते मुबारक

इल्म व अमल में, आदाबे शरीयत व तरीक़त में फ़साहत व बलाग़त में और रियाज़त व मुजाहिदा में अपनी मिसाल आप थे। इल्मे ज़ाहिर व सुलूके बातिन में आला दर्जा रखते थे। क़ुतबे वक्त थे और पीरे क़ामिल थे।

इल्मी ज़ौक़

आपके मल्फ़ूज़ात तैयबात और आपके मक्तूबात से आपके इल्मी ज़ौक और क़ाबलीयत का बख़ूबी पता चलता है। आपके मल्फ़ूज़ात और मक्तूबात तसव्वुफ़ का एक बेश बहा ख़ज़ाना हैं।

शेर व सुख़न का ज़ौक़

आप एक ख़ुश गो शायर थे। आपका कलाम आरिफ़ाना है– जैसा कि हसबे ज़ेल अशआर से ज़ाहिर हैं

मुहम्मद[स.] अज़ तू मी ख़्वाहम ख़ुदा रा
ख़ुदाया अज़ तू इश्क मुस्तफ़ा रा

ग़ुलाम इश्क्म व लुत्फ़ व करम बहाये मन अस्त
कसे कि बन्दा बख़्वानद मुरा ख़ुदाए मन अस्त

खुदा न कर्दा ब्रह्मण ज़बत कुन्द फ़रियाद
तू वाक्फ़ी कि चे अज़नाला मुहुआए मन अस्त

जोश ज़द मस्ती व चश्मे दिलबरां मैख़ाना शुद
मश्ते ख़ाके मय परस्तां चर्ख़ ज़द पैमाना शुद
मज़हरे खुश गोये माज़ आग़ाज व इतमामिश मपुर्स
गुश्ते अज़ ख़्वाबे अदमे बेदार बाज़ अफ़साना शुद

चूं बनिगरम दर आईना अकसे जमाल ख़्वेश
कर्दा हमां जहां तहक़ीक़ात मुसव्विरम
रोशन शवद ज़रोशनीए ज़ाते मन जहां
गर पर्दए सिफ़ाते ख़ुदम रा फ़रो दरम

तालीमात

आपकी तालीमात ज़िन्दगी को बेहतर व आला बनाने के लिए काफ़ी हैं।

नमाज़ की अहमीयत

आप फ़रमाते हैं कि:

"नमाज़[1] जामा कैफ़ियत है कि जो तिलावत, तस्बीह, दरुद और इस्तिग़फ़ार के अनवार, अज़कार से मुतज़म्मिन है। सही और असल तरीन हालात नमाज़ में हासिल होते हैं। बशरतीय कि उसके आदाब बजा लाए जाएं।"

रमज़ान की फ़ज़ीलत

आप फ़रमाते हैं कि:

"रमज़ानुल मुबारक में निस्बत बातिनी की बहुत तरक्क़ी होती है। रोज़ा में ग़ीबत और झूट से परहेज़ करना वाजिब है, वर्ना रोज़ा फ़ाक़ा से ज़्यादा नहीं है।"

---

1 कल्माते तैयबात (मल्फ़ूज़ात मिर्ज़ा साहिब) सफ़ा 84

आमाल की जज़ा

आप फ़रमाते हैं कि:

"जो कुछ तकलीफ़, आज़ार व अज़ीयत हम को लोगों से पहुंचती है वह हमारे आमाल का नतीजा है। अगर बड़ों से अदब के साथ और छोटों से महर व शफ़क़त के साथ पेश आएं तो कोई शख़्स तुम्हारे साथ बुराई नहीं कर सकता।"

फ़तहुल बाब

तरीक़े मज़हरीया में अव्वल अव्वल जो बशारत कि तालिब को अता फ़रमाते हैं वह यही फ़तहुल बाब की बशारत है। उस वक़्त क़ल्ब को जो अपनी अहलीयत से ग़ाफ़िल हो गया था। अपनी असल फिर याद आती है और अपने फ़ौक़ की जानिब मुतवज्जोह होता है। थोडी ही मुद्दत में वह नूर का शोला जो क़ल्ब से उठने लगा था अब क़ालिब से ज़ाहिर होता है।

इंसान का दिल असल फ़ितरत में रोशन व मनव्वर पैदा हुआ है, मगर आम तौर पर कसरते ताल्लुक़ात व मवाने के बाइसे कोयला की मानिनद सियाह व बेनूर हो गया है। इसी वजह से वह अपने आप और अपनी असल को फ़रामोश कर बैठा है। लेकिन जब वह तालिब सादिक़ बन कर और हुस्ने अक़ीदत व अरादात अपने हमराह लेकर किसी कामिल शेख़ व मुर्शिद की ख़िदमत में हाज़िर हो जाए तो वह मुर्शिद उसकी तरफ़ मुतवज्जोह होकर उसको ज़िक्र की तल्क़ीन करता और अपनी तवज्जुहात उसके हक़ में मसरुफ़ करता है तो उसकी तवज्जुहात की बरकत से ज़िक्र का नूर उसके क़ल्ब में पैदा हो जाता है और वह सियाह कोयला अब दहकने लगता है और जब ज़िक्र के नूर से उसका दिल मनव्वर हो जाता है तो उसके दिल से नूर का एक शोला उठता है। उसको तरीक़े मज़हरीया में फ़तहुल बाब के नाम से मौसूम करते हैं।[1]

1 हिदायतुत्तालिबीन सफ़ा 17

नसाइह

- तरीक़ वरा और तक़वा अख़्तियार करो
- ज़िन्दगी सब्र व तवक्कुल के साथ गुज़ारो
- सोहबते मशाइख़ में रुसूख़ बढाओ। क्योंकि दोस्ताने ख़ुदा की दोस्ती मूजिबे क़ुर्बे ख़ुदा का है।
- क़नाअत अख़्तियार करो।
- हिर्स व तमा को दिल से निकालो।
- यार व अग़ियार से ना उम्मीद हो और उनको होना न होना बराबर समझो।
- किसी को हिक़ारत से मत देखो।
- अपने को सबसे ज़्यादा कम तर व क़ासिर जानो।
- अपनी ताअत व इबादत पर नाज़ मत करो।
- जितना मुमकिन हो मुख़ालिफ़ते नफ़्स करनी चाहिए, लेकिन इस क़दर भी नहीं कि तंग हो जाए और ताअत में निशाते शौक़ न बढ़े।

औराद व वज़ाइफ़

आपके ख़ास औराद व वज़ाइफ़ हसबे ज़ेल हैं:

राहते दिल के लिए

आप फ़रमाते हैं कि दुआए हिज़्बुल बहर हर रोज़ पढ़ना चाहिए।[1]

बराए दफ़ए शर

आप फ़रमाते हैं कि आफ़ात से महफ़ूज रहने के लिए सुबह व शाम सूरए ला यलाफ़ पढ़ना चाहिए।

दफ़ए शर के लिए फ़जर के बाद सूरए ला यलाफ़ एक सौ एक बार पढ़ें, या ग्यारह मर्तबा। शुरु और आख़िर में पाँच–पाँच बार दरुद पढ़ना ज़रुरी है।

1 मल्फ़ूज़ात मिर्ज़ा साहिब सफ़ा 92

ख़ैर व बरकत के लिए

ख़त्म ख़्वाजगान और ख़त्म हज़रते मुजादिद[1] सुबह की नमाज़ के बाद पाबन्दी से पढ़ना मोजिबे ख़ैर व बरकत है।

करामात

नजफ़ ख़ां जिसके आदमी ने आप पर हमला किया था, उसी साल मर गया। तमा तवाबे व हवाशी भी ख़त्म हो गए।[2]

फ़ख़े ज़मां व कुतबे दौरां हज़रत शाह मुहम्मद आफ़ाक़ देहलवी आपकी दुआ से पैदा हुए थे।

1. अनवारुल आरफ़ीन सफ़ा 425

बाब न. 19

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी नासिरे शरीयत हैं और इमामे तरीक़त हैं। उमदतुल अबरार हैं, कुदवतुल अख़्यार हैं। आप वह मनबे फ़ैज़ हैं कि जिस से हिन्दुस्तान क़ालल्लाह व क़ालरसूल के अनवार की तजल्लियात से मनव्वर हुआ है।

ख़ानदानी हालात

आप शिजरए नसब तैंतीस (33) वास्तों से अमीरुल मोमिनीन हज़रत उम्र[रजि.] इब्ने ख़त्ताब तक इस तरह पहुंचता है कि वलीउल्लाह बिन अब्दुर्रहीम बिन वजीहुद्दीन शहीद बिन मुअज़्ज़म बिन मंसूर बिन अहमद बिन महमूद बिन क़व्वामुद्दीन उर्फ़ क़ाज़ी तवाजुन बिन क़ाज़ी क़ासिम बिन काज़ी कबीर उर्फ क़ाज़ी मुद्दुहा बिन अब्दुल मलिक बिन कुतबुद्दीन बिन कमालुद्दीन बिन शमसुद्दीन अल मुफ़्ती उर्फ क़ाज़ी बेरान बिन शेर मलिक बिन अता मलिक बिन अबुल फ़तह मलिक बिन उमरू अलहाकिम बिन मालिक बिन आदिल मलिक बिन क़ारुन बिन जरजीस बिन अहमद बिन मुहम्मद शहरयार बिन उस्मान बिन हामान बिन हुमायूं बिन कुरैश बिन सुलेमान बिन अफ़्फ़ान बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु अजमईन।[1]

1 क़रतुल उयून।

वालिद बुजुर्गवार

आपके वालिद बुजुर्गवार हजरत शाह अब्दुर्रहीम उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी में अपनी नजीर आप थे। हजरत शाह सैयद अब्दुल्लाह अकबर आबादी से बैअत थे और उनके खलीफ़े आज़म भी थे।

विलादत

आप 4-शव्वाल सन: 1114 हि. को इस आलम में तशरीफ़ लाए।[1]

नाम

आपका नाम अहमद है। आप खुद फ़रमाते हैं कि बन्दे ज़ईफ़ अहमद जिसे वलीउल्लाह कहते हैं।[2]

तालीम व तरबीयत

जब आप की उम्र पांच साल की हुई। आपके वालिद ने आपको एक मकतब में दाखिल किया। सात साल की उम्र में आपने क़ुरआन मजीद खत्म किया। फिर दीगर कुतुब के मुताला में मशगूल हुए। आपके वालिद माजिद ने आपकी तालीम पर काफ़ी ध्यान दिया। पंद्रह साल की उम्र में आपने उलूमे जाहिरी की तकमील की। उस से फ़रागत पाकर आप उलूमे बातिनी की तरफ़ मुतवज्जोह हुए। आपके वालिद माजिद आपको पंद व नसाइह फ़रमा कर इल्मे मजालिसी और आदाबे महफ़िल सिखाया करते थे।[3] आपके वालिद बुजुर्गवार ही ने आप को तसव्वुफ़ की तालीम भी दी। आप खुद फ़रमाते हैं कि:

> "और उन ही से उलूमे जाहिरी और आदाबे तरीक़त सीखे और उनसे करामात देखे और मुश्किलात पूछे और उनसे अकसर फ़वाइद तरीक़त के सुने।"

---

1. मल्फ़ूज़ात शाह अब्दुल अजीम सफा 56
2. फ़ैसला वहतदुल वजूद वश्शहूद सफ़ा 2 रिसाला दुर्रुस्समीन फ़ी मुबश्शरातुन्नबीयल अमीन सफ़ा 2
3. इन्फ़ासुल आरफ़ीन।
4. क़ौले जमील फ़ी बयान सवाउस्सबील सफ़ा 151-152।

बैअत व ख़िलाफ़त

पंद्रह साल की उम्र में आप अपने वालिद से बैअत हुए। आपके वालिद माजिद को कई सिलसिलों से इजाज़त हासिल थी। उसके मुताल्लिक़ आप खुद फ़रमाते हैं[1]:

"और हमारे और भी सलासिल हैं जिनके बाज़ में बिना बर सोहबत के इत्तिसाल है और बाज़ में बिना बर बैअत या ख़िरक़ा पोशी के।"

लेकिन आप के असली सिलसिला नक्शबन्दीया है। बैअत होने के दो साल बाद आप के वालिद ने ख़िलाफ़त अता फ़रमाई और आपको इरशादातऔर बैअत की इजाज़त देकर अपना ख़लीफ़े आज़म बनाया। आपने हज़रत शेख़ अबु ताहिर मदनी से भी ख़िरक़ा पाया। यह ख़िरक़ा "जमी ख़िरक़ा हाए सूफ़िया का हावी" कहलाता है।

वालिद का विसाल

अभी आपकी उम्र पूरे सत्तरह साल की भी नहीं हुई थी कि आप के वालिद माजिद का विसाल हो गया। उनके विसाल के बाद आप उनकी मसनदे रुश्द व हिदायत पर जलवा अफ़रोज़ हुए और तालीम व तल्क़ीन में मशग़ूल हो गए।

ज़ियारत हरमैन शरीफ़ैन

आपने 1143 हि॰ में हज का फ़रीज़ा अदा किया। मदीना मनव्वरह हाज़िर होकर फ़ुयूज़ व बरकात से मुस्तफ़ीज़ हुए। आप मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरह में बहुत से उल्मा और मशायख़ीन की सोहबत से मुस्तफ़ीज़ हुए। उन मुतबर्रक शहरों में कुछ अरसा क़याम करके आपने अहादीस की सनदें हासिल कीं।

वापसी

आप 1145 हि॰ में दिल्ली वापस तशरीफ़ लाए और दिल्ली में इकामत गज़ीं होकर आप ने दर्स व तदरीस, रुश्द व हिदायत और तालीम व तल्क़ीन में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ कर दी।

---

1. क़ौले ज़मील फ़ी बयान सवाउस्सबील सफ़ा 157

शादी और औलादा

आपकी शादी पंद्रह साल की उम्र में हुई थी। आपके साहबज़ादे हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी का हाल अगले बाब में दर्ज है। आपके दीगर फ़र्ज़न्द मौलाना शाह रफ़ीउद्दीन, मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर और शाह अब्दुल ग़नी हैं।

वफ़ात शरीफ़

आपका विसाल 19/मुहर्रम 1176 हि॰ को हुआ[1]। आपका मज़ार दिल्ली में है।

सीरते मुबारक

आपका शुमार हिन्दुस्तान के उल्माए इज़ाम व फुज़लाए जुविल किराम में है। आपकी बुजुर्गी और अज़मत से किसी को इंकार की जुराअत नहीं है। आप अफ़ज़ल तरीन उलमाए असर थे। माकूल व मन्कूल और हकीमिल व मारिफ में यक्ताए रोज़गार थे।"[2] आप तमाम उम्र तल्क़ीन और उलूमे अक्ली व नक़ली के दर्स देने में मसरुफ़ और मशग़ूल रहे। ज़िन्दगी में सादगी इन्तिहा दर्जा की थी।

आपका इल्मी ज़ौक़

आपने बहुत सी किताबें लिखीं हैं। आपकी मशहूर तसानीफ़ हसबे ज़ेल हैं:

लमआत, हमआत, क़ौल जमील फ़ी बयान सवाउस्सबील, इन्फ़ासुल आरफ़ीन, मक्तूबे मदनी (उर्दू तर्जूमा अलमुलकिब व फ़ैसला वहदत्तुल वजदू व अश्शहूद) रिसाला दार्रुस्समीन की मुबश्शिरातुन्नवी अल अमीन, मक्तूबात मा मनाक़िब अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल अल बुख़ारी व फ़ज़ीलत इब्ने तैमिया[रह], तफ़सीरे क़ुरआन, तफ़हीमाते इलाहिया। मकातीबे अरबी, इन्तिबाह फ़ी इसनाद अहादीस

---

1 मल्फ़ुज़ात शाह अब्दुल अज़ीज़ सफ़ा 56

2. सीरुल आख़ियार

रसूलुल्लाह सल्लम, ख़ैर कसीर, क़ौलुल जली फ़ी आसारुल वली, ब व रुबाज़गा फुयूज़ुल हरमैन, तावीलुल अहादीस, ख़मसा रिसाइल, इन्साफ़, क़सीदा अतीबुन्नअम फी मदह सैयदुल अरब वदु अजम, इक़बुल जीद। चेहले हदीस मा शरह मन्ज़ूमुल मौसूम ब तसख़ीर।

शेर व सुखन का ज़ौक़

हसबे ज़ेल अशआर आपके शेर व सुख़न के ज़ौक़ का आईना दार हैं।[1] आपका तख़ल्लुस अमीन था।

मन न दानम बादह अम या बादह रा पैमाना अम
आशिक शूरीदा अम या इश्क़ बाजाना न अम
मुब्तिलाए हैरतम जां गोयमत या जाने जां
इस्तिलाहे शौक़ बिसयार अस्त व मन दीवाना अम
मील हर उन्सुर बुद सूए मकर्रे इस्लीश
जज़्बए असल अस्त सर्रे शोरिशे मस्ताना अम
शौक़ मूसा दर ज़ुहूर आउर्द नारे तूर रा
दर निहादे शमए आतिश मी ज़न्द परवाना अम
ऐ अमीन बर मुस्तीम नाम तजद्दुद तोहमत अस्त
दर अज़ल पेश अज़ ज़मां तामीर शुद मैख़ाना अम

आपकी तालीमात

आपकी तालीमात इल्मे ज़ाहिर और इल्मे बातिन का एक बेश बहा ख़ज़ाना हैं।

आदाब आलिमे हक्क़ानी

आप फ़रमाते हैं कि:[2]

"मैं वसीयत करता हूँ। तालिबे हक़ को चन्द उमूर की अज़ आं जुमला यह है अग़्निया और उम्रा से सोहबत न रखे, मगर बा नीयत दफ़ा करने ज़ुल्म के खुल्क़ पर से

1. मल्फ़ूज़ात शाह अब्दुल अज़ीज मुहद्दिस देहलवी सफ़ा 14
2. क़ौले जमील फ़ी बयान सवाउस्सबील सफ़ा 136

या उनको मुस्तइद करने के वास्ते ख़ैर पर सोहबत न अख़्तियार करे। सूफ़ियाने जाहिल की और न जाहिलाने इबादत शिआर की और न फ़क़ीहों की जो ज़ाहिदे ख़ुश्क हैं और न मुहद्दिसीन ज़ाहिरी की जो फ़िक़्रा से अदावत रखते हैं और न असहाबे माक़ूल और कलाम की जो मन्क़ूल को ज़लील समझ कर इस्तिदलाले अक्ली में अफ़रात करते हैं।"

तालिबे हक़ के वास्ते ज़रुरी बातें

आप फ़रमाते हैं कि:[1]

"तालिबे हक़ को चाहिए कि आलिम सूफ़ी हो। दुनिया का तारिक हर दम अल्लाह को ध्यान में हालाते बुलन्द में डुबा। सुन्नते मुस्तफ़वीया में राग़िब। हदीस और आसार साहबे किराम का मुतजस्सुस। हदीस और आसार कि श्राह और बयान का तल्ब करने वाला फकिहान मुहक़्क़ीन के कलाम से जो हदीस की तरफ़ मायल हैं, नज़र से और उनके असहाब अक़ाइद के कलाम से जिनके अक़ाइद माखुज़ हैं सुन्नत से। जो नाज़िर हैं दलील अक्ली में बतरीक़ अदम लुज़ूम के और उन असहाब सुलूक के कलाम से जो जामे हैं इल्म और तसुफ के, तशद्दुद करने वाले नहीं अपने नुफ़ूस पर और न दिक्क़त करने वाले सुन्नते नबवीया पर बढ़कर और न सोहबत अख़्तियार करे, मगर उस शख़्स से जो मुत्तसिफ सिफात मज़कूरा है।

गोशा नशीनी

आप फ़रमाते हैं कि:[1]

"गोशा नशीनी इस क़दर है कि उमूरे सालिहा में नुक़सान न हो। मसलनः अयादते मरीज़ की और ताज़ीयत मुसीबत ज़दह की और सिला रहमी और हाज़िरी मजालिस इल्म

1 क़ौले जमील फ़ी बयान सवाउस्सबील सफ़ 137

की और रफ़ा ख़ुशूनत तबा और क़ब्ज़े ख़ातिर की और मिस्ल उसके उनके सिवा बाक़ी औक़ात में उज़लत और गोशा नशींनी करे।"

चार आदतें

आप फ़रमाते हैं कि:

"शरा शरीफ़ में दोबारा तहज़ीबे नफ़्स के जो कुछ कि मतलूब है चार ख़स्लतों का क़ायम करना और उनकी अज़दाद का नफ़ी करना है। उनमें से एक तो तहारत हैं दोम अल्लाह ताला के वास्ते ख़ुज़ू करना और दिल की बीनाई को अल्लाह ताला शानहु की तरफ़ मुतवज्जोह करना सोम समाहत है और उसकी हक़ीक़त यह है कि नफ़्स जब इन्तिक़ाम और बुख़्ल व हिर्स वग़ैरा ख़्वाहिशाते बहमीया ख़सीसा का मग़लूब न होवे चहारुम अदालत है और वह ऐसी ख़स्लत है कि इन्साफ़ और कुल्ली सियासत का इन्तिज़ाम क़ायम रखने का सुदूर इसी ख़स्लत से होता है।"

अक़वाले ज़र्री

- अफ़राद इंसान में मुख़्तलिफ़ इस्तिदादें पैदा की गई हैं और हर शख़्स अपनी इस्तिदाद के मवाफ़िक़ कमाल पैदा करता है।
- हवादिस के असबाब में से एक सबब बख़्त भी है।
- हर ज़मानें में एक क़र्न है और हर क़र्न में अल्लाह ताला की रहमत की तक़सीमों का एक इल्म है जो अहले क़र्न को पहुंचता है।
- बैअत से मुरीद को अम्र करना है मशरुआत का और रोकना उसको ख़िलाफ़े शरा से और उसकी रहनुमाई की तरफ़ तस्कीने बातिनी के और दूर करना बुरी आदतों का और हासिल करना सिफ़ाते हमीदा का।

औराद व वज़ाइफ़

आपके औराद व वज़ाइफ़ कशूदकार की कुंजी हैं। ख़ास ख़ास हसबे ज़ेल हैं:

ग़नाये बातिनी व ज़ाहिरी के वास्ते

आप फ़रमाते हैं कि हर रोज़ ग्यारह सौ मर्तबा "يَامُغْنِيْ" और चालीस बार "سُوْرَةْ مُزمل" पढ़ना चाहिए और अगर चालीस बार न पढ़ सके तो ग्यारह बार पढ़े:[1]

फ़ाक़े से बचने के वास्ते

आप फ़रमाते हैं कि जो शख़्स सूरह वाक़िया हर रात पढ़े उसको फ़ाक़ा नहीं होता[2]।

हाजत पूरी होने के लिए

आप फ़रमाते हैं कि इस आयत को बारह सौ बार, बारह दिन तक पढ़ना चाहिए।[3] يَابَدِيْعُ الْعَجَائِبِ بِالْخَيْرِ يَابَدِيْعُ

हाकिम को मेहरबान करने के लिए

आप फ़रमाते हैं कि हाकिम के सामने जिस से डरता हो जब जाए तो कहे: كٓهٰيٰعٓصٓ كُفِيْتُ حٰمٓعٓسٓقٓ حُمِيْتُ

दाहिने हाथ की हर उंगली को बन्द करे। लफ़्ज़ अव्वल के हर हर्फ़ के तलफ़्फ़ुज़ के साथ बायें हाथ की हर उंगली को कब्ज़ करे लफ़्ज़े सानी के हर हर्फ़ के नज़दीक। फिर दोनों हाथों की उंगलियां बन्द किए जाए, फिर दोनों को खोल दे।[4]

1 2 3 4 क़ौले जमील फ़ी बयान सवाउस्सबील सफ़ा 101–103–105–110

बाब न. 20

हज़रत शाह मुहम्मद फ़रहाद देहलवी

हज़रत शाह मुहम्मद फ़रहाद देहलवी दुनियावी आलाइश से आज़ाद हैं। आप क़दवए औलियाए ज़मां हैं। जुब्दए सालिकां हैं। मुक्तदाये अहले तरीक़त हैं। आफ़ताबे सिपहर हक़ीक़त हैं।

वालिद माजिद

आपके वालिद बुजुर्गवार शाही दरबार से मुंसलिक थे। उम्राए दरबार में मुमताज़ थे। बुरहान पूर की सूबेदारी उनके सुपुर्द थी। सूबेदारी के फ़राइज़ आप बुरहान पुर में रहकर अंजाम देते थे।

वलादते बा सआदत

आप दिल्ली में पैदा हुए।

नामे नामी

आपका नाम मुहम्मद फ़रहाद है।

बुरहान पुर में .क्याम

जब आपके वालिद बुजुर्गवार बुरहान पुर के सूबे दार मुक़र्रिर हुए तो आप भी वालिद माजिद के सायए आतिफ़त में रहकर तालीम हासिल करते थे।

तलाशे हक़

हज़रत सैयद दोस्त मुहम्मद बफ़रमान अपने पीर व मुर्शिद हज़रत सैयदना शाह अमीर अबुल उला अहरारी अकबर आबादी बुरहान पुर में रहने लगे थे और बुरहान पुर को अपने फ़ुयूज़ात व करामात से महमूद व मनव्वर फ़रमा रहे थे। आप का शोहरा सुनकर लोग दूर दूर से आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते थे। आपके वालिद माजिद भी मा आप के कभी कभी हज़रत सैयद दोस्त मुहम्मद की ख़िदमत में हाज़िर होते थे। अभी आपकी उम्र बारह–तेरह साल की थी। शौके क़दम बोसी इस क़दर बढ़ा कि आप तने तन्हा हज़रत सैयद दोस्त मुहम्मद की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर होने लगे।

रोक टोक

जब आप के वालिद माजिद को यह बात मालूम हुई कि आप तने तन्हा हज़रत सैयद दोस्त मुहम्मद की ख़िदमत में जाते हैं आपको वहां जाने से रोका लेकिन इश्क़ अपना काम कर चुका था। बख़्त बेदार होने वाला था। यह रोक टोक बेकार साबित हुई

इल्तिमास

आपके वालिद माजिद ने जब यह देखा कि रोक टोक कारगर न हुई तो उन्होंने यह मुनासिब समझा कि हज़रत सैयद दोस्त मुहम्मद की ख़िदमत में जाकर अर्ज़ करें। चुनांचे आप हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि:[1]

"मेरे सिर्फ़ यही एक लड़का है। अगर वह हुज़ूर के पास आता जाता रहा तो दुनिया से बेकार हो जायेगा।"

यह सुनकर सैयद दोस्त मुहम्मद ने फ़रमाया कि:

"हम और तुम दोनों मिलकर मना करें कि वह यहां न आया करे।"

1 अनवारुल आरफ़ीन सफ़ा 473

कोशिशे ना तमाम

आपको फिर मना किया गया लेकिन आपने आना जाना न छोड़ा। इस तीरे इश्क़ का जो आप के सीने में चुभ चुका था निकालना अज़ बस दुश्वार व महाल था।

बारे दीगर

आपके वालिद के दिल को लगी हुई थी। फिर इस बारे में हज़रत सैयद दोस्त मुहम्मद से अर्ज़ किया। इस मर्तबा हज़रत ने कुछ और ही जवाब दिया। आपने फ़रमाया कि:[1]

"तुम चाहते हो कि वह बादशाह के सामने दस्त बस्ता खड़ा हो, लेकिन ख़ुदा वन्द ताला चाहता है कि बादशाह उसके सामने दस्त बस्ता खड़ा हो।"

बैअत व ख़िलाफ़त

आखिर कार वालिद माजिद ने फिर आप को आने जाने से मना न किया। कुछ दिनों के बाद ही आप हज़रत सयद दोस्त मुहम्मद के हल्के इरादत में दाखील हुए। बैअत से मुर्शफ और खरका खिलाफत से सरफराज़ हुए।

पीरू मुर्शद की वसीयत

आपके पीर व मुर्शिद हज़रत सैयद दोस्त मुहम्मद ने विसाल के करीब आप को वसियत फरमाई के इन के बाद बुरहान पुर में न रहें बलके दिल्ली में बुदो बाश इखत्यार करें और वहाँ रह कर मखलुक को रिशद व हिदायत और ताअलिम व तलकीन फरमाएँ।

दिल्ली में आमद

पीर व मुर्शिद की वसीयत व मुताबिक पीर व मुर्शिद के विसाल के बाद आप बुरहान पुर से तर्के सुकूनत करके दिल्ली में रौनक अफ़रोज़ हुए और तमाम उम्र दिल्ली में रहकर राहे हक़ दिखलाते रहे और मख़लूक की

---

1 अनवारुल आरफ़ीन सफ़ा 473

दस्तगीरी फ़रमाते रहे। लोग आपके फ़ैज़ का शोहरा सुनकर दूर–दूर से आते थे और आपके हल्के इरादत में दाख़िल होते थे। निस्बत अबुल उलाइया फ़रहादीया से सैंकड़ों को फ़ैज़ पहुंचा। बहुत से साहबे दिल बुज़ुर्ग हो गए।

वफ़ात शरीफ़

आपने 25/जमादिस्सानी सन: 1135 हि. को विसाल फ़रमाया। आपका मज़ार मुबारक दिल्ली में वाक़े है। आपके मज़ार से अब भी फ़ुयूज़ जारी हैं।

आपके खुल्फ़ा

हजरत शाह बुरहानुद्दीन खुदा नुमा और हजरत शाह असदुल्लाह आपके मुमताज खलीफा हैं।

सीरते मुबारक

आप वहीदुल असर और क़ुतबे वक्त थे आपकी तवज्जोह गैबी का यह असर होता था कि लोग बेखुद हो जाते थे। आप के फ़ैजे सोहबत व तरबीयत से लोग मुकामे मारफत तक पहुंच गए। आपको शैखुल जिन्न वल इन्स कहा जाता है। जिन्न इंसानी सूरत में आपकी मजलिसे मुआरिफ़ में हाजिर होकर फुयूज व बरकात हासिल करते थे। आप पर निस्बते इस्तिगराक़िया इस दर्जा गालिब थी कि आप ख़ूराक व पोशाक से बेख़बर रहते थे। जिक्र व फिक्र में हमा वक्त हमा तन मशग़ूल व मुस्तग़रिक़ रहते थे बाज औकात ऐसा होता था कि आप मसनद पर बैठे हुए कुछ तलाश करते होते थे। लोग पूछते "क्या तलाश कर रहे हैं?" आप फरमाते "फरहाद यहाँ बैठा था कहाँ गया–" ग़र्ज़ आपके औसाफ़े बशरीं सिफ़ाते मुल्की में तब्दील हो गए थे।

बाब न. 21

हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी

हजरत शाह अब्दुल मुहद्दिस देहलवी मुजमए फ़ुयूज सुब्हानी है और मंबए उलूमे रुहानी है। आप दुर्रे दरियाए मारफत हैं और गोहरे काने हकीकत हैं।

ख़ानदान

आपके खानदान और वालिद बुजुर्गवार हजरत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी का जिक्र पिछले बाब में आ चुका है। यहां यह कहना काफी होगा कि आपका खानदान इल्मे हदीस और फिकह के लिये मशहूर था।[1]

विलादत

आपकी विलादत सनः 1159 ई. में हुई।

नाम

आपका नाम अब्दुल अज़ीज़ है। आपका तारीखी नाम गुलाम हलीम था।

1 अन्जाफ

तालीम व तरबीयत

आपकी तालीम आपके वालिद माजिद की आग़ोश में हुई। आपने अपने वालिद से जमी उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी पढ़े।

बैअत व ख़िलाफ़त

आपको अपने वालिद बुजुर्गवार का मुरीद और ख़लीफ़ा होने का शर्फ़ हासिल है। आपका तरीके़ सुलूक अपने वालिद से मौसूम था। इस तरीके़ को नज़दीक ख़ुदा शनासी का रास्ता कहा जाता है। आपके वालिद हज़रत शाह वलीउल्लाह फ़रमाते हैं:[1]

> अलबत्ता हक़ सुब्हानहु ताला ने मुझ पर और मेरे ज़माने के लोगों पर बहुत बड़ा एहसान किया। क्योंकि मुझको वह तरीके़ सुलूक अता फ़रमाया जो दूसरे तरीक़ों से बहुत नज़दीक है और वह पांच फ़ज़ीलतों से मुरक्कब है। अव्वल ईमाने हक़ीक़ी। दोयम कुर्बे नवाफ़िल। सोम कुर्बे वजूब। चहारुम कुर्बे फ़राइज़। पंजुम कुर्बे मलाइक।
>
> जो शख़्स इस तरीके़ के हुसूल का इरादा करे गा, ख़ुदा वन्द करीम उसको ज़रुर अता फरमायेगा। क्योंकि अल्लाह ताला ने मुझको इल्हाम फ़रमाया है कि हमने तुझको इस तरीके़ का इमाम मुक़र्रर किया और तुझको आसमानों की बुलन्दी पर पहुंचा दिया और आज से कुल तरीके़ हुसूल कुर्बे हक़ीक़त बजुज़ इस तरीके़ के बन्द कर दिए गए और वह तरीक़ा सिर्फ़ तेरी मुहब्बत और इत्तिबा का है। पस जो शख़्स कि तुझसे दुशमनी रखेगा उस से बरकतें आसमान व ज़मीन की मसदूद कर दी गयीं यानी तेरे दुश्मन जमीए बरकाते हसना से महरुम कर दिए गए।"

वालिद का इन्तिक़ाल

आपकी उम्र जब सोलह साल की हुई, आपके वालिद माजिद ने सन: 1176 हि. में इस दारे फ़ानी से कूच फ़रमाया और आप अपने वालिद

---

1 रिसाला तफ़हीमाते इलाहिया

के सायए आतिफत से महरुम हो गए बज़ाहिर आप अपने वालदि की रहनुमाई से महरुम हो गए; लेकिन बातिनी तौर पर आप अपने वालिद माजिद के फुयूज़े रुहानी से मुस्तफीद और मुस्तफीज़ होते रहे। अपने वालिद की मसनदे हिदायत पर बैठकर रुश्द व हिदायत और तालीम व तल्क़ीन फरमाने लगे।

दर्स व तदरीस

आप सारी उम्र रिवायते हदीस की हिदायत में मशगूल रहे। दर्स व तदरीस आपका महबूब मशगूला था। हदीसे नबवी ﷺ का पौधा जो आपके वालिद माजिद ने हिन्दुस्तान में लगाया था, आपने उसको परवाना चढ़ाया। आपने दर्स व तदरीस, उफ़्ता फ़सले खुसूमात, तज़कीर व वाज़ और तालीम व तरबीयत में उम्र गुज़ारी। आपके बहुत शागिर्द थे। आप से सनदे तल्मीज़ फुयूज़े ज़ाहिरी व बातिनी बाइसे फ़ख्र समझी जाती थी। बहुत लोग आपके लमआते फ़ैज़ और बरकाते हसना से मनव्वर व मुस्तफ़ीद व मुसतफीज़ हुए। आपके बहुत से शागिर्दों का शुमार बड़े ऊलमा से व फुज़ला व मुहद्दसीन में होता है।

आपके शागिर्द

हसबे ज़ेल ऊलमा व फुज़ला व मुहद्दसीन को आपके शागिर्द होने का फ़ख्र हासिल है। आपके भाई मौलाना शाह रफ़ीउद्दीन साहब आपके नवासे शाह मुहम्मद इसहाक़ मुहद्दिस देहलवी। मुफ़्ती सदरुद्दीन साहब देहलवी। मौलाना रशीदुद्दीन खां देहलवी। हज़रत शाह गुलाम अली शाह। आपके दामादां मौलवी अब्दुल हयी। आपके हक़ीक़ी भतीजे मौलवी मुहम्मद इस्माईल शहीद। मौलाना मीर महबूब अली देहलवी और मौलाना हसन अली लखनवी।

शादी और औलाद

आपके कोई लड़का नहीं था। आपकी तीन लड़कियां आपकी हयात में फौत हो गई। आपकी बड़ी लड़की की शादी ईसा से हुई। दूसरी लड़की का निकाह शेख़ अफ़ज़ल बिन शेख़ अहमद से हुआ। तीसरी लड़की की शादी मौलवी अब्दुल हयी से हुई।

आख़िरी अय्याम

आप बीमार हुए और काफ़ी कमज़ोर हो गए। आप हफ़्ता में दो बार वाज़ फ़रमाते थे। इस बीमारी में जब आपके वाज़ का दिन आया। आपकी हिदायत के मुताबिक दो आदमी आपको पकड़े रहे। और जब वाज़ आपने शुरु कर दिया वह दोनों आदमी अलग हो गए। आप वाज़ कहते रहे। उस रोज़ आप इस आयते शरीफ़ा पर वाज़ फ़रमा रहे थे।[1]

ذَوِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰکِیْنَ وَابْنَ السَّبِیْلِ

इस फ़रमान के मुताबिक़ आपने अपने तमाम असबाब के हिस्से किए।

इस मिसरा को "मन नीज़ हाज़िर मी शवम तस्वीर जानां दर बग़ल" बदल कर इस तरह पढ़ा

"मन नीज़ हाज़िर मी शवम तफसीर कुरआन दर बग़ल"

वसीयत

आप कुर्ता धोतरका और पायजामा गाढ़े का पहनते थे। आपने वसीयत फ़रमाई कि:

"मेरा कफ़न मिस्ल मेरी ज़िन्दगी के पोशिश के हो।"

नमाज़े जनाज़ा के मुताल्लिक़ आपने वसीयत फ़रमाई कि शहर से बाहर हो। बादशाह को जनाज़ा के साथ रहने से मना किया जाए।[2]

वफ़ात

आपने शव्वाल सनः 1239 हि. को आलमे फ़ानी से आलमे जावेदानी की तरफ़ कूच फ़रमाया। आपकी वसीयत पर अम्ल किया गया। ख़लक़ का बेहद हुजूम था। पचपन 55 बार आके जनाज़े की नमाज़ पढ़ी गई। आप का मज़ार पुर अनवार आपके वालिद माजिद के मज़ार के करीब दिल्ली (मेंहदियां) में है। आपके मज़ार से फ़ुयूज़ व बरकात जारी हैं।

1 कमालाते अज़ीज़ी सफ़ा 191 2. कमालाते अज़ीज़ी सफ़ा 191

सीरते पाक

आप उलूमे ज़ाहिरी व बातनी में बेनज़ीर थे। फ़ज़ल व हुनर में बेअदील थे। लुत्फ़ व करम में बेमिसाल थे। इल्म व अमल में बेमसील थे। आपको ख़ातमुल मुफस्सरीन और इमामुल मुहद्देसीन कहा जाता है। आप सिर्फ एक साहबे दिल बुज़ुर्ग ही न थे बल्कि आप एक बुलंद पाया मुहद्दिस व मुफस्सिर व फकीह थे। आपको मुरज्जा उल्मा व मशायख़ीन होने का फख़ हासिल था। आपको फुनूते अक़्लीया व नक़लीया और उलूमे मुतदावला और ग़ैर मुतदावला पर इन्तिहाई उबूर था। आप कसरते तहफ़्फुज़ इल्मे ताबीर रुया। वाज़। इन्शाए। नुजूम। तहक़ीक़ाते नफ़ाइसे उलूम। मुज़ाकिरा व मुबाहिसा में मुमताज़ व मशहूर थे। आप आलिम बा अमल थे। आप साहब तक़वा साहबे फ़हम व ज़का, साहबे फ़रासत, साहबे दियानत, साहबे अमानत और साहबे विलायत थे।

इल्मी ज़ौक़

आपकी मशहूर तसानीफ़ हसबे ज़ेल हैं:

अजालए नाफ़िआ उसूले हदीस। बुस्तानुल मुहद्देसीन। मजमूअए ख़मसा रिसाइल। शरह मिनाजुल मन्तिक़। रिसाला फ़ज़ाइले खुल्फ़ाए आरबा अल मारुफ़ बा अज़ीज़ुल इक़्तिबास फ़ी फ़ज़ाइल बिना इन्साफ़। रिसाला तोहफ़ा इस्ना अशरा, तफ़सीर फ़तहुल अज़ीज़। रिसाला ग़िना। रिसाला बैए कनीज़ान। रिसाला वसीले निजात। रिसाला तफ़ज़ील। रिसाला उसूले मज़हब अबी हनफ़ीया। रिसाले मिआदे जिस्मानी।

आपके फ़तवे मशहूर हैं। आपके मक्तूबात मुख़्तलिफ़ मसाइल का हल पेश करते हैं

शेर व सुख़न

आपको शेर व सुख़न का भी ज़ौक़ था जैसा कि आपके हसबे ज़ेल अशआर से ज़ाहिर है।[1]

1. मल्फ़ूज़ात शाह अब्दुल अज़ीज़ सफ़ा 14

गर बगुलशन बगुज़री गुल बर रुख़्ते मफ़्तूं शवद
दर नुमाईं क़ामते ख़ुद सरवरा मौज़ूं शवद
कार बा माना अस्त दाना रा न बा नाम व निशां
जज़्बए लैला नदारद बयद अगर मजनूं शवद
मर्दे मुफ़्लिस रा जहां यक सर महल्ले आफ़त अस्त
शीशा चूं ख़ाली अस्त गर्द बाश रसद वाजूं शवद

आपकी रुबाई जो सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में हैं।[1]

يَا صَاحِبَ الْجَمَالِ وَيَا سَيِّدَ الْبَشَرْ مِنْ وَّجْهِكَ الْمُنِيْرَ لَقَدْ نَوَّرَ الْقَمَرْ
لَايُمْكِنُ الثَّنَاءُ كَمَا كَانَ حَقُّهٗ بَعْدَ ازْ خُدَا بزرگ تُوئى قِصَّه مختصر

आपकी तालीमात

आपकी तालीमात फ़ैज़ रसां होने के अलावा मामूलाते दीनी व फ़ुयूज़ व बरकात गो नागूं से ख़ाली नहीं हैं।

औलिया की क़िस्में

आपने फ़रमाया कि:[2] औलिया चार क़िस्म के होते हैं: बाज़ मुस्तग़रक़ होते हैं। बाज़ अहले हदीस होते हैं जैसे क़ुतब और ग़ौस वग़ैरह। बाज अहले तजरीद और अहले तफ़रीद कहलाते हैं।"

तवज्जोह की क़िस्में

आपने फ़रमाया कि:[3] "तवज्जोह चार क़िस्म की होती है: अव्वल इन्अकासी–दूसरी अलक़ाई–तीसरी ज़ज़्बी–चौथी क़िस्म यह है कि तवज्जोह देने वाले के तमाम औसाफ़ तालिब में सरायत कर जाएं। यहां तक कि सूरते ज़ाहिरी भी एक हो जाए।"

---

1. कमालाते अज़ीज़ी सफ़ा 191
2,3. मल्फ़ूज़ात शाह अब्दुल अज़ीज़ सफ़ा 9,18.

बुजुर्गों की किस्में

आपने फ़रमाया कि:[1] "बुजुर्ग चार किस्म के होते हैं:

अव्वल सालिक मज्ज़ूब कि इब्तिदा ज़माना में" तो ख़ुद कोशिश की और आख़िर में काशीश हुई। यह सब से बेहतरीन हैं। दूसरे मजज़ूब सालिक कि अव्वल जज़्ब से सरफ़राज़ हुए फिर सुलूक अख़्तियार फ़रमाया जैसे हज़रत. मूसा अलैहिस्सलाम आग लेने तशरीफ़ ले गए, तजल्ली बारी नसीब हुई तीसरे सालिक बख़्त मुशर्रफ़ बजज़्ब नहीं होते हैं। चौथे मजज़ूब महज़ कि तजल्ली बारी की वजह से उनकी अक़्ल सल्ब हो गई है।"

ख़िलाफ़े शरा अफ़आल का असर

आपने फ़रमाया कि:[2] "बेशक ख़िलाफ़े शरा अफ़आल से तकद्दुर ज़रुर हासिल होता है और बाज़ अफ़आल ख़िलाफ़े शरा का तो यह असर है, कि जो निसबत ताल्बे को अल्लाह तआला के साथ हासील होती है, बिल्कुल क़ता कर देते हैं। जैसे मकर, दग़ाबाज़ी, फरेब, नख़्वत, तकब्बुर, खुद नुमाई, तलबे दुनिया, तलबे जाह वग़ैरह। बाज़ से सिर्फ़ यह होता है कि अगर सहवन कभी कोई गुनाहे सग़ीर हो गया हो तो दिल पर बजाए नूरानियत के एक क़िस्म की ज़ुल्मत और तारीकी मालूम होने लगती है।"

पुख़्ता आलिम की तारीफ़

आपने फ़रमाया कि:[3] "पुख़्ता आलिम वह है कि जिस को चार चीजों से मल्का हो (1) दर्स व तदरीस (2) मुताला–ए–कुतुब (3) तहरीर व तक़रीर (4) मुनाज़रा।"

कुरआन शरीफ़ की तिलावत के आदाब

आपने फ़रमाया कि:[4]

"तिलावते कुरआन शरीफ़ में तहज़ीब और रु बा क़िब्ला होने और हुरुफ़ को बख़ूबी अदा करना और मद्दो शकर

1, 2, 3. मल्फ़ूज़ात शाह अब्दुल अज़ीज़ सफ़ा 20, 21, 34

4. फ़तवा आज़ीज़िया मजमूआ रिसाला ख़मसा शाह अब्दुल अज़ीज़ रिसाला फ़ैज़े आम सफ़ा 370

को न छोड़ना और मक़ामे वक़्फ़ में ठहर जाना। यह आदाबे ज़ाहिरी हैं और आदाबे बातिनी यह कि मुब्तदी को चाहिए कि यह तसव्वुर करे कि गोया रुबरु व ख़ुदा वन्द आलम के पढ़ रहा है और अल्लाह ताला बजाए उस्ताद के बैठकर सुन रहा है और मुन्तही को चाहिए कि यह तसव्वुर करे कि यह कलाम ख़ुदा से बिला वास्ता सुन रहा हूँ..."

मुनाज़िरा

एक पादरी मिस्टर मटकफ़ के साथ आपकी ख़िदमत में आए। यह शर्त ठहरी कि अगर पादरी हार गया तो वह दो हज़ार रुपये आपको देगा और अगर आप हार गए तो आपकी तरफ़ से दो हज़ार रुपये मिस्टर मटकफ पादरी को देंगें।

पादरी का सवाल: तुम्हारे पैग़म्बर हबीबुल्लाह हैं। तुम्हारे पैग़म्बर ने बवक़्ते क़त्ल इमाम हुसैन फरियाद न की। हालांकि हबीब का महबूब ज़्यादा तर महबूब होता है। ख़ुदा वन्द ताला ज़रुर तवज्जोह फ़रमाता।

आपका जवाब: पैग़म्बर साहब[1] वास्ते फ़रियाद के जो तशरीफ़ ले गए पर्दा–ए–ग़ैब से आवाज़ आई:

हां तुम्हारे नवासे पर क़ौम ने ज़ुल्मव सितम किया और शहीद किया, लेकिन हम को उस वक़्त अपने बेटे ईसा को सलीब पर चढ़ने का रंज ताज़ा हो गया। पस हमारे पैग़म्बर साहब ख़ामोश रहे। उस जवाब से पादरी लाजवाब हो गया और दो हज़ार रुपये बाबत शर्त आपको पेश किए।'

आपके फ़तवे

मस्ला: तवाइफों यानी कस्बी औरतों के जनाज़ा की नमाज़ पढ़नी दुरुस्त है या नहीं?

---

1. कमालाते अज़ीज़ी सफा 171 फतावा अल अज़ीज़ीया सफ़ा 5

जवाब: जो मर्द उनके आशना हैं, उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ते हैं तो उनके जनाज़ा की नमाज़ भी पढ़ना चाहिए।[1]

एक सौदागर नेदिल्ली से रवाना होते वक़्त अपनी बीवी से कहा कि अगर तुम अपने बाप के घर जाओगी तो मेरी तरफ़ से तुमको तलाक़ है।" जब सौदागर अपने घर वापस आया तो उसको मालूम हुआ कि उसकी बीवी अपने बाप के घर गई थी। उसने उल्मा से फ़तवा तलब किया। उल्मा ने फ़तवा दिया कि तलाक़ हो गई। जब वह शख़्स आपके पास आया तो आपने यह फ़तवा दिया कि: "जब बाप उस औरत का मर गया, तब वह गई। इस सूरत में वह घर उसके बाप का न रहा बल्कि वह घर औरत का हो गया। पस वह अपने घर गई न कि बाप के।"

सब उल्मा ने आपकी राय से इत्तिफ़ाक़ किया।[2]

अक़वाल

- अल्लाह के ज़िक्र से क़ल्ब को इत्मीनान होता है।
- इस्तीदाद के लिए मोहब्बत शर्त है।
- सुलूक इज्तिहादाते कस्बी का नाम है।
- जज़्बे महज़ इनायते ख़ुदावन्दी है।
- हर दीन में पांच हालात की रिआयत वाजिब है। अक़्ल की हिफ़ाज़त, नफ़्स की हिफ़ाज़त, दीन की हिफ़ाज़त, नसब की हिफ़ाज़त, माल की हिफ़ाज़त।
- इबादत का वजूद बदून एहसान के ऐसा समझना चाहिए कि जैसे रुह के बदन के।
- इंसान में हमदर्दी होना चाहिए, ख़ास कर क़रीब के ताल्लुक़ात में वफ़ादारी का बरताव ज़रुरी है।

औराद व वज़ाइफ़

आप फ़रमाते हैं कि रिज़्क़ के वास्ते चाश्त के वक़्त चार रकात नमाज़ पढ़े और फिर सज्दा में जाकर एक सौ चार मर्तबा يَا وَهَّابُ पढ़े। अगर फ़ुर्सत न हो तो पचास मर्तबा पढ़े।[1]

1. कमालाते अज़ीज़ी सफ़ा 176 2. कमालाते अज़ीज़ी सफ़ा 176
3. फ़तवा अज़ीज़िया सफ़ा 390, 391

आप फ़रमाते हैं कि इन आयतों के वसीले से जो दुआ करे कुबूल हो।[1]

1 لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَکَ اِنِّی کُنْتُ مِنَ الظَّالِمِیْنَ. فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَنَجَّیْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ وَکَذَالِکَ نُنْجِی الْمُؤمِنِیْن ۔

2 رَبِّ اِنِّي مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِیْنَ ۔

3 وَاُفَوِّضُ اَمْرِیْ اِلَی اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ بَصِیْرٌ بِالْعِبَادِ ۔

4 قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَکِیْلُ.

5 رَبِّ اِنِّي مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ.

आप फ़रमाते हैं कि तसख़ीर हुक्काम के वास्ते यह दुआ सत्तरह बार पढ़कर उनकी तरफ़ दम करे।

یَارَحْمٰنَ کُلِّ شَیْئٍ وَّارْحَمَهٗ یَا رَحْمٰنُ

और अपने मकान में हाकिम की तरफ़ रुख़ करके दो सौ बार यह पढ़े और दुआ करे।[1]

یَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْب

कश्फ़ व करामात

आप जब जुमा के वास्ते जामा मस्जिद जाते, अमामा आंखों तक बांधते थे। एक शख़्स मुसम्मा फ़सीहुद्दीन ने उसका सबब दरियाफ़्त किया। आपने अपनी टोपी उसके सर पर रख दी। वह बेहोश हो गया। उसने बताया कि जामा मस्जिद में पाँच छः हज़ार आदमियों में सिर्फ़ सौ सवा सौ आदमियों की शक्ल आदमी की थी बाक़ी कोई बन्दर, कोई रीछ कोई किसी जानवर की शक्ल में था। आपने उस शख़्स से फ़रमाया कि यही सबब है। किस की तरफ़ देखें।[2]

1. फ़तावा अज़ीज़िया सफ़ा 372 2. फ़तावा अज़ीज़िया सफ़ा 377
3. कमालत अज़ोज़ो सफ़ा 180, 181

कर्नल इस्कज़ आप से अक़ीदत रखता था। उसके औलाद नहीं थी। उसने आपसे दुआ की दरख़्वास्त की। आपने उसके वास्ते दुआ फ़रमाई और यह ख़ुशख़बरी दी कि लड़का होगा। आप ने उसको हिदायत फ़रमाई कि जब लड़का हो तो उसका नाम यूसुफ़ रखना। जब लड़का पैदा हुआ कर्नल ने उसका नाम जौज़फ़ इस्कज़ रखा। जौज़फ़ और यूसुफ़ एक ही बात है सिर्फ़ ज़ुबान का फ़र्क़ है।'

1. कमालत अज़ोज़ो सफ़ा 180, 181

बाब न. 22

हज़रत शाह मुहम्मद आफ़ाक़ देहलवी

हज़रत शाह मुहम्मद आफ़ाक़ शहरऐ आफ़ाक हैं। आप कुतबे ज़मां थे। फ़ख्ने ज़मां व ज़मीं हैं। ग़व्वास दरियाए दीन है। मुहर्रम असरार हैं। मख़ज़ने अनवार हैं।

विलादते बा सआदत

हज़रत हजरत जाने जानां मज़हर शहीद की दुआ से पैदा हुए थे। अपकी विलायदते बा सआदत सन: 1160 हि. में वाके़ हुई।

नामे नामी

आपका नामे नामी मुहम्मद आफ़ाक़ है।

बैअत और ख़िलाफ़त

आप हज़रत ख़्वाजा ज़ियाउल्लाह नक़्शबन्दी के हल्क़े इरादत में दाख़िल हुए। और मुरीदी से मुशर्रफ़ होने के कुछ अरसे बाद आप ख़िरके ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ व मुमताज़ हुए। रियाज़ात व मुजाहिदात के बाद दर्जे कमाल को पहुंचे।

शजरए बैअत

मुहम्मद आफ़ाक मुरीद हज़रत ख़्वाजा ज़ियाउल्लाह वह मुरीद ख़्वाजा मुहम्मद जुबेर वह मुरीद ख़्वाजा हुज्जतुल्लाह मुहम्मद नक़्शबन्द सानी वह मुरीद मुहम्मद मासूम वह मुरीद हज़रत मुजद्दिद व ता सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।[1]

सैर व सियाहत

आप अफ़ग़ानिस्तान तशरीफ़ ले गए। वहां लोगों ने आप से बहुत फ़ैज़ पाया। बहुत लोग आपके हल्के इरादत में दाख़िल हुए। शाह अफ़ग़ानिस्तान ज़मां शाह आप का मुरीद, मोतक़िद और मिन्क़ाद था।

आप की बुज़ुर्गी

आपकी बुज़ुर्गीदगी और बुज़ुर्गी का अन्दाज़ा उस से होता है कि हज़रत शाह गुलाम अली अपने बाज़ मुरीदों को आपकी ख़िदमत में भेजा करते थे। यह मुरीद आपकी ख़िदमत बा बरकत में बाद तालीम व तकमील हाज़िर होते थे, लेकिन उनकी तकमील उसी वक़्त पूरी समझी जाती थी कि जब आप उनको मुकम्मल पाते।

वफ़ात शरीफ़

आप 7/मुहर्रम सनः 1251 हि॰ को जवारे रहमत में पेवस्त हुए आपका मज़ारे फ़ैज़े आसार दिल्ली में हाजत रवाये ख़लक़ है और मशहूर हैं।

आप के खुलफ़ा

हज़रत मोलाना फज़लुरहमान गनज मुरादआबादी और हज़रत मोलाना नसीर उद्दीन आप के ममताज़ खुलफ़ा हैं।

सीरते पाक

आप साहबे जज़ब थे। हर वक़्त मसतगरक रहते थे। नसबते इशक आप पर गालिब थी। आप जामा शरीअत व तरीकत थे। इसरारे

---

1. जिया उल कलुब सफ़ा 63

हक़ीक़त से वाकिफ़ थे। आप मुरशिदे कामिल थे। फकर, तवक्कूल, कनाअत, ज़हदुराअ, इबादत, रियाज़ात, मुजाहिदात और तक़वे में अपनी नज़ीर नहीं रखते थे। आप शेख़ वक़्त थे।[1]

तालीमात

सिलसिलाए मुजद्दिया जिस के आप एक मुमताज़ बुज़ुरर्ग हैं। ज़िकर नफ़ी व असबात और ज़िकर इसमे ज़ात पर काफी ज़ोर देता है। हज़रत मुजद्दिद ने कशफ से ये बात दरयाफत की के इंसान दस लताईफ़ से मज़िय्यन व मुरक्किब है। पांच लताईफ आलमे अमर के हैं और पांच लताईफ आलमे ख़लक के हैं। कलब रूह, सिर्री, ख़फ़ी और इख़फ़ी आलमे अमर के लताईफ हैं और नफ्स व अनासिर अरबा आलमे ख़लक लताईफ़ के हैं।

आलमे अमर का हर एक लतीफा एक पेगम्बर के ज़रिए कदम वाके है। लतीफा कलबे हज़रत आदम अलैहीस्सलाम के जेरे कदम वाके है। लतीफा सिर्रे हज़रत मूसा अलैहीस्सलाम के ज़ेरे कदम वाके है। लतीफा खफी हजरत ईसा अलैहीस्सलाम के जेरे कदम वाके है और लतीफा ईख़फी हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ेरे कदम वाके है।

इस के बाद तरीके मुकरर किए। पेहला तरीका ज़िकर, दूसरा तरीका मुराकिबात और तीसरा तरीका तवज्जे मुरशिद असल असूल है।

ज़िकर दो किसम का है। ज़िकर इसम ज़ात और ज़िकर नफ़ी ज़ात व असबात।

पहला दाएरा विलायते सगरया का मुराक़्बा है। फिर दायराए किबरया का मुराक़्बा है बादेअज़ां दायराए विलायते अलया का मुराक़्बा है। फिर दायराए कमालाते रिसालत का फिर कमालाते ओलुलअज़्म, फिर दायराए हक़ीक़ते सलावात फिर दायराए माबुदियत सरफ फिर हक़ीक़ते ईबराहीमि, फिर दायराए हक़ीक़ते मूसा फिर दायराए हक़ीक़ते मोहम्मदी, फिर दायराए हक़ीक़ते अहमदी, फिर दायराऐ हब्बे सिंफ़, फिर दायराउलतअय्यन।

1. अनसाब उल ज़ाहरीन

तवज्जे मुरशिद से ये मुराद है कि मुरशिद अपने दिल को तालिब के दिल के मुकाबिल करे और इस अमर की हिम्मत सरफ करे कि ज़िकर के अनवार जो इस के दिल में हैं वेह तालिब के दिल में जलवा गर हों।

आप ने तसव्वरे शेख़ पर बहुत ज़ोर दिया है। आप ज़िकरे शश जहत करते थे। यानी लतीफ़ाए आलम। इस के बाद नफी असबात बहबस दम बा अददे ताक़ यानी एक दम में ईक्कीस बार एहुँचाते थे।[1]

आप की तवज्जे के चार तरीके थे : नज़री, लिसानी, क़लबी और रूही।

अक़वाल

आप के बाज़ अक़वाल हसब ज़ेल हैं :

- हम सब अज़ीज़ व अक़रबा, दोस्त व आशनाओं को चाहते हैं कि कुछ होएं। लेकिन कोई नहीं होता जिस को खुदा चाहता है हो जाता है।
- एक तवज्जे में सब मक़ामात ते हो सकते है, लेकिन मुरीद में इसतादाद होनी चाहिए।
- ग़ोस हो या क़ुतब जो ख़िलाफ़े शराअ करे कुछ भी नहीं।

ओरादे वज़ाईफ़

आप हसबे ज़ेल दरूदे शरीफ़ पढ़ा करते थे।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ علٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِک
وَسَلِّمْ

आप रोज़ाना दस हज़ार बार दरूदे शरीफ़ पढ़ते थे। इस के अलावा आप कलिमाए तय्यीबा रोज़ाना पचास हज़ार मरतबा पढ़ते थे। नमाज़ ज़ोहर के बाद हज़बुलबहर पढ़ना आप का मामुल था।[1]

1,2. मसालिक उल सालकीन जिल्द दोम सुफ़ा 176

कशफ़ व करामात

हफ़िज अशरफ़ साहब शाईर न थे। एक रोज आपने अपनी टोपी उनके सर पर रखदी। उसी रोज से वेह एक अच्छे शाईर हो गए।

हज़रत मोलाना फज़ल उररहमान साहब देहली से अपनी वालिदा को पांच रूपे भेजना चाहते थे। आप ने उन से रूपे ले लिए और फरमाया के भेज दिए जाएँगे। बादे अजों हज़रत मोलाना से फरमाया के उन के रूपे उन की वालिदा के पास पहुँच गए। कुद दिनों के बाद जब हजरज मोलाना साहब वालिदा से मिलने गए तो आप को मालुम हुआ कि उसी रात को आप ने दरवाज़े पर पुकार कर येह रूपे आप की वालिदा को दिये, और उन के बैटे की ख़रियत से उन को मुतला फ़रमाया।

बाब न. 23

हज़रत शाह अबु सईद देहलवी

हज़रत शाह अबु सईद जिगर गोशा औलिया हैं। आप मख़ज़ने असरारे इलाही हैं। मादने अनवारे लामुतनाही हैं।

ख़ानदानी हालात

आपका नसब नामा पिदरी हज़रत शेख़ अहमद सर हिन्दी मुजद्दिद आलिफ़ सानी[रह.] तक इस तरह पहुंचता है:[1]

अबु सईद बिन शेख़ सफ़ीयुल क़दर बिन शेख़ अज़ीज़ुल क़दर बिन शेख़ मुहम्मद ईसा बिन शेख़ सैफुद्दीन बिन शेख़ मुहम्मद मासूम बिन शेख़ अहमद सरहिन्दी अलमुक़ल्लिब बा मुजाद्दिद अलिफ़ सानी[रह.]

वालिद बुज़ुर्गवार

आपके वालिद माजिद का नाम शेख़ सफ़ीयुल क़दर है।

विलादत

आप 2/ज़ी क़ादा सनः 1196 हि. को मुस्तुफ़ा बाद उर्फ़ राम पुर में पैदा हुए।

1 हिदायुतुत्तलिबीन सफ़ा 1

नाम

आपका नाम अबु सईद है।

तालीम व तरबीयत

दस साल की उम्र में आपने क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ किया। क़ारी नसीम से क़िराअत हासिल की। उलूमे अक़लीया व नक़लीया में कमाल हासिल किया। हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ से हदीस की सनद हासिल की।

बैअत व ख़िलाफ़त

तालीम से फ़ारिग़ होकर ख़ुदा तल्बी का रास्ता अख़्तियार किया। अव्वल अपने वालिद माजिद की सोहबत में रहकर इस्तिफ़ादा हासिल किया। फिर वालिद बुज़ुर्गवार की इजाज़त से हज़रत शाह दरगाही की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उनकी बैअत से मुशर्रफ़ हुए। चंद ही रोज़ में हज़रत शाह दरगाही ने आप को इजाज़त व ख़िलाफ़ अता कर के रूख़सत फ़रमाया।[1]

फिर आप राम पुर से दिल्ली तशरीफ़ लाए। एक ख़त हज़रत क़ाज़ी सनाउल्लाह पानी पती की ख़िदमत में इरसाल फ़रमाया। हज़रत क़ाज़ी साहब ने आपके ख़त का जवाब देते हुए तहरीर फ़रमाया कि हज़रत शाह गुलाम अली से बेहतर कोई दुर्वेश नज़र नहीं आता।

इस ख़त के मिलने के बाद आप हज़रत शाह गुलाम अली की ख़िदमत में हाज़िर हुए। बैअत का इश्तियाक़ ज़ाहिर किया। आपकी दरख़्वास्त क़ुबूल हुई। हज़रत शाह गुलाम अली ने अपने हल्के इरादत में आपको दाख़िल करके सरफ़राज़ किया। आपके पहले पीर हज़रत शाह दरगाही उस वक्त ज़िन्दा थे। आप उनका वैसा ही अदब व एहतराम करते थे, जैसा कि पहले करते थे।

शजरे बैअत

आपका शजरे तरीक़त हज़रत शेख़ अहमद सरहिन्दी तक इसतरह पहुंचता है।

---

1. अनवारुल आरफ़ीन सफ़ा 497

अबु सईद वह मुरीद हज़रत शाह गुलाम अली वह मुरीद हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां वह मुरीद हज़रत नूर मुहम्मद बदायूं वह मुरीद हज़रत सैफ़ुद्दीन वह मुरीद हज़रत मुहम्मद मासूम वह मुरीद हज़रत शेख़ अहमद सरहिन्दी[रह.][1]।

मन्सबे क़ौमीयत

आप फ़रमाते हैं कि:[2]

"अल्हमदुलिल्लाह! एक मुद्दत दराज़ के बाद सन एक हजार दो सौ तैंतीस (1233) माह जमादिल अव्वल की पन्द्रवीं को हज़रत पीर दस्तगीर ने बन्दा को क़ौमीयत की बशारत अता फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि चूंकि मुझको इल्हाम हुआ है, इसी वास्ते मैंने तुझको यह ख़ुशख़बरी दी है।"

आपको लखनऊ में तलब फ़रमाया। एक मक्तूब में आपको तहरीर फ़रमाया:[3]

"मैं देख रहा हूँ कि इस आली शान ख़ानदान के मक़ामात का आख़िरी मन्सब तुम्हारे मुताल्लिक किया गया है और इस से क़ब्ल अपनी साबिक़ बीमारी में मैंने देखा था कि तुम मेरी चारपाई पर बैठे हो और मन्सबे क़ौमीयत तुमको अता किया गया है। इन तवज्जुहाते अजबीया ग़रबीया के क़ाबिल तुम्हारे सिवा और कोई नज़र नहीं आता। लिहाज़ा इस ख़त को देखते ही तने तन्हा उस तरफ़ रवाना हो जाओ और बरख़ुर्दार अहमद सईद को अपनी जगह छोड़ आओ।"

एक दूसरे मक्तूब में आप को तहरीर फ़रमाया कि:[4]

"ग़ैब से अल्क़ा हो रहा है कि अबु सईद को तलब करना चाहिए और हज़रत मुजद्दिद रज़ियल्लाहु ताला की रुहे

1. हिदायतुत्तलिबीन सफ़ा 1 2. हिदायतुत्तलिबीन सफ़ा 95
3 हिदायतुत्तालिबीन सफ़ा 96–97 4. हिदायतुत्तालिबीन सफ़ा 98–101

मुबारक भी इस पर बाइस है और मैंने देखा है कि तुमको मैंने अपनी दायीं रान पर बिठाया है और वह मन्सब जिसके आसार अन्क़रीब तुम पर वारिद होंगे,तुम्हारे सुपुर्द किया है। हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब और शहर के अकसर रुऊसा अपकी अख़लाक़े हसना और मस्कनते तबा और शिकस्ता हाली और सादगी मिज़ाज और इमानत दारी और ज़िक्रव शुग़ल और तहम्मुल व सब्र पर ऐतिमाद करके आपके बुलवाने को बिला शिरकत अहदे सही व दुरुस्त समझ रहे हैं और मुझको भी इल्हाम हुआ है कि उस काम की क़ाबलीयत सिर्फ़ आप ही में है। यहां रहो और तरीक़ा शरीफ़ा को रिवाज़ दो और रोज़गार व मआश की तदबीर बहवालए ख़ुदा करो।

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْل

ख़ुदाए ताला का वादा काफ़ी है।

बफ़रमाने पीर व मुर्शिद आप दिल्ली आकर पीर व मुर्शिद की जगह बैठे और रुश्द व हिदायत में मशग़ूल हुए।

पन्द व नसाइह

आपके पीर व मुर्शिद ने आपको हसबे ज़ेल नसीहतें फ़रमाईं।

- अपनी बातनी निस्बत को हमेशा महफ़ूज़ रखना।
- हुज़ूर व तवज्जोह में मशग़ूल रहना।
- जुमला औक़ात वह हालात में याद दाश्त को न छोड़ना।
- तमाम आमाल में हज़रत हबीब रब्बुल आलमीन के सुनन की मुताबियत करना।
- अपने तमाम औक़ात को नवाफ़िल इबादत के साथ गुज़ारना और कमाल तादील अरकान के साथ अदाए नमाज़ करना और दूसरे औराद व अज़्कर व तिलावते कलाम मजीद व दरुद व इस्तिगफ़ार व तफ़वीज़ उमूर बहज़रते कर्दगार सुब्हानहु से मामूर रखना।

- तरीक़ा के सुलूक से मक़सूद अख़लाक़ की आरास्तगी और जनाबे इलाही में हमेशा मतवज्जोह रहना है ताकि शिकस्तगी व नियाज़मन्दी और इख़लास हर वक्त मौजूद रहे। इसका ज़ाहिर हबीबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों का पाबन्द और बातिन मा सिवाये हक़ से रुगरदां और जनाबे किबरियाई सुब्हानहु की तरफ़ मुतवज्जोह रहे।
- ग़ैब से जो कुछ आमद हो अपनी और अपने मुताल्लिक़ीन की ज़रुरतों पर सर्फ़ करें और बाक़ी फ़ुक़रा पर तक्सीम फ़रमा दें।

वफ़ात शरीफ़

आप सनः 1249 हि. में हरमैन शरीफ़ की ज़ियारत के लिये रवाना हुए–

ज़ियारते हरमैन शरीफ़ से मुशर्रफ़ होकर आप दिल्ली रवाना हुए। 22/रमज़ान को टोंक में रौनक़ अफ़रोज़ हुए। बीमारी की वजह से वहीं क़याम फ़रमाया। ईदुल फ़ितर के रोज़ ज़ुहर व असर के दरमियान सनः 1250 हि. में आपने विसाल फ़रमाया। टोंक में तजहीज़ व तकफ़ीन की गई। चालीस रोज़ के बाद आपका ताबूत दिल्ली लाया गया और नाशे मुबारक को निकाल कर दफ़न किया गया।

ख़लीफ़ा

आप के फ़र्ज़न्दे अकबर हज़रत शाह अहमद सईद आप के ख़लीफ़े अकबर और सज्जादा नशीन हैं।

सीरते मुबारक

आप सख़्ती व तुल्ख़ी से दिल बर्दाश्ता न होते थे। फ़क़र व फ़ाक़ा पर फ़ख्र करते थे। अपने पीर मुर्शिद के एहकाम की पाबन्द सख़्ती से करते थे। एक बुलन्द पाया आलिम थे और साहबे करामत दुर्वेश थे।

इल्मी ज़ौक़

आपकी किताब हिदायतुत्तालिबीन आप की इल्मी यादगार है।

तालीमात

तालिब आपकी तालीमात से काफ़ी फ़ायदा उठा सकता है।

इस्मुज़्ज़ाहिर व इस्मुल बातिन के दरमियान फ़र्क़।

आप फ़रमाते हैं:[1] इस्मुज़्ज़ाहिर और इस्मुल बातिन के दरमियान यह फ़र्क़ है कि इस्मुज़्ज़ाहिर की सैर में ज़ात का लिहाज़ करने के बग़ैर ही सिफ़ाती तजल्लियात वारिद और इस्मुल बातिन की सैर में गो अस्मा सिफ़ात की भी तजल्लियात मयस्सर आती हैं, मगर कभी ज़ाते तआलत व तक़द्दुस्त भी मुशाहिदा में आ ही जाती है।"

कमालाते नबूवत का फ़ैज़

आप फ़रमाते हैं:[2] "पीर दस्तगीर ने उसी साल के ज़ीक़ादा महीने में अपने गुलाम के उन्सुरे ख़ाक पर तवज्जोह फ़रमाई और कमालते नबूवत का फ़ैज़ (यानी तजल्ली ज़ाती दायमी) मेरे इस लतीफ़ा पर वारिद फ़रमाया। उस मक़ाम के उलूम व मआारिफ़ बस यही हैं कि तमाम उलूम व मआरिफ़ मफ़क़ूद हो जाएं और बातिन के तमाम हालात ही बे शनाख़्त हो जाएं और उस मकाम में बेरंगी और बे कैफ़ी हासिलुल वक्त हो जाती है और ईमानियत और अक़ाइद में भी हर तरह से कुव्वत पैदा हो जाती है। और इस्तिदलाल इल्मे बदीही हो जाता है। और इस मक़ाम के मुआरिफ़ अंबियाए किराम की शरीअतें हैं। इस मक़ाम मे बातिन की उस्अत और फराख़ी इस क़दर बढ़ जाती है कि तमाम वलायत (आम इस से की वलाय से सुगरा हो या वलायते कुबरा या वलायते उलीया) कि उस्अत फ़राख़ी इस निस्बत के पहलू में महज़ नाचीज़ और तंगी ही तंगी है और कुछ भी नहीं।"

1. हिदायतुत्तालिबीन सफ़ा 53– 2. हिदायतुत्तालिबीन सफ़ा 61–62

दायरा-ए-हक़ीक़ते सलात

आप फ़रमाते हैं कि:[1] "उस दायरा में बीचों हज़रत ज़ात की कभाल उस्अत मुशाहिदा में आई। उस मक़ाम की उस्अत और बुलन्द का क्या हाल बयान करे। मगर इस क़दर तो ज़रूर जान लो कि हक़ीक़ते क़ुरआन मजीद उसका जुज़ और दूसरा जुज़ हक़ीक़ते काबा है। उस मक़ाम के वरदात व क़फियात की क्या वास्फ बयान करे उस मकाम में हज़रत बेचूं की कमाले उस्अत का मुराक़बा करते हैं। जिस सालिक ने इस मुक़द्दस हक़ीक़त से कुछ भी ख़त हासिल किया है वह गोया अदाये नमाज़ के वक्त आलमे दुनिया से निकल कर आलमे हासिल कर लेता है। तकबीरे तहरीमा के वक्त दोनों जहां से हाथ उठा, और दोनों जहान पसे पुश्त डाल कर अल्लाह अकबर का नारा लगाता हुआ हज़रत सुलतान ज़ीशान जल्ला शानहु के दरबार में हाज़िर होता है और बारगाहे जल्ला जलालहु की अज़मत व किब्रियाई की हैबत के आगे अपने आपको ज़लील व न चीज़ ख़्याल करके महबूबे हक़ीक़ी पर कुरबान हुए जाता है और क़राअत के मौहूबे वजूद से जो इस मर्तबाके लाइक़ है, मौजूद होकर हज़रत हक सुब्हानहु के साथ मुतकल्लिम और उस जनाब से मुख़ातिब होता है। उसकी ज़ुबान गोया मौसूमी शजरा बन जाती है।

जब रुकू करता है और ग़ायत दर्जे का ख़ुशू भी तो बिज़्ज़रुर ज़्यादा कुर्ब के साथ मुमताज़ होता है।

और तस्बीह के वक्त एक और ख़ास कैफ़ियत से मुशर्रफ़ हो जाता है फिर अब तो ख़्वाह मख़्वाह हमद व सना करता हुआ क़ौमा करता है और दोबारा हज़रते हक़ के हुज़ूर के बराबर सीधा खड़ा हो जाता है।

और क़ौमा करने में मेरे फ़हमे नाक़िस में यह राज़ है कि चूंकि अब अदाये सुजूद का इरादा करता है

तो क़याम से सज्दा की तरफ़ जाने में रुकू से सुजूद की जानिब जाने की निस्बत तज़ल्लुल और इन्किसार ज़्यादा है।

और अदाये सुजूद के वक्त एक ख़ास कर्ब जो हासिल होता है उसका क्या बयान किया जाए। उसके इदराक में तो अक्ल भी आजिज़ व क़ासिर है मालूम होता है कि सारी नमाज़ का ख़ुलासा सुजूद ही सुजूद है।

और चूंकि कुर्बे सुजूद से ख़्याल हुआ था कि अनका (मतलूबे हक़ीक़ी) दाम में आ फंसा। लिहाज़ा अल्लाह अकबर कहता हुआ जलसा में बैठ गया। यानी अल्लाह ताला उस से बरतर है कि मैं उसकी कमा हक़्क़हु इबादत कर सकूं और कमा नबीगी उसका कर्ब हासिल कर लूं।

और इसी साबिक़ जुर्म की जलसा में माफ़ी मांगता है।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ

फिर और ज्यादा कुर्ब तलब करने के वास्ते दोबारा सज्दा करता है। अज़ां बाद तशह्हुद में बैठकर उस नेमते क़ुर्ब के एहसान व इनाम पर बारी ताला की जनाब में शुक्र व तहीयात बजा लाता है।

और कलमे शहादत की वजह यह है कि यह सारा कुर्ब वग़ैरा का मामला तौहद व रिसालत की तस्दीक़ व इक़रार के बग़ैर ना मुमकिन है।

फिर दरुद शरीफ़ इस वास्ते पढ़ता है कि यह तमाम नेमतें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही के तुफ़ैल हासिल हुई हैं।

और इब्राहीमी दरुद शरीफ़ इस वजह से अख़्तियार किया गया है कि अदाये नमाज़ के वक्त महबूबे हक़ीक़ी

के साथ ख़िलवत मयस्सर आती है और ख़ास हम नशीनी और बा ख़ुसूसियत मुसाहबत (मन्सबे ख़िलवत) तो सिर्फ़ हज़रत ख़लील अला नबीयना व अलैहिस्सलात वस्सलाम ही का हिस्सा है। गोया दरूद शरीफ़ की बरकत की बाइस उसी नदीमी व हम नशीनी को तलब करता है।"

अक़्वाल

- रुख़्सत पर अमल करना आदमी को बशरीअत की तरफ़ खींच ले जाता है।
- अज़ीमत पर अमल करना मिल्कीयत के साथ मुनासिबत पैदा करता है।
- जब हज़रत हक़ सुब्हानहु तआला की इनायत बे ग़ायत किसी बन्दे के शामिले हाल हो जाती है तो उसको अपने दोस्तों में से किसी दोस्त की ख़िदमत में पहुंचा देते हैं।
- जो शख़्स अपने हालात इदराके वजदानी के साथ भी दरियाफ़्त नहीं कर सकता उसको मुक़ामात की बशारत देना और ख़ुशख़बरी सुनाया गोया तरीक़े फ़ुक़रा को बदनाम करना और उसकी निस्बत बदगुमानी फैलाना है।

करामत

आपके विसाल के चालीस रोज़ बाद ताबूत टोंक से दिल्ली लाया गया। जब ताबूत खोला गया तो मालूम होता था कि अभी ग़ुस्ल दिया गया है। किसी क़िस्म की कोई तब्दीली वाक़े न हुई थी। रुई जो नीचे रखी हुई थी उसमें से निहायत अच्छी ख़ुशबू आ रही थी।[1]

1 अनवारुल आरफ़ीन सफ़ा 491